



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ का सेवा में सादर

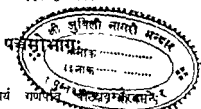
भवदीय

गुरुमण्डलग्रन्थमालायाः नवमपुष्पकम् :— **मनसुखराय मोर**

**स्मृति - सन्दर्भः** ४१  
संस्कृत

श्रीमन्महर्षिप्रणीत धर्मशास्त्रसंग्रहग्रन्थः

कपिलादिदशस्मृत्यात्मकः



श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं श्रीकृष्णाय नमः  
सिद्धौषं बटुकत्रयम्पद्मयुगं दूतीकम् मण्डलम् ।  
वीरान्द्वयष्टचतुष्कपष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकम् ;  
श्रीमन्मालिनिमंत्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

५, क्लाइव रो,

कलकत्ता ।

आवृत्तिः

१०१२

प्रथम संस्करणम्

५०००

अस्तावृत्तिः

१६५५

रुलियाराम गुप्त

बदनाल प्रिण्टिङ्ग वर्कर्स

• १, मिनामाल स्ट्रीट,

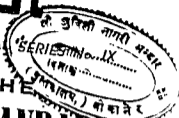
कलकत्ता-१

४९

संस्कृत



GURUMANDA



THE  
**MRITI SANDARBHA**

Collection of Ten Dharmashastric  
Texts by Maharshis.

Volume २२९

5, CLIVE ROW,  
CALCUTTA.

Christian Era  
1955.

First Edition  
5000.

Christian Era  
1955.



अयि भो धर्मशास्त्रप्रयाशिनो, विद्यायां पूर्वभा. शिद्धदेवरोः  
सहृदयाः !

ममुपस्थाप्यते भवत्पुरन्नादिदं नवमपुष्परूपेण मण्डलमन्यमालाप्रकाशितम्य कपिलस्मृत्यादि भारद्वाजस्मृत्यन्तं दशस्मृतीनां संप्रहात्मकम् । पूर्वभागचतुष्टयसङ्कलितचतुश्चत्वारिंशत्स्मृतिभिः सङ्कलनेन संख्येया चतुःपञ्चाशद्भवतीति अष्टोत्तरशतस्मृतीनां ततोऽपि समधिक-स्मृतिनामसंप्रदायान्या न्यूनमेव संख्यासङ्कलनमिति प्रमोदस्य परमात्ममन्तोपम्य च विषयोऽस्माकम् ।

अत्र विषये गवर्नमेण्टमैन्युरिक्रिष्ट लाइब्रेरी ट्रिप्लीकेन मद्रासतः, थियोमोफिकल सोसाइटी तत्त्वावधानस्थितस्य अद्वयार पुस्तकालयतः, भाण्डारकर प्राच्यशोधसंस्थान पूनातः, एशियाटिक सोसाइटी कलकत्तातो चाराणसीस्थसंस्कृत महाविद्यालयाधिकृतमरस्वनीभवनतश्च यदूनामादर्शहस्तलिखित-पुस्तकलिपीनां सङ्कलीकरणे तैर्नैः पुस्तकालयाध्यक्षैरधिकारिभिश्च बहुमाहाय्यं समाचरितम् ; तदर्थन्तेषामधिकाधिकमभिनन्दनं सहर्षमाभारश्च वयं प्रकटीकुर्मो वितरामश्च तेभ्यः परः महत्त्वान् धन्यवादान् ।

अरमत्प्रमादालस्यादिभिः याः सम्भवन्त्यस्तुदयो भाग-चतुष्टयवत्परिलक्ष्यन्ते ता अत्राऽपि विदुषां दृष्टिपथिसमाया-

एवन्तीति तामां संशोधने पुनः पुनः मरुत्तनिगमागमस्वाध्याय  
 निपुणाः धीधना अश्वरथ्यन्ते । अत्र पन्थेषु नूतना विषया  
 प्रायश्चित्तनित्यनैमित्तिककर्मानुष्ठानमन्थन्निभानो दरीदृश्यन्ते मन्ना-  
 महे यद्भवन्तः स्वस्वयाण्युद्ध्या स्वाध्यायं कृत्वा जगद्गुहाराप  
 शास्त्रप्रचाराय च दुर्लभमन्थप्रकाशकस्य श्रीमनसुखरायमौरभंष्टि-  
 प्रयस्य समुद्योगे सुष्ठु सहयोगं विधास्यन्तीति ।

श्रीकरुणावरुणालयस्वामीमयाज्जुक्त्वापराज्यावधि पत्रभागं  
 सम्मेलनाय द्वे स्मृती लौगाक्षिमाकण्डेयाभिधे ममधिगते ।  
 अनुदिनं प्रयत्नसापेक्षस्य कार्यस्यास्य समाप्त्यै कृतचेष्टा अपि वर्यं  
 नितरामसमर्था इति विशिष्टानामप्रकाशितस्मृतिग्रन्थानां मद्बुद्धने  
 तत्तद्ग्रन्थाधिकारिणो महानुभावाः सततं प्राथ्यन्ते यदेकोऽपि  
 शब्दःसृष्टिसंरक्षणोपायपरो यदि तेषु मिलिष्यति वदूपकारभाजो  
 वर्यं सर्वेऽपि भविष्यामः । आशास्महे सर्वेऽपि विद्वांसो मौर  
 पदवीभाजः श्रीमनसुखरायश्रेष्ठिमहोदयस्य लेखे धन्यवाद्प्रकाशने  
 प्रतिपादितानां नामावशेषता नीतानां स्मृतिग्रन्थानां पृथक्-  
 पृथक्प्रयोगं सम्मिलितरूपेणास्मभ्यं वितरणं विधाय कृतकृत्या-  
 निवर्धास्यन्तीति विनिवेश विरमाम इति ।

॥ श्रीः ॥

## धन्यवाद प्रकाश

—\*—\*—\*—

सत्चित् आनन्दकन्द प्रजविहारी श्रीकृष्णचन्द्र की असीम प्रनुकम्पा से स्मृति-सन्दर्भ के पञ्चम भाग को कृपालु विद्वज्जन की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त आनन्द अनुभव होता है। इस भाग में निम्नलिखित स्मृतियों के लिये जो पेशित प्रतिलिपीकरण के साथ सहायता प्राप्त हुई है उन भी अधिकारी महानुभावों का हम हृदय से धन्यवाद करते ! आभार प्रदर्शन करते हैं।

पेलस्मृति—अड्यार पुस्तकालय, थियोसोफिकल सोसाइटी, मद्रास ।

पूल्सस्मृति— " " " कलकत्ता " " "

ग्रामिन्नस्मृति—एशियाटिक सोसाइटी, मद्रास ।  
एवं गवर्नमेण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास ।

इतरस्मृति— " " " " " "

लयस्मृति— " " " " " "

डल्यस्मृति—गवर्नमेण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास ।

स्मृति—अड्यार पुस्तकालय, थियोसोफिकल सोसाइटी, मद्रास ।

एवं भण्डारकर प्राच्यशोधसंस्थान, पूना ।

प्रस्मृति—अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर ।

रसस्मृति—अड्यार पुस्तकालय,

थियोसोफिकल सोसाइटी, अड्यार, मद्रास ।

जस्मृति:—एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता ।



इनके मातृ-मातृ हमारे पूर्व पाठ भागों में ५२ स्मृतियाँ और ये १० स्मृतियाँ इस प्रकार ५२ स्मृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। महामहोपाध्याय दा. पी. लो. काने एम. ए. लो. लिट्. एन. एल. एम. सार्वभ्य, 'कौमिल आर्चु स्टेट' नई दिल्ली ने अपने ग्रन्थ "हिन्दी आर्चु धर्मशास्त्र" में नीचे लिखी हुई अग्रकाशित स्मृतियों का उल्लेख किया है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों में मंत्र की गई गृहीतों में मुझे जिन नामों का उल्लेख मिला उन्हें मैं अविच्छन्न अपने सम्मान्य महानुभावों की सेवा में उपस्थित करना हूँ जिससे भविष्य में इनकी गवेषणा की जाकर हमारा मार्ग प्रशस्त हो सके :—

अगस्त्य संहिता  
 आत्रेयधर्मशास्त्र  
 आश्वलायनधर्मशास्त्र  
 इन्द्रदत्तस्मृति  
 उपकश्यपस्मृति  
 ऋष्यशृङ्गस्मृति  
 कश्यपस्मृति  
 ब्रह्मस्मृति  
 गर्गस्मृति  
 गार्ग्यस्मृति  
 चन्द्रस्मृति  
 स्कन्दस्मृति  
 कौशिकस्मृति ।

शान्नुस्मृति  
 छागल्यस्मृति  
 मन्त्रर्षिस्मृति  
 लोमशास्मृति  
 हिरण्यकेशीस्मृति  
 बैंगवानमस्मृति  
 पैठीनमिस्मृति  
 सोमस्मृति  
 नारद संहिता  
 काश्यपस्मृति  
 व्याघ्रपादस्मृति  
 लल्लस्मृति  
 वैजवापस्मृति

पुलहस्मृति  
 पंड्यास्मृति  
 प्रह्लादस्मृति  
 बभ्रुस्मृति  
 मरीचिस्मृति  
 विश्वेश्वरस्मृति  
 विश्वेश्वरीस्मृति  
 शाकटायनस्मृति  
 शाकलस्मृति  
 शाट्ट्यायनिस्मृति  
 सत्यव्रतस्मृति  
 सुमन्तुस्मृति  
 च्यवनस्मृति  
 जमदग्निस्मृति  
 गणेशस्मृति  
 जतुकर्णस्मृति  
 कापिलस्मृति

वाराही संहिता  
 यामदेव संहिता  
 शौनकस्मृति  
 वैश्वानर संहिता  
 शुनः पुच्छ संहिता  
 शाट्ट्यायन संहिता  
 शाकलस्मृति  
 पण्डुरस्मृति  
 सनत्कुमार संहिता  
 सांख्यायनस्मृति  
 ईशान संहिता  
 कात्यायन स्मृति  
 काष्ठाजिनिस्मृति  
 गालवस्मृति  
 ध्यागलेयस्मृति  
 जाबालस्मृति  
 कणादस्मृति

पष्ठ भाग में केवल दो स्मृतियां ही उपलब्ध हुई हैं १५०० श्लोकोंवाली, लौगाक्षि और मार्कण्डेय । यदि समस्त धर्मशास्त्र प्रेमी इस ओर कुछ विशेष अनुसन्धान दृष्टि से कृपा करें तो हमारे प्रकाशन कार्य में शीघ्रता होकर भारतीय जनता को हमारा संसार को प्रकाशित स्मृति-संग्रह की अनुपम भेंट प्रस्तुत की जा सकती है ।

स्मृति-सन्दर्भ और निरुक्त ग्रन्थों की आलोचनात्मक प्राप्ति की कृति पृथक्-पृथक् व सम्मिलित रूप से भाण्डारकर

जीवन का मूल्यांकन समझने वाली दौड़ी-दौड़ी भूलों का प्रतिदिन अन्ननिर्माण द्वारा और निम्न कृत्यों से ठीक बनाने से है। हमारे पूर्वजों ने आत्म-शुधार के लिये इन धर्मशास्त्रियों को सम्पूर्ण संसार की नियमावली के रूप में प्रकाशित किया। आज की भीषण परिस्थिति में जिन महानुभावों ने शास्त्रमय जीवन से अपने शरीर द्वारा प्राणित्व का प्रण किया है वे धन्य हैं। आशा करता हूँ कि शास्त्र मर्यादित जीवन से हम सभी अपना मार्ग प्ररान्त कर सभी का कल्याण सम्पादन करेंगे। इस प्रकाशन की विशालता और अन्य महापुराणादि के प्रकाशन में व्याप्त रहने के कारण हमारे कार्यकर्तृवृन्द के द्वारा अपूर्णता रह गई है उन्हें छपाटु पाठक महानुभाव शोधन कर लेंगे यह प्रार्थना है।

‘कामये दुःखतप्तानाम्प्राणिनामार्तिनाशनम्’

भावणी पूर्णिमा

२०१२

विद्वन्मण्डली का अनुवाद :—

मनसुखराय मोर

१, छात्र रो, कटकता ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ स्मृतिसन्दर्भस्थ पञ्चमभागे सङ्कलित-  
स्मृतीनां नामनिर्देशः

स्मृतिनामानि

४५	कपिलस्मृतिः	...	...	पृष्ठाङ्काः
४६	वाचूलस्मृतिः	...	...	२५२६
४७	विश्वामित्रस्मृतिः	...	...	२६२३
४८	लोहितस्मृतिः	...	...	२६४५
४९	नारायणस्मृतिः	...	...	२७०१
५०	शाण्डिल्यस्मृतिः	...	...	२७७०
५१	कण्वस्मृतिः	...	...	२७९३
५२	दाल्भ्यस्मृतिः	...	...	२८६०
५३	आह्निरसस्मृतिः नं० २...	...	...	२९३३
	(क) " पूर्वाह्निरसम्	...	...	२९४९
	(ख) " उत्तराह्निरसम्	...	...	३०६५
५४	भारद्वाजस्मृतिः	...	...	३०८५

विशेष द्र०—द्वितीयाह्निरसस्मृतेर्विषयवैशिष्ट्येनपृथगुपन्यासः



५५९

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

# स्मृतिसन्दर्भ पञ्चम भाग

की

## विषय-सूची

—००—

### कपिलस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
कपिल-शौनक-सम्वादवर्णनम्		२५३६
	कपिल एवं शौनक में परस्पर वेद विषयक चर्चा । यही वेद निन्दकों का प्रकरण भी आया है ( १-२० ) ।	
वैदिककर्मणामभावकथनम्		
	वैदिक कर्मों का अभाव कथन ( २१-४० ) ।	
वेदमन्त्राणां व्यत्यासेनोच्चारणेदोषकथनम्		२५३४
	वेदमन्त्रों के व्यत्यास से उच्चारण करने में दोष होना ( ४१-६० ) ।	
श्राद्धप्रकरणवर्णनम्		२५३५
	श्राद्ध प्रकरण का वर्णन, नान्दीमुख श्राद्ध की प्रधा- नता, विभिन्न श्राद्धों का सुन्दर वर्णन ( ६१-३०० ) ।	

अध्याय	प्रमाण विषय	पृष्ठ
	उपनयनसंस्कारवर्णनम्	२५५७
	उपनयन संस्कार का वर्णन ( ३०१-३३३ ) ।	
	श्राद्धणादिवर्णानामेकपङ्क्तौभोजननिर्णयवर्णनम्	२५५६
	श्राद्धणादिवर्णों का एक पङ्क्ति में भोजननिर्णय वर्णन ( ३३४-३५० ) ।	
	विप्रमहत्त्ववर्णनम्	२५६१
	विप्रों के महत्त्व का वर्णन ( ३५१-३५८ ) ।	
	नान्दीश्राद्धप्रकरणवर्णनम्	२५६३
	नान्दी श्राद्ध करनेवाले की योग्यता व अधिकार का वर्णन ( ३५६-३७४ ) ।	
	दत्तकपुत्रप्रकरणवर्णनम्	२५६५
	दत्तकपुत्र का वर्णन और उसकी योग्यता (३७५-४२६) ।	
	दानप्रकरणवर्णनम्	२५६६
	दशविधदानों का निरूपण ( ४२७-४७६ ) । दान के अधिकारी जनों का वर्णन ( ४७७-४८७ ) ।	
	दौहित्रप्राधान्यवर्णनम्	२५७५
	दौहित्र की सर्वत्र प्रधानता का निरूपण (४८८-५००) ।	
	भूमिदानप्रकरणवर्णनम्	२५७७
	भूमिदान प्रकरण ( ५००-५०० ) ।	

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
वर्जितस्त्रीणां श्राद्धपाककरणे दोषवर्णनम्		२५७६
	वर्जित स्त्रियों को श्राद्ध का पाक करने में दोष बतलाया है ( ५१६—५४० ) ।	
विधवास्त्रीणां कृत्यवर्णनम्		२५८१
	विधवा स्त्रियों के कार्यों का वर्णन ( ५४१-५६२ ) ।	
सधवाविधवास्त्रीणां मीमांसा		२५८५
	सधवा एवं विधवा स्त्रियों का विवेचन (५६३-६३२) ।	
विधवास्त्रीणां प्रकरणम्		२५८६
	अतिरण्डा, महारण्डा और पुत्ररण्डा आदि का वर्णन ( ६३३-६५६ ) ।	
पुत्रमहत्त्ववर्णनम्		२५९१
	पुत्र के बिना एक क्षण भी न रहे । पुत्र के महत्त्व का विस्तार से निरूपण ( ६५६-६७८ ) ।	
ज्येष्ठपुत्रस्य पैत्र्ये योग्यता		२५९३
	ज्येष्ठ पुत्र की पिता के सभी उत्तराधिकारियों से अधिक योग्यता ( ६७९—६९८ ) ।	
औरसपुत्रेषु ज्येष्ठत्वनिर्णयः		२५९५
	औरस पुत्रों में ज्येष्ठ कौन हो इसका निर्णय (६९९-७००) ।	



अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठ
पैत्र्ये कर्मणि दौहित्रप्यौरगत्वम्		२५६०
	पैत्र्य कर्म में दौहित्र का पुत्र के अभाव में आगम होना ( ७०१—७२४ ) ।	
धर्मसेवनलाभः		२५६६
	धर्मसेवन का लाभ ( ७२४—७६६ ) ।	
सुतस्य कुलतारकत्वम्		२६०१
	पुत्र का कुलतारक होना ( ७६७—७८६ ) ।	
निर्दुष्टपुत्रयोग्यता		२६०३
	निर्दुष्ट पुत्र की योग्यता ( ७६०—८०६ ) ।	
दण्ड्यानामदण्ड्यानां यथायथधर्मव्यवहरणम्		२६०४
	दण्डनीय और न दण्ड देने योग्य जनों का धर्म से व्यवहार करना ( ८१०—८३० ) ।	
दण्डविधानम्		२६०७
	दण्डविधान वर्णन ( ८३१—८७१ ) ।	
विप्रमहत्त्ववर्णनम्		२६११
	विप्र का महत्त्व निरूपण ( ८७२—८६३ ) ।	
नानाविधदानप्रकरणम्		२६१३
	विविध दानों का वर्णन ( ८६४—६८० ) ।	

शाय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
कर्मणां प्रायश्चित्तवर्णनम्		२६२१

दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त वर्णन ( ६८१—६९५ ) ।  
 कपिलस्मृति का माहात्म्य वर्णन ( ६९६ ) ।

कपिलस्मृति की विषय-मूची समाप्त ।

## वाधूलस्मृति के प्रधान विषय

न्यकर्मविधिवर्णनम्	२६२३
--------------------	------

सहस्रियों ने वाधूल मुनि से ब्राह्मणादि के व्यापार पृष्ठे इग पर नित्यकर्म विधि का वर्णन लन्दंनि किया ( १-३ ) । ब्राह्मणदुर्भ में शय्या त्याग कर प्रसन्न मन से हाथ-बैर धोकर भगवत्समर्पण करे ( ४ ) । ब्राह्मणदुर्भ में सोनेवाला सभी बगों में अनाधिकारी रहता है ( ५ ) । प्रातः सन्ध्या तारागन के प्रवारा से लंकर सूर्योदय तक है । अतः तारागन के रहते प्रातः सन्ध्या करे ( ६ ) । सायंकाल में आधे सूर्य के अस्त होने के समय सन्ध्या करे ( ७ ) । बानों पर दशोपसोत रहरकर दिन में और सब सन्ध्याओं में उत्तर की तरफ और रात में दक्षिण की ओर मुँह कर दूरी पेशाब करे ( ८ ) । गारे अर्द्धों

को सिकोड़ कर नाक और मुँह को वस्त्र से ढक कर मलमूत्र त्याग करे (६)। जो व्यक्ति अपने शिर को बिना ढके मलमूत्र का त्याग करता है उसके शिर के सौं दुकड़े हों ऐसा वेद शाप देते हैं (१०)। वाद में शोधन कर्म करे। गृहस्थ, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासियों का विभिन्न शौच प्रकार (११-१७)। बाह्य और आभ्यन्तर शौच आवश्यक है क्योंकि शौच व आचार से हीन की सत्र क्रिया निष्फल है (१८-२०)।

आचमन प्रकार—ब्राह्मण इतना आचमन ले जितना हृदय तक स्पर्श हो, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियाँ कण्ठतालु तक स्पर्श करनेवाले जल से आचमन करे। हाथ में गुदा लेकर जल पीवे और आचमन करे। (२२-२७)। अपने कटि प्रदेश तक जल में स्नान कर वही भीगे कपड़ों से गर्भण, आचमन और जप करे यदि स्नान कपड़े पहनकर करना हो तो स्थल में ये क्रियायें करें (२८-३५) उपवास के दिन दन्तधायनादि न करे। बुद्धा के समय गर्जनी से गुण के शोधन से प्रायश्चित्त करना है।

स्नानविधिर्जननम्

निर्मल विधियों में कन्यापूजन नहीं करना चाहिये।  
 २६२७  
 पवित्र कन्या की स्नाना करने से स्नान करना चाहिये

अस्पृश्य के छू जाने से १३ बार जल में नहाने से शुद्धि हो। रजस्वला स्त्री को यदि ज्वर चढ़ जावे तो वह कैसे शुद्ध हो इसके उत्तर में चाणूल ने बताया कि चतुर्थ दिन दूसरी स्त्री उसे स्पर्श कर दश या बारह बार आचमन कर अपने पहलेवाले कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहन ले फिर पुण्याहवाचन के साथ यथाशक्ति दान करे (३१-४८)। भूमि पर गिरा हुआ जल गंगा के समान पवित्र है। चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय कुआ, घापी, तड़ाग के जल शुद्ध हैं। अपनी शौच क्रिया से निवृत्त होकर स्नान करे दोनों हाथों को मिला कर जल की अञ्जलि से जल में तर्पण करे जिस तीर्थ से जल लिया जाय उसीसे जलाञ्जलि देवे (४६-५६)। पूर्व की ओर मुख करके देवतागण को, उत्तराभिमुख होकर ऋषियों को और दक्षिण की ओर मुँह करके जल में पितरों को तर्पण करे। स्नान के लिये जाते हुए मनुष्य के पीछे पितरों के साथ देवगण प्यास से व्याकुल जल के लिये लालायित होकर वायुरूप होकर जाते हैं अतः देवर्षिपितृतर्पण किये बिना यज्ञ को न नेचोड़े यदि यज्ञ निचोड़ा जाता है तो वे निराश होकर लड़े जाते हैं। सम्पूर्ण कर्मों की मिट्टि के लिये नदी, तलाब, पहाड़ी झरनों में प्रतिदिन स्नान करे (५७-६३)।

दूसरे के बनाये हुए सरोवर में स्नान करने से उम बनानेवाले के दुष्कृत (पाप) स्नानार्थी को लगते हैं अतः उसमें न नहाये ( ६४ )। मोकर उठने से लार-पसीनों से भरा हुआ मनुष्य अशुद्ध है उसे स्नानादि से शुद्ध होनेपर ही नित्यकर्म सन्ध्योपासन देवर्षि पितृ तर्पण करना चाहिये। सूर्योदय के पूर्व प्रातःकाल का स्नान प्राजापत्य यज्ञ के समान है और आलस्यादि को नष्ट कर मनुष्य को उन्नत विचार और कार्यशील बना देता है। स्नान के समय पहने वस्त्र से शरीर को न मले न पोंछे ही इससे शरीर कुत्ते के द्वारा सूचा हुआ हो जाता है जो फिर स्नान करने से ही शुद्ध होता है ( ६५-६८ )।

स्नान मूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च ।

स्नानाचारविहीनम्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः ॥६७॥

सम्पूर्ण क्रियायें स्नान के अन्तगम ही हैं। रविवार को उषा काल में स्नान करने से हजार माघ स्नान का फल और जन्म दिन के नभग्र में बंधून पुण्यकाल, व्यनीपात और संक्रान्ति पर्वों में, अमायम्या को नदी में स्नान छोटि बूझों का उटार कर देता है। प्रातः स्नान करनेवाले को नरक के दारुण

पड़ते। स्नान किये बिना भोजन करनेवाला मल का भोजन करता है ( ६६-७५ )।

शिव सकृल्लय सूक्त का पाठ, मार्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृ तर्पण ये स्नान के पाँच अङ्ग हैं ( ७६-७७ )। जल के अचगाहन, जल में अपने शरीर का अभिषेक, जल को प्रणाम और जल में तीर्थों गङ्गादि नदियों का आवाहन फिर मञ्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृतर्पण का विधान बतलाया गया है ( ७८-८६ )। प्रातः स्नान का महत्त्व। अपने शरीर को पोंछने पर सूखे कपड़े पहनकर उत्तरीय धारण करे। चन्दन और तर्पण के समय इसे कटि प्रदेश में ही बांधे रखे। फिर तिलक करे। पर्वत की चोटी से, नदी के किनारे से, विशेष रूप से विष्णु क्षेत्र में मिली सिन्धु के तट पर तुलसी के मूल की मिट्टी से तिलक प्रशस्त बतया गया है ( ९०-१०८ )।

श्यामतिलक शान्तिकर लाल वश में करनेवाला, पीला लक्ष्मी देनेवाला और सफेद मोक्षदाता बतलाया है ( १०९-११० )। भगवान् पर चढ़ाये गये हरिद्रा के चूर्ण के तिलक का माहात्म्य ( १११ ) सम्पूर्ण संसार में जो कर्महीन द्विजाति मात्र हैं उनको शुद्ध करने के लिये सन्ध्या स्वयं ब्रह्मा ने बनाई।

प्रातःकाल गायत्री का ध्यान, मध्याह्न में सावित्री

और गायं काल सरस्वती का ध्यान करना चाहिये ।  
प्रतिपदा, प्रसन्नोप, पानक और चण्डालकों में गायत्री  
मन्त्र के जपनेवाले की गायत्री उषा कर्त्री है इसलिये  
इसका नाम गायत्री है ।

प्रतिपदाद्भद्रदोषात्पानकादुपपानकान् ।

गायत्री प्रोच्यते यस्माद् गायन्तं प्रायते यतः ॥१११॥

सविता को प्रकाशित करने से इसका नाम सवित्री  
और संसार की प्रसवित्री वाणी रूप में होने से इसका  
इसका नाम सरस्वती अन्वर्थ है (जैमा नाम वैमा गुण)  
( ११२-११६ ) ।

धापोहिष्टेत्यादि मार्जन मन्त्रों में नौ ओङ्कार के  
साथ जो मार्जन किया जाता है उससे वाणी, मन और  
शरीर के नवों दोषों का क्षय हो जाता है (११७-१२०) ।  
सायंकाल में अर्घ्य जल में न देवे जहाँ सन्ध्या की जाय  
वही जप भी हो । वेदोदित नित्यकर्मों का किसी कारण  
अतिक्रमण हो जाय तो एक दिन बिना अन्न खाये रहना  
चाहिये और १०८ गायत्री मन्त्र के जप दोनों सन्ध्या  
में विशेष रूप करे ( ११-१२६ ) ।

सूतक और मृतक के आशौच में भी सन्ध्या कर्म न  
छोड़े प्राणायाम को छोड़ कर सारे मन्त्रों को मन से

उच्चारण करे (१३०-१३२)। देवार्चन, जप, होम, स्वाध्याय, ज्ञान, दान तथा ध्यान में तीन-तीन प्राणायाम करे (१३३-१३४)। जप का विधान प्रातः काल हाथ ऊँचे रखकर, सायंकाल नीचे हाथ कर एवं मध्याह्न में हाथ और कन्धे के बीच में रखकर जप करे नीचे हाथ कर जप करना पैशाच, हाथ बीच में रखकर करने से राक्षस, हाथ बांधकर करने से गान्धर्व और ऊपर हाथ करने से दैवत जप होता है (१३५-१३६)।

प्रदक्षिणा, प्रणाम, पूजा, हवन, जप और गुरु तथा देवता के दर्शन में गले में धस्त्र न लगावे (१४०)। दर्भा के बिना सन्ध्या, जल के बिना दान और बिना संख्या किया हुआ जप सब निष्फल होता है। जप में तुलसी काष्ठ की माला और पद्माक्ष तथा रुद्राक्ष की माला प्रशस्त है (१४१-१४३)। गृहस्थ एवं ब्राह्मचारी १०८ बार मन्त्र का जाप करे। दानप्रस्थ तथा यति १००८ बार करें। आहुति के लिये सामग्री का विधान (१४४-४५)।

### गृहस्थधर्मवर्णनम्

२६३७

गृहस्थ को सम्पूर्ण कार्य पत्नी सहित इष्ट है। जिस मनुष्य की स्त्री दूर हो, पतित हो गई हो, रजस्वला हो, अनिष्ट वा प्रतिकूल हो उसकी अनुपस्थिति में कोई



श्राद्धि गुरामयी धर्मगम्री, कोष्टं श्रुति चाग को वनी पत्रो  
 को प्रतिनिधि रूप में गगनर निरपहसं क्रिया करने की  
 मद्रूपदम्य को आशा देते हैं ( १५४-५८ ) । होम के  
 लिये गो पृथ श्रेष्ठ पद न मिले तो माद्विण पृथ उमके न  
 मिलने पर, यकरी का पृथ और उन गव्य के न मिलने  
 पर माहागन मेल का व्यवहार करे ( १५९ ) । समय पर  
 आहुति देने का साहाय्य ( १६०-१६२ ) । वेदाश्रमों को  
 स्वार्थ में लानेवाले मनुष्य की निन्दा । छे प्रकार के वेदों  
 को वेचनेवाले का गणन ( १६३-१६८ ) । गवियार, गुरुवार,  
 मन्वादि चारों युगों में और मध्याह्न के बाद तुलसी न  
 लावे । संक्रान्ति, दोनों पक्षों के अन्त में द्वादशी में और  
 रात्रितथा दिन की सन्ध्या में तुलसी चयन का निषेध है  
 ( १६० ) । तीर्थ में मन, वाणी और कर्म से कैसा भी  
 पाप न करे और दान न लेवे क्योंकि वह सब दुर्जर है  
 अतः अक्षम्य है । श्रुत ( व्यवहार ) अश्रुत सत्य कर्तव्य  
 पालन ऋत या प्रमृत से और सत्य-अनृत से जीविका  
 कमावे ( १६१-६३ ) ।

किसी वस्तु को बिना पूछे लेने से पाप ( १६४ ) । मनुजी  
 ने वनस्पति, कन्द, मूल फल, अग्निहोत्र के लिये काठ,  
 वृण और गौशों के लिये घास ये अस्तेय बताये हैं ।  
 इन-बिना लोगों से किसी भी रूप में लेने —

इसका वर्णन ( १६५-१६८ )। दूसरे के लिये तिल का हवन करनेवाले दूसरे के लिये मन्त्र जप करनेवाले और अपने माता पिता की सेवा न करनेवाले को देखते ही आँख बन्द कर ले ( १६६ )। जो लोग निन्द्य कर्म करते हैं उनके सङ्ग से सत्पुरुष भी हीन हो जाते हैं और उनकी शुद्धि आवश्यक है ( १७०-१७४ )। जो आदेश, तीन या चार वेद के महाविद्वान् दे वहीं धर्म है और कोई हजारों व्यक्ति चाहे, कहे वह धर्म सम्मत नहीं। वेद पाठी सदा पञ्चमहायज्ञ करनेवाले और अपनी इन्द्रियों को बश में करनेवाले मनुष्य तीन लोकों को तार देते हैं ( १७५-१७६ )।

पतित लोगों से सम्पर्क करने से मनुष्य एक वर्ष में पतित हो जाता है ( १८० )। कलियुग में सभी ब्रह्म का प्रतिपादन करेंगे परन्तु कोई भी वेद विहित कर्मों का अनुष्ठान नहीं करेगा ( १८१ )। मैथुन में त्याज्य दिनों की गणना—पष्टी अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, चतुर्दशी, दोनों पर्व अमावास्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति कोई भी श्राद्ध दिन, जन्म नक्षत्र का दिन, श्रवण व्रत का समय और जो भी विशेष महत्त्वपूर्ण दिन हैं उनमें मैथुन ( स्त्री गमन ) निषिद्ध है ( १८२-१८३ )। शुभ समय में अर्थात् मनुष्य जिन कामों को अपने स्वार्थ के लिये

करता है उन्हें ही यदि धर्म के लिये करे तो संसार में कोई दुःखी नहीं रह सकता ।

अर्थार्थी यानि कर्माणि करोति कृपणो जनः ।

तान्येव यदि धर्मार्थं कुर्वन् को दुःखमाग्भवेत् ॥१८६॥

भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं पवितों के छू जाने से स्नान का विधान किसी वस्तु को बेचने पर स्नान का विधान आवश्यक है ( १८४-१८८ ) ।

श्रुति स्मृति के आदेश प्रभु की आज्ञा है इनको न माननेवाले को भगवद्भक्त बनने का अधिकार नहीं ( १८६ ) । सचे अन्धे का लक्षण—जो श्रुति स्मृति का अध्ययन, मनन और अनुरीलन कर उनके मार्ग का अनुष्ठान नहीं करता यह अन्धा है ( १६०-१६१ ) । पापी को धर्मशास्त्र अच्छे नहीं लगते ( १६२ ) ।

सदा ब्राह्मण यदी है जो शृणु करने से ऐसे डरता है जैसे मर्प को देखकर । सम्मान में ऐसे दूर रहता है जैसे लोग मरने से और खियों के सम्पर्क से जैसे मृतक से पूजा होती है वैसे दूर रहता है । ब्राह्मण यह है जो शान्त हो, दान्त हो, क्रोध को जीतनेवाला हो, आत्मा पर पूरा अधिकार करनेवाला हो, इन्द्रियों का निग्रह कर चुका हो । ब्राह्मण का यह शरीर सम्भोग के लिये नहीं बल्कि इस शरीर में ब्रह्म के साथ लगन्य करते हुए

ऊर्ध्व लोक में अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये है (१६३-१६४)। दर्श में सूखे कपड़े पहनकर तिलोदक जल के घाहर दे, गीले बख़ों से पितर निराश होकर जले जाते हैं। ऊर्ध्व पुण्ड्र का माहात्म्य (१६५-२०१)। श्राद्ध के बाद ब्राह्मण भोजन का विधान (२०२)। विवाह में, श्राद्धादि में नान्दी श्राद्ध करने से, सूतक का दोष नहीं रहता (२०३)।

पितृ श्राद्ध में वर्जित लोगों को देवता कार्य में बुलाने की छूट (२०५-२०६)। पितृ श्राद्ध में बख़ों के देने का माहात्म्य (२०७)। अलग-अलग कमानेवाले पुत्रों द्वारा पृथक्-पृथक् पितृ श्राद्ध का विधान (२०८-२१०)। सन्यासी बहुत खानेवाला, वैश, नामधारी साधु, गर्भवती, (जिसकी स्त्री गर्भवती हो) वेदों के आचरण से हीन व्यक्ति को दान और श्राद्ध में न बुलावे (२११)।

गर्भ करनेवाले द्विज के लिये वर्ज्य कर्म (२११-२१७)। स्नान, सन्ध्या, जप, होम, स्वाध्याय, पितृ तर्पण, देव-ताराधन और वैश्वदेव को न करनेवाला पतित होता है अतः इन्हें नियम से करना प्रत्येक द्विजाति का कर्तव्य है (२१८-२२४)।

॥ वापूलस्मृति की .. ..



अधम सन्ध्या के भेद । शुचि या अशुचि हो, नित्यकर्म को कभी न छोड़े (२२-२५) । तीनों सन्ध्या काल में या तो पूर्व की ओर या उत्तर की ओर मुँह कर नित्यकर्म करे । दक्षिण या पश्चिम की ओर मुँह करके नहीं (२६) । सन्ध्या स्नान किये बिना विद्या पढ़ना हानिकारक है, सन्ध्या काल आने पर उसे छोड़नेवाले को पाप लगता है (३०) । सोपाधि एवं अनुपाधि भेद से आचार के दो भेद—सोपाधि गुणवान् और अनुपाधि मुख्य है (३१-२६) । गायत्री मन्त्र की विशेषता—प्रातःशय्या-त्याग के बाद पृथ्वी का वन्दन भैरव की स्तुति, दक्षिण दिशा में जाकर मल-मूत्र आदि का त्याग करे (३२) । शौच का प्रकार (५३-५६) । दन्तधावन और दतुवन के लिये वनस्पतियों का परिगणन (६३) । आचमन कर स्नान करने का प्रकार (६८) । सन्ध्यादि, तर्पण का विधान (७३) ।

जलस्नान का विधान मन्त्रोच्चारण पूर्वक विशेष फल-दायक है । तीनों कालों में स्नान का विशेष विधान (७८) । स्नान करनेवाले पुरुष के रूप, तेज, बल, शौच, आयु, आरोग्य, अलोलुपता, एवं तप की वृद्धि व दुःस्वप्न का नाश होता है । तर्पण की विशेषता (८७) । वस्त्र-धारण में बस्त्रों के महत्त्व का वर्णन, प्राणायाम का

प्रकार, पुण्य, दुष्कर्म और वेदक में संशुद्धि करके दे  
 मजदूरी का माघ होकर शरीर को शुद्ध होती है और  
 अशुद्धि नष्ट हो जाती है। निम्न प्रकार की विधि, पुण्य  
 ध्यान इसके बिना मान्य नहीं है ( १-२४ )।

### आचमनविधिवर्णनम्

२६१

मुहय तीन प्रकार के आचमनों का वर्णन, पौष्टिक,  
 शरीर और आचमन, इनके माघ और एवं मानस आच-  
 मनों का वर्णन—मन्त्र ज्ञान एवं शिवरामों के आदि  
 और अन्त में आचमन करे। अचमन के ३१ नामों  
 के माघ न्याय विधान ( १-२५ )।

### विधिवदाचमनस्यैकफलवर्णनम्

२६४

गोर्जन की आकृति बनाकर अंगूठे और मथो छोटी  
 अहुली को छोड़कर अहलि में जलपान कर आचमन  
 का विधान है इसी का फल है ( २१-२३ )। धूलो,  
 सोने, ओढ़ने, अधुपात आदि से विग्र होने पर आच-  
 मन करे या दक्षिण कान को तीन बार छर्शा करे।  
 भोजन के आदि में और अन्त में निम्न आचमन  
 करे। मानसिक आचमन में भी केरावाय नमः,  
 माधवाय नमः और गोविन्दाय नमः मन में बोलकर  
 चित्त शुद्धि करे ( २४-३२ )।

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

र्जनम्

२६६०

प्रापोहिष्ठा मयो भुवः" से मार्जन करे फिर न्यास  
ऐसा करने से द्विजमात्र शुद्ध होकर ध्यान, जप,  
में सब सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं ( ३३-३६ )।

आचमनविधिवर्णनम्

२६६१

यज्ञ में तीन चार आचमन का विधान है।  
मार्त, आचमन को किन-किन स्थलों पर करना  
विधि ( ४७-५७ )।

यामविधिवर्णनम्

२६६३

जाविधिवर्णनम्

२६६५

मगायत्रीमन्त्रवर्णनम्

२६६७

मन्त्राणां जपे तत्तन्मन्त्रेण प्राणायामः २६६६

और अपान का समयुक्त होना ही प्राणायाम  
है, इसे सन्ध्याकाल और प्रत्येक कर्म के  
में मन को एकाम करने के लिये अवश्य करे।  
वृत्तम प्राणायाम, छै चार मध्यम और तीन  
म कहा गहा गया है ( १-३ )। गायत्री मन्त्र  
हृदयों के साथ प्राणायाम करना चाहिये



(४-५) । पहले कुम्भक फिर पूरक और फिर रेचक, इस क्रम से प्राणायाम करना इष्ट है । सन्ध्या होम काल और मध्यरात्र में कुम्भक से आरम्भ कर प्राणायाम करे । प्राणायाम में करने योगाध्यान का वर्णन (६-१०) । दश प्रणव एवं गायत्री मन्त्र के साथ इडा और पिङ्गला को छोड़ सुपुम्ना नाड़ी से कुम्भक करे साथ में मन्त्र का स्मरण बराबर होता रहे ( ११ ) । रेचक और पूरक विना प्रयास के होते हैं । कुम्भक में प्रयास करना होता है यह अभ्यास से शक्य है । अनभ्यास से शास्त्र विषय का काम करते हैं, अभ्यास से वही अमृत बन जाते हैं । प्राणायाम के समय सिद्धासन से बैठे । प्राणायाम में चारों अङ्गुली और अंगूठा काम में लेना चाहिये । इस समय मन्त्र के उच्चारण के साथ-साथ वम-उम देवता की मानसा पूजा करनी चाहिये इससे विशेष फल मिलना है ।

सं, हं, यं, रं, वं इन बीजों से पृथिव्यात्मा को गन्ध, आकारात्मा को पुष्प, वाय्वात्मा को धूप, अग्न्यात्मा को दीप और अमृतात्मा को नैवेद्य प्रदान करे । इस पञ्च-भूतात्मक मानसी पूजा से ही प्राणायाम की सिद्धि मिलती है (१२-२६) । प्राणायाम का अभ्यास सिद्धासन, कुम्भक के साथ और मन्त्र दृष्टि के रूप में आर्षेय वन्द

करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। प्राणायाम में मानसी पूजा का माहात्म्य ( ३०-३६ )। प्राणायाम के बिना सब निष्फल है। विलोम गायत्री मन्त्र का घर्जन ( ३७-४६ )। इससे सम्पूर्ण पाप, रोग, दरिद्रता दूर होते हैं ( ४७ )।

विलोम गायत्री मन्त्र के जाप का फल सम्पूर्ण मन, वाणी और कर्म से किये गये पापों का नाश होना बताया है ( ४८-४९ )। प्राणायाम न करनेवाला अचकीर्ण होता है उसे प्रायश्चित्त लगाना है ( ५०-५२ )। विशेष जिन-जिन मन्त्रों का विधान आता है उनके साथ भी पूरक, कुम्भक और रेचक क्रम से प्राणायाम करने का विकल्प है। चायांक, शैव, गणेश, सौर, वैष्णव और शाक्त जो भी मन्त्र है उन-उन से प्राणायाम की विधि फल देनेवाली है। भिन्न-भिन्न विधियों में प्राणायाम की १०, १५, २०, २४, १३, १४ और १६ बार आवृत्ति करने की विधि हैं। वैश्वदेव में १० बार आदि में १० बार अन्त में प्राणायाम करने का विधान है। जहाँ सङ्कल्प है वहाँ २ बार और सभी काम्य आदि कर्मों में १०-१० बार आवृत्ति का विधान है। विलोमाक्षरों से गायत्री का प्राणायाम अनन्त कोटि गुणित फल देता है ( ५३-७६ )।

४

## मार्जनम्

२६५

शिर से पैर तक "आपोहिष्ठादि" मन्त्र से मार्जन का फल । अर्ध मन्त्र और पूर्ण मन्त्र मार्जन दो प्रकार का है (१-५) । ऋग्यजुः साम वेद की शाखावालों का मार्जन क्रम । आपोहिष्ठादि के मन्त्र में प्रणव का उच्चारण करते हुए शिर पर मार्जन करे और "यस्यश्वाय जिन्यथ से नीचे की ओर जल प्रक्षेप करे (६-१८) । शिर से भूमि तथा पादान्त मार्जन से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है । मार्जन की फलश्रुति (१६-२७) ।

## ५ साध्यदानगायत्रीमाहात्म्यवर्णनम्

२६७

सन्ध्यावन्दन के समय प्रातः और सायं तीन-तीन अर्घ्य सूर्य को दे, मध्याह्न काल की सन्ध्या में केवल एक ही । तीन अर्घ्य में एक दैत्यों के शास्त्रास्त्र नाश के लिये, दूसरा वाहन नारा के लिये और तीसरा असुरों के नाश के लिये और अन्तिम प्रायश्चित्तार्घ्य देकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा से सब पापों से छुटकारा हो जाता है । गायत्री के पश्चात्त का वर्णन (१-२४) ।

## ५ प्रायश्चित्तार्घ्यविधि वर्णनम्

नानामन्त्रनिर्वाणप्रायश्चित्तवर्णनम्

२६७

य प्रधान विषय षष्ठाङ्क  
 प्रायश्चित्तार्थ की विधि-वर्णनाना मन्त्रों के  
 ग एवं ध्यान का वर्णन  
 द्विविधजपलक्षणम्  
 नैमित्तिक एवं कारक के प्रकार के जपों के लक्षण  
 सन्ध्याङ्क के रूप में शिवोक्त मन्त्रों की  
 त की छोटी पर एकान्त वासे की लक्षणों का वर्णन  
 वाला है ( १-२ ) ।

मूलमन्त्र से भूशुद्धि, फिर भूतशुद्धि, फिर रक्षाके लिये  
 यन्धन करना और गायत्री के न्यास का वर्णन  
 ४-३०) ।

ऋङ्गन्यासवर्णनम् २६८५

इस बार मन्त्र का जप कर हृदय को हाथ से स्पर्श  
 प्राणसूक्त जपे फिर प्राणायाम करे ( ३१-३२ ) ।  
 लोम एवं विलोम क्रम से ऋन्यास एवं हृदयादि-  
 स एवं दिशाओं का यन्धन करे ।

द्राविधिवर्णनम् २६८७

राधाहन आदि के भेद से १० प्रकार की मुद्राओं का  
 १, गायत्री जप के आरम्भ की २४ मुद्रा (३३-७१) ।

स्नानविधिवर्णनम् २६९०

न्यासकाल में सूर्योपस्थान का महत्त्व ( १-२० ) ।

८	देवपूजादिभिधानार्थनम्	२६१
	वैश्वदेवकान्तिर्गणनम्	२६१
	पशुशूनापनुगर्भं वैश्वदेवार्थनम्	२६६
	वैश्वदेवमादान्गणनम्	२६६

वैश्वदेव में कौश्य ( कोरी ), मयूर, वरुह, मयत और कश्यपे इत्यादि को काम में न लें ( १-२ ) । नाना प्रकार की बलि करने से नाना प्रकार के पाप कर्मों की सिद्धियां होती हैं । द्विजों के लिये पाँच ही क्रम से बलि का विधान है । पहले उपवीत, दूसरे निर्वीत, तीसरे पिशुमेध के लिये बलि की जाती है ( ३-१२ ) ।

वैश्वदेव में ताजा अन्न ही काम में लिया जाय ( १३-१६ ) । वैश्वदेव मन्त्र के साथ हो या बिना मन्त्र के इसे किसी भी रूप में करना चाहिये ; क्योंकि इसको करनेवाला अन्नदोष से लिप्यायमान नहीं होता ( १७-२४ ) ।

७- पशुशूनाजनित पापों को जैसे, चूल्हा, पक्षी, जल भरने का स्थान, भाड़ आदि के दोषों को दूर करने के लिये इसकी बड़ी आवश्यकता है ( २५-३६ ) ।

वैश्वदेव को करने से सकल दोषों का निवारण होता है । नित्य होम का वजन सूतक एवं मृत्क में बताया

गया है। बन्धदेव के काल का वर्णन। वैश्वदेव माहात्म्य वर्णन (४०-८३)।

॥ विश्वामित्रस्मृति की विषय-सूची समाप्त ॥

## लोहितस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
	विवाहाग्नौ स्मार्तकर्मविधानवर्णनम्	२७०१

विवाहाग्नि में स्मार्त कर्मों का वर्णन। जिस स्त्री के साथ सर्वप्रथम गार्हस्थ्य सम्यन्ध जुड़ता है वह धर्मपत्नी है। उसके विवाह के समय की अग्नि का ही सभी कार्यों में उपयोग इष्ट है (१-११)। अन्य भावार्थों की अग्नि गौण है उनमें वेदोक्त एवं तन्त्रोक्त प्रयोग नहीं होना चाहिये। यदि उन्हें काम में भी लें तो अमन्त्रक ही प्रयोग होना चाहिये (१२-१६)।

सभी स्मार्त कर्म, स्थालीपाक, ध्राद्ध, या जो भी नैमित्तिक हो वह सारा प्रथम धर्मपत्नी की अग्नि में ही हो। (२०-२६)।

अनेकाग्निसंसर्गः २७०४

पुसर्ग अग्नियों का एकत्र संसर्ग का विधिपूर्वक

विधान ( ३० ) । यदि मोह से दूमरी पत्नियों की अग्नि में यागादि का विधान किया जाय तो वह निष्फल होता है ( ३१-३६ ) । इसके लिये फिर से मुख्य अग्नि की स्थापना कर फिर विधान करना लिखा है ( ३७ ) । यदि धर्मपत्नी कहीं बाहर चली जाय तो वह अग्नि लौकिक हो जाती है । अतः प्रातः मार्गकाल के नित्य हवन में धर्मपत्नी का उपस्थित रहना आवश्यक है ( ३८-४२ ) । सीमान्तर जाने पर उस अग्नि का फिर सन्धान ( स्थापना ) करना चाहिये ।

ज्येष्ठादिपत्नीनांतत्सुतानांजैष्यकानिष्ठयविचारः २७०५

सभी कार्यों में धर्मपत्नी की ज्येष्ठता मानी गई है भले ही दूमरी पत्नियों अवस्था में कितनी ही बड़ी क्यों न हों ( ४३-४५ ) । इसी प्रकार धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र ही कर्मादि करने में ज्येष्ठता प्राप्त करेंगे क्योंकि दूसरी, तीसरी आदि से उत्पन्न पुत्र तो कामज है ( ४६-५२ ) ।

अपुत्राया दत्तकविधानवर्णनम्

२७०७

दत्तपुत्र की जातपुत्र के समान स्नेहभाजनता एवं सम्पत्ति का अधिकार ( ५३-५४ ) । जिनके पुत्र न हों उन्हें अपने पुत्र के लिये प्रत्याय करनेवाले की प्रशंसा ( ५५-५६ ) । त्रिमूला पुत्र दत्तक लिया जाय उसे समाज

के प्रसुरर व्यक्तियों के सामने शत्रु, भाई-बन्धुओं को बुलाकर बिना पुत्र के माता को विधि-विधान से देना चाहिये। जो पुत्र समाज के गोत्र कुल में से दत्तकरूप में लिया जाय वास्तव में वह अपने पुत्र तुल्य है और अपुत्रक माता-पिता के लिये सर्वथा दैवपैत्र्य कार्य के लिये प्राह्य है। उस पुत्र का औरस पुत्रों के समान ही सारा अधिकार होता है (६०-७१)।

यदि दत्तक पुत्र लेने के बाद उन माता-पिता के सन्तान हो जाय तो वह चतुर्थ भाग का स्वामी होने का अधिकार रखता है (७२-७४)। जब आदि धर्मपत्नी के न रहने व पुत्र न होने पर दूसरी पत्नी से जो पुत्र होगा वही ज्येष्ठत्व का अधिकारी होगा और अवशिष्ट स्त्रियों की सन्तान कामज रहेगी (७५-८५)।

आत्मज सन्तान की ही औरसता कही गई है (८६-८७)। यदि कोई धर्मपत्नी के सन्तान न हुई उसने पति की इच्छा से दत्तक पुत्र लिया और संयोगवश फिर सन्तान हो गई तो दत्तक पुत्र को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में घरावर भाग मिलेगा। यदि दत्तकपुत्र और औरस पुत्र उपस्थित हो तो औरस पुत्र को ही पिता-माता के और्ध्वदेहिक कर्म करने का अधिकार है (८६-६८)।





से अपुत्रा विधवा स्त्री दत्तक ले ( २४३-२४४ )। जो निकट सम्बन्धी दो या दो से अधिक सन्तानवाला हो उसका कोई-सा भी पुत्र अपने लिये दत्तक लिया जा सकता है ( २४६ )। यदि कोई-सा भी लूला, लङ्गड़ा, गूंगा, बहुरा, अन्धा, काना, नपुंसक या कुष्ठ का दागी हो तो उसे लेना न लेना बराबर है ( २४७ )। यदि ऐसे विकलाङ्ग दत्तक लिये गये तो मन्त्र क्रिया आदि का लोप हो जाता है ( २४८-२५२ )। यदि समाज के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं परिवार के भाई-बन्धु जिसके लिये आज्ञा दें तो वह दत्तक सफल होता है ( २५३-२५७ )।

अपुत्रक का दत्तक लेना दौहित्र न उत्पन्न हो तब तक प्रामाणिक है बाद में यदि दौहित्र पैदा हो जाय तो वह अप्रामाणिक है।

मनु ने दौहित्रों में बड़े छोटे में किसी एकको लेने का विधान बताया है ( २५८-२६३ )। हां, ३ या ५, ६ पुत्रों में सभसे ज्येष्ठ और नवसे कनिष्ठ को छोड़ किसी एक को लिया जा सकता है ( २६४-२६६ )। यदि मोह से ज्येष्ठ को दत्तक ले लिया गया तो मौखी विवाह विधि के बाद वह अपने सगे पिता का ही पुत्र होने का अधिकारी है दूसरे का नहीं ( २६७ )। ऐसा दत्तक

## दौहित्रे सति पुत्रप्रतिग्रहाभावः

२७२२

दौहित्र होने पर पुत्रप्रतिग्रह नहीं करना, क्योंकि दौहित्र होने से अज्ञात पुत्र भी पुत्र ही है ( २२१-२२४ ) । किसी के सम्मिलित परिवार में अधिकतम धन के भागीदार की मृत्यु हुई यदि उसके पुत्री है और पुत्र नहीं है तो दौहित्र ही पुत्र के समान सभी कार्यों को करने व कराने का अधिकारी है ( २२५-२२८ ) । जो बुद्ध धन अपुत्रक का है उसका सारा दायित्व उस मृतक की लड़की के पुत्र का है ( २२९-२३० ) ।

## परधनापहारकाणां दण्डविधानवर्णनम्

२७२३

जो व्यक्ति किसी भी प्रकार से दूसरे के द्रव्य को अपहरण करने की अनधिकार चेष्टा करे उसे राजा स्वयं कड़ा दण्ड दे और उसे अपने देश से बाहर निकालने का आदेश दे ( २३१-२३५ ) ।

जो व्यक्ति धर्मसङ्गन राज्य की प्रतिष्ठा में पूर्ण सहयोग में उन्हें रक्षापूर्वक रचना चाहिये ( २३६-२४१ )

## पुत्रत्वम्याधिकारितावर्णनम्

२७२४

दौहित्र को पुत्रपद की योग्यता ( २४२ ) । अपने परिवार माता-पिता, भ्रष्ट पुत्र्य आदि की आज्ञा

से अपुत्रा विधवा स्त्री दत्तक ले ( २४३-२४४ )। जो निकट सम्बन्धी दो या दो से अधिक सन्तानवाला हो उसका कोई-सा भी पुत्र अपने लिये दत्तक लिया जा सकता है ( २४६ )। यदि कोई-सा भी लूला, लङ्गड़ा, गूंगा, बहरा, अन्धा, काना, नपुंसक या कुष्ठ का दागी हो तो उसे लेना न लेना बराबर है ( २४७ )। यदि ऐसे विकलाङ्ग दत्तक लिये गये तो मन्त्र क्रिया आदि का लोप हो जाता है ( २४८-२५२ )। यदि समाज के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं परिवार के भाई-बन्धु जिसके लिये आशा दें तो वह दत्तक सफल होता है ( २५३-२५७ )।

अपुत्रक का दत्तक लेना दौहित्र न उत्पन्न हो तब तक प्रामाणिक है बाद में यदि दौहित्र पैदा हो जाय तो वह अप्रामाणिक है।

मनु ने दौहित्रों में बड़े छोटे में किसी एकको लेने का विधान बताया है ( २५८-२६३ )। हां, ३ या ५, ६ पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ और न्यसे फनिष्ठको छोड़ किसी एक को लिया जा सकता है ( २६४-२६६ )। यदि मोह से ज्येष्ठ को दत्तक ले लिया गया तो मौखी विवाह विधि के बाद वह अपने सगे पिता का ही पुत्र होने का अधिकारी है दूसरे का नहीं ( २६७ )। ऐसा दत्तक

पुत्र होनेवाले के किसी काम का नहीं ( ३१५ ) । कई स्त्रियों के एक पति से पुत्र होना संभव और कर्मिक को छोड़ अन्य शिष्य तो गफल है ( ३१३ ) ।

एकपुत्रस्य स्त्रीकर्मनिषेधः

२७२७

एक पुत्र यदि पिता स्त्रीकर्म के हो और विधवा स्त्री उसे दत्तक ले उमर का निषेध ( २७२ ३१५ ) ।

विधवास्त्रीकृतपुत्रदण्डम्

२७२८

जो कोई सुता और दौहित्र को निम्नकार कर अन्य को दत्तक ले उमर राज्याविरोध विधान से दण्ड लागू करे ( ( २६०-२६६ ) ।

दौहित्रप्रशंसा

२७२९

दौहित्र की प्रशंसा ( २६५-३२३ ) ।

दौहित्रत्रैविध्यम्—

एक तन्मातामह गोत्री, दूसरा दौहित्र और तीसरा निर्दोष

विवाह में कन्याप्रदान के समय मातामह एवं पिता की प्रतिज्ञा के अनुसार होनेवाले सम्बन्ध से उत्पन्न सन्तान क्रमशः तन्मातामह गोत्री और दौहित्र है

दौहित्र की श्राद्धादि कर्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण से ज्येष्ठता ( ३३६-३४८ ) ।

प्रत्याब्दिकाकरणे प्रत्यवायः

२७३४

प्रतिवर्ष के श्राद्ध को न करने से प्रत्यवाय होता है, अतः जल, तण्डुल, उड़द, मूंग, दो शाक, पत्र, दक्षिणा, पात्र और ब्राह्मण ये दश श्राद्ध में उपयोग करने की वस्तुएं हैं, एक का लोप भी वाञ्छनीय नहीं । यदि आपत्काल हो तो उनके लिये अनुकल्प का विधान है ( ३४६-३६३ ) ।

श्राद्धद्रव्याभावेऽनुकल्पः

२७३५

घृत के दुर्लभ होने से तैल उसका प्रतिनिधि आज्य उसके अभाव में दूध और उसके न मिलने पर दही यदि ये भी न मिलें तो पिष्ट के जल से मिला कर होमकर्मादिक करे । या फिर प्राप्त मधु से सब काम सिद्ध करे, किसी भी रूप में फल, पत्र और सुद्रव्य आदि से श्राद्ध का कार्य किया जाय ।

इनके अभाव में आपोशानादिक क्रियायें जल से और अन्न से सम्पादन कर पिण्ड प्रदान करे और जल में विसर्जित करे अविशिष्ट को काम में लें फिर दूसरे दिन तर्पण करे ।

सुवागिनीनां शिशुःस्नानविधिः २७१

हरिद्रास्नानविधिः

सुवागिनी शिशुओं को पहल, रजोदशम, मङ्गल कार्ति, षण्ढाश्रमर्षा एवं यज्ञ के आदि न अन्न इत्यादि कार्यों में शीर्षमनान कहा है तथा हरिद्रा के कूर्णों को जल में प्रक्षेप कर स्नानविधि कही है ( १५०-१५१ ) ।

पतिव्रताधर्माः २७६

पति की सेवा बड़े में कहा धर्म ( १५३-१५० ) ।

दुराचाररतां रण्डां दृष्ट्वा प्रायश्चित्तवर्णनम् २७६

दुष्ट चरित्र युक्त रण्डाओं के देखने में प्रायश्चित्त का विधान कहा है ( १५१-१६६ ) ।

नानादण्ड्यकर्मसु दण्डविधानवर्णनम् २७६

नानादण्ड्य कर्मों में दण्डविधान का वर्णन ( १६७-७०६ ) ।

नयप्राप्तराज्ये सर्वेषां सुखित्ववर्णनम् २७६

नयप्राप्त राज्य में सभी के सुखी रहने का वर्णन ( ७१०-७२१ ) ।

॥ लोहितम्पत्रि ॥

## नारायणस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
१	नारायणदुर्वासोः सम्वादः नारायण दुर्वासा का सम्वाद ( १—६ ) ।	२७७०
	महापातकोपपातकवर्णनम् महापातक और उपपातकों का वर्णन ( ७—१६ ) ।	२७७१
	प्रतिग्रहपापप्रायश्चित्तवर्णनम् प्रतिग्रहजनित पाप के प्रायश्चित्त का वर्णन ( १६-४१ ) ।	२७७३
२	बुद्धिकृताभ्यामकृतपापानां प्रायश्चित्तवर्णनम् बुद्धिकृत और अभ्यामकृत पापों के प्रायश्चित्त का वर्णन ( १-७ ) ।	२७७४
३	नानाविधदुष्कृतिनिस्तारोपायवर्णनम् नाना प्रकार के पापों के निस्तार का उपाय ( १-१६ ) ।	२७७५
४	प्रायश्चित्तवर्णनम् प्रायश्चित्तों का वर्णन ( १-११ ) ।	२७७७
५	दुष्प्रतिग्रहादिप्रायश्चित्तवर्णनम् पाप समाप्ति का गति का वर्णन ( १-२६ ) । पापादि को दूर करने के लिये मह्य कर्मस्थापन का विधान ( ३०-४६ ) ।	२७७६



- | अध्याय | प्रधान विषय   | पृष्ठा |
|--------|---|--------|
| ६      | सहस्रकलशाभिषेकः<br>सहस्र कलशों से अभिषेक का वर्णन ( १-७ ) ।   | २७८    |
| ७      | कलौ नौयात्राद्यष्टकर्मणां निषेधः<br>कलियुग में विधवा का पुनः बट्टाह, नाव से यात्रा, मधुपर्क में पशु का बध, शूद्रान्नभोजिता, सद्य वर्णों में भिक्षा मांगना, ब्राह्मणों के घरों में शूद्र की पाचनक्रिया, भृग्वमिपतन वर्जित है ( १-५ ) । वेन के पास ऋषियों का अनुरोधपूर्ण आवेदन ( ६-३३ ) । | २७८    |
| ८      | अष्टनिषिद्धकर्मणां प्रायश्चित्तवर्णनम्<br>धनाह्य व्यक्तियों को आठ निषिद्ध कर्मों के करने से सहस्र कलशास्नान, पञ्चवारुण होम, गायत्री पुरश्चरण, महादान और सहस्र ब्राह्मण भोजन इत्यादि प्रायश्चित्त बतलाये हैं ( १-१४ ) ।  | २७८    |
| ९      | धनहीनाय प्रायश्चित्तवर्णनम्<br>धनहीन के लिये प्रायश्चित्त का विधान—बह शिखा महिन मुञ्चिन हो पुण्यतीर्थ में, या तालाब में, आकण्ठ जल में मग्न हो अघमर्षण जाप करे ( १-१६ ) ।<br>॥ श्री मारायणामृति की मंत्रिय विषय-मूची ममात्त ॥  | २७९    |

## शाण्डिल्यस्मृति के प्रधान विषय

नाम	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
आचारवर्णनम्	आचार के विषय में मुनियों का शाण्डिल्य से प्रसंग- त्तर ( १-१२ ) ।	२७६३
द्विविधादेहगुद्विवर्णनम्	दो प्रकार की देह गुद्धि का वर्णन । दूसरे की निन्दा पारुष्य, विवाद, झूठ, निजपूजा का वर्णन, अतिबन्ध प्रलय, अमहा एवं मर्म वचन, आक्षेप वचन, अमन् शास्त्र एवं दुष्टों के माध संभाषण इत्यादि दुर्गुणों को त्याग कर स्वाध्याय, जप में रत, मोक्ष एवं धर्म के कार्य में निरन्तर लगाना प्रिय बोलना, सत्य एवं परहितकारी वचनों का उच्चारण करना ऐसी बहुत-सी गुद्धियों का वर्णन । शिर, कण्ठ आँसू और नासिका के मल को दूर करना यही सर्वाङ्गीण गुद्धि यत्नाई है (१८-२६) ।	२७६५
ज्ञानकर्मभ्यां हरिरेवोपास्य इतिवर्णनम्	धर्म की हानि नहीं करनी चाहिये, मर्मक ही करे । धर्म एवं अधर्म गुण य दुःख के कारण है । यही मना- तन धर्म शास्त्र है अन्य मद्य भ्रामक हैं तथा नाशक व राजक है, यही सारिबक है । वेद, पुरान एवं उपनिषदों	२७६७

में 'इहं देवमिह इत्यन्तः ११' के अर्थ में 'यही देव-शक्ति है। साक्षात्कारके देव-शक्ति की शक्ति को असाधना मर्योगम है। देव-शक्ति और शक्ति का विचार उन्ही में है।

साक्षात्कार पर ध्यान सर्वकारणमन्त्रवत् ।  
 देवर्षीणां एतान्ते सर्वे मन्त्रावकाशिनः ॥  
 देवा मनुष्याः पशवो मृगाश्चिमादन्त्याः ।  
 सर्वमेतान्मन्त्रानुवांसुर्देवाय विमृश ॥

ज्ञान एवं कर्म से भगवान की ही आराधना मर्योग-  
 त्तम है। यही ज्ञान है, यही मन्त्रम है एवं यही मन्त्रात्म  
 है। जो भगवान् के चरणारविन्दों की सेवा नहीं  
 करते हैं वे शोचनीय हैं ( ४०-५६ ) ।

सात्त्विकराजसतामसगुणानां वर्णनम्

२७६६

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है एवं जगत् की कारणभूता है।  
 सम्पूर्ण संसार देव, असुर और मनुष्य इषी के विकार  
 हैं। इस प्रकार सात्त्विक राजस और तामस गुणों का  
 संक्षेप से वर्णन ( ६०-७० ) ।

देश शुद्धि का वर्णन—जहाँ म्लेच्छ पापण्डीन होधार्मिक  
 तथा भगवद्भक्तिपरायण मनुष्य रहते हों और हिंसक  
 जन्तुओं से शून्य हो वह स्थान शुद्ध है ( ७१-८२ )

ध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
	भगवत्पूजनविधिवर्णनम्	२८०१

सात प्रकार की शुद्धि कर भगवत्पूजापरायण होना चाहिये । प्रथम शरीर को तपस्यादि से शुद्ध करे अशक्त हो तो दान करे और दोनों में ही असमर्थ हो तो नामसंकीर्तन करना चाहिये ( ८३-६५ ) । उपवास, दान, भगवद्भक्तों के सेवन, संकीर्तन, जप, तप और ध्याना द्वारा शुद्धि होती है ( ६६-१०१ ) ।

पराविद्याप्राप्त्यर्थमधिकारिगुरुशिष्यवर्णनम् २८०३

विद्या की प्राप्ति के लिये आचार्य का वरण और अधिकारी शिष्य का वर्णन ( १०२-११० ) ।

मन, वाणी और कर्म से भी शिष्य अपने गुरु का अहित न विचारे कभी उनके सामने प्रमाद न करे किसी भी प्रकार की उद्विग्नता उत्पन्न करनेवाले भाव, विचार, इच्छा व कर्मों को न करे । शिष्य मूढ़ पाप-रत, क्रूर, वेदशास्त्रों के विरोधी लोगों की सङ्गति न करे इससे भक्ति में विघ्न होता है ( ११३-१२२ ) ।

२ प्रातःकृत्यवर्णनम् २८०४

ऋषियों का प्रातः कृत्य के विषय में प्रथम और महर्षि शाण्डिल्य द्वारा ह्यान सन्ध्या आदि को लेकर विस्तार से प्रातः काल के कर्तव्यों का वर्णन । शय्या को छोड़ने

के बाद सर्व प्रथम भगवान् गोविन्द के दिव्य नामों का सङ्कीर्तन करते हुए वस्त्र और दण्डादि कमण्डलु लेकर अपने मस्तक पर कपड़ा बांध कर मल-मूत्र त्याग करने के लिये गांव के बाहर जावे। पेशाब, मीथुन, स्नान, भोजन, दन्तधावन, यज्ञ और सामूहिक हवन में मौन धारण करने की विधि है। यज्ञोपवीत को दाहिने कान पर टांग कर मल-मूत्र का त्याग करना चाहिये ( १-६ )। मलमूत्र करने में जो स्थान वर्जित हैं उनका परिगणन ( १०-१२ )।

मल-मूत्र त्याग के समय, देवता, शत्रु, शिष्य, अग्नि, गुरु, वृद्ध पुरुष और स्त्री को न देखे। अधिक समय तक मल-मूत्र न करे केवल आकाश, दिशा, तारा, गृह और अमेध्य वस्तुओं को देखे ( १३-१४ )। मिट्टी से गुदा और लिङ्ग को जल से धोवे। फिर हाथ धोकर दन्तधावन करे। स्नान के लिये तीर्थ, समुद्रादि, तालाब, कूप और भरणे का जल विशेष प्रयोजनीय है ( १५-२० )। जल को अर्धों से अधिक न पीटे न जल में बुझा किया जाय और देह का मल भी जल में न छोड़ा जाय फिर पादर आकर मन्थ्या कर्म के लिये स्थान को धोवे और चण्डे चन्दे ( २१-२८ )। स्नान स्मरण के साथ निम्न कृषों का ध्यान -

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
३	उपादानविधिवर्णनम्	२८१३

द्वितीयकाल में करने योग्य भगवत्पूजन आदि का वर्णन । भक्ति का लाभ जो श्रद्धालु एवं अपवर्ग के मुख को जाननेवाले हैं उन्हें ही मिलता है ( १-४६ ) ।

वाह्य और आभ्यन्तर शुद्धियों का वर्णन । भोजन को अग्निदेव के समर्पण करने का वर्णन ( ५०-६० ) । पाक में निषिद्ध वृक्षों का इन्धन जलाने के लिये परिगणन ( ६१-१०८ ) । निषिद्ध और ग्रहण योग्य वस्तुओं का वर्णन ( १०६-१२० ) ।

ग्राह्य और निषिद्ध पय का वर्णन ( १२१-१३५ ) । भोजन बनाने में कुशल सती स्त्री एवं निषिद्ध स्त्रियों के लक्षण ( १३६-१५० ) ।

स्त्री के साथ मद्ब्यवहार का वर्णन ( १५१-१५८ ) । इस प्रकार भगवत्प्रीत्यर्थ उपादानों का उपयोग कर गृहस्थ सुखी होता है ( १५८-१६३ ) ।

४	इज्याचारवर्णनम्	२८२६
---	-----------------	------

एक देव की पूजा ही श्रेष्ठ है, भगवद्भक्ति विषयक नियमों का विस्तार से वर्णन । भागवनों की सदा पूजा करनी चाहिये । विष्णुभक्त गृहस्थों के कर्मों का वर्णन भगवत्पूजा प्रकार, सत्त्वस्त्रियों के भक्षण पठन का महत्त्व

वर्णन, योगविधि का वर्णन, उपवास की प्रशंसा  
( १-२५० ) ।

### ५ रात्रावन्ययामं योगहन्यवर्णनम्

२८१

भगवत्पूजा करने का विधान । योगधर्म का वर्णन ।  
भगवद्भक्त के शील्यचार का निरूपण सभी कर्मों को  
भगवद्दर्पण बुद्धि से करनेवाले मनुष्य का जन्म मान्य  
होता है । शास्त्र की प्रशंसा ( १-८१ ) ।

॥ शाण्डिल्यस्मृति की विषय-मूर्त्ति समाप्त ॥

## कण्वस्मृति के प्रधान विषय

धर्मसंस्कारवर्णनम्

धर्मकर्त्तव्यवर्णनम्

नित्यनैमित्तिककर्मणां फलनिर्णयः

नित्यकृत्यवर्णनम्

प्रातःस्मरणे कीर्त्यानां वर्णनम्

पाने भक्षणेषु शब्देकृते प्रायश्चित्तवर्णनम्

युगभेद से मद्यवेना आदि ऋषियों ने कण्व ऋषि से

सनातन धर्मों के विषय में पूछा ( १-१ ) ।

२८६०

२८६१

२८६३

२८६५

२८६७

२८६९

कण्व द्वारा धर्मसार का निरूपण

धर्मकर्तव्यवर्णन—जिस व्यक्ति की बुद्धि ऐसी है कि क्रिया, कर्ता, कारयिता, कारण और उसका फल सब कुछ हरि है वही स्थिर बुद्धि का है, उसका जीवन सफल है ( ६-१० )। परमेश्वरप्रीत्यर्थ किया हुआ कर्म ही सफल है। सत्सङ्कल्प एवं उसका फल ( ११-६१ )। नित्य-नैमित्तिक कर्मों का फल निर्णय ( ४-५० )। नित्यकृत्य का वर्णन ( ५१-७४ )। प्रातःकाल में स्मरण करने योग्य कीर्त्य महानुभावों का वर्णन ( ७५-८० )।

प्रातः शौचस्नानादि क्रियाओं का वर्णन ( ८१-६४ )। गण्डूप के समय शब्द का निषेध और उसका प्रायश्चित्त का वर्णन ( ६५-६७ )। भक्षण एवं खाने के समय भी शब्द करने का निषेध ( ६८-१०४ )। मूत्र पुरीषोत्सर्ग में गण्डूप के बाद आचमन का विधान ( १०५-११६ )। गृहस्थों का मृत्तिका शौच का विधान ( ११७-१२६ )। शुभकर्मों में सर्वत्र आचमन का विधान ( १२७-१४० )। नित्यकर्मों में उलट-पेर करने से फल नहीं होता है ( १४१-१५० )।

ज्ञान के समय आवश्यक कृत्य जैसे सन्ध्या, अर्घ्य, मायत्री मन्त्र का जप देवर्षिपितृनुर्पण, स्नानाद्गतर्पण अथवा करने चाहिये ( १५१-१५८ )। कण्ठस्नान,





अध्याय                      प्रधान विषय                      पृष्ठाङ्क

वर्णन ( ३४०-३४६ ) । नित्य होम एवं अग्नि के उप-  
स्थान का विधान ( ३५०-३५० ) ।

पञ्चपाक न करने की अवस्था में विकल्प का विधान  
( ३६१-३७१ ) । पथ्यमहायज्ञों का निरूपण ( ३७२-  
३८३ ) । ब्रह्मवेदाध्ययन में अधिकारी होने का वर्णन  
( ३८४-३९४ ) । ब्रह्मज्ञान की एक साधना का उपा-  
सनाक्रम प्रयोग ( ३९५-४१४ ) । अग्निहोत्र, दशादि  
एवं आम्रयण, सौत्रामणि और पितृयज्ञों का निरूपण  
( ४१५-४२६ ) ।

वेदों के अनभ्यास से मानव-चरित्र का सांस्कृतिक  
विकास सदा के लिये रुक जाने से राष्ट्र की अवनति  
होती है ( ४२७-४३३ ) । चित्तशुद्धि के लिये वेदोक्त  
मार्ग ही श्रेयस्कर है ( ४३४-४३७ ) । चार पितृ कर्मों  
का वर्णन, उन्हें यथाशक्ति करने का आदेश ( ४३८-  
४४३ ) । विविध ऋणों से छुटकारा पाने का प्रकार  
( ४४४-४६८ ) ।

वैदिक कर्मों की तुलना में अन्य कार्यों का गौणत्व  
वर्णन एवं दिव्य भाषा की योग्यता ( ४६९-४७७ ) ।  
नित्यनैमित्तिक कर्मों में विष्णु का आराधन वर्णन  
( ४७८-४८१ ) । दौत्रांशण्य से मनुष्य सदा दूर रहे  
( ४८३-४८८ ) । अग्निहोम और अतिरात्रों का अनुष्ठान



अध्याय                      प्रधान विषय                      शृंखला

घर्णन ( ३४०-३४६ ) । नित्य होम एवं अग्नि के उप-  
स्थान का विधान ( ३५०-३५० ) ।

पशुपाक न करने की अवस्था में विकल्प का विधान  
( ३६१-३७१ ) । पशुमहायज्ञों का निरूपण ( ३७२-  
३८३ ) । ब्रह्मवेदाध्ययन में अधिकारी होने का वर्णन  
( ३८४-३९४ ) । ब्रह्मज्ञान की एक साधना का उपा-  
सनाक्रम प्रयोग ( ३९५-४१४ ) । अग्निहोत्र, दशादि  
एवं आप्रयण, सौत्रामणि और पितृयज्ञों का निरूपण  
( ४१५-४२६ ) ।

वेदों के अनभ्यास से मानव-चरित्र का सांस्कृतिक  
विकास सदा के लिये रुक जाने से राष्ट्र की अवनति  
होती है ( ४२७-४३३ ) । चित्तशुद्धि के लिये वेदोक्त  
मार्ग ही श्रेयस्कर है ( ४३४-४३७ ) । चार पितृ कर्मों  
का घर्णन, उन्हें यथाशक्ति करने का आदेश ( ४३८-  
४४३ ) । विविध ऋणों से छुटकारा पाने का प्रकार  
( ४४४-४६८ ) ।

वैदिक कर्मों की तुलना में अन्य कार्यों का गौणत्व  
घर्णन एवं दिव्य भाषा की योग्यता ( ४६९-४७७ ) ।  
नित्यनैमित्तिक कर्मों में विष्णु का आराधन वर्णन  
( ४७८-४८१ ) । दौर्भाग्य से मनुष्य सदा दूर रहे  
( ४८३-४८८ ) । अग्निहोम और धनिरात्रों का अनुष्ठान

श्रेयस्कर है, मत्स्यसोम मन्था के पाकयज्ञों का विधान ( ४८६-४६४ ) । इन अनुष्ठानों को न करने से प्रत्य-  
 वायिक दोषों का निरूपण ( ४६५-४६७ ) ।

ब्रह्मचारी के नित्यकृत्यों का वर्णन ( ४६८-५०२ ) ।  
 जातकर्म, चौल, प्राजापत्य, उपाकर्म आदि का विधान  
 ( ५०३-५१३ ) । भिन्न-भिन्न अनुवाकों का वर्णन  
 ( ५१४-५२६ ) । नाना काण्डों का वर्णन ( ५२६-५३७ ) ।  
 ब्रह्मचारी वेदग्रन्थों का सम्पादन कर विधिपूर्वक स्नातक-  
 धर्म में दीक्षित हो ( ५३८-५४६ ) । गृहस्थ में प्रवेश के लिये  
 लक्षणवती स्त्री से विवाह और उसके साथ वैदिक  
 विधि से गृहप्रवेश व अग्निहोत्र का विधान ( ५४०-५४५ ) ।  
 गुनि होम का विधान ( ५४६-५५८ ) । औषामन कृत्यों  
 का वर्णन ( ५४६-५४४ ) । गृहस्थ के लिये नित्य कर्तव्य  
 विधि का वर्णन ( ५४५-५५३ ) । फिर इष्ट कर्तव्य एवं  
 अनिष्ट कर्तव्यों का परिगणन ( ५५४-५६० ) ।

प्रातःकाल से सायंकाल तक के कर्तव्यों का निर्देश  
 ( ५६३-५७३ ) । गृहस्थ भगवान् लक्ष्मीनारायण का  
 ज्ञान माँस करे । गृहस्थ को धानेवाले सभी मरमान्य  
 गुरुजन अनिष्टि एवं विगिष्टि जनों को पूजा का विधान  
 ( ५७४-५८० ) । अगुण्ट पादों का विधान और उनके  
 बानेवाले भी पुरुषों का वर्णन ( ५८१-५८७ ) । पंक्ति-

घर्ष्य भोजन में दोष वर्णन ( ६०२-६०५ ) । गृहस्थ के लिये पठनीय एवं करणीय विधान ( ६०६-६१३ ) ।

कन्दमूल फल जो भक्ष्य हैं उनका विधान ( ६१४-६१६ ) ।

यज्ञों का ब्रह्मज्ञान के समान फल वर्णन ( ६२०-६३६ ) । गोश्लोम के विधान का वर्णन ( ६३७-६५६ ) ।

ब्राह्मणादि का पूजन ( ६५७-६७७ ) । पुत्रविवाह से

पुत्रों विवाह की विशेषता । सुपात्र में कन्यादान पुत्र से माँ गुणा अधिक बनाया है ( ६७८-७०० ) । गोत्रपरि-

वर्तन के सम्बन्ध में नाना मत ( ७०१-७२२ ) । वंश के उद्धार के लिये दत्तक पुत्र का विधान ( ७२३-७४३ ) ।

दत्तक में दीहित्र की योग्यता ( ७४४-७५५ ) । श्राद्धकृत्य में निर्दिष्ट का अन्य कृत्य नियोजन में निषेध ( ७५६-७८६ ) ।

एक काल में बहुत से श्राद्ध आने पर कृत्यों का सम्पादन प्रकार ( ७८६-७८८ ) । ब्रह्मवेदी ब्राह्मण का माहात्म्य

( ७८९-७९२ ) । कण्वस्मृति का फल वर्णन ।

॥ कण्वस्मृति की विषय-सूची समाप्त ॥

# दाल्भ्यस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठ

दाल्भ्यस्मृति कर्षाणां धर्मविवाहः प्रथमः

२६३

पांडुश्राद्धवर्णनम्

२६३

दाल्भ्य से श्रुतियों का धर्माधर्म विशेष, मातृशुद्धि-  
मातृशुद्धि, श्राद्धकालादि के सम्बन्ध में प्रथम श्राद्धों को  
लेकर दाल्भ्य द्वारा विशेष प्रमाणा, पितरों के तर्पण का  
विधान ( १-१६ । १६ श्राद्धों का वर्णन ( २०-४१ )।  
श्राद्ध में निषिद्ध कर्मों का परिगणन ( ४२-५४ )।  
श्राद्ध में भोजन करनेवाले के लिये आठ यन्त्रों का  
त्याग ( ५५-५६ )। श्राद्धकरण में पुत्र का अधिकार  
( ६०-६७ )।

शस्त्रहतकानां श्राद्धदिनवर्णनम्

२६४

नाना सम्बन्धियों के भिन्न-भिन्न दिनों में श्राद्ध का  
विधान। शस्त्र हतक के श्राद्ध दिन का वर्णन ( ६८-७० )।  
मृतक का श्राद्ध दिन अविदित हो तो एकादशी को  
श्राद्ध किया जाय ( ७१-८० )।

आम श्राद्ध के करने का विधान ( ८१ )। पहले  
माता का श्राद्ध फिर पितरों का फिर मातामहों का  
( ८२-८५ )। शस्त्रहतक का श्राद्ध — स्पर्श करने

अध्याय                      प्रधान विषय                      पृष्ठांश

से स्नान और भोजन करने से कृच्छ्रसान्त्वयन का विधान । जो घण्टाली में अकाम से गमन करे उसके लिये सान्त्वयन एवं दो प्राजापत्य का विधान । मकाम घण्टाली गमन करनेवाले को घान्द्रायण और दो तमकृच्छ्र का प्रायश्चित्त करने का विधान ( ८६-९६ ) । गोहत्यावाले के लिये प्रायश्चित्त का विधान ( ९७-१०२ ) । रोध, घन्धन, अतियाह और अविदोह का प्रायश्चित्त विधान ( १०३-१०८ ) । वृषभ की हत्या का प्रायश्चित्त ( १०९-११० ) ।

गोदोहन का नियम—दो महीने बड़ड़े को पिलावे व दो मास दो स्तनों का दोहन करे तथा दो मास एक वक्त शीव समय में अपनी इच्छा हो वैसे करे ।

द्वीमासौ पाययेद्वत्सं द्वी मासौ द्वीस्तनौ दुहेत् ।

द्वीमासौ चैकवेलायां शीवं कालं यथेच्छया ॥१११॥

किन-किन स्थानों में प्रायश्चित्त नहीं लगता इसका वर्णन ( ११२-११३ ) । किन-किन को प्रायश्चित्त न करने का पाप लगता है ( ११४ ) । आशौच का निर्णय वर्णन ( ११५-१२१ ) । किसी हीन से सम्पर्क करने में दोष कहा है ( १२२-१२३ ) । स्तक और मृतक के आशौच का विधान ( १२४-१२६ ) ।





शोध का विशेष रूप से पर्जन—शुद्धि एवं मूत्रक-  
 य का आरम्भ कथ से माना जाय इमका निर्णय ।  
 रा के मरने पर तीन रात के बाद शपथमं का कार्य  
 न किया जाय । शुद्धाशुद्धि का वर्णन ( १४१-  
 १ ) शुद्धाशुद्धि कही नहीं होती इमका वर्णन  
 ) । दिन में वैध की छाया में, रात्रि में दही  
 के कृशों में मज्जरी में आयेले के पेड़ में अलक्ष्मी  
 ती है अतः इनका सेवन न करे ( १६४ ) । शूर्प  
 के दद्या, नग से जलविन्दु का प्रक्षण वेसा एवं यत्र  
 पड़ेका जल और शूर्प के साथ सुहारी इनसे पूर्वज्ञ  
 नास होता है ( १६५ ) । जहाँ कहीं भी शुद्धि की  
 जा हो वहाँ-वहाँ निलों से होम एवं गायत्री  
 तप से शुद्धि कही गई है ( १६६ ) । दाल्भ्यमृति  
 का कल ( १६७ ) ।

दाल्भ्यमृति की विषय-सूची समाप्त ॥

## आग्नीननिर्णयवर्णनम्

२६४३

वाल, शिशु एवं कुमार की परिभाषा ( १३० ) ।  
 विवाह, पौल और उपनयन में यदि माना रजम्बला  
 हो जाय तो शुद्धि के बाद मङ्गल कार्य करे ( १३१-१३२ ) ।  
 कोई कार्य प्रारम्भ हो और सूतक का आशौच हो जावेतो  
 उस कार्य के सम्पादन का विधान ( १३४ ) । श्राद्धकर्म  
 उपस्थित होने पर निमन्त्रित ब्राह्मण आवें तो सूतक का  
 आशौच नहीं लगता व उस कार्यके सम्पादन का विधान  
 ( १३५ ) ।

## देशान्तरपरिभाषावर्णनम्

२

ब्राह्मणों के भोजन करते हुए यदि सूतक हो जाय त  
 दूसरे के घर से जल लाकर आचमन करा देने से शुद्धि  
 हो जाती है ( १३७ ) । देशान्तर में यदि कोई सपिण  
 मर जाय तो सद्यः स्नान से शुद्धि कही गई है ( १३८ )  
 देशान्तर की परिभाषा ६० योजन दूर या २४ योज  
 अथवा ३० योजन दूर को देशान्तर बताया है व  
 घोली का अन्तर या पर्वत का व्यवधान तथा महानदी  
 बीच में पड़ जाती हो तो देशान्तर कहा जाता है  
 ( १३६-१४० ) ।

## शुद्धाशुद्धिघर्णनम्

२६४७

आशौच का विशेष रूप से घर्णन—मृतक एवं मृतक आशौच का प्रारम्भ कब से माना जाय इसका निर्णय । रजस्रला के मरने पर तीन रात के बाद शवधर्म का कार्य सम्पादन किया जाय । शुद्धाशुद्धि का घर्णन ( १४१-१६३ ) । स्पृष्टास्पृष्टि कहीं नहीं होती इसका घर्णन ( १६३ ) । दिन में कैथ की छाया में, रात्रि में दही एवं शमी के वृक्षों में सप्रमी में आवले के पेड़ में अलङ्करी सदा रहती है अतः उनका सेवन न करे ( १६४ ) । शूर्प (सूप) की हवा, नख से जलचिन्दु का ग्रहण केश एवं वस्त्र गिरे हुए घड़ेका जल और कूड़े के साथ बुहारी इनसे पूर्वकृत पुण्य का नाश होता है ( १६५ ) । जहाँ कहीं भी शुद्धि की आवश्यकता हो वहाँ-वहाँ तिलों से होम एवं गायत्री मन्त्र के जप से शुद्धि कही गई है ( १६६ ) । दाल्भ्यस्मृति के सुनाने का फल ( १६७ ) ।

॥ दाल्भ्यस्मृति की विषय-सूची समाप्त ॥

# आङ्गिरसस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

## पूर्वाङ्गिरसम्

आङ्गिरसम्प्रति ऋषीणाम्प्रश्नः— २६

आङ्गिरस से ऋषियों का प्रश्न ( १ ) । धर्म का स्वरूप वर्णन ( २-४ ) । वैदिक कर्मों को पुराणोक्त मन्त्रों से न करे ( ५-६ ) । मन्त्र के अभाव में व्याहृतियों को काम में लिया जाय । व्याहृतियों का महत्त्व वर्णन ( ७-१४ ) । जात कर्मादि संस्कारों का अतिक्रम होने पर प्रायश्चित्त ( १५-२१ ) ।

भाटपाकानन्तरमाशौचे निर्णयः २६

भाटपाक के बाद यदि आशौच हो जाय तो विधान । उम क्रिया के करने में ऋत्विक्गण को यह बाधक नहीं हो सकता ( २२-२४ ) । पाकाग्भ के बाद यदि आम पाम में कोई मूत्र्य हो तो भाट दूषित नहीं होता ( २५ ) । पाकाग्भ में पूर्व भी यदि कोई मूत्र्य हो तो वह न करे ( २६-२८ ) । दश पूर्णमास इष्टि पशुबन्ध के अनन्तर भाट ( २९-३३ ) । महादीक्षा में भाट ( ३४-३६ ) । गर्वदीक्षा में भाट ( ३७-३९ ) । दीक्षा-  
में भाट ( ४०-४२ ) । दीक्षा के बीच में मूत्र्य

होने से नहीं होता ( ४१-४३ )। वैदिक कर्म का प्राचल्य ( ४४ )। सूतिकाशौच एवं मृतकाशौच में वैदिक कर्म न करे, अस्पृश्यता आवश्यक है ( ४५-४८ )। सतत आशौच होने पर श्राद्ध करने के लिये उस ग्राम को छोड़ दूसरे ग्राम में जाकर श्राद्ध करे ( ४९-५५ )।

### शिखानिर्णयवर्णनम्

२६५५

शत्रु के द्वारा छिन्न शिखा हो जाने पर गौ के पुच्छ के समान बाल रखकर प्राजापत्य व्रत कर संस्कार से शुद्धि कही गई है ( ५६-५७ )। मध्यच्छेद में भी वही बात है ( ५८ )। रोगादिसे नष्ट होने पर भी पूर्ववत् विधान है ( ५८-६० )। ५० वर्ष की अवस्था में शिखा न रहने पर आस-पास के बालों को शिखा के समान मान ले ( ६१-६३ )। पांच बार शत्रु से शिखा छेद होने पर ब्राह्मण्य नष्ट हो जाता है ( ६४-६६ )। सूतकादि से श्राद्ध में छिन्न होने से स्त्री संभोग होने पर गर्भ रहे तो मल्लहत्या व्रत का विधान ( ६६-६९ )। त्रिप्रायक श्राद्ध का वर्णन ( ७१-७६ )। लाजहोम से पूर्व यदि बधूरजस्वला हो तो "हविष्मती" इत मन्त्र से सौ कुम्भों के विधान से स्नान कर बधूरजस्वला से शुद्धि ( ७७-८१ )। लाजहोम के बाद होने पर स्नान करा-

कर अवशिष्ट निर्मन्त्रक विधि करे और शुद्ध होने पर समन्त्रक विधि यथावन् करे ( ८०-८४ ) ।

औषासन अभी आरम्भ न हो और दूसरे दिन रजस्वला हो तो उसी प्रकार अमन्त्रक विधि एवं शुद्ध होने पर मन्त्रोच्चारण के साथ क्रिया करे ( ८५-६३ ) । आशौच में नित्यनैमित्तिक कर्मों का वर्जन ( ६४-६५ ) । इनसे प्रेतकृत्य का नाश होता है अतः वर्जित है ( ६५-६७ ) । अत्यन्याय, अतिद्रोह और अनिक्कूरता कलि में भी वर्जित है । अति अक्रम और अतिशास्त्र भी वर्जित है ( ६८-१०३ ) ।

जीवत्पितृक पिण्ड पितृ यज्ञ श्राद्ध का वर्जन ( १०४-१०७ ) । पिता यदि सन्यास ले ले तो पातित्यादि दूषित होने पर उनके पितादि के श्राद्ध का विधान ( १०८-११७ ) । इसी प्रकार चाचा आदि की स्त्रियों का ( ११८-१२० ) । गौणमाता के श्राद्ध का विधान ( १२१-१२५ ) । श्राद्धाधिकार और श्राद्धकर्ता गौणपिता के लिये भाई का पुत्र सपत्नीक कृतक्रिय भी पुत्र सञ्ज्ञा पाना है ( १२६-१२६ ) । गोत्र नाम का अनुबन्ध व्यत्यास होने पर फिर कर्म करे ( १३०-१३२ ) ।

अनाथप्रतमंस्कारेऽश्वमेधफलवर्जनम्

२२६३

कर्ता के दूर होने पर प्रेष्यत्व करे ( १३३-१३४ ) ।

अन्य से करने पर, चाहुमात्रदान करने पर श्राद्धमात्र होता है (१३५-१३८)। भ्रष्ट एवं पतितों का घट स्फोटन का अधिकार (१३६-१४०)। अनाथप्रेत के संस्कार करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है व प्रेत के संस्कार न करने में दोष (१४२-१४३)। विप्र की आज्ञा से यतिकृत्य (१४४-१४७)। कर्ता के निकट होने पर अकर्तृकृत को फिर करे (१४८)। असगोत्रों के संस्कार में आशौच (१४६)। माता-पिता के मृताह का परित्याग होने पर प्रायश्चित्त (१५०-१५१)। नदी स्नान से निष्कृति या संहिता पाठ से (१५२-१५६)। वेदमहिमा (१५७-१५६)। ब्राह्मण का वेदाधिकार (१६०-१६३)।

स्नान का सब विधियों में प्राधान्य (१६४)। सम्पूर्ण कार्यों में स्नान ही मूल कारण बताया है (१६५-१६७)। अस्पृश्य स्पर्शनादि कर्माङ्गस्नान (१६८-१७१)। वमन में स्नान (१७२)। वमन में स्नान न कर सके तो यस्त्र बदल ले (१७३-१७४)। शाकमूलादि के वमन में स्नान (१७५-१७६)। रात्रि में वमन में स्नान (१७७)। अपने गोत्र के छोड़ने पर अन्य गोत्र के स्वीकार करने का दोष (१७८-१७९)। अर्धोदय, महोदय एवं योग का विधान (१८०-१८३)। स्त्री के पत्यन्य के साथ चितारोहण होनेपर पुत्र का कृत्य (१८५-१८९)।



कर अवशिष्ट निवेद्यक विधि को और इष्ट होने पर समन्वय विधि गभाव्य करे ( ८०-८५ ) ।

औरतगण अभी आशुभ न हो और दूधों दिन रक्षापला हो तो उगी प्रकार समन्वय विधि एवं इष्ट होने पर मन्त्रोच्चारण के साथ चिदा करे ( ८२-८३ ) । आशीष में निगवर्णमिणिक कर्मों का वर्जन ( ८५-८६ ) । इनसे प्रेनचूय का नाश होगा है अतः वर्जित है ( ८६-८७ ) । अत्यन्याय, अनिष्टोद और अनिष्टरणा कर्मों में भी वर्जित है । अति अशुभ और अनिराग्य भी वर्जित है ( ८८-१०३ ) ।

जीवत्पितृक पिण्ड पितृ यज्ञ भ्राट्र का वर्जन ( १०४-१०७ ) । पिता यदि सन्यास ले ले तो पानित्यादि दूषित होने पर उनके पितादि के भ्राट्र का विधान ( १०८-११७ ) । इसी प्रकार चाचा आदि की स्त्रियों का ( ११८-१२० ) । गौणमाता के भ्राट्र का विधान ( १२१-१२२ ) । भ्राट्र-धिकार और भ्राट्रकर्ता गौणपिता के लिये भाई का पुत्र सपत्नीक कृतक्रिय भी पुत्र सञ्ज्ञा पाता है ( १२६-१२६ ) । गोत्र नाम का अनुबन्ध व्यत्यास होने पर फिर कर्म करे ( १३०-१३२ ) ।

अनाथप्रेतसंस्कारेऽश्वमेधफलवर्णनम्

२६६३

६३ -- जैसे पर पेट्यास करे । ...

अन्य से करने पर, वाह्यमात्रदान करने पर आह्यमात्र होता है (१३५-१३८)। भ्रष्ट एवं पतितों का घट स्फोटन का अधिकार (१३६-१४०)। अनाथप्रेत के संस्कार करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है व प्रेत के संस्कार न करने में दोष (१४२-१४३)। विप्र की आज्ञा से यतिकृत्य (१४४-१४७)। कर्ता के निकट होने पर अकर्तृकृत को फिर करे (१४८)। असगोत्रों के संस्कार में आशौच (१४६)। माता-पिता के मृताह का परित्याग होने पर प्रायश्चित्त (१५०-१५१)। नदी स्नान से निष्कृति या संहिता पाठ से (१५२-१५६)। वेदमहिमा (१५७-१५६)। ब्राह्मण का वेदाधिकार (१६०-१६३)।

स्नान का सब विधियों में प्राधान्य (१६४)। सम्पूर्ण कार्यों में स्नान ही मूल कारण बताया है (१६५-१६७)। अस्पृश्य स्पर्शनादि कर्माह्नस्नान (१६८-१७१)। वमन में स्नान (१७२)। वमन में स्नान न कर सके तो वस्त्र बदल ले (१७३-१७४)। शाकमूलादि के वमन में स्नान (१७५-१७६)। रात्रि में वमन में स्नान (१७७)। अपने गोत्र के छोड़ने पर अन्य गोत्र के स्वीकार करने का दोष (१७८-१७९)। अर्धोदय, महोदय एवं योग का विधान (१८०-१८३)। स्त्री के पत्यन्य के साथ चितारोहण होनेपर पुत्र का कृत्य (१८५-१८९)।

## स्त्रीणां पुनर्विवाहे प्रायश्चित्तवर्णनम्

२६६६

जातिभेद से निष्कृति ( १६२ ) । स्त्री के पुनर्विवाह में दोष जैसे—

पुनर्विवाहिता मूढैः पितृभ्रातृमुग्धैः म्लैः ।

यदि सा तेऽग्विलाः सर्वे स्युर्वै निरयगामिनः ॥१६३॥

पुनर्विवाहिता सा तु महारौरवभागिनी ।

तत्पतिः पितृभिः सार्धं कालसूत्रगगो भवेत् ।

दाता चाङ्गारशयननामकं प्रतिपद्यते ॥१६४॥

यदि मूर्ख एवं दुष्ट पिता व भाई आदि के द्वारा फिर स्त्री विवाहित की जाय तो वे सब नरकगामी होते हैं और वह स्त्री महारौरव नरक में जाती है, व उसका विवाहित पति अपने पितरों के साथ कालसूत्र नामक नरक में गिरता है एवं देनेवाला अङ्गारशयन नामक नरक में जाता है । पुनर्विवाह के दोष निवार प्रायश्चित्त का कथन ( १६३-२०४ ) ।

भ्रान्ति से पुत्रिकादि विवाह होने पर चन्द्रायण करने से स्वमात्र की शुद्धि ( २०५-२०७ ) । पुत्र होने का विधान ( २०८-२११ ) । एक, दो, तीन ; चार-पाँच बार विवाहिता होनेपर प्रायश्चित्त ( २२१७ ) । उससे तो बेश्या की विशेषता ( २१८-२२४ ) प्रविष्ट परपति के काय द्वारा संयोग होनेपर प्रायश्चित्त

( २२५-२२७ ) । अमाहा और माहामूर्ति का वर्णन ( २२८-२२९ ) । अमाहामूर्ति का निवेश ( २३०-२३८ ) । भगवत्प्रसाद ग्रहण में भक्षणविधि ( २३९ ) । निवेदन-विधि ( २४० ) । अत्युष्ण निवेदन करने पर नरकगामी होता है ( २४१-२४२ ) । निवेदन प्रकार ( २४२-२४५ ) ।

गृहस्थस्य रात्रावुष्णोदकस्नानवर्णनम्

२६७५

निवेदित का स्वीकार प्रकार ( २४६-२४७ ) । निवेदित वस्तु वर्षों को दे ( २४८ ) । गृहस्थ द्वारा रात्रि में गर्म जल से स्नान ( ४४९-२५० ) । अभ्यङ्ग का विधान ( २५१-२५३ ) । माध्याह्निक एवं क्षुर स्नान का वर्णन ( २५४-२५७ ) । प्रातः सायं पचादि में अभ्यङ्गन स्नान ( २५८-२६२ ) । सोदबुम्भ नान्दी धाट्ट में अभ्यङ्गन स्नान ( २६३-२६६ ) । कोशस्थित नदी स्नान से धाट्ट विधान ( २६७ ) । सङ्कल्प ( २६८-२७१ ) । पितृ धाट्ट के व्यत्यास में फिर करने का विधान ( २७२ ) । शून्यतिथि में करने से फिर करे ( २७३-२७४ ) । पितृ धाट्ट के बाद कारण्य धाट्ट ( २७५-२७६ ) । माता-पिता का धाट्ट एक दिन हो तो अन्न से करे ( २७७-२७९ ) । पात्रिक धाट्ट ( २८०-२८१ ) । ग्रहण में भोजन निषेध बृद्ध बाल और आगुओं को छोड़कर ( २८२-२८१ ) ।



( ३५६ ) । धाता के पुत्र का परिग्रह ( ३६०-३६३ ) । किसी पुत्र को लेने के लिये स्वीकृति होनेपर यदि औरस पुत्र हो तो दोनों को रखे नहीं पाय लगता है ( ३६४-३६७ ) । पुत्रदान के समय में जो कहा गया उसे पूरा करना चाहिये ( ३६८-३७५ ) । भाई के पुत्र को लेने पर दिये हुए का समाश औरस गोत्र का चौथा हिस्सा ( ३७६-३८० ) ।

इत्तक से औरस उपनीत न होनेपर प्रायश्चित्त ( ३८१-३८२ ) । भार्या पुत्र्य का पुत्र ग्रहण ( ३८३-३८८ ) । उस समय की प्रतिष्ठा पूरी न करने से दोष ( ३८९-३९६ ) । सपत्नियों में पुत्र के ग्रहण के समय जो रहे तो यह माता दूमरी सपत्नी माता ( ३९०-३९१ ) । अन्य मातामहादि का स्थान ( ३९१-३९५ ) । सपत्नी का पिता मातामह नहीं ( ३९६ ) । सपत्नी माता का तर्पण ( ३९६-३९८ ) ।

### औपासनाद्यौ श्राद्धेऽथमादवर्णनम्

२६६

सपत्नी माता का औपासन अग्नि में श्राद्ध ( ३९९ ) । पत्नी की अग्नि ( ४००-४०१ ) । भाई के पुत्र के ग्रहण की विधि ( ४०२-४११ ) । विभाग में भाई बराबर है ( ४१२-४१६ ) । कामज पुत्रों का वर्णन ( ४१४-४३३ ) । दत्तादि

में विशेष (४३४-४४२)। पत्नी की वैशिष्ट्यता (४४६-४४६) पुत्रों का ज्येष्ठ कानिष्ठ्य (४५०)।

भोगिनी (४५१)। भर्मणा, वा वातादि पत्नियों का वर्णन (४५६-४६४)। धर्मपत्नी से उत्पन्न शिशु का ही स्पर्श मात्र कर्तृत्व (४६५-४७१)। सन्निधि भी स्पर्शमात्र कर्तृत्व (४७२-४७४)। श्राद्धादि में अत्यन्त वृत्तिकर पदार्थ (४७५-४८१)। गौरी दान वृषोत्सर्ग व पितरों को अत्यन्त वृत्ति कर कहे हैं (४८२-४८३)। जकारपञ्चक का वर्णन (४८४-४८५)। मद्रण श्राद्ध का लक्षण (४८६-४९५)। पनस स्थापित महान् विशेष है (४९६-५०३)। अलर्क श्राद्ध (५०४-५०८)।

श्राद्धार्हदिव्यशाकवर्णनम्

३००३

श्राद्ध के योग दिव्य शाक (५०६-५३०)। पनस की महिमा (५३१-५७१)। रोदन का फल (५७०-५८५)। उषांग महिमा (५८६-६०३)। उषांग को छोड़ने में दोष (६०४-६०५)। द्वियानये श्राद्धों का वर्णन (६०६-६१६)। १०८ श्राद्ध प्रकृति घाट, दश श्राद्ध, दश और आधिक समान हैं मन्वादि श्राद्ध, मंत्रान्ति श्राद्ध, मंत्रान्ति गुण्ययाम (६१७-६४८)। अन्न श्राद्ध में कृत्वा (६४९-६५४)।

दश मंत्रान्ति आदि श्राद्ध (६५५-६५७)। महालय

( ६५७-६५६ ) । श्राद्ध देवता ( ६६०-६६४ ) । पित्र्य कर्मों में प्रदक्षिणा न करे । शून्य ललाट रहे गृहालङ्कार भी न करे ( ६६५-६६७ ) । मातृवर्ग में प्रदक्षिणादि व अलङ्कार ( ६६८-६७० ) । श्राद्धभेद से विश्वेदेव, सापिण्ड वर्णन ( ६७१-६७५ ) । आशीच दरा, तीन और एक दिन रहता है ( ६७६-६८३ ) । अमादि श्राद्ध में कर्तव्य ( ६८४-६८७ ) । एफोद्विष्ट के अधिकारी ( ६८८-६९३ ) ।

अपिण्डक और सपिण्डक श्राद्ध ( ६९०-६९३ ) । द्विपानवे श्राद्धों की संख्या का विचार ( ६९४-७०० ) । महालय, सृष्टन्महालय में भरण्यादि की विशेषता महालय का फाल, यतियों का महालय, दुर्मूर्तों का महालय ( १०१-७०६ ) । गुमङ्गली का श्राद्ध ( ७१०-७१६ ) । महालय से दूमेरे दिन तर्पण ( ७१७-७२८ ) । रवि के लक्ष्य से पूर्व तर्पण ( ७१६ ) ।

निमन्त्रणार्हविप्राणां वर्णनम्

३०२५

जीवत्सिक्त श्राद्ध ( ७२०-७२२ ) । श्राद्ध में वैदिक अग्नि के अधिकारी ( ७२३-७२६ ) । अष्टकामासिक श्राद्ध ( ७२७-७३२ ) । श्राद्ध प्रयोग में निमन्त्रण के योग्य व्यक्तियों का वर्णन ( ७३३-७३६ ) । वेदहीन को निमन्त्रण देने पर निषेध एवं प्रायश्चित्त ( ७३७-७४० ) । अपने



शाखा के मादण की ही इत्याख्या ( ७४१-७४२ ) ।  
 श्राद्ध में अभोज्य ( ७४३-७६८ ) । घण ( ७६६-७६७ ) ।  
 प्रमाद के लिये दर्भदान ( ७६७-७६९ ) । मण्डल पूजा  
 ( ७६७-७६९ ) । गुल्फों के नीचे धोना ( ७८०-७८१ ) ।  
 आचमन कर्ता के पहले भोक्ता का आचमन देवादि के  
 भोजन की दिशा वरणत्रयकाल, विष्टर, अर्घ्य, आवाहन  
 गन्धाक्षतादि दान ( ७८२-८०१ ) । अमौकरण फिर  
 सङ्कल्प परिवेषण ( ८०२-८१७ ) ।

### परिवेषणे पौर्वापर्यवर्णनम्

३०३३

पौर्वापर्य में पहले सूप देना ( ८०८-८१४ ) । रश्मोत्र  
 मन्त्र यदि असमर्थ हो तो दूसरे द्वारा बोला जाय  
 ( ८१५-८१८ ) । गरम ही परोसना चाहिये ( ८१६-  
 ८२५ ) । मन्त्र बोले जाय मन्त्रों की विकलता नारा  
 के लिये वेद का घोष ( ८२६-८४८ ) । शास्त्र विरोधि-  
 त्याज्य हैं ( ८४६-८६० ) । तिलोदक पिण्डदान नमस्कार  
 अर्चन, पुत्रकलत्रादि के साथ पितृ आदि की प्रदक्षिणा  
 व नमस्कार ( ८६१-८६८ ) । मध्यम पिण्ड का परि-  
 मार्जन कर घर्मपत्नी को दे दे ( ८६६-८७२ ) । श्राद्ध  
 दिन में शूद्र भोजन निषिद्ध ( ८७३ ) । पिता के भोजन  
 के पात्र गाढ़ दिये जायं ( ८७४ ) ।

## श्राद्धे निमन्त्रितब्राह्मणपूजनवर्णनम्

३०४१

उद्द कुम्भ (८७५-८७७) । प्रथम वर्ष तिल तर्पण न करे  
 सपिण्डीकरण के बाद श्राद्धाङ्गतर्पण (८७८-८८०) । श्राद्ध  
 में निमन्त्रित ब्राह्मणों की पूजा का वर्णन (८८३-८९२) ।  
 पितरों के निमित्त रजत और देवता के निमित्त स्वर्ण मुद्रा  
 दे । उपस्थान और अनुमज्जनादि का कथन (८९३-८९७) ।  
 कर्म के मध्य में शानाशानकृत दोष का प्रायश्चित्त (८९८-  
 ९०४) । उच्छिष्टादि श्राद्ध में सात पवित्र (९०५-९०९) ।  
 उच्छिष्ट, निर्मालय, गङ्गामहिमा, महानदी, नदियों का  
 रजस्वलात्व, पुण्यक्षेत्र ( ९१०-९४० ) । वसन (९४३-  
 ९४५) । पितृ श्राद्ध प्रकरण ( ९४६-९५० ) ।

अनुमासिक में उच्छिष्ट वसन में व उच्छिष्ट के उच्छिष्ट  
 स्पर्श में विचार ( ९५१-९५६ ) । एक दूसरे के स्पर्श में  
 ( ९६०-९६४ ) । दर्शादि में छीक आने पर विचार  
 ( ९६५-९७३ ) । अपुत्र की अस्तापित्तयता ( ९७४-९७५ ) ।  
 पति के साथ अनुगमन में पत्नी का एक साथ ही  
 पिण्डदान ( ९७६-९७८ ) । गृह के ग्यारहवें दिन या दूसरे  
 दिन महगमन में श्राद्ध ( ९८३-९८८ ) । यदि पत्नी  
 श्मशान में हो पति के मरण पर तो पति को तैल की  
 कढ़ाही में छोड़ दे और शुद्ध होने पर ही और्ध्वदक्षिण

संस्कार करे ( ६८६-६९१ ) । उमका पिण्ड संयोजन ( ६९६ ) ।

अन्यगोत्रदत्तकपुत्रकृत्यवर्णनम्

३०४

माता के सापिण्ड्य न होने का म्बल ( ६९७-६९८ ) । दत्तपुत्र का पालक पिता का सापिण्ड्य होता है ( ६९९ ) । दत्तपुत्र का औरसपिता के प्रति कृत्य ( १०००-१००१ ) । अन्य गोत्र दत्त का सपिण्डीकरण में विधान ( १००६-१००८ ) । कथावृत्ति ( १०१६-१००१ ) । श्राद्ध दिन में वर्ज्य ( १०२२ ) । श्राद्ध के दिन दान जप न करे ( १०२३-१०२७ ) । दश में मृताह के श्राद्ध को पहले करे ( १०२८ ) । मृताह के दिन मातामहादि का श्राद्ध हो तो मन्वादि श्राद्ध करे ( १००६-१०३१ ) ।

मृताह में नित्यनैमित्तिक आ जाय तो नैमित्तिक पहले करे ( १०३२-१०३४ ) । दश में बहुश्राद्ध हों तो दशादि को कर फिर कारुण्य श्राद्ध करे उसमें मत-मतान्तर ( १०३५-१०४४ ) । किन्ही का कल्प प्रकार ( १०४५-१०५६ ) । भृष्टक्रिया का विधान, पतित की पंखीस वर्ष के बाद क्रियायें हों ( १०६०-१०७२ ) । श्राद्धाङ्ग तर्पण दूसरे दिन ( १०७३-१०७५ ) । उद्देश्य त्याग के समय सत्यविकिर न करे ( १०७६-१०७८ ) । वसन में बर्षा के भोजन न करने पर अर्घ्य वृत्ति, तिल

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

द्रोण का विधान, दर्शश्राद्ध तर्पण रूप से तिल ही मुख्य हैं । सभी कर्मों में जल की प्रधानता (१०५६-१११३) ।

॥ आङ्गिरसस्मृति के पूर्वाङ्गिरसम् की विषय-सूची समाप्त ॥

## आङ्गिरस ( २ )

### उत्तराङ्गिरसम्

- |   |  |      |
|---|--|------|
| १ | धर्मर्षत्प्रायश्चित्तानां वर्णनम्<br>विधि: ( १-१० ) ।  | ३०६६ |
| २ | परिषद् उपस्थानलक्षणम्<br>परिषद् के उपस्थान का लक्षण और उसके सामने<br>निर्णय पूजने की विधि ( १-१० ) ।                       | २०६७ |
| ३ | प्रायश्चित्तविधानम्<br>मृत्यु की महिमा व किये गये कुतृत्यों के लिये मृत्यु<br>शोककर प्रायश्चित्त पूजने का विधान ( १-११ ) । | ३०६८ |
| ४ | परिषद्ध्ययवर्णनम्<br>प्रायश्चित्त का लक्षण ( १-२ ) । परिषद् का लक्षण<br>और उसके भेद ( १-१० ) ।                             | ३०६९ |

- | अध्याय | प्रधान विषय  | पृष्ठा |
|--------|--|--------|
| ५      | प्रायश्चित्तनियन्तृकथनम्   | ३०७    |
|        | दशाक्षरापरिषद् ( १ ) । चतुर्वेद ( २ ) । विकल्प्यी ( ३ ) । अह्नयित् ( ४ ) । भ्रमं पाठक ( ५ ) । आमसी ( ६ ) । ब्राह्मणों की परिषद् आमो प्रायश्चित्त नियन्त्राओं का वर्णन यथाया है ( १-१४ ) ।  |        |
| ६      | प्रायश्चित्ताचारकथनम्  | ३०७    |
|        | प्रायश्चित्त के आचार का वर्णन ( १-१५ ) ।   |        |
| ७      | पापपरिगणनम्  | ३०७    |
|        | जानते हुए भी प्रायश्चित्त का विधान पूरने पर ही करे ( १-२ ) । पापपरिगणन ( ३-७ ) । पञ्चमहापात-कियों का वर्णन ( ८ ) । पतितों का वर्णन ( ८-६ ) ।   |        |
| ८      | शूद्रान्नस्य गर्हितत्ववर्णनम्  | ३०७    |
|        | प्रतिग्रह में प्रायश्चित्त ( १ ) । शूद्रान्न के भोजन में प्रायश्चित्त ( २ ) । शूद्र की प्रशंसा कर स्वस्तिवाचन में प्रायश्चित्त ( ३-५ ) । प्रतिग्रह लेकर दूसरों को दे दे ( ६ ) । शूद्रान्नरस से पुष्ट वेदाध्यायी का प्रायश्चित्त ( ७ ) । शूद्रान्न छै मास तक खाने से शूद्र के समान हो जाता है एवं मरने पर कुत्ता होता है ( ८ ) । सारी वस्त्र खानेवाले को भी शूद्र ही होना पड़ता है ( ९ ) । प्रति- |        |

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

ग्रहकेयोग्यधान्य ( १०-११ ) । पात्र से लेना चाहिये  
प्रतिप्राह्य वस्तुयें ( १२-२० ) ।

६ अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्तम्

३०७७

अभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त ( १-८ ) । भिक्षुकों की  
गणना ( ६-१० ) । कुत्ते से काटे हुए का प्रायश्चित्त  
( ११-१६ ) ।

१० हिंसाप्रायश्चित्तकथनम्

३०७६

हिंसा का प्रायश्चित्त वर्णन ( १ ) । दण्ड का लक्षण  
( २ ) । गौओं के प्रहार करने से प्रायश्चित्त ( ३ ) ।  
गायों के रोधनादि से मरने पर प्रायश्चित्त ( ४-५ ) ।  
गायों की हड्डी आदि मारने से टूटने पर प्रायश्चित्त  
( ६-१० ) । कित्त-कित्त अवस्थाओं में प्रायश्चित्त नहीं  
लगता उसका परिगणन ( ११-१४ ) । गजादि प्राणियों  
की हिंसा में प्रायश्चित्त ( १५-१६ ) । काम और  
कामादिकृत पापों के प्रायश्चित्त के लिये विशेष वर्णन  
( १६-१६ ) । बालक वृद्ध और स्त्रियों के लिये प्राय-  
श्चित्तविधि ( २०-२१ ) ।

११ गोवधप्रायश्चित्तकथनम्

३०८१

गोवध करनेवाले का प्रायश्चित्त वर्णन ( १-११ ) ।

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठा
१२	कृच्छ्रादिस्वरूपकथनम्	३०८३

प्रायश्चित्तविधि (१-४)। कृच्छ्रादि का स्वरूप  
कथन (५-८)। ब्राह्मण महिमा—  
समन्तासम्पत्समवामिहेतवः ममुत्थितापन्युत्सूमकेतवः।  
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥  
(६-१६)।

आह्निरस (२) के उत्तराह्निरस प्रकरण की विषय-सूची  
समान।

## भारद्वाजस्मृति के प्रधान विषय

१ भारद्वाजस्मृति सन्ध्यादिप्रमुखकर्मविषये

भृग्यादिमुनीनां प्रश्नः

३०८५

भारद्वाज मुनि से भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, शाण्डिल्य,  
रोहित आदि महर्षियों ने नित्यनैमित्तिक क्रियाओं को  
लेकर प्रश्न किया (१-७)। उन्होंने बतलाया कि नित्या-  
नुष्ठानों के न करनेवालों की सभी क्रियायें निष्फल होती  
हैं। दिशाओं के निर्णय से लेकर प्रायश्चित्त तक  
२५ अध्यायों का संक्षेप से निरूपण (८-२०)।



## २ दिग्भेदज्ञानवर्णनम् ३०८७

पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं के ज्ञान की सरलविधि ( १-४ )। अन्य दिशाओं का परिज्ञान प्रकार ( १-७७ )।

## ३ विष्णुत्रोत्सर्जनविधिवर्णनम् ३०६४

मलमूत्र विसर्जन की विधि ( १-८ )।

## ४ आचमनविधिवर्णनम् ३०६७

आचमन के पूर्व जह्वा से जानु तक या दोनों चरणों को और हाथों को अच्छी प्रकार धोकर आचमन का विधान ( १-१ )। जल में खड़ा हुआ जल में ही आचमन करे, जल के बाहर हो तो बाहर ( १-७ )। अंग-न्यास, देवताओं का स्मरण, आचमन कितना लेना चाहिये, बिना आचमन के कोई कर्म फल नहीं देता अतः इसका बराबर ध्यान रक्खा जाय ( ८-४१ )।

## ५—दन्तधावनविधिवर्णनम् ४००१

मुख शुद्धि के लिये दन्तधावन का विस्तार से निरूपण, दन्तधावन के लिये वर्ज्य तिथियाँ एवं समय तथा कौन-कौन काष्ठ प्राज्ञ हैं तथा कौन-२ अप्राज्ञ हैं इसका निरूपण, मौन होकर दन्तधावन करे ( १-२१ )। स्नानविधि



- | अध्याय | प्रधान विषय   | पृष्ठाङ्क |
|--------|---|-----------|
|        | का वर्णन ( २६-३८ ) । ललाट में तिलक का विधान ( ४०-४५ ) ।   |           |
| ६      | त्रिकालसंध्याविधानकथनम्   | ४००६      |
|        | एक ही सन्ध्या के कालभेद से तीन स्वरूप—प्रथम काल की ब्राह्मी दूसरे की ( मन्वाह्न की ) वैष्णवी तीसरे की रौद्री सन्ध्या कही गई है । यही ऋक्, यजु और सामवेदों के तीन रूप हैं । इनके नित्य ही द्विजमात्र को कर्त्तव्य इष्ट है । सन्ध्या की मुख्य क्रियाओं का विस्तार से परिगणन ( १-६८ ) । गायत्री के जपविधान का कथन ( ६६-१४० ) । गायत्री का निर्वचन ( १४१-१६३ ) । जप यज्ञ की महिमा ( १६४-१८१ ) । |           |
| ७      | जपमालाया विधानकथनम्   | ४०२४      |
|        | जपमाला का विधान और जपमाला की प्रतिष्ठा विधि । जप विधान में अर्थ का प्राधान्य और साथ में मनोयोग पूर्वक करने से ही इष्टमिद्धि मिलती है ( १-१२३ ) ।  |           |
| ८      | जपे निषिद्धकर्मवर्णनम्  | ४०३६      |
|        | जप में निषिद्ध कर्मों का वर्णन ( १-१२ ) ।   |           |
| ९      | गायत्र्याःसाधनक्रमवर्णनम्   | ४०३८      |
|        | गायत्री के साधनक्रम को जानने से ही गद्यः मिद्धि मिलती है अतः समस्त जानकर जप किया जाय ( १-५० ) ।   |           |

अध्याय	प्रधान विषय	पृष्ठाङ्क
	गायत्र्या मन्त्रार्थवर्णनम्	४०४३
	गायत्री के मन्त्र का अर्थ का विस्तार से निरूपण (१-६)।	
	गायत्र्याः पूजाविधानवर्णनम्	४०४४
	गायत्री का पूजा विधान (१-११८)। गायत्री पुष्पाञ्जलि का प्रकार (१११-१२१)।	
	गायत्रीध्यानवर्णनम्	४०५६
	गायत्री का ध्यान वर्णन (१-६१)।	
	गायत्रीमूलध्यानवर्णनम्	४०६३
	गायत्री का मूलध्यान और महाध्यान का वर्णन (१-४४)।	
	पूजाफलसिद्धये द्रव्यगन्धलक्षणवर्णनम्	४०६६
	पूजाफल की सिद्धि के लिये नाना द्रव्य, गन्धलक्षण का विस्तार से निरूपण (१-६४)।	
	यज्ञोपवीतविधिवर्णनम्	४०७२
	यज्ञोपवीत की विधि का वर्णन—निवीत और प्राचीनावीत का लक्षण। शुद्ध देश में कपास का बीज बोया जावे, उसके तैयार होनेपर ही ब्रह्मसूत्र को विधिवत् बनाया जाय। नाभि के धरावर ६६ छियानवे चार हस्ताहुल प्रमाण से बनाकर शुद्ध मन से देवगण ऋषियों का ध्यान करते हुए इस ब्रह्मसूत्र को पहने (१-१५४)।	

अध्याय

ध्यान विषय

१३

१६ यज्ञोपवीतधारणविधिवर्णनम्

४१८

शुद्ध होकर आचमन कर आसन पर बैठे स्त्रि  
आचार्य, गणनाथ, यार्गादेवता, देवता, ऋषिगण और  
पितरों का स्मरण करे । भगवान्, मद्या, अच्युत और  
गुरु को भक्ति से नमस्कार करे, नयीं तन्त्रुओं में आच-  
दन कर यज्ञोपवीत का धारण करे ( १-६३ ) ।

१७ यज्ञोपवीतमन्त्रस्य ऋषिछन्द आदीनां वर्णनम् ४१९

यज्ञोपवीत मन्त्र के ऋषि छन्द देवता आदि का  
विस्तार से वर्णन ( १-३१ ) ।

१८ सप्रयोजनकुशलक्षणवर्णनम्

४१९

कुशों के बिना कोई भी नित्यनैमित्तिक क्रिया का  
सम्पादन शक्य नहीं अतः कौन सी ग्राह्य है और कौन  
सी अग्राह्य है इसका निरूपण ( १-१३१ ) ।

१९ व्याहृत्तिकल्पवर्णनम्

४२०

व्याहृतियों का विस्तार से निरूपण ( १-४८ ) ।  
व्याहृतियों से सम्पूर्ण कार्यसिद्धि शक्य है ( ४६ ) ।

॥ भारद्वाजस्मृति की विषय-सूची समाप्त ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## \* कपिलस्मृतिः \*

कपिल-शौनक-संवादवर्णनम्

वेदनिन्दकानां दूषणम् :-

पुरा तु शौनकः श्रीमान्भाविनं पतिमीक्ष्य वै ।  
मीनोत्पंतं कलौ भूम्यां तिष्ठेद्विप्रत्वमित्यसौ ॥ १ ॥  
अत्यन्तं चिन्तयाविष्टः कपिलं विष्णुरुपिणम् ।  
अवशादागतं वीक्ष्य प्रहृष्टः सत्वरं तदा ॥ २ ॥  
समुत्थायाभिवात्यैनं रामर्ष्यमुदकं शिवम् ।  
कल्पयित्वा नष्टभ्रमं पश्चात्प्राञ्जलिप्रवात् ॥ ३ ॥  
कलौ पापैकबहुले धर्मानुष्ठानवर्जिते ।  
कथं तिष्ठति विप्रत्वं भूतले वद मे महन् ॥ ४ ॥  
संशयोऽस्तीव सुमहान् वर्तते द्विन्धि नु(मि)विभो ।  
नितेन(शौनकेन)हन(कृतः)प्रश्नः कपिलः स सनातनः ॥ ५ ॥  
स्मयं कृत्वा जगद्भक्तानां सस्मितं धाक्यमब्रवीत् ।  
त्वं महानसि सर्वज्ञः सर्ववेदविदाम्बरः ॥ ६ ॥  
अमगण्यश्च भक्तानां धरिष्ठो ब्रह्मवादिनाम् ।  
अष्टादशानां विद्यानां कोशभूतो महाव्युत्तिः ॥ ७ ॥  
ऐकायोगत्वा(?) नानात्वं समवायविशारदः ।  
क्रियाकल्पविशेषज्ञः सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित् ॥ ८ ॥

अथापि गुह्यमार्गं(३)निरचयेः भृतिमिट्टगैः ।  
 ब्राह्मण्यमाभरैः कर्मविरांपरेष तत्परम् ॥ ६ ॥  
 माह्व्यं तन्ममीचीनमतिनीश्वनरं शिवम् ।  
 सुस्थितं प्रभवो नो चेन्न तिष्ठति रे(?)भितेति ॥ १० ॥  
 निष्कर्णसुमुम्वोजं (च) तमिमप्रर्णं न मंरायः ।  
 अथापि सूक्ष्मं यद्वयामि तन्ममैकमनाः भृगु ॥ ११ ॥  
 अत्राह्वणेषु सर्वेषु सर्वस्मिन्ब्राह्मणप्रदे(प्रुवे) ।  
 नामधारकमात्रेषु श्रोत्रियेषु महत्स्वपि ॥ १२ ॥  
 सर्वेष्वपि च वेदैकपारगेषु महात्मसु ।  
 ब्रह्मत्वमेकसामान्यात्तिष्ठत्येव ह्यनश्चरम् ॥ १३ ॥  
 तन्महत्तारतम्येन न्यूनं चाधिकमेव च ।  
 महश्च सुब(म)हश्चापि दोषयुक्तं गुणोत्तरम् ॥ १४ ॥  
 निर्दोषम(मि)ति भेदेन बहुधाभि(हि)मृतेहि(स्मृते)त्वन् ।  
 सर्वकर्मैक्यून्येऽस्मिन्कलौ पापैकसङ्कुले ॥ १५ ॥  
 कर्मानुरूपं ब्रह्मत्वं प्रतिष्ठति हि भूतले ।  
 तन्न दूष्यं दुराधपं युगधर्मानुरूपकम् ॥ १६ ॥  
 परान्नेन सुखं दग्धं हस्तौ दग्धौ प्रतिप्रहात् ।  
 परस्त्रीचिन्तया चित्तं कुतः (त्र) शापः कलौ युगे ॥ १७ ॥  
 त्विरी (रो) हितस्तत्र वेदः स्वभावात्सुनरि (रे) प्यति ।  
 कुतर्कैर्वाधितोऽयन्तभाषाप्रद्वै(न्यै)र्न राजते ॥ १८ ॥  
 भाषाप्रध(न्य)कुतर्काणामागमानां प्रचारणात् ।  
 वैष्णवानांशोभ(ना)नां पुरान्नेवानां(पुरुषाणां)दुरात्मभिः १६

प्रकल्पितानां शास्त्राणामसतां सद्विरोधिनाम् ।  
 प्रवाहुल्याद्धर्ममूलं वेदः शास्त्रतरं भवेत् ॥ २० ॥  
 एवं वेदे धर्ममूले परं शास्त्रमवस्थिते ।  
 तथागतमतं केचिदनुसृत्य ततस्ततः ॥ २१ ॥  
 कर्मोपयुक्तमात्रिकपुत्राध्ययनमात्रतः ।  
 सम्पूर्णं तत्र विप्रत्वं प्राप्तमेवेति यादिनः ॥ २२ ॥  
 देवो ध्येतव्यइत्युक्तेतदुपर्यपि युक्तिभिः ।  
 यत्किञ्चित्स तु यावद्वा यत्किञ्चिच्चेतदा किल ॥ २२ ॥  
 या(१)त्रीमात्रतःस्याद्धि यावच्चैद् ब्रह्मणे नमः ।  
 सत्ततं प्रख्या(१)सैवं पुनस्तेषां दुरात्मनाम् ॥ २४ ॥  
 अदिव्यत्यसत्तद्वाभ्योच्चारणेहिभयं च न (१) ।  
 वैदिकान्यपि कर्माणि दूषयन्ति समासु च ॥ २५ ॥  
 तद्वाभ्यतः पुनर्लोकैऽप्यल्पज्ञानां हि निश्चयः ।  
 बहुज्ञानां संशयोऽपि कदाचिज्जायते किल ॥ २६ ॥  
 तद्द्वैदिकेषु शास्त्रेषु सदकर्मसु(सत्कर्मनिरतेष्वपि)।  
 विश्वासस्तादृशानां च जायतेऽपि च कुत्रचित् ॥ २७ ॥  
 ब्रह्मयोनिषु जातानामपि केषां दुरात्मनाम् ।  
 तानि प्रयुक्तकर्माणि दूषयन्त्यपि सन्ति च ॥ २८ ॥  
 श्रुतिप्रोक्तानि दिव्यानि मूढाः पण्डितमानिनः ।  
 मूढानां तादृशानान्ते(श्च)गुरुत्वं समुपाश्रिताः ॥ २९ ॥  
 स्वयं च वैदिकाश्चेति वदन्तः पुनरप्यति ।  
 कुबुद्धि र्बोधयन्तश्च तादृशाः दुष्टचेतनः(नाः) ॥ ३० ॥

यदने भूतवेत्ताय कविश्रमन्तु गारुः ।  
 अथापि भूतवे भूयन्त्र तत्र कविश्रमन्तु ॥ ३१ ॥  
 वेदिदान्यपि यमांनि वेदिकादरालरोक्षुः ।  
 मागानि च यज्ञोत्प्रेथं मन्त्राशमं(?)भामानि ॥ ३२ ॥  
 शाग्यामाप्राश्नावात्रि मायेन (?) महाद्वित्तु ।  
 भोत्रियत्वं (ष) प्रथिनं दुन्दुभं मर्वदेदिनाम् ॥ ३३ ॥  
 शतजन्मसु विप्रन्वं प्राप्रम्य कृतिनम्नतः ।  
 श्रोत्रियत्वं मिष्यति हि ना रुद्रः(?)कर्मपाठकः ॥ ३४ ॥  
 वर्णक्रमविभागज्ञः स्वरमाप्रादिलक्ष्मीः ।  
 सदाचार (रा) यरो धीरो मन्त्रभूयाय कल्पते ॥ ३५ ॥  
 तन्मन्त्रविनियोगज्ञः तत्क्रियाकरणक्षमः ।  
 चतुर्मुखस्तुभूतो (समुद्भूतो) लोकेऽयंशो जगद्गुरुः ॥  
 साक्षान्नारायणः सोऽयं भेदकृ (ह) (?)हायमामवेत् ।  
 वेदो नारायणः साक्षात्तदर्थज्ञः स एव हि ॥ ३७ ॥  
 सोऽयमर्थः कल्पसूत्रैः ब्राह्मणेन चतुर्दश ।  
 वर्णान्यप्योजसाल्पेन तद्वर्णं (?) वासिपूर्वकम् ॥ ३८ ॥  
 विणान् (?) वा निघ नाशार वामा प्रत्यात्र जडासकः ।  
 व्यत्यस्त मुञ्चरन्व्याक्र (?) तदर्थं (वे) वर्त्ति केवलम् ॥ ३९ ॥  
 शतजन्मसु तं विद्यात्साक्षाद्दैवतमागतम् ।  
 वेदनारायणद्रोही निर्भयेन श्रुति सताम्(?) ॥ ४० ॥  
 वाचा संस्कृतया वर्त्ति(कि)द्वाससां(?)सुरतस्सतु ।  
 वर्णान्यत्यासतः प्रोक्त्या वेदेऽस्मिन्ब्रह्महा भवेत् ॥ ४० ॥

विसर्गबिन्दुदीर्घाणां व्यत्यासोक्त्यावशादपि ।  
 भ्रूणहत्यामवाप्नोति स्वरादीनां तु केवलम् ॥४१॥  
 वीरहत्यां दुर्निवार्यामुच्चरन्तं तु तादृशम् ।  
 अनधीत्यैव तूष्णीकं वेदवाक्यं शिवात्मकम् ॥ ४२ ॥  
 दुर्वाधीनं कारपाठं अपि तूष्णीकपाठकम् ।  
 सद्यो वै धार्मिको राजा स्वमाद्राष्ट्रात्प्रवासयेत् ॥४३॥  
 वेदं समुच्चरन्तं तच्छूद्रं तत्क्षण एव वै ।  
 जिह्वाच्छेदं तस्य कुर्यात् ( धार्मिको नृपसत्तमः ) ।  
 अनधीत्य पुरा वेदं वा वा(अन्य)शास्त्रं श्रमं(मो)वृथा ॥४४॥  
 करोति ब्राह्मणो मूढो नरो गर्दभ उच्यते ।  
 नरगार्दभसंसर्गं ह्यनं पञ्चाङ्ग (सं) युतम् ॥ ४५ ॥  
 कृत्या सङ्कल्प्य सत्पञ्चात्प्राणायामशतं चरेत् ।  
 पूर्वस्मिन्जन्मनि स तु नरगार्दभसञ्ज्ञकः ॥ ४६ ॥  
 सत्यं मृगयधाजीवः निर्धनिको नित्यकर्कशः ।  
 सत्ययं वेद चत्व (?) निरूपणक हेतवो ॥ ४७ ॥  
 भूतले कलिना सृष्टः न कुर्यात्तेन भाषणम् ।  
 अश्रोत्रियैर्ब्रह्मविद्यायिष्ये कलहं वृथा ॥ ४८ ॥  
 न कुर्यादेव सोऽयं वै महाव्यामोहकारणम् ।  
 कुलादिनः कुतकार्यै(तर्काश्च)कुत्सिताः कलिस्त्वपिणः ॥४९॥  
 कुबुद्धयः कुबोद्धारः कुत्सिताचारकारकाः ।  
 नावलोक्याः न सम्भाष्याः विप्रनामकारकाः ॥५०॥



विरोधेन भ्राट्क्षिणे यदि ह्य ह्यताया ।  
 इदं विष्णुं क्वाहतीश्र जपित्वा प्रणवम्बरम् ॥ ११ ॥  
 रागुणायां च श्रोत्रं दक्षिणं गंगुगेद्वि ।  
 सर्वेषामेव धर्माणां मुख्यधर्मोऽयनेष वै ॥ १२ ॥  
 कलौ पारैकपटुले आढ्याग्न्यः भुविशोदितः ।  
 सन्ध्या वै तदुपनान्यन् प्राङ्मनस्य महाश्रयः (?) ॥ १३ ॥  
 जीयातुदय सतःश्राद्धं भक्त्या कुर्यात्तदन्द्रितः ।  
 तत्र नानाविधं श्रेयं नित्यं नैमिनिचन्तया ॥ १४ ॥  
 काम्यं चैतेषु सर्वेषु प्रत्यच्छान्तर मद्मदा(मेवच) ।  
 पित्रोर्देवततत्तम्याकरणे मत्र एव हि ॥ १५ ॥  
 चण्डालत्वमथाप्नोति तस्मात्तत्तुदिवैव वै (?) ।  
 मृतयोर्दिवसे कुर्याच्छुद्धः सन् भक्तिसंयुतः ॥ १६ ॥  
 एवमेतद्वत्सरस्य स्थलेऽस्मिन् भक्त्या(?) भवेन् ।  
 श्राद्धमभिमवर्षस्य कुत्रेति (?) वा चदेन् ॥ १७ ॥  
 सर्वेषां शृण्वतां मध्ये तावन्मात्रेण ते तदा ।  
 अतिनुष्टा हि पितरः तावर्हया श्रताहिला( १ ) ॥ १८ ॥  
 किमप्य (?) मद्काश्रुतं तदाशेन सन्ध्यके ।  
 सदाशिपः प्रयुञ्जन्त एतत्पालनसम्मुखाः ॥ १९ ॥  
 मलद्वार्यस्य सततं तिष्ठन्ति किल सानुगाः ।  
 मापेभ्यः पञ्च पद्भिर्वागन्वहं मित्र मायपे(?) ॥ २० ॥

प्रसक्ते सति तैरेतच्छ्राद्धकार्यं कथञ्चन ।  
 कुत्र केन कथं कस्मात्प्रभविष्यति वै तदा ।  
 किं कुर्मश्चेति तच्चिन्तापर एव स्थितो भवेत् ॥ ६१ ॥  
 तावन्मात्रेण सेपान्तु नित्यमेव विधानतः ।  
 शृतमेव भवेच्छ्राद्धं कीर्तनादेव केवलम् ।  
 समीचीनश्रीहिमापमुद्गप्रमुखदर्शने ।  
 एतत्तुलितवस्तूनि स्वपितॄणां मृतेऽहनि ॥ ६२ ॥  
 यज्ञात्संप्यादीप्या(?)न मयात्तं वदेन्मुदा ।  
 न ययस्याः समुद्दिश्य भावयेद्वा स्वचेतसा ॥ ६३ ॥  
 शक्त्या कालेन च ततः तदर्थं वस्तुसंग्रहम् ।  
 कुर्यादेव स्वयं भक्त्या पितॄणां प्रीतिहेतवे ॥ ६४ ॥  
 पश्चाच्छ्राद्धेऽथ पूर्वम्या(?)राशौ कव्यस्य तद्भवेत् ।  
 श्वःकर्त्तव्यस्य तन्नाद्यात् स्त्रीकुर्यात्कामतः स्वयम् ॥ ६५ ॥  
 राशौ शृताशानान्विप्रान्श्राद्धे चैव निमन्त्रयेत् ।  
 ततः प्रातर्विधानेन स्नात्वा सन्ध्यामुपास्य च ॥ ६६ ॥  
 शृत्वा मिहोत्रं स्मार्त्तं च साध्यान्वै निवेदयेत् ।  
 श्राद्धेऽग्राह्यनीयस्य स्थाने वै मग्निमित्ततः ॥ ६७ ॥  
 प्रसादो भवता कार्य इति वाक्येन केवलम् ।  
 केषलं श्लोके नैव शृणुयाद्भं इत्या भयापुनः(?) ॥ ६८ ॥  
 तूष्णीं वा प्रति विप्रानामेवमेव विधिः स्मृतः ।  
 सर्वेषां पुनरप्येषां प्रति पूर्वं ( ६ ) श्रयोमताः ॥ ६९ ॥

मय पञ्च भवा प्रोक्ता शशा मन्वा न संयुतः ।  
 एतमेकं च सर्वत्र मन्वाशक्तं च वैवस्वतम् ॥ ७० ॥  
 पित्रादीनां प्रयागां च विप्रो लक्षोऽपि वा भवेत् ।  
 विप्रद्वयं तथा देवे नाद्य(?)मिषं गदा भवेत् ॥ ७१ ॥  
 मायन्नादिग्नादा कायो यदा पुत्रः प्रजायते ।  
 जातकर्म तथा पुर्यान्तुर्यादभ्युदयं तथा ॥ ७२ ॥  
 सर्व(चै)लस्य पितु ग्नातं जातमात्रे विधीयते ।  
 अत्र देवे च पित्र्ये च युग्मसंख्या द्विजाः श्रुताः ॥ ७३ ॥  
 कन्यापुत्रवियाहोषु प्रवेशो वंशमनामपि ।  
 नानाकर्मणि (सु) चौलानां शूद्राकर्मादिके तथा ॥ ७४ ॥  
 सीमन्तोन्नयने नै(चै)व पुत्रादि मुखदर्शने ।  
 नान्दीमुख्यं प्रकर्त्तव्यं तत्र वृद्धान् पितृनुशुमान् ॥ ७५ ॥  
 कुलजं सप्तमं पूर्वं पष्ठं चाऽपि ततः परम् ।  
 पञ्चमश्वापि यत्नेन क्रमेणैव प्रपूजयेत् ॥ ७६ ॥  
 गोश्रान्तव ( तर ) प्रतिष्ठस्य नाद्यास्तेपि नरो खलाः ।  
 मातामहाश्च नितरां दुर्लभाः राय सत्तरम् ( ? ) ॥ ७७ ॥  
 माता पितृभ्यां तद्गोत्रस्यागोऽङ्गीकार पूर्वकम् ।  
 स्व(स्त्री)कृतोऽयं पालकेन तद्वर्गं तेन चासनम् ॥ ७८ ॥  
 तन्मातृपितृभिः साकं न तत्त्यागः पुरा कृतः ।  
 तेन तन्मातामहानां त्यागत्वन्त्याय एव हि ॥ ७९ ॥  
 तथैव क्रियते सर्वैः तेन दत्तोऽथ पापकृत् ।  
 स्वत्तमातामहः क्रूरः दत्तो वैदिकवर्त्मना ॥ ८० ॥

नान्दीमुखे मातृवर्गः प्रपूर्वः ( य ) वेद् शास्त्रगः ।  
 पितृवर्गं ततः पश्चाद्द्वयं मातामहस्य च ॥ ८१ ॥  
 सर्वकर्मसु चाप्येवं शुभाख्येषु विधीयते ।  
 मातृपूजा प्रथमतः पितृपूजा ततः परम् ॥ ८२ ॥  
 वस्त्रभूषणयोर्दाने समनुष्ठारणे तथा ।  
 दम्पती पूजने चापि स्त्रीपूर्वमेव चोपत्ता (त्तमा) ॥ ८३ ॥  
 कृतिस्सा श्रीमती पुण्या तादृशे पुण्यकर्मणि ।  
 त्यक्ता दत्तेन तूष्णीकं मोहान्मातामहाः परे ॥ ८४ ॥  
 सपत्नीका हि पितरस्त्रयस्ते देवताः पराः ।  
 त्यक्तः स्वप्नेष्टदेवो(स्व-इष्ट)यः सोऽयमत्यन्तपापकृत् ।  
 कृतं दत्तं वस्तुतस्तु सूतकान्ते विलक्षणम् ।  
 एकोद्दिष्टात्तरतस्त्यक्त (१) स्वीकृतगोत्रिणः ॥ ८७ ॥  
 नरसिंहाकृतेरस्य संयोगं वस्तुभिश्चरेत् ।  
 रुद्रैरपि तथाऽऽदित्यैः प्रीतित्वस्य(१)दियुक्तयोः ॥ ८८ ॥  
 तद्गोत्र शर्मभिस्तात पितामहमुर्गैः सह ।  
 पत्न्यादिरूपैः व्रमतः इत्येवं न कथञ्चन ॥ ८९ ॥  
 कुत एवमिति प्रोक्ते दत्तोऽयं मिथगोऽप्यपि ।  
 पालकस्यततादानीं तादृशस्यास्य(१) केवलम् ॥ ९० ॥  
 सांकर्यशून्यशुद्धैवगोश्रात्रा(णा)मत्र गोत्रिणः ।  
 पिण्डैः संयोजनमत्र विधिरोपेन न शक्यते ॥ ९१ ॥  
 रमत्वमपि शुद्धत्वं भीषत्वं (१) च तत्त्वकम् ।  
 तथा पितामहस्यैव प्रपितामह (दत्त) मेव च ॥ ९२ ॥

तद्गोत्रियोर्धे(?)न्येऽप्येषस्य नान्यत्र कथञ्चन ।  
 कयोत्पत्ति निदान(श्च)ज(य)द्वीजं रस इतिस्मृतः ॥६३॥  
 तस्यापि यन्निदानं तच्छुष्मे शब्देन शक्यते ।  
 तस्यापि यत्कारणं हि जीरशब्देन शक्यते(भण्यते) ॥६४॥  
 तथेति पुरन्येऽपि ततः शब्दादिकाः शिवाः ।  
 तत्तद्गोत्रजपिण्डेषु भवेयुर्मुख्यधर्मतः ॥ ६५ ॥  
 मध्यप्रविष्टगोत्रस्य तत्त्वं तत्साम्यमेव च ।  
 सर्वथा दुर्लभं प्राहुस्तदसाधारणा गुणाः ॥ ६६ ॥  
 तस्मादेनत्तादृशेषु योजयेन्न तु धर्मतः ।  
 तातादयस्तु गुणिनः वसुत्यादिकमुच्यते ॥ ६७ ॥  
 गुणा इत्येव तेषां तद्विधानं मंत्रवर्त्मना ।  
 सुखायाश्रयभूतानां तद्विधानां प्रशस्यते ।  
 गुण्यरण्य (?) भावे तस्य विधानं शास्त्रवर्त्मना ।  
 गुणस्य तत्कम (कथं) मंत्रतस्त्वसमञ्जसम् ॥ ६८ ॥  
 सपिण्डीकरणाभावे प्रेतत्वं न निवर्त्तते ।  
 तस्मात्तदापो जपित्वा यस्यादित्येन मंत्रवै(त्रेणवै) ॥१००॥  
 तत एकं समुद्दिश्य चैकोद्दिष्टे विधानतः ।  
 प्रति सम्बत्सरं श्राद्धं कुर्यादिति मनोर्मतम् ॥१०१॥  
 अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सूनुश्चेद्वाकृतिगतः ।  
 मृतं स्वपितरं तस्य गोत्रेणैव क्रिया परा ॥ १०२ ॥  
 कुण्डदिय त्रिरात्रेण मातुश्चापि गुरीयके ।  
 दिने सपिण्डीकरणं सूच(त)कं च तथैव वै ॥ १०३ ॥

समनुष्ठयेमेवेति सर्वशास्त्रविनिश्चयः ।

मातुलादि समस्तातः भिन्नगोत्रः तथाप्रसूः ॥ १०४ ॥

आदिकेऽपि तयोरेकं पिंडं दद्यादिति श्रुतिः ।

केचित्तत्र पुनः प्राहुः पितरं तादृशं मृतम् ॥ १०५ ॥

तादृशस्तनयः पूर्वस्तत्तातादिभिरेव वै ।

तद्गोत्रैर्योजयेन्मंत्रै रन्यथास्य गतिः भवेत् ॥ १०६ ॥

इति(शास्त्रे)समाचोक्त्य प्रत्यद्दम्भयि केवलं ।

या वर्णेन विधानेन कुटुम्ब्यादित्येव चाब्रवीत् ॥ १०७ ॥

नमत्याश्र(१) तथा कुटुम्ब्यां सूतकञ्चे त्रिरात्रकम् ।

यतोभिन्नं तस्य गोत्रं गोत्रिणामेव केवलम् ॥ १०८ ॥

दशरात्रं सपिण्डानां जातकं मृतकं स्मृतम् ।

तद्भिन्नानां तु चन्धूनां प्रत्यासति प्रभेदतः ॥ १०९ ॥

त्रिरात्रं दक्षिणि(१)चाहदिनंश्च विधिनोदितम् ।

भिन्नगोत्रस्य पुत्रस्य तमल्पास्तत्पुत्रस्य च ॥ ११० ॥

जातके मरणे चापि सूतकं पूर्व्ववत्स्मृतम् ।

तत्पित्रोरपि तस्यैवं मर्ष्यांदा वै विदक्षणा ॥ १११ ॥

आत्रिपूर्व्वतस्त्वैवं तत्तुले हिन्यता परा ।

निषिला समता भागान्यून्यताज्ञाभिलषा(१) ॥ ११२ ॥

भवंत्येवेति सर्वत्र निर्विवादो महानयम् ।

जनप्रवादः परमः सर्वशास्त्रविनिश्चितः ॥ ११३ ॥

तातस्तत्ताततावानां यावदेकं भवेत् तन् ।

गोत्रं पुराणं सत्युक्तं तत्सर्वं निश्चिनं जइम् ॥ ११४ ॥

निःकृष्टं नैच्यन्त्यं गाम्या(?)तन्महत्त्वं यद्विष्णुजम् ।  
 शातिमात्रप्रग्रहणं गोप्यं वैदिकं कर्मणाम् ॥१११॥  
 वैदिकानामयोगस्यादस्वीकार्यं विपश्चिनाम् ।  
 ताततत्तातततानां क्रमोक्तिःस्याद्यदातदा ॥११२॥  
 तत्कुलं सत्कुलैस्मान्धं लभते नात्र संशयः ।  
 पदव्यत्या पुनरपि दत्तसूनोः मृतौपितु(?) ॥११३॥  
 भिन्नगोत्रस्य कथिता तातास्तु कुलजैस्त्रिभिः ।  
 योजयेदेव विधिना बाधकं तत्र नैव वै ॥११४॥  
 एकोदिष्टं तस्य सूनोः त्यक्त्वा वा(ता)तं ततःपरं ।  
 पितामहादीनां सम्यग्योजयेदेव नान्यथा ॥११५॥  
 यतो पितामहत्यागः पतिमिश्रततः(?)पुनः ।  
 तेनतद्वंशमात्रस्य निदानैच्येत (?) कीर्तिते ॥११६॥  
 यावत्प्रकृतिसंप्राप्तिपर्यन्तं धर्मतःस्मृतम् ।  
 एकस्मिन्नेव गोत्रे तु प्रवेशो यदि जायते ॥११७॥  
 तत्संततौ ततो घोरं संकटं सुमहत्खलु ।  
 जायते तत्तादृशंतु(?)तुच्छकर्म न चाचरेत् ॥११८॥  
 एतद्वि तत्तुच्छकर्म प्रविष्टस्यास्य संततौ ।  
 सांकर्यं प्रथमस्याभूतत्तत्सुतस्य ततः परम् ॥११९॥  
 गतस्य प्रकृतिं चापि सर्पिणीकरणात्परम् ।  
 या गोत्रवति पित्रादेः सत्सुत प्रभृतित्रिगोः ॥१२०॥  
 व्यत्पांसाद्वातप्रलौ(?)योजायते स्थयमेव वै ।  
 तद्वंशानां तेननैच्यन्धं महेनानि सूरिभिः(?) ॥१२१॥

उपन्यस्तानि तावत्तु यावत्स्यात्प्रवृत्तेःपुनः ।  
 संभवस्तेन गोत्रेण कुर्यात्पुत्रस्य संग्रहः ॥१२६॥  
 शस्येण निहतस्यैवं चतुर्दस्यं पितुः श्रुतम् ।  
 दृष्टे महालयाम्येऽग्निन् एकोदिष्टाख्यवर्त्मना ॥१२७॥  
 सर्वेषामपिशोषेण एकोदिष्टविधानतः ।  
 श्राद्धानि निखिडान्याहुः सपिण्डीकरणं विधि ॥१२८॥  
 वरं सपिण्डीकरणात्सोदबुम्भानि वृन्तशः ।  
 पावणेन विधानेन मासिकानि चरेत्परम् ॥१२९॥  
 संवत्सरविभोकाख्यं संततेच्छेति(?) तन्क्रमः ।  
 अपुत्रस्य पितृव्यस्य धातुरपैयामत्रन्मनः ॥१३०॥  
 मातामहस्य सत्पत्न्याःश्राद्धं पितृवदाचरेत् ।  
 पितृवत्करणं एतत्प्रति संवत्सरं मतः ॥१३१॥  
 अत्यन्ताचर्यकत्वेन कारणं एतदुच्यते ।  
 नौषासनामौ सत्पुत्र्याश्मौकरणमंत्रमा ॥१३२॥  
 तत्पिशोरेष पत्न्याश्नन्मातामहयोऽपि ।  
 अमौकरणमित्याहुर्द्वंशमन्तन्वदर्शिनः ॥१३३॥  
 नियामकं किमत्रेति प्रश्नाकांक्षा भवेत्तदि ।  
 ममाधानं वदस्यतेऽयाम्नाद्दस्यं धुनीगिम् ॥१३४॥  
 निर्यनैमित्तिकेष्वेव कार्यान् सक्त्येष्वपि ।  
 ए(?)री वा देवतात्वं श्यान्तेषामौषागनोन च (नेन च) ॥१३५॥  
 अमौ चरत्य कार्यान् अ(भवतीति)भोततः पुनर(?) ।  
 तदि पत्न्याः चर्षंवेति प्रश्नाकांक्षा पुनर्भवेत् ॥१३६॥



ईजायोत्तरेव वतोन्वो (?) निव्यवतु ।  
 लयत्तद्वारा वदो वग्नेरत्तव(?)मनेमिदो ॥१३७  
 वदोमे वदो विधिना वदसन्निधौ ।  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो पुनः ॥१३८॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ।  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१३९॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४०॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४१॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४२॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४३॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४४॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४५॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४६॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४७॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४८॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१४९॥  
 वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो वदो ॥१५०॥

धात्रे भिगिन्यै पुत्राय स्वामिने मातुलाय च ।  
 मित्राय गुरुवं श्राद्धमेकोद्विष्टं न पार्वणम् ॥१४६॥  
 प्रतिसंबत्सर श्राद्धेऽय्यैषां नित्यं श्रुतोरितम् ।  
 तानि त्रिदेवताकानि सपिण्डीकरणात्परम् ॥१४७॥  
 सादकुर्मादिकाव्येवं प्रत्यह्ना(?)तानि कानि चित् ।  
 शब्देवत्यानि वित्याणि दशान(?)दीनिस्मृतान्यपि ॥१४८॥  
 नव देवतकान्येवं व्यष्टकादीनि केषलम् ।  
 तथैव नादी परमा नव देवतकास्मृता ॥१४९॥  
 एतेभ्योऽप्यधिकं प्रोक्तं जीवच्छ्राद्धमतीव वै ।  
 विधिप्रमेवं कथितं बहूदैवत्यमुच्यते ॥१५०॥  
 तत्पुत्रीव्याख्यमादेराकाले कार्ये विपश्चिता ।  
 नान्यकाटे प्रार्थन्यमित्युपाय वृद्धसर्पतिः ॥१५१॥  
 आगत्य न्यासकल्पे तु नैतदापश्यकं मतम् ।  
 श्राद्धानि दशादीनि स्युः स्मृष्टिटानिति मूर्तिभिर्(?) ॥१५२॥  
 कथितानि महाभार्गः कानिचित्तु तदैव वै ।  
 अपिण्डकानि श्राद्धानि संख्यादीनि केषलम् ॥१५३॥  
 अष्टोत्तरशतानि स्युः श्राद्धान्यैतानि संतमः ।  
 कर्त्तव्यत्वेन कथातानि सदसाम्ब्रं पार्त्तनः ॥१५४॥  
 नृप दादरा संख्यानि मासि श्राद्धान्नमंतर्गः ।  
 मासि मासि यथाकामं तत्तन्काशे तु तानि वै ॥१५५॥  
 वृष्णपथे विरोपिय विहितानि ममामतः ।  
 अमामनु (?) युगशान्द्वयार्त्तापातमहाहताः ॥१५६॥

तिम्रोष्ट कामजं द्वायार्गंरायन्य.(?)दृष्टीर्मिताः ।  
 ण्णेषु निन्यादरांमने मनवश्च गुगादयः ॥१२४॥  
 महाभया अष्टकाश्च तथा नैमित्तिकाः स्मृताः ।  
 संक्रातिवैश्वतयः निम्बिन्दाः पातर्मक्षिकाः ॥१२५॥  
 गमिद्धाया च कथिताः तन्कथंसेत्तदुच्यते ।  
 द्विप्रकाला गमाभाया निमित्तत्र(?)मुदाहृतं ॥१२६॥  
 मात्वादीनांत्तु(?)विज्ञेया दरांदीनां तु नित्यदा ।  
 ह्योमाकाला(?)गमेनैव सग्न्यानांन्यया मता ॥१२७॥  
 निररोपदेशांकादिघर्णांश्चमनमात्रतः ।  
 आमतो यस्य सतनं क्लीप्त्या नित्यत्यमुच्यते ॥१२८॥  
 नास्तिताह शानित्यत्व(?)मन्यस्य दिन कस्यचित् ।  
 प्रत्यद्वादिस्तु विज्ञाया अतो नैमित्तिकं हि तत् ॥१२९॥  
 अथापि तस्याकरणेनचः (?) चंडालतां व्रजेत् ।  
 पित्रोखेन (?) चाप्यस्य तत्ससमस्त्रेण वै पुनः ॥१३०॥  
 प्रोक्तं मातामहश्राद्धे पितृव्यस्य तथैव वै ।  
 भ्रातुर्ज्येष्ठस्य तत्पत्न्याः गुरोरपि विशेषतः ॥१३१॥  
 येन केनाप्युपायेन पत्न्या अपि मृताहकम् ।  
 अनेनैव विधानेन कुर्यादेव न चान्यथा ॥१३२॥  
 न हेन्मामेनधामंत्रै अग्नौ (?) करणमात्रतः ।  
 पिण्डप्रदानतो वापि कक्षदाहेन वा तथा ॥१३३॥  
 या वसेन कक्षा कंटक (?) फलेन तिलोदकैः ।  
 न प्रत्यर्घ्यं चरेत्कृष्टा ययप्येहं न(?)संशयः ॥१३४॥

दशादिकं तु यच्छ्राद्धवृद्धिं तद्यतिवत्सरं ।  
 येन केन विधानेन कुर्यादित्येष वै मनुः ॥१६८॥  
 शक्तौसन्था विधानेन कुर्यादेष न संशयम् ।  
 दशादि सर्वभ्राटानि सुष्वांन्नेन तु(?)मन्तं ॥१६९॥  
 आमादिनानुहरणममुख्यमिति वै मनुः ।  
 यदनुष्ठानं तत्सर्वांगुष्ठानं जायतेवराय ॥१७०॥  
 तादृशं परमं दिव्यं दशं कुर्यादनंद्रितः ।  
 येनकेनाप्युपायेन प्रनिमासं विधानतः ॥१७१॥  
 पितृणां कृमयेऽतीव द्विजो धर्मपरोऽनिशम् ।  
 दशांगुष्ठानमात्रेण सर्वभ्राटानि केषलम् ॥१७२॥  
 कृतानि सम्भवं येन नात्र कार्या विचारणा ।  
 दशांगुष्ठानरहितः येनकेनाप्युपायतः ॥१७३॥  
 सर्वभ्राण्डान्दत्तां याति पितृभ्राटनमनुतःऽन्नवर्जितः ।  
 आप्तपि पितृभ्राटमनेनैव समाचरेत् ॥१७४॥  
 न स्वर्गेन न धामेन(?) संश्रभटादिभिर्धिताभि)भ्यु वा ।  
 विभवे सति दशात्स्यं धाटं मंत्रेन(?) नभ्ये ॥१७५॥  
 न शैवामेन हेवता वा मान्त्रैर्वैवतिलादिभिः (?) ।  
 रक्षोदाहाभिर्षानि कृष्यैः विण्डामोक्षरथादिभिः ॥१७६॥  
 उदकेनापि वा कुर्यादन्यथापतितोभवेत् ।  
 महात्सवरोविप्रः सतिगंधमरं तथा ॥१७७॥  
 पित्रो मन्वादि(दि)भ्रघाटं पितृणां नान्द्रमाहतः ।  
 गवाभ्राट्पदं नित्यमचरात्सहतेऽविस्वम् ॥१७८॥

अष्टकारदितो गृहः पितृदोहीति कथ्यते ।  
 मामथाष्टपरित्यागी सर्वकर्मपटिष्ठृतः ॥१५॥  
 तदवृत्त्या पितृभ्रातृ तद्विधानेन केवलम् ।  
 न कुर्यात्सर्वथा श्राद्धं प्रत्यन्दाचार्यं कर्मचन ॥१६॥  
 पितृयज्ञविधानेन श्राद्धं पित्रोः ममाचरेत् ।  
 एतद्धि न विधानेन तस्मिन् श्राद्धे तु(?)केवलम् ॥१७॥  
 कतिविच्छ्राद्धदिवसा(ना) नातद्विर्ननु(?)भाच्छति ।  
 मासश्राद्धविधानेन कृतं श्राद्धन्तु केवलम् ॥१८॥  
 पुरुषाणां देवतानां कृतं कर्मत्रयं भवेत् ।  
 स्त्री देवतानां न भवेत् तस्माच्छ्राद्धं तु तादृशम् ॥१९॥  
 न म (कु) र्यात्तद्विधानेन बाधकं बहु तत्र हि ।  
 श्राद्धपाकं भिन्नगोत्रैः कारयेन्नतु सर्वथा ॥२०॥  
 सुता प्व(स्व)स्य पितृप्वस्य (स्वस्र) मुखादिभिः ।  
 गृहिण्या वा गतायान्तु कारयेदिति केचन ॥२१॥  
 गुरुश्रोत्रियसद्विप्रवन्धुरयश्रूजनादयः ।  
 स्युस्तास्वस्याप्यसामर्थ्ये पत्न्या इति महर्षयः ॥  
 स्नुषायाकैकमधुराः(?) पितरस्संततं परम् ।  
 सुतादिपरिचारैकमायसाहादि (?) पाकतः ॥२२॥  
 प्राप्नुवंत्यनिशं ह्यं यजमानपरिश्रमात् ।  
 सुखिताहुःखिताश्राद्धे(?)भविष्यत्यपि केवलम् ॥  
 ऋत्विवाभांदुश्रोत्रिये ज्याथाजकादिक संजना(?)  
 सपत्नी तु पिता सर्वे स्वयं चापि स प्रिये(?) ॥२३॥

पेटृप्रिये फर्मणि तु यजमान(?)सताधिका ।  
 र्मयत्येव(?)कथिता स्वस्तुया तत्समा मता ॥१६०॥  
 र्स्वस्तुया सा स्वस्तुया वा श्राद्धपाके महात्मभिः ।  
 भिषिक्ताभ्यायधर्ममंत्रतंत्रक्रियादिभिः ॥१६१॥  
 मय्येन तु या नारी पितृवाद्देह्युपासि(ग)ते ।  
 कक्रियां न कुरुते जा(या)माता मोहमास्थिता ॥१६२॥  
 । जन्मजन्मनि तरा(या)दुर्मगा पितृघातिनी ।  
 ध्या दरिद्रा विषया भवेदेव न संशयः ॥१६३॥  
 ानां स्तुपया पाकं यवा(दि, लोके) नराधमाः ।  
 श्राद्धाकारपिप्यन्ति पितृभ्याः किल वै सतः ॥१६४॥  
 ी श्वशुरयोःश्राद्धे कृततत्राकजासिका(?) ।  
 ो दौर्भाग्यमापन्ना जायते सूकरि(री)श्रु(पु)नः ॥१६५॥  
 यद्दसनेपत्नीस्थालीपाकादिकमंगु ।  
 ति श्रुतिसिद्धा वै पित्र्ये पाके तदैव दि ॥१६६॥  
 र्थां विष्णुमानायां तद्भ्रजोद्देशनात्परं ॥१६७॥  
 न कुयात्पाचंचेत्यो(मी)त्यर्थं प्रतिपत्सरम् ॥१६८॥  
 ताः पितरत्तरय (अथ)मान्यानिराधयाः ।  
 शासदिता नित्याः नतुल्या दिवानिराम ॥१६९॥  
 ाबिडाः मानदुग्धा अतंनानमनोरथाः ।  
 मपि सत्पत्नी शपन्नश्च दिवानिराम ॥१७०॥  
 यत्रैव शतं नित्यं भोजनवाधिषः ।  
 शंभयः पूर्वं शारदां चदि ताः स्त्रियः ॥१७१॥

अवाक्योभ्या अथि ताः सन्न्यजनताभ्यः ।  
 पिबुगा एषयेतीव तद्भोजनरमानडे (नवे) ॥२००॥  
 तद्गुण्युधारणं पाकराष्टायात्रादिगणनम् (?) ।  
 पयोद्व्याहयमभ्रशर्त्तं गच्छभोजनम् ॥२०३॥  
 अपकर्णम्यगभाजनामनमंभयः ।  
 गमा म चर्निकरणप्रवर्गनं नृनायवि (?) ॥२०४॥  
 अत्यंतामकनातीव (?) कार्याभयति केवलम् ।  
 न चेत् जन्मवैध्यर्थं प्राप्नोत्येवं न संशयः ॥२०५॥  
 स्तुपानामपि पुत्राणां पितृकार्यममन्ययान् ।  
 तत्त्वं तत्कथितं सद्भिः न चेत्तत्त्वं न सिध्यति ॥२०६॥  
 पुत्राणां पितृकृत्येषु श्रुधिवीते तु इति मंत्रतः ।  
 सत्कृन्द्रव्यताद्विप्रहरतस्पर्शन (?) कर्मणः ॥२०७॥  
 कारमुपितृत्वतोतीव (?) पुत्रत्वं सिध्यति सा ।  
 श्रुतिः प्राह शिवा पुण्या दिव्या शातपथाद्वया ॥२०८॥  
 तस्मात्पुत्राः श्राद्धदिने पितृणामतिवृत्तये ।  
 तुष्टये च स्वयं पन्ना (तस्मात्) त्सर्ववस्तु (सद्) नि भाजने ॥२०९॥  
 निक्षिप्तानि स्वमर्यादाजनेन तु ततः परम् ।  
 सम्यग्विलोक्य संभोक्ष्य गायत्र्या कूर्चवारिणा ॥२१०॥  
 विप्रहस्तेन मंत्रेण - स्पर्शनं - भायशुद्धितः -  
 कारयित्वाऽतियत्नेन - पत्न्यपितृजलेन - च ॥२११॥  
 दानं कुर्यात्तदन्नस्य नो - चेत्सर्वं तु - निष्फलम् ॥२१२॥  
 न देवैस्त्रिधा (अ) पात्रेण (?) मेतपपटकेन - च ॥२१३॥

नैपालकं घलेनादि गन्धद्रव्येण वा पुनः ।

ते वै यवैः पुष्यकालैः पुष्यदेशैरशेषिनैः ॥२१३॥

वीर्यैः पवित्रैः परमै वाद्वी(धी)णसुमुग्दैरपि ।

उच्छिष्टेन च दिव्येन शिवनिर्माहृतोपि वा ॥२१४॥

यमनेनातिसौलभ्यहृत्प्रिकारकयन्तुतः ।

रात्रतेन च पात्रेण महाभिधायणेन च ॥२१५॥

एभिर्न जायते तेषां किन्तु तमुत्रं(तत्पुत्र) हानतः ।

कृतेन तद्विप्रहृतसंगृह्यैक्षणपूर्वतः ॥२१६॥

तत्पत्न्यपि तकीत्याला (तत्काला) हानतोन्पन्ननुष्टिदा ।

तृनिम्माकथिताऽन्ये तामाच्छादये तु तत्परः ॥२१७॥

आज्ञो वापि दस्त्रोवा घन्तु संपादितं तु यत् ।

द(त)द्धार्यामुग्रतम्बं मयो(मो)चीनं विधानतः ॥२१८॥

कारकित्वा स्वयञ्चापि कृत्वा शुद्धमनाश्शुचिः ।

अथवा महातपायादि(१)मुग्रतः प्रोक्ष्य घन्तु यत् ॥२१९॥

प्रधाह्य प्रोक्षकित्वा च मंत्रामंत्रक्रियादिना ।

एताम् विभुषयानितरान्मुमुक्षुष्यन् महदुषी. ॥२२०॥

अतिपक्षमपर्वताक्षेर्मन्दम् गृहीत्वम् ।

अष्टमस्पर्शविनं अशोभितमनादितम् ॥२२१॥

विभुजा न भवेदङ्गु तामानन्न तथाचरेत् ।

घन्तु यत्प्रमानेन न दृष्टं सोऽपिने(१)न तु ॥२२२॥

तदस्पर्शविभुं यद्वात-वायुघन्तुमोहन(१) ।

भोला शोभो भवेत्ततः तद्वातानमहाद् (दन) मः ॥२२३॥



तस्मिन्ताताहिता ये वा पितरः खलु तत्क्षणात् ।  
 यमेन द्विभ्रजिह्वाःस्युः तदोपस्य निवृत्तमे ॥२२४॥  
 श्राद्धान्ते धामदेवाय महामंत्रजपः परं ।  
 ज्ञानज्ञानैकतादृक्तादुत्पन्नाद्यस्य शान्तये ॥२२५॥  
 उपायःकल्पितःकापि वामदेवादिभिः पुरा ।  
 तस्मात्सम्यक्प्रवक्ष्यामि श्राद्धे कर्तृमतांपराम् ॥२२६॥  
 औपासनाप्रौपचनं प्रवरंचोत्तमोत्तमम् ।  
 न चेत्पाकादधो यत्तत्तदन्नं होमकर्मणा ॥२२७॥  
 समये वाप्यधिष्ठित्य प्रोत्क्षाद्वास्याभिधार्य च ।  
 हुत्वाभिमृश्य तत्सर्वमन्नशाकफलादिकम् ॥२२८॥  
 प्रोक्ष्य मंत्रेण गायत्र्या व्याहृतीभिस्तारकम् ।  
 स्वपत्नीकरनिमुक्तं तत्पात्रे स्वकरामृते ॥२२९॥  
 कारयित्वाथस्पर्शयित्वाथ(सर्वं) (?) मंत्रविधानतः ।  
 तत्पात्रधारणं कुर्यात्प्राचीनावीतिनास्त्रिलम् ॥२३०॥  
 तदाभ्यपात्रस्पर्शश्च कारयित्वापि सैन्धवं ।  
 पत्यन्तरेण संस्पृष्टं तद्विधाय च (?) ॥२३१॥  
 जलपूर्वं प्रदद्यात् पितृतीर्थेन तत्परम् ।  
 पूयङ्प्रदानाभावेन ह्यप्रौकरणलोपतः ॥२३२॥  
 रिक्तप्रदान एहीनि पुनः धादं परेऽग्नि ।  
 यमनेष्वाविशम्यतष्टातेलदर्भयोः (?) ॥२३३॥  
 कनकवादे(दु)दक(क)न (?) पुनः धादं परेऽग्नि ।  
 अन्नादिगणंरादिवाच्यं कर्तृभोक्तयोः परम्परम् ॥२३४॥

पृथिवीतेति मंत्रेण पुनः श्राद्धं परेऽह्नि ।  
 यज्ञमानाप्रीक्षणेन हविषामनवेक्षणान् ॥२३५॥  
 पाकात्परं तद्दिनेऽस्मिन्पुनः श्राद्धं परेऽह्नि ।  
 पत्नीयचनसामर्थ्यो सति तस्य तु पैतृके ॥२३६॥  
 तृष्टि(ष्णी)करणया(रा)हित्यात्पुनःश्राद्धं परेऽह्नि ।  
 दध्नः पत्न्यानां तद्गुह्या(?) पत्न्या अपरिवेषणान् ॥२३७॥  
 अमायनयनाकार्याद्विप्राणां पदे पदे ।  
 यज्ञमानस्य भुक्तयैते पूर्वं दद्या(भ्य)न्नमक्षणान् ॥२३८॥  
 तत्कश्चित्तयअधून्यान् (?) सथात्तस्यामभर्षणान् ।  
 आदिमध्यायसानेषु स्वकीयजलपात्रतः ॥२३९॥  
 स्वपत्न्यानीतसद्योत (?) पानीय प्रभवून्यतः ।  
 निरन्तरैक तद्दृष्ट्वा पुनः श्राद्धं परेऽह्नि ॥२४०॥  
 आदिमध्यायसानेषु संप्रधीक्षणप्रभयोः ।  
 ण्हीत्याद्यज्ञमानस्य पुनः श्राद्धं परेऽह्नि ॥२४१॥  
 तद्गोषा दीयनाशेन (?) प्रापानादिमर्षणान् ।  
 ततःपिण्डं दद्यापि(?) पुनः श्राद्धं परेऽह्नि ॥२४२॥  
 यस्मै वाग्ने तद्दिवसे पृथानां तदप्रदानतः ।  
 तच्छ्राद्धं तस्य एव श्यात्प्रष्टमेवं न संशयः ॥२४३॥  
 तद्दिनेतिप्रयत्नेन दोमयेनानुषेचल्यम् (?) ।  
 हृदयानेहायनवभाण (?) न बुयोत्तदलं हति ॥२४४॥  
 दग्धयोर्गद्दिनेषां तत्रपाककृतामपि ।  
 गुणालंबकरणं मैत्र परमठमटितद्विदः ॥२४५॥

विषोढागमनः पश्चाद्द्वन्द्वकार्त्तनरं (?) ।  
 कर्त्तव्यत्वेन विधिं न संस्मृतं निर्णयकम् ॥२४४॥  
 तन्त्रं श्राद्धदिने यत्नारं वतान्तरपूजनम् ।  
 न कुर्यादेव नितरां यदि कुर्यान्वमादगः ॥२४५॥  
 कुर्याति विर(वितर)प्रेनेनं नामाकं परियर्षयेत् ।  
 दानाध्ययनदेवाश्च जपहोमप्रवादिकान् ॥२४६॥  
 न कुर्याच्छ्राद्धदिवसे प्राग्विप्राणा विमर्जनान् ।  
 संनिधाने देवविप्रयोः श्राद्धं विधिनाशुचिः ॥२४७॥  
 अक्रोधश्चात्सरोतोष पुनः स्नात्वा समाचरेत् ।  
 विश्वेदेवान् विधाश्राद्धे नान्यान्देवान्समर्षयेत् ॥२४८॥  
 सपिण्डीकरणे तस्मिन् विष्णुमन्त्रेति केन च ।  
 शिवं शैवाः समभ्यर्च्य केशवं वैष्णवा अपि ॥२४९॥  
 श्राद्धं कर्त्तव्यमेवेति कुर्वन्ति प्रददन्ति च ।  
 न तथा वैदिका कुयुः किन्तु श्राद्धारि(?)पुनः ॥२५०॥  
 भिन्नपाकाद्देवपूजावैश्वदेवादिकं चरेत् ।  
 देवपूजादिकं यत्तु प्रदक्षिणविधानतः ॥२५१॥  
 यक्षोपवीतिना कार्यं पुण्ड्रधारणपूर्वकम् ।  
 तत्पैतृकं कर्म यत्तदप्रदक्षिणपूर्वकम् ॥२५२॥  
 प्राचीनावीतिनाकार्यं नापुण्ड्ररहितेन वै ।  
 तदेतत्कर्मयुगलं परस्परविलक्षणम् ॥२५३॥  
 तेजस्तिमिररेतमेतत्तद्येणैव (?) केवलम् ।  
 एतत्कर्मैककरणं , पितृशेषेणतत्परम् ॥२५४॥

वैश्वदेवैककरणं देवपूजाकृतिश्च सा ।  
 द्वयमेतदनुष्ठानं न तु प्राणादिकं स्मृतम् ॥२५८॥  
 अयमेव महामार्गः धार्ढ्यायेद्भुनि संस्थिते ।  
 पितृपूजानन्तरंतन्निग्निलं देवतार्थनम् ॥२५९॥  
 मन्त्रयज्ञादिकं कुर्यादन्यथा तद्विनश्यति ।  
 देवतार्थननिर्मातृत्वं तच्छ्राद्धकरणे किल ॥२६०॥  
 साधकानि यान्येव सम्भवन्त्यपि केवलम् ।  
 षट्शतार्थने विष्णो नैवेद्यान्नुत्तमम् ॥२६१॥  
 सुगोष्णं कारयित्वा पाकपात्रात्तद्व्यक्तैः ।  
 कुर्यान्निवेदनमिति तद्विधानं भूतोरितम् ॥२६२॥  
 पैतृके कर्मणि पुनः यावदुष्णममन्वितं ।  
 शुल्लगुम्मिधतपाश्रयाद्भुत्तमुष्णम् (१) यजनः ॥२६३॥  
 द्वादिना ततो भूयः तन्विधापोष्णमंगिते ।  
 तदुद्भूतं विषयादे निक्षिप्यशनकैरततः ॥२६४॥  
 अत्युष्णं परमान्न तद्दशाण्यवितर्षेव (?) च ।  
 अत्युष्णान्यपि शाकानि सूसादीनि च कृत्स्नराः ॥२६५॥  
 तेन संवेगं तत्प्रोत्थै वृधिसौत्यादिना तदा ।  
 दद्यादिति विधानं तन्पैतृकं तस्य परमम् ॥२६६॥  
 धर्मभेदादिभ्यः हि तत्प्रेरेण पुनः कथं ।  
 आद्यस्य कारणं दुक्तं भवेदिति च परमम् ॥२६७॥  
 निवेदनात्परंदाप (१) तागं वल्गादिवाच्यं तु ।  
 आद्याव दानपर्यन्तकाद्यस्य परिच्छादकम् ॥२६८॥

अथशादेन भयनि तन्निर्दिष्टमोदनम् ।  
 उपमादिरहितं पूर्वं सुगोष्णं सन्कर्म पुनः ॥२६६॥  
 अतन्तोम्याममायुक्तं(?) भाट्टयोग्यं भविष्यति ।  
 कर्म यदेषपूजापरंरथ्यं एवं तद्वि(?)महान्मनि ॥२७०॥  
 दैनन्दिनं प्रकथितं श्राद्धं सत्प्रातिवत्सरम् ।  
 नैमित्तिकमिति प्रोक्तं तेनतद्वाच्यते परम् ॥२७१॥  
 योधोनमास्यसप्तथाय(?) सम्यगेवयदास्यहम् ।  
 एतस्य करणात्पश्चात्तत्कार्यमत एव वै ॥२७२॥  
 एतच्छ्राद्धः प्रकथितः नान्य इत्येव सूरिभिः ।  
 तस्माच्छ्राद्धं तद्दिनेव अशृत्वैव कदाचन ॥२७३॥  
 कर्मान्यम्मोदतः कुर्यात्तद्वि सद्यः प्रणश्यति ।  
 यद्वैदिकोक्तं तत्कर्म श्रद्धिहोत्रं तथेष्टिकम् ॥२७४॥  
 दर्शश्च पौर्णमासश्च तथैवाप्रयणं पुनः ।  
 औपासनं च कृत्वैव तस्मिन्नग्नौ ततः परम् ॥२७५॥  
 कुर्यात्त्रत्याद्विकर्माद्धं (?) इत्येव मनुशासनम् ।  
 वैदिका दुर्बलं कर्म दशादेःश्राद्धकर्म तन् ॥२७६॥  
 अपि स्मार्त्तं यथा भूयः तेन वाच्यतरां भवेत् ।  
 वैदिकानन्तरं कार्यःस्मार्त्तकर्मसुसन्ततं ॥२७७॥  
 सर्वेभ्यःस्मार्त्तकर्मभ्यः श्राद्धमेकमहत्सृत्वं ।  
 न साधा(सद्यः)स्मार्त्तकर्म किंतु वैदिक कर्म हि ॥२७८॥  
 प्रत्यक्षभ्रुतिमूलत्वाद्भिहोत्रसमं च तन् ।  
 औपासनं च कथितं तद्द्वयतेन कृत्वैव(?) ॥२७९॥

विधिनाथश्चात्तश्चाद् (१) तत्परंचरेत् ।

नान्यत्किमपि तत्कुर्यात्कर्मकार्यं(न्य)न्तु तद्दिने ।

कर्मान्तरावशिष्टेन द्रव्येण न कदाचन ॥२८०॥

नैव कुर्यात् तथा श्राद्धं आपद्यापैतधेवरत् (१) ।

(न)येदुप्रतानि श्राद्धानि जातकादीनि कालतः ॥२८१॥

संप्राप्तान्यैकदा वापि शिष्टद्रव्येण तत्परम् ।

न कुर्यादेव सहसा यदि कुर्याद्विनश्यत(ति) ॥२८२॥

कर्तव्यत्वेन संप्राप्तान्यपि कर्माणि यानि वै ।

तानि सर्वाणि भिन्नानि प्राधान्येन पृथक् पृथक् ॥२८३॥

कुर्यात्तैव प्रयत्नेन पूर्वरोपेण धानुना ।

कुर्यात्तदुत्तरं कर्म नैवं वेति हि निर्णयः ॥२८४॥

पुराधोला आश्वरोपेण नमकालेन(१) कर्मणीः ।

संप्राप्ते संतिर्कृत्योयं मौड्यी वृजपाथतत्परम्(१) ॥२८५॥

परतन्तोऽनुवपसा कर्मघ्नप्रमभूत्परम् ।

इति भूयशकाराधभवत्योपनयनं किल ॥२८६॥

तस्मात्कर्मावशिष्टेन येन केन च धानुना ।

कर्मान्तरं न कुर्याद्वि कुर्यात्तदिनात्कृतम् ॥२८७॥

भवत्येष न संदेह श्राद्धेति प्राय वेत्तुव(१) ।

एक देवत्यावाहकर्मणि (१) ॥२८८॥

द्विगोवहारनिश्चितार्थीयोरेन वै मह ।

न नप्यश्मवदावैव शारनीप्याद्वा(१)ममुत्तमम् ॥२८९॥

यत्र यत्रैक देव्यापूतिम्नत्र गया भवेत् ।

प्रायागिष्येगयापोदयदिनियेकथैव (?) वै ॥२६४॥

एतदेव मतो नूनमभयन्नान्यथा हि तन् ।

कर्मणः कर्मचित्तमाग्निदृष्ट्येण कर्मणः ॥२६५॥

अन्येषां करणंन्यायं न भवेदिनि वै मनुः ।

कर्मभ्योनिखितेभ्योवै सूर्यपदमहाधिकः ॥२६६॥

पैतृकं कर्म परमनधिकंचोत्तमोत्तमम् ।

तादृशं तन् परं (कर्म) कर्मशैक्यम्नुना ॥२६७॥

न्यायेन शक्यते कर्तुं कथंकाकेत्रिनेतरन(?) ।

कर्मांस्ते त्रिषु लोकेषु महद् ब्राह्मण्यमूलकम् ॥२६८॥

तस्यैवं महाघोरे संकटे समुपस्थिते ।

कथं तत्सुस्थिलोके (?) कलौ तिष्ठति कंवलम् ॥२६९॥

विप्रत्यं श्राद्धसंध्याभ्यां कलौ नान्येन निर्घृतिः ।

तस्मात्तु तद्द्वयं सत्यक् भक्त्यानुष्ठेयमेव वै ॥२७०॥

अंधं पंगुजदद्भ्राम्नाः (दृश्वार्तो) हृद्योमूको चिकित्सकः ।

उन्मत्तो वधिरः काणः वैश्यः क्षत्रिय एव च ॥२७१॥

भिन्नभिन्नोपनयनाः वैश्य क्षत्रिय एव च ।

त एते निखिला ज्ञेयाः विधर्माभिः (?) नयेज्जयः ॥२७२॥

दर्शनादिष्वयोगत्वसंधादीनां स्फुटन्तरम् ।

तेन तत्कर्म वैकल्यं जायते किंल तेन वै ॥२७३॥

सर्वसाम्यं भवेन्नैव ॥ तेषां तस्मात्सहात्मभिः ॥ ३७० ॥

अंभाद्योविशेषेण भर्त्तव्यास्ते निरंशकाः ।  
 तेषामुपनये प्राप्ते वैलक्षण्यं महद्भवेत् ॥३०१॥  
 तदाभ्युदयकं सद्यः कर्त्तव्यत्वे न फोत्तितम् ।  
 न पूर्वम् द्विगोत्रेण श्रुतवस्तुत्तरायणम् ॥३०२॥  
 कत्सानु (कुनुपस्तु) काढोविश्वयः नक्षत्रं पुण्यदैवतम् ।  
 स्नानं त्यलंकृतं कृत्वाचोपनेप्यति केषलम् ॥३०३॥  
 संकल्पश्च विधानेन याचमद्य विधानतः ॥३०४॥  
 यज्ञोपवीतसूत्रेण कृत्वातमुपवीतिनम् ।  
 तथायोगं प्रकुर्याच्च सर्वमंत्रं विशेपविन् ॥३०५॥  
 धानुस्तथापिभूद्वय स्वयं मंत्रक्रियागरेत् ।  
 याज्ञिकं समिधं नृण्योमाधाययतितत्करा(?) ॥३०६॥  
 नृण्योमभा समाम्याप्य समंत्रामंत्रमो यत् ।  
 सर्वं कुर्याद्विधाने (मौ) न तदराच्यं यदेव हि ॥३०७॥  
 तंत्रमन्त्रं प्रकुर्यात् कृत्स्ने तद्वापकारिके ।  
 सर्वमिन्नपि तदराच्ये स्वयमेव क(य)दातदा ॥३०८॥  
 प्रथवेदिति तत्कर्त्ता मौज्ञो कृत्वाया(त)धरेत् ।  
 याज्ञिकं सामां नृण्यं आधाययति तत्करा(?) ॥३०९॥  
 उवा कृत्वाग्निं तथा देयताभ्य(?)ददानं ददानमदण मेव च ।  
 शश्वं सर्वं प्रकुर्यात् यत्प्रत्वाप्यं यथाविधि ।  
 स्वताप्यं निमित्तं कुर्यात् स्वतन्वायंमरां कितः ॥३१०॥  
 यदराच्यं त्ज्जेदेव नाशकार्या विचारणा ।  
 मुपशयति मंत्रं च कर्त्ते कुर्यात्सर्वं तथा ॥३११॥



ब्रह्मचर्यमित्यादीनान्तुलोप एव परस्ततः ।  
 प्रतिप्रश्नप्रवचननिवृत्तिस्तदनंतरम् ॥३१२॥  
 मंत्रेप्यसावितिस्थाननामनिर्देशवर्जनं ।  
 प्रधानहोमं विधिना कुर्यादिवालिलं क्रमात् ॥३१३॥  
 उरेदेशत्यागमखिलं (?) स्वयमेव वदेदपि ।  
 अथ यश्चक्रपादीनामन्ते ब्रह्मणि संस्थिते ॥३१४॥  
 तूष्णीं कूचं ततो गृह्य स्वयं तस्मिन् सुखेन ये ।  
 उपविश्य विधानेन गायत्री वेदमातरम् ॥३१५॥  
 अभ्यर्चति क्रमेणैव व्याहृतीभिर्विधानतः ।  
 सम्यगुच्चारयेदुचवा प्रयत्नेनाधिकेन वै ॥३१६॥  
 तदधोर्नं कारयित् चिरकालेन वायतनू (?) ।  
 उच्यते (ध)दनेनालं वधिरस्य विशेषतः ॥३१७॥  
 पंभंघशोर्जहभ्रातस्त्रीवापायैकरोगिणी ।  
 यथा योग्यं यथाराक्ति वाचयित्त्वैवतामनू ॥३१८॥  
 अरिसर्वान्मनूराश्वमसृसद्विजावदून् (?) ।  
 उरस्थानश्चामिहार्यमन्युपस्थानमेव च ॥३१९॥  
 प्रतप्रवचनं चापि सत्यां राक्षी यथामति ।  
 तथा योऽंतपैवस्थान्मातृभिश्चादिकं तथा ॥३२०॥  
 यश्च ते मनयर्थाय (?) जलमद्गमाचरेत् ।  
 यस्यादिनत्रयान्ते (?) तु पात्राशादिक माचरेत् ॥३२१॥  
 मूत्रमावाप्यकोयेको (?) विशेषोपश्यतेऽपुना ।  
 प्रधानहोमः (ध) चर्यालोपाङ्कविधानतः ॥३२२॥

चक्रं कृत्वा असावित्र्या हुवेदेकाहुति तथा ।  
 स्वयंकृत्वायिलं कृत्यं यद्योग्यं यथा तथा ॥३२३॥  
 पश्चात्तद्वृत्तकोभिन्नुपविष्टो (१) जनोऽप्यथा ।  
 दधिवृते वापिसावित्रितीशलाक्या(१) ॥३२४॥  
 लेखयित्वा च संपूज्य ध्यानावाहनकर्म च ।  
 घूपदीपो विधायैवं नैवेद्यं च प्रदक्षिणम् ॥३२५॥  
 नमस्कारानूनीराजनोपचारानग्नितपि(१) ।  
 स्वयंकृत्वा तेन वापि कारयित्वा च तत्परम् ॥३२६॥  
 सत्प्राशयेद्विधानेन तेनासौ कृतकृत्यताम् ।  
 प्रयातीति विधिप्राद् सती नित्यमसौ पुनः ॥३२७॥  
 संप्याश्रयं वा भिन्नयक्रियया सर्वमाचरेत् ।  
 ब्रह्मबीजसमुत्पन्ना माहात्म्यादुष्पमं (१) परम् ॥३२८॥  
 अंतर्भावद्विजेष्वेव प्राप्नोति किल नान्यथा ।  
 न मंत्रैकरय संस्कारो दियते सर्वथा ह्ययं ॥३२९॥  
 सर्वसाम्यन्नेव भजे न योग्यो दृश्यवश्ययोः ।  
 यद्यर्थं तनयः विश्वेश्वराय भवेत्तदि(१) ॥३३०॥  
 पैतृके कर्मणि तथा प्रजा (१) संसक्तुवाप्ययः ।  
 तत्कर्तृत्वे यतः कभिन्नमंत्रोच्चारणो भवेत् ।  
 तन्मंत्रकृत्प्रजापतेर्यं इत्याहं तूत्तरी भवेत् ।  
 तेनैव तद्विद्याशालं निगिलं वापदेनवा ॥३३१॥  
 पुत्रान्तराये राडाये मूषपंम्बादयान्तरा ।  
 निरेताहृषकधियाः (१) कृत्वा वाधापिगदरम् ॥३३२॥

वैदिके का(लौ)किके कृत्ये न साम्यं स्यात्तु यंधुभिः ।  
 निखिलवान्गर्णरन्वैः कृपया ते विमत्सरैः ॥३३३॥  
 पालनीया गोपनीया रक्षणीयाश्चसन्ततम् ।  
 स पंक्ति योग्य अस्पृश्याः द्विजानेतुं नृपैस्ममाः ॥३३४॥  
 क्षत्रियश्चेत्समा वैश्याद्दूर(त)रने(श्चे)ज्जघन्यजैः ।  
 न विप्र पंडूमा(इत्को)राजन्यः मुखेयोभोजनादिषु ॥३३५॥  
 एवं राजन्य पंक्त्याञ्चेद्भुजोक्षयञ्च्यते ।  
 उरन्यपंक्तौ शूद्रोपि नोपविश्यतमो भवेत् ॥३३६॥  
 राजन्यमहमुक्तौ तु ब्राह्मणस्य पृथक्स्मृता ।  
 पंक्तौसदा तथा वैश्य(?)महमुक्तौनृपस्य च ॥३३७॥  
 विप्रस्य वा पृथक् पंक्तिर्न समान्यप्रबुत्रचित्(?) ।  
 पार्वथोरभिमुख्ये वा पश्चाद्वा पंक्तिरुच्यते ॥३३८॥  
 सतर्न भिन्नजातीनां पश्चाच्छूद्रस्य नैकदा ।  
 समकालभुजः प्रोक्ता द्विजानां पंक्तिभेदतः ।  
 त्रयागामप्येकदेवभोजनंविधिचोदितं ॥३३९॥  
 समानमु(भु)क्तिर्मर्यादात्तत्तज्जातिषु संतर्तं ।  
 अंधपंगुजङ्घोन्मत्तमूकादीनां तथैव वै ॥३४०॥  
 समा पंक्तिः कदाचिन्न कर्मयूना यतस्तु ते ।  
 भिन्नपंक्तौ भोजनीयाः समकालेपि सन्तर्तं ॥३४१॥  
 समानरंक्तौयदि ते भोजिताः प्रत्यवायिनः ।  
 भवंत्येषाश्च मदेहा नैवेति ब्रह्मवादिनः ॥३४२॥

अथ पंगुजडोन्मत्तमूकादिसमभोजने ।  
 प्राजापत्यं प्ररुथितं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमैः ॥३४४॥  
 अंधस्य मंत्रसामर्थ्यं यशस्वसि तथाप्यति ।  
 ममीक्षणादि कृत्येषु यतो वैकल्यमेव तन् ॥३४५॥  
 स्पष्टं प्रत्यक्षमेतत् न सर्वैस्मद्विज्ञैस्समः ।  
 पद्मोर्गमनकृत्येषु वैदिकेषु निरंतरम् ॥३४६॥  
 वैकल्यं स्पष्टमेवैतन् तद्द्वारा तस्य फलम् ।  
 ब्राह्मण्यपरिपूर्तिर्न जडोन्मत्तो तथैव हि ॥३४७॥  
 मूकस्य मंत्रमामान्याभाषादेश निरन्तरम् ।  
 ब्राह्मण्यन्तेशोऽपि कथं तस्य स्यादिति पश्यत ।  
 प्रत्यक्षैश्चेत्प्रमाप्रसमुत्पत्तिमद्वयतः ।  
 पुनस्तन्मंत्रकार्यैश्च न भवेद्भिन्नजातिकः ॥३४८॥  
 दिव्यसम्पूर्णविप्रत्वमपि नास्ति तत-किञ्च ।  
 तत्पुंसं तं यो गेन शत्रुवैश्यसमो ह्यतः ॥३४९॥  
 क्षत्रादीनां विप्रसामर्थं कुतो नास्तीति चेदथ ।  
 प्रोच्यते कारणं तच्च तदोपनयनं मदन ॥३५०॥  
 शत्रुव्यव्याप्ततः पूर्वं प्लव्यामाद्वयसः परम् ।  
 एष्टभेदान् विद्याभेदाद्विवादादिविभेदानः ॥३५१॥  
 वेदाध्ययनभेदाच्च तथा भिदाप्रभेदानः ।  
 तस्यास्य च मद्दस्योक्तं तावत्सर्वं निरंतरम् ॥३५२॥  
 तेन सर्वेऽपि विद्वन्व्यस्तानुपनिषत्सु मदन ।  
 सामर्थ्यं तसार्थरंघे हि देवानामपिदुर्लभम् ॥३५३॥

अथर्षां पत्नीनीयश्च वदुतन्मन्वाश्रमैः ।  
 संवत्संभूतिविधितैर्न मरीचैरङ्गनाथया ॥३२४॥  
 गङ्गेवद्वयसोपगन्तुं अथर्षां हित्वाभुवन् ।  
 अमावसाविति स्थानं पथरीन्द्रः मदर्षवः ॥३२५॥  
 संभुवत्तु विलसत्तु वनग्याः सर्वेष्वेवाविरगेततः ।  
 वृन्त्येषु वेदिकेऽन्वेषु दृगांश्चिन्त्यमिन्नेवति ॥३२६॥  
 ते शुद्धगोत्रिनः स्युर्वै मदा वक्तुं ममप्रमद ।  
 अभ्यर्गुणा तेन होत्रा शक्यन्तिऽगम्य नैव हि ॥३२७॥  
 अन्यगोत्रप्रविष्टाय मुनो यः पूर्वगोऽयभूत् ।  
 परप्रदानपूर्वं वै शानीनामभ्यनुत्तया ॥३२८॥  
 तत्पुत्रपौत्रपर्यन्तं तस्य सन्मंततेरपि ।  
 पित्राद्युच्चारणे नग्मिन्वैतृष्टे ममुपस्थिते ॥३२९॥  
 क्रमान्न शक्यते यस्मान् त्यक्तपुत्रादिर्हं न्यमुः ।  
 दत्ततत्पुत्रतत्पुत्रतत्पुत्राणामतोऽखिलाः ॥३३०॥  
 वेदप्रोक्ताः क्रियास्तथां स्थानं कर्तुं समञ्जसम् ।  
 प्रवरोक्तयोग्यतायाः अमावान्न्यंगनैच्यके ॥३३१॥  
 तत्संततौ चतसृणां (त्रयाणां) स्यात्पूर्वाणां ह्यन्यमुत्तमम्  
 तच्च सम्यक् प्रवक्ष्यामि मुस्पष्टं शृणुताधुना ॥३३२॥  
 त्रिष्वेष्वधायाः त्यक्तपिता पश्चात्त्यक्तपितामहः ।  
 प्रपितामहानसंत्यागी क्रमात्ते वर्णिताः किल ॥३३३॥  
 तत्र यद्यपि दत्तस्तु शुद्धवत्यतिभाति हि ।  
 पित्रादित्यागशून्येन सर्वपित्र्येषु संततम् ॥३३४॥

सप्रदानमन्यथानर्थ एव वै ।  
 य शनैःकालात्तं गृह्णन्जनसन्निधौ ॥३८६॥  
 सद्यः प्रकर्त्तव्यः व्याहृतीभिर्घृतेन वै ।  
 प्रायः पितुर्गोत्रात् स्वस्वसंपादनाय च ॥३८७॥  
 वैशसिद्धपर्यं प्रतिगृह्य च तं पुनः ।  
 होमं व्याहृतीनामाज्येनाष्टोत्तरं शतम् ॥३८८॥  
 त्वेति मन्त्रेण संतत्यै कर्मणेति च ।  
 तल्पानश्च कुर्यादद्यैष तन्त्रतः ॥३८९॥  
 त्वेति त्वन्यसुतः कर्मणे स्वस्थकालतः ।  
 यं प्रभवेत्पश्चात्तज्जातस्तु स्वकं सुतम् ॥३९०॥  
 प्रार्थनापूर्वं व्यूहयित्वाखिलानपि ।  
 इद्भ्य मन्त्रेण नमस्कृत्वाखिलान्स्वकान् ॥३९१॥  
 तं सहस्रं वा परं प्राञ्जलिरास्थितः ।  
 प्रपश्यन्तो परं संगृह्य मामकम् ॥३९२॥  
 न ते यूयं कृपया स्वीयगोत्रके ।  
 मनकृत्याय म्वीकृत्यानतचेतसा ॥३९३॥  
 धर्यं तेषां वै संनिधावेव केवलम् ।  
 विधानेन कृत्वा कर्माणि शास्त्रतः ॥३९४॥  
 पुत्रादीनि मंगलार्थानि यानि वा ।  
 णि तत्पश्चात्तस्मिन्नग्नौ यथाविधि ॥३९५॥  
 तस्सर्वास्तद्गोत्रावेशकारकाः ।  
 विशादस्मज्जमिमं कुमारं महसे पिता-

तस्मात्तमुतो लोके भिन्नगोत्रेषु कमसु ।  
 विवाहादिषु तदेव द्रोहिणःस्युर्न संशयः ॥३७६॥  
 ये देवहेलनपराः संत्यक्तस्वीयदेवताः ।  
 स्वदेवतामकाशान्ते च्यवन्ते नात्र संशयः ॥३७७॥  
 तस्मात्परां गर्ति दिव्यां प्राप्नुवन्ति न चैव हि ।  
 पापीयसो भविष्यन्ति भवेयुर्नरकालयाः ॥३७८॥  
 तद्दाने तु यथापित्रोः सम्मतिः परमा भवेत् ।  
 तन्मातामहयोस्तद्वत् सम्मतिश्चतदायदि ॥३७९॥  
 भवेदोषो नैव भवेदितिषेदानुशासनम् ।  
 यथा संत्यक्तपित्रादिः लोके भवति निन्दितः ॥३८०॥  
 त्यक्तमातामहश्चापि तथैवेति न संशयः ।  
 ( तथैवस्यान्न संशय इतिपाठान्तरम् ) ।  
 दद्यातां दम्पती पुत्रं गृह्णीयाताश्च दम्पती ॥३८१॥  
 तयोरेवाधिकारोऽयं तद्दाने तत्प्रतिग्रहे ।  
 संदाने तु पुत्रस्य तन्मातामहयोरपि ॥३८२॥  
 अभ्यनुतां विशेषेण वक्षिणीया तथा पुनः ।  
 पश्चात्पितामहादीनां धन्धूनामविशेषतः ॥३८३॥  
 सतां गुरुणां महतां शानीनाश्च सगोत्रिणाम् ।  
 तद्दामवामिनां चापि वणिजामधिपस्य च ॥३८४॥  
 शूद्रानामपि तथा तत्रत्यानां हृतात्मनाम् ।  
 सर्वेषामपि वर्गानां सम्मत्या तत्समाचरेत् ॥३८५॥

परिग्रहं संप्रदानमन्यधानर्थ एव वै ।  
 भवेदेव शनैःकालात्तं गृह्णन्जनसन्निधौ ॥३८६॥  
 होमःसद्यः प्रकर्त्तव्यः व्याहृतीभिर्घृतेन वै ।  
 प्रध्वंशाय पितुर्गोत्रात् स्वधसंपादनाय च ॥३८७॥  
 गोत्रप्रवेशसिद्धयर्थं प्रतिगृह्य च तं पुनः ।  
 कृत्वा होमं व्याहृतीनामाज्येनाष्टोत्तरं शतम् ॥३८८॥  
 धर्मायत्वेति मन्त्रेण संतत्यै कर्मणेति च ।  
 हरिद्राजलपानञ्च कुर्यादश्वैव तन्त्रतः ॥३८९॥  
 एवं कृते त्वन्यसुतः कर्मणे स्वस्थकालतः ।  
 योग्योऽयं प्रभवेत्पश्चात्तज्जातस्तु स्वर्कं सुतम् ॥३९०॥  
 तज्ज्ञातिप्रार्थनापूर्वं व्यूहयित्वाखिलानपि ।  
 नमो महद्भ्य मन्त्रेण नमस्कृत्वाखिलान्स्वकान् ॥३९१॥  
 दत्त्वा शतं सहस्रं वा परं प्राञ्जलिरास्थितः ।  
 यदेदेवं प्रपश्यन्तो परं संगृह्य मायकम् ॥३९२॥  
 सनयं मम ते सूर्यं कृपया स्वीयगोत्रके ।  
 मौञ्जीबन्धनकृत्याय स्वीकृत्यानतचेतसा ॥३९३॥  
 इति संप्रार्थ्य तेषां वै संनिधावेव केवलम् ।  
 प्रतिष्ठाप्य विधानेन कृत्वा कर्माणि शास्त्रतः ॥३९४॥  
 अभ्यञ्जनमुखादीनि मंगलार्थानि यानि वा ।  
 तानि सर्वाणि तत्पश्चात्तस्मिन्नग्नौ यथाविधि ॥३९५॥  
 हुवेत्तदाहुतिस्सर्वास्तद्गोत्रावेशकारकाः ।  
 कुलमन्यदाविशाद्मज्जमिमंङ्कुमारंसहसे पिता-



महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्नेस्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं तैजसे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्नेस्वाहा ॥  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं वत्ससे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्नेस्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं तेजसे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्ने स्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं वत्ससे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्नेस्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं हरसे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्ने स्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारं भ्राजसे पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्ने स्वाहा ।  
 कुन्मन्यदाविरादस्मज्जमिमं कुमारमिन्द्रियाय पिता-  
 महस्यामुप्यायणस्य गोत्रं प्राकृतं प्रापयाम्नेस्वाहा ।  
 कुन्मन्येति मन्त्रेण हुत्वाकादशसंख्यया ।  
 कृत्वा जपादि होमश्च हरिद्रासलिलं ततः ॥३६६॥  
 पश्चात्तु मातृभिक्षार्थं प्रायश्चित्ताद्विधानतः ।  
 एवं कृते तस्य सूनोः मौञ्जी कर्मणि तत्परम् ॥३६७॥  
 पितामहस्य गोत्रेण संयुक्तो जातइत्यपि ।  
 सिद्धं भवति शास्त्रेण तत्परपौत्रस्य तत्परम् ॥३६८॥

यदि जातस्सुतः सोऽयं सम्यक्शुद्धो न संशयः ।  
 स योगकर्मणां योग्यस्तदायत्वे हि तत्कुले ॥३६६॥  
 तद्योग्यता जायते च तावत् दत्तस्य संवतिः ।  
 अयोग्यता कवल्लिता न्यंगनैच्यप्रपीडितः ॥४००॥  
 तदायाद्यंशसाम्बादि कुण्ठिता श्रीबहिष्कृतः ।  
 स्वजनैकप्रसादश्रीकामुकास्तञ्जनश्रिताः ॥४०१॥  
 कुर्वती चातकी वृत्तिं प्रतिष्ठति हि भूसले ।  
 कर्मठत्वं सजातित्वतःसमत्वादिमिद्वये ॥४०२॥  
 विशादीनां श्रयाणाञ्च क्रमोक्तेःसिद्धिरुत्तमा ।  
 यदा सञ्जायते सम्यक् प्रवरस्य च तत्कुले ॥४०३॥  
 तर्भय साम्यसिद्धिःस्यात् अंशभास्त्वञ्च जायते ।  
 ब्राह्मण्यञ्च समीचीनं तथा यागाधिकारिता ॥४०४॥  
 यथा पुत्रस्य तातस्य शोभयोर्भिन्नगोश्रता ।  
 तदेव त्रिदिनाशौचं संस्पष्टं मातुरेव च ॥४०५॥  
 गांधर्वादिष्विवाहैस्तैर्यदि माता विवाहिता ।  
 तदा पितुः स्यात्त्रिदिनं तन्मृतां सूतकं मतम् ॥४०६॥  
 मातामहस्य गोत्रेण मातुः पिण्डोदकक्रियाः ।  
 कुर्वति पुत्रिकापुत्र एवमाह प्रजापतिः ॥४०७॥  
 पितुरर्चेन्सूतकं पूर्णं तथा मातामहस्य च ।  
 मातुलस्य च तत्पत्न्या यतस्तद्गोश्रयं स्मृतः ॥४०८॥  
 यत्र मातुर्विवाहे तु दानं जातन्तु(तत्समृतः)शास्त्रतः ।  
 तत्र सप्तपदाख्यं च कर्म संजायते स्वतः ॥४०९॥

स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विवाहे सप्तमे पदे ।  
 लाजाहोमप्रधानाभ्यां प्रवेशो भर्तृगोत्रके ॥४१०॥  
 स्त्रीजाते सर्वकार्यैककर्तृत्वाभार ईरितः ।  
 नित्यं पराधीनता च न स्त्रीस्वातन्त्र्यमर्हति ॥४११॥  
 बाल्ये पित्रोरधीना सा पत्युरेव तु यौवने ।  
 वार्धके ननयानाश्च स्वातन्त्र्यं न कदाचन ॥४१२॥  
 कन्यादाता ब्रह्मलोकं पुत्रदो निरयं व्रजेत् ।  
 दाक्षिण्यमपि कारुण्यं कृपा यत्र प्रजायते ॥४१३॥  
 पितृवन्धुगुरुत्तिश्च तत्रापदि कुलस्य च ।  
 यदि स्यात् बहुपुत्रत्वं तदैकस्यैव केवलम् ॥४१४॥  
 स्वगोत्रिणं स्वान्यध्रात्रे स्वकुलीनाय वै सते ।  
 नैच्यन्यद्गृहकरहितो लोभाशा परिवर्जितः ॥४१५॥  
 दीयमानस्य तस्यापि न्यंगनैच्ये यथातराम्(?) ।  
 न भवेता तथालोच्य तस्य शृत्ति तथाहृदाम् ॥४१६॥  
 एयमेताहरी मम्यद् हृदयित्वेति लोकतः ।  
 राजतोऽपि विनिधिन्य दानं कुर्यादिति धृतिः ॥४१७॥  
 ण्यं दत्तस्य पुत्रस्य काले बहुगते ततः ।  
 वैपुषिच्छुभहृत्वेष्ु मातामहविधादतः ॥४१८॥  
 शाश्वतानि भिन्नभिन्नानि चश्रुनि क्लिष्ट सन्नतम् ।  
 ह्यन्धानि मतभेदेन तस्य मातामहद्वयम् ॥४१९॥  
 जनन्या जनघरपेनि जनघो प्रादकस्य च ।  
 वंथा विद्विषतोः बभूव क्लिष्ट केवलम् ॥४२०॥

विवादोऽयं परं त्वत्र तन्मात्रस्यैव जायते ।  
 न तस्य संततिः प्रोक्ता भिन्नगोत्रप्रदस्य चेत् ॥४२१॥  
 आत्रिपूर्वं तत्सुतस्य तेन साकं तु पैतृके ।  
 परं सपिण्डमारभ्य कुमार्गः संभवेत्त्रलु ॥४२२॥  
 तेन तावत्तस्य कुले जातानामात्रिपूर्वतः ।  
 विप्रत्वहन्यताज्ञाति भागसाम्यैक शून्यता ॥४२३॥  
 न्यङ्गता नैच्यतातीव तज्जनाश्रयता तथा ।  
 तद्व्यन्धुमित्रपुत्रादि जनचित्तानुवर्तिता ॥४२४॥  
 एता भवन्ति सततं तस्मात्पुत्रं पिताहता ।  
 स्थलपगति समीक्ष्यादौ न दद्याद्भिन्नगोत्रिणे ॥४२५॥  
 पश्चात् तावता गाढं बाधकं प्रभविष्यति ।  
 येन केनापि दुर्वारमाचतुष्टयपूरुषम् ॥४२६॥  
 सर्वदानानि सर्वैश्च कर्तव्यानि मनोपिभिः ।  
 शक्तौ सत्यां विशेषेण पुण्यकालेषु तेषु वै ॥४२७॥  
 वेदशास्त्रपुराणादि चोदितेषु युगादिषु ।  
 अर्धोदये महोदये चन्द्र सूर्योपरागके ॥४२८॥  
 धरादानं प्रशंसन्ति सर्वदानोत्तमोत्तमम् ।  
 धेतुदानं बाह्यदानं गजदानं तदा न सः ॥४२९॥  
 रथदानं वस्त्रदानं वार्षभं दानमेव च ।  
 शय्यादानन्तुष्टादानं कल्पशृङ्गारुयकं परम् ॥४३०॥  
 गोदानं रत्नदानञ्च पुष्पताम्बूलयोरपि ।  
 सुगन्धं चन्दनमहो पवनोरारिसद्दानाम् ॥४३१॥

पुण्यवृद्धमगच्छेत् महीपत्रकौशमाय ।

पद्मोत्पलमातात्रिकद्वारहृदिभुज्याय ॥४३०॥

गुडावलयगभीरुदधिकर्दमपूत्रिणाय ।

हिरण्यव्रतगण्डेनर्जितापटमाश्रिणाय ॥४३१॥

धनानामपि भान्यानां मयानां पंगकान्मनाय ।

महाचन्दनकाष्ठानां कर्पूरेलामरीचिणाय ॥४३२॥

दिव्यानां देवपुष्पाणां क्रमुकाणां विरोपतः ।

पल्यानामपि शाकानां भूषणानां विरोपतः ॥४३३॥

कम्बलानां च दिव्यानां द्विपटानां मुपभ्रुणाय ।

उष्णीषोत्तरधार्याणां माध्यानां मुग्धवासनाय ॥४३४॥

तिरस्करणिकानां च रज्जूनां दीर्घमूत्रिणाय ।

शोभनोभयतो मुख्याः सवत्मायाः पृथक्पुनः ॥४३५॥

गोसहस्रस्य चित्रस्य तिलपद्मस्य शूलिनः ।

शूलस्य दक्षिणामूर्त्तोरयसब्धागमेपयोः ॥४३६॥

हिरण्यगर्भसंज्ञस्य लांगलस्य कपालिनः ।

साशिध्राण( सलिगस्य )महामूर्त्ते भस्मरुद्राक्षयोः पृथक् ॥४३७॥

महालिङ्गस्य लिङ्गस्य वाणलिङ्गस्य कर्मणः ।

ताम्रसीसादिपात्राणां दासीदामादि देहिनाय ॥४३८॥

पुनरन्यानि दानानि पात्रदत्तानि शास्त्रतः ।

कामनारहितानि स्युः ब्रह्मज्ञानाय केवलम् ॥४३९॥

पारमेश्वरतुल्यैकद्वारा नो चेत्तु वै पुनः ।

कृतानि कामतःसद्भिः तत्तत्कार्यकराण्यति ॥४४०॥

यद्यत्कामनया कर्म क्रियते तत्तु तत्पुनः ।  
 सद्गमाच्छिद्रसगुणमलोभाशाठ्यसंयुतम् ॥४४३॥  
 मन्त्रनेत्रादिवैकल्यरहितं चैतफलत्यदः ।  
 यत्किञ्चिद्ब्रह्मलोपेऽपि काम्यं कर्म न सिध्यति ॥४४४॥  
 अप्यनेकाङ्गविकलं क्रियते पारमेश्वरम् ।  
 तत्कर्म सफलं सद्यः भविष्यति न संशयः ॥४४५॥  
 तस्मात्सद्भिः सदाकार्यं कर्ममात्रं न संशयः (निरन्तरम्) ।  
 परमेश्वरतुष्ट्यर्थं चित्तशुद्ध्यर्थमाहृतः (मात्मनः) ॥४४६॥  
 स्वीयस्य दानं कुर्यात्तु नान्यदीयस्य वस्तुनः ।  
 न्यायार्जितस्य द्रव्यस्य प्रदाने योग्यता भवेत् ॥४४७॥  
 अन्यायेनार्जितं द्रव्यं कौर्यव्यामोहनादिभिः ।  
 संप्राप्तमागतश्चापि दानयोग्यानि चाचरेत् ॥४४८॥  
 कृतेन दानेन यथा परपीडा न जायते ।  
 वृथा तथा प्रकुर्वीत दानं धर्माय तत्परः ॥४४९॥  
 परपीडाकरं दानं दातुस्तप्राहकस्य च ।  
 उभयोर्नरकायैव कलिष्यति न चान्यथा ॥४५०॥  
 दानेन यस्य कस्यापि यथा पीडा व्यथा तथा ।  
 दुःखमादिभ्य संमोहस्तथा कुर्यान्नचेद् वृथा ॥४५१॥  
 न सामान्यं धनं देयं अल्पं वा महदेव वा ।  
 सामान्यवस्तुदानेन कलिं विदति तत्क्षणात् ॥४५२॥  
 यत्संदिग्धं परास्वाद्यं संशयं वस्तु केवलम् ।  
 अदेयमेव सततं यत्तद्धर्मकभोग्या ॥४५३॥

शुद्धं मत्वेन सुस्पष्टमनाकांक्ष्यं परैरपि ।  
 यद्वस्तु दीयते तत्तु परलोकाय युज्यते ॥४१४॥  
 यद्वस्तु स्यात्परप्राप्यं कालेन शनकैस्तु तन् ।  
 अदेयं सर्वथा प्रोक्तं चोरस्तद्ग्राहकश्च यः ॥४१५॥  
 क्रयश्रतादृशस्यैव वस्तुनः विधिचोदितः ।  
 कर्तव्यत्वेन तद्धिन्नं वस्तुनो न कदाचन ॥४१६॥  
 राजतत्तुल्यतद्भृत्यतत्प्रेष्यपितृवन्धुभिः ।  
 तत्समैर्बलवद्भिर्यदत्तं सिद्धयति संततम् ॥४१७॥  
 नद्धिन्नैर्दुर्बलैरन्यैः दत्तं यच्छास्त्रवर्त्मना ।  
 विशुद्धागमनं प्राप्तं चेत्सिद्धयति न चेतरेत् ॥४१८॥  
 यस्य प्रदानकर्तृत्वं शास्त्रागमसुनिश्चितम् ।  
 तेनैव दत्तं सर्वत्र सिद्ध्यत्येव न चेतरेत् ॥४१९॥  
 प्रतिग्रहेण लब्धाय भूमिप्रामोऽथ वर्णकः ।  
 माघाद्यग्नीमनामा वा विद्यासंभावनादितः ॥४२०॥  
 तेषां प्रतिग्राहयिता यजमानस्य एव हि ।  
 कर्ता कारयिता चापि म्यामी गोत्रा प्रयत्नतः ॥४२१॥  
 न एव सर्वं कथितः निषहानुमदादिभिरु ।  
 यदि तेन कृताग्नेषु कृतयो वर्णकादिषु ॥  
 कालेन दत्तागणो वा नाः पुनःस्येच्छयाऽथवा ।  
 पापेरणया चापि न नामां पनिरेव हि ॥४२२॥  
 राज्ञा मया कृतारणेषु कृतयो द्विजहेतवे ।  
 माःमान्यवन्मदा कर्ता नत्र राज्ञा प्रमुग्मदा ॥४२३॥

विशेषेण प्रदत्ताश्चेत्तत्तन्नाम्ना पृथक् पृथक् ।

अंशभेदेन तत्रापि तदा सर्वे तथा मताः ॥४६५॥

तावन्मात्रस्य कर्तारः मिलित्वा निखिला अपि ।

तस्मिन् प्रामे तु कर्तारो निप्रहानुप्रहादिषु ॥४६६॥

तत्तत्स्ववृत्तिषु परं कर्तृत्वं पृथगुच्यते ।

स्ववृत्तिभिन्नवृत्तीनां न कर्तारस्तु ते स्मृताः ॥४६७॥

भूमेर्प्रांमादिरूपाया दत्तया स्वेन वान्यतः ।

प्रभुर्नराजा कथितः कर्तारोप्राहकाः स्मृताः ॥४६८॥

तेह्यावश्यकस्यकार्यस्यकर्त्तव्यत्वे ह्यवस्थिते ।

तदा राजैव तत्कार्यं कर्त्ता सम्यग्भवेद्भुवम् ॥४६९॥

यतो हि जगतो राजा कर्त्ता दण्डयिता पिता ।

पालकश्च गुरुर्भीकृत् निप्रहानुप्रहैकभूः ॥४७०॥

एकद्वित्रिचतुर्द्वृत्तिमत्प्रभेदजनाश्रयः ।

प्रामो यदि तदा तत्र तत्तन्मात्राधिकारिणः ॥४७१॥

नाधिकस्य तु कर्तारः भवेयुरिति शास्त्रहन् ।

सामान्यबलवत्कार्ये कर्त्तव्यत्वेन यागते ॥४७२॥

सर्वे मिलित्वा कुर्वन्ति(वीरन) एकबुद्ध्यैव नान्यथा ।

स स्वामिकप्राममध्ये बृहत्कार्ये निपातिते ॥४७३॥

स्वाम्युक्तवर्त्मना सर्वे तत्कार्यं साध्यमित्ययम् ।

पक्षस्तु सर्वशास्त्राणां तत्र चापि स एव हि ॥४७४॥

निर्वाहकः स्यादित्येव जावालादिमतं परम् ।

अस्वामिकप्राममध्ये क्लृप्तद्विजनिरन्तरे ॥४७५॥



न भिन्नप्राप्तिका कार्यः क्लेशवृत्ति रगिषडः ।  
 स्वीकारान्कोतवृत्तेषु वृत्तिमद्विविगेनः ।  
 तस्मिन्प्राप्ते न चान्येषु कृता यदि न सिद्धवति ॥४३३॥  
 ये प्रतिप्रदिनः पूर्वं माभ्यान्वृत्तुमुत्पन्नम् ।  
 अत्युत्तमाः कर्तुमुन्व्याः तन्महाप्रतिप्रदी ॥४३४॥  
 तत्तन्ममो दुर्बलोऽयं यदि तेन ममं कर्तौ ।  
 विधदेत्यायं कालेषु मन्कार्येऽमो महात्मभिः ॥४३५॥  
 ममानमपि वार्दं यः धुनं धृत्या तु शक्तिमान् ।  
 तन्निप्रहमकुर्याणो दुर्गतिं प्रतिपद्यते ॥४३६॥  
 यदि स म्यामिको प्रामग्गदा तन्मनपूर्वम् ।  
 दानमाधि ऋयश्चापि कुर्वीते न चान्यथा ॥४३७॥  
 प्रामःसस्यामिको यो वा तस्मिन्वे तदनुज्ञया ।  
 कयादिदानरुमाणि कार्याणीति प्रचक्षते ॥४३८॥  
 पुत्रपौत्रज्ञातिवन्धुमामन्ताद्यभ्यनुज्ञया ।  
 शुद्धचित्तेन यदत्तं तत्सिध्यति हि संततम् ॥४३९॥  
 अन्वये सति भूदानं महसा वनमाचरेन् ।  
 सर्वैरालोच्य सर्वेषां पर्याप्ता भूरिधता यदि ॥४४०॥  
 स्वगोत्रिणां सपिण्डानां समालोच्यैव केवलम् ।  
 वेदशास्त्रस्मृतिन्यायादिरोधेन ततः परम् ॥४४१॥  
 जनमत्या ज्ञातिमत्या वंधुमत्या सहादिषु ।  
 सर्वेषां पश्यतामारान् न्यायात्प्रधरणी त्यजेन् ॥४४२॥  
 समीपज्ञातिदुष्टिश्चेद् भूदानाद्विन्नगोत्रिणाम् ।  
 शक्यते हि तदा कर्तुं तदानं तु न चेक्षरेन् ॥४४३॥

दौहित्रसाम्यमात्रा येविभक्ता ह्यनु तस्य कुम् ।  
 नेच्छेयुरेव धर्मेण तामिच्छन्तः पतन्त्यधः ॥४८७॥  
 त्रिभागा ज्ञातयस्सर्वे भिन्नभिन्नाः स्मृताःपरम् ।  
 तत्तद्धनानां ते ते स्युःकर्तारध्वपृथग्ग्रहाः ॥४८८॥  
 अपुत्रस्य धनं ज्ञातेर्विभक्तस्याखिलं भवेत् ।  
 दौहित्रस्यैव धर्मेण न ज्ञातेस्तु कथंचन ॥४८९॥  
 ज्ञाती खलु सगोत्रस्य धनार्थं प्रेतकर्म यत् ।  
 तावन्मात्रं करोत्येव प्रत्यब्धश्च न चेतरेत् ॥४९०॥  
 दौहित्रश्चेद्धनाभावेऽप्यस्य सर्वेषु कर्मसु ।  
 पुत्रेण समतो नित्यं स्ववियाहानिलेऽद्भुते ॥४९१॥  
 असाधारणके मुख्येऽप्यमौकरणपूर्वकम् ।  
 सर्वधाद्धानि नित्यानि करोत्येवाजुगुप्सितः ॥४९२॥  
 अमात्यो न तथा कापि किं करोति स्वगोत्रिणे ।  
 तस्माद्भावे दौहित्रजनस्य किल तत्परम् ॥४९३॥  
 अमुतस्य धनं तत्तु प्रत्यासन्नः सपिण्डकः ।  
 यो वा सतु गृहीयादिति वेदानुशासनम् ॥४९४॥  
 दौहित्राणामनेकेषा समवाये तदा किल ।  
 ( धाद्धानि नित्यानि करोत्ये वा जगुप्सितः ) ।  
 यो वाऽऽयन्तं निर्धनः स्यात्सधर्मेण हरेद्दनम् ॥४९५॥  
 समवाये निर्धनानां सर्व एव यथाशक्तः ।  
 पुनश्च निर्धनेष्वेपु धनितस्तस्यतन्मनः ॥४९६॥

यथा भवति (वदन्ति) तद्रीतिमनुसृत्य न चान्यथा ।  
 चरेयमिति सश्रीमान् कपिलो व्याजहार ह ॥१६७॥  
 दौहित्र एव सर्वेषां पुत्राणामुत्तमः स्मृतः ।  
 तत्समस्त्वौरसस्तजः सुतश्चापि तथाविधः ॥१६८॥  
 अपुत्रो बहुवृत्तिश्रीः विभक्तो ज्ञातिगोत्रिभिः ।  
 वृत्तिदानं प्रकुर्वाणो यथेच्छं कर्तुमर्हति ॥१६९॥  
 स्वप्रामज्ञातिसामन्तादायादानुमतेन वै ।  
 मेघपुष्पमुवर्णाभ्यां कार्यं भूदानमेककम् ॥१७०॥  
 सर्वाण्यन्यानि दानानि शास्त्र स्वीयानि ह्यदतः ।  
 तुष्टये परमेशस्य कार्याण्येवान्वहं यथा ॥१७१॥  
 यथा वा कन्यकादाने गोश्रभिन्नमनन्तकम् ।  
 तथाच्युतपदप्रामिसाधनं कथितं तथा ॥१७२॥  
 स्थगोत्रम्मुस्यतो क्षेयं भूमिदानं पुरातनैः ।  
 कृतं कारयित्वापि शास्त्रज्ञैरपि नैकधा ॥१७३॥  
 उक्तं श्लोक्तं प्रगीतं च सामादि त्रितयेन च ।  
 अभावे पुत्रयोर्वशे भूमिदानं ततश्चरेत् ॥१७४॥  
 मनि वंशे वृत्तिदानं क्रयो वा तस्य नाचरेत् ॥  
 ज्ञाना जनिष्यमाणाश्च गर्भस्थाश्चापि देहिनिः ॥१७५॥  
 वृत्तिमेषाभिराश्रन्ते तस्माद्वृत्तिं प्रपालयेत् ।  
 अन्वये मनि पुत्रस्य पुत्रिकाया विशेषतः ॥१७६॥  
 वृत्तिरुद्धं मुचं मोहादस्या निरयभागभवेत् ।  
 विषयस्यो भूमिदाने शास्त्राननयवर्जितः ॥१७७॥

पात्रभ्यां विशेषेण दद्यात् भूमिं सदक्षिणाम् ।  
 मिदाने भ्रातृपुत्राः भ्रातरःपितरस्तथा ॥५०८॥  
 कामहाः पितृव्याञ्च प्रद्वेषारोऽपि पात्रताम् ।  
 तन्त्रि च कृपादाब्जं प्रापकाः प्रभवन्त्यपि ॥५०९॥  
 गत्संततिविच्छिन्नौ भूमिदानं सगोत्रिषु ।  
 तैर्धर्मतो गत्वा संप्राच्येनां दुरात्मनः ॥५१०॥  
 षण्ण तु विद्वांसः त्यक्तवैरो हरिस्मरन् ।  
 दिव ततो याति तद्विष्णोःपरम पदम् ॥५११॥  
 अरितो दानकाले न तदानं समाचरेत् ।  
 षीडाकरं दानं महारौरवदायकम् ॥५१२॥  
 अतिहृत्तुष्टिकरदानं शिवपदप्रदम् ।  
 ते ज्ञातिबन्धुन्या स्वयमज्ञो बलापि वा ॥५१३॥  
 । भूवृत्तिबन्धुदानं सद्गतिवारकम् ।  
 होष्वपि विद्वत्सु भ्रातृत्सुत्रकेष्वति ॥५१४॥  
 सत्सु तिष्ठत्सु नरो नारीसमोऽपि वा ।  
 ाश्रोत्रियौ मूढो विद्वान्वा वेदपारगः ॥५१५॥  
 ऽपि भूमिदानं तत्तेभ्य एव समाचरेत् ।  
 ज्ञातिजनो नित्यमसंततिधनार्चयति ॥५१६॥  
 क्यं भूमिरूपं ज्ञातये देयमेव हि ।  
 ह्वा विभवा मध्यप्राप्तसुवृत्तिका ॥५१७॥  
 मती साध्वी मृत्यमाणापि मुप्रता ।  
 मि विनाज्ञातीनन्येभ्यो न निवेदयेत् ॥५१८॥

परं तद्विषये तूर्णी कलहं नैव कारयेत् ।  
 विभक्ता विधवा साध्या देवात्संप्राप्तसल्लुब्धाः ॥११६॥  
 अवशादागतमहाश्रुतिमत्यश्रुतन्मुखात् ।  
 संप्राप्त्यैकमहागवाः कुमत्यो धर्मबुद्धितः ॥११७॥  
 अधर्ममेव कुर्वन्त्यः स्वजनद्वेषतत्पराः ।  
 दानविक्रयकार्यैकयोग्यता रहिता अपि ॥११८॥  
 तत्कार्यैक्यो दुर्वोधमहिम्नायाः खलाश्रयाः ।  
 ता विलोक्य प्रयत्नेन धार्मिको नृपतिः स्वयम् ॥११९॥  
 देशात्प्रवासयेत्सद्यः तत्प्रतिमाइकानपि ।  
 विधवानामनाथानामज्ञातानां च केवलम् ॥१२०॥  
 पाकंशुनं तथा नाद्यान् मत्तीनामपि संततम् ।  
 रंडापाकं सदात्याज्यं प्रवदंतिमनीषिणः ॥१२१॥  
 रंडावहुविधाज्ञेयाः पाकायोग्याः सदा सताम् ।  
 अज्ञातानामका काचिन् काचित्प्रज्ञातनामका ॥१२२॥  
 मृष्टाश्रुता नष्टमुता सत्पुत्रा चेति सूरिभिः ।  
 ता एता निम्बिला रुयाताः भूतानामधिकारकाः ॥१२३॥  
 पाकक्रिया दूरगारच भर्तव्यास्साधुश्रुतयः ।  
 या भर्तारं न जानाति साक्षात् कथ्यते बुधैः ॥१२४॥  
 अत्यंतबाल्यसंप्राप्तवैधव्यात्यंतपापम् ।  
 या विज्ञानाति भर्तारं नान्यत्किमपि केवलम् ॥१२५॥  
 मा विज्ञातेति विरुधाता विधवाः संप्रतिश्रुताः ।  
 रनिमात्रेण वा धर्मः वैधव्यं प्रतिपद्यते ॥१२६॥

मुखदोषनिमित्तेन सृष्टायाविधमुच्यते ।

परचात्तु रजसो भर्तुः संगम्राण्य या वशात् ॥१३०॥

वैधव्यं समवाप्नोति सा सृष्टा विधवा परा ।

नष्टप्रजा काचिदेवं विधवान्या मनीषिभिः ॥१३१॥

नष्टपुत्रेति सम्प्रोक्ता चायोग्या पाककर्मणि ।

एवं सपुत्रिणी चापि स्वभर्तुर्मरणात्परम् ॥१३२॥

वैधव्यं समनुगता सत्पुत्रविधवा स्मृता ।

सपुत्रा विधवा या तु तथा पाकः कृतस्तु यः ॥१३३॥

स स्त्रीकार्यो हि निखिलैः रण्डापाको न च स्मृतः ।

सर्वा रण्डाःपाककृत्ये दूःपिता स्युर्मनीषिभिः ॥१३४॥

ताभिर्यदि कृताःपाकाः कर्मिणां ब्रह्मवादिनाम् ।

त्रैवर्णिकानां गृहिणा यतीना ब्रह्मचारिणाम् ॥१३५॥

न भक्षणैकयोग्याः स्युर्नवेद्याय च नाकिनाम् ।

वलीनामपि होमानां नालमेवेति वेदहृत् ॥१३६॥

रण्डापाकेन यो मोहाद्देवतानां निवेदनम् ।

होमं बलिं तथा भिक्षां कर्ष्यं हृष्यं न भोजनम् ॥१३७॥

ब्राह्मणानां स्वस्य चापि कुर्याद्वाकारवेदपि ।

तत्सर्वं न्ययमेव स्यात्प्रत्युत्प्रत्यवाप्यपि ॥१३८॥

भवत्येव विशेषेण तस्मात्तासां प्रमादतः ।

स्वजेदेव विशेषेण पाकं कृत्तं विशेषतः ॥१३९॥

तत्कृतेन तु पाकेन यो मोहाद्ब्रह्मज्ञानवर्जितः ।

श्राद्धं करोति पितरः तत्क्षणात्तस्य केवलम् ॥१४०॥

प्रयतन्त्यतिषोरेणु नरकेणु न मरायः ।  
 रंदा र्बेदिककर्मा(?)णा मना सुमहतामपि ॥१४१॥  
 सर्वमैव न योग्याम्नाम्नेणु कर्मणु कन्मुग्गम् ।  
 कर्मादी कर्ममन्त्रे वा मयथा नापन्डोक्तयेन ॥१४२॥  
 अस्मानन्वयं स्यत.स्त्रीणां सर्वशास्त्रैःप्रचोदितम् ।  
 विधवानां विशेषेण रंदानामपि तत्र च ॥१४३॥  
 न कुत्रचित्सद्धर्मेणु यदि ताः पितृमातृतः ।  
 भ्रातृतो भर्तृतो वापि भूमहद्भाग्यवसाराः ॥१४४॥  
 तदा ताभिर्विशेषेण धने.स्वीयैः क्रमागतैः ।  
 सतीपर्यैव संप्राप्तैर्यस्य करय च देहिनः ॥१४५॥  
 अपीहाजनकैरेव धर्मः कर्तुं हि शक्यते ।  
 भूमिं वान्याखिलान्येव दानानि धनवाससाम् ॥१४६॥  
 भूषणानां च पात्राणां शय्यास्रद्वात्रसाधनाम् ।  
 कुर्यादिवान्यहं भक्त्या दिव्यनामस्मृतिं पराम् ॥१४७॥  
 स्नानोपवासनियमगुरुशुश्रूषणादिकम् ।  
 सद्गुरुस्त्वचिबचः श्राव्यं पुराणश्रवणं तथा ।  
 शक्तौ सत्यां तटाकादिप्रतिष्ठा सुरसन्ननाम् ॥१४८॥  
 वृक्षौषस्थापनं मार्गं तीर्थचर्यां तदा तदा ।  
 कुर्यादेव स्ववन्धूक्तवचनान्महतामपि ॥१४९॥  
 भूमिन्नामस्त्रिलं दातुं तयैव किल शक्यते ।  
 पितृतो यदि भूः प्राप्ता मातृतो भ्रातृतस्तथा ॥१५०॥

भर्तुतो वा सदा सां कुं स्वपश्चात्सा यथा पुनः ।  
 वत्सद्वर्गगता सम्यक् तथा यज्ञेन भीतितः ॥५५१॥  
 कुर्यादेव न वेत्सेयं भूमिहर्ष्यपि जायते ।  
 तीर्थकोटिसहस्रैस्तु व्रतकोटिशतैरपि ॥५५२॥  
 यज्ञकृच्छ्रसहस्रौषैः भूमिहन्त्री न शुद्ध्यति ।  
 न भूमिहरणात्पापमन्यत्किमपि न विद्यते ॥५५३॥  
 भूमिहर्त्री स्वयं राजा यत्नेन प्रविचार्य वै ।  
 सर्वस्यहरणं कृत्वा चोरदण्डेन दण्डयेत् ॥५५४॥  
 अपराधसहस्राणि कृतानि वनिताजनैः ।  
 सन्तन्यान्यखिलान्येव धरित्रीहरणं विना ॥५५५॥  
 कदाचिद्विधवासाध्वी सपुत्रा भर्तृभाग्यका ।  
 सौमपीधिन्यग्निविच संजाता नष्टभर्तृका ॥५५६॥  
 बहुशिष्यघनाग्रामवती पतिमहत्वतः ।  
 तादृशी कुलविच्छिन्नौ कृत्स्नज्ञात्यौघशंभुभिः ॥५५७॥  
 संप्रायिता सर्वशिष्यैः पुनरन्यैर्महात्मभिः ।  
 वंशोद्धरणकार्याय महत्तत्सुकृताय च ॥५५८॥  
 सर्वज्ञातिमहाबन्धुजनमत्या सगोत्रिणम् ।  
 प्रत्यासन्नं सुतं कृत्वा स्वबुद्धं स्थापयेदिति ॥५५९॥  
 अतिगुह्यमिदं शास्त्रं प्रसिद्धं वेदशास्त्रयोः ।  
 कण्वकारयपकाणादकपिलैः समुदाहृतम् ॥५६०॥  
 तादृश्येव तथा कुर्यात् नान्यावारा तु लौकिका ।  
 या काचित्प्राकृतात्यल्पा तादृक्तकरणे बहु ॥५६१॥



माभनं प्रथवाम्यगं तारागं तु महत्पुत्रम् ।  
 सुमहाधनसंपत्तिः सहस्राभिरगा परा ॥१६२॥  
 पश्चात् प्रामरूपाय भूमिभागस्य संस्थितिः ।  
 सुमहाशिष्यसंपत्तिः बन्धुगम्पतिरेव च ॥१६३॥  
 सर्वप्रज्ञां सम्पत्तिः धर्मगम्पतिरीहरी ।  
 सर्वेषामप्येकदैव सर्वमत्यैकमंपदा ।  
 संयुक्ताश्चेनथा कर्तुं तादृगग्निचितस्मतः ॥१६४॥  
 धर्मपत्न्याः संपटते न चेदेयान्यदेहिनः ।  
 अयं हि तनयोद्धारः मघनान्मिथिलो यथा ॥१६५॥  
 पुराभवत्तथा चोक्तं आर्यः सर्वपुराणगः ।  
 उपमारहितः कोऽपि तादृशैव हि शक्यते ॥१६६॥  
 कर्तुं तथा तादृशेन चोपायेन च शक्यते ।  
 महद्भिस्तादृशैर्दिव्यैः पूर्वोक्तैरखिलैर्गुणैः ॥१६७॥  
 न चेदेकेन लोपेन सतीनामतिदुर्घटः ।  
 पुत्रोद्धार इति ज्ञेयः दरिद्राणां सुदूरतः ॥१६८॥  
 धनप्राममहाशिष्यबन्धुश्रीक्रतुशून्यतः ।  
 न शक्यते हि रंढायाः पुत्राद्यखिलसंपदः ॥१६९॥  
 रंढानां सतनं धमः उदयात्परमेव वै ।  
 नित्यस्नानं वैद्यबंधुसंनिधावेव संततम् ॥१७०॥  
 निवासो गुह्यसंभाषा सच्छुभ्रुषा सदाश्रयः ।  
 चतुर्यकालभुक्तिश्च दक्षिणीरान्यवर्जनम् ॥१७१॥

सुगन्धवस्त्रालंकारगीतादीनां विसर्जनम् ।  
 ताम्बूलाञ्जनपुष्पाणां सन्ततं दूरवर्जनम् ॥१७२॥  
 खट्वत्तल्पादिशयनं शरीरोद्धर्तनं स्रजम् ।  
 अधाञ्जनं चोष्णवारिस्नानमभ्यंजनं तथा ॥१७३॥  
 पुनरन्यानि सर्वाणि वस्तूनि न च कामयेत् ।  
 दुरालापं दुष्टचितां निप्रहानुमहार्थताम् ॥१७४॥  
 पुण्याधिकारकल्याणयज्ञकार्यादि कर्तृता ।  
 कुर्वती तादृशीया सा तत्स्वीयगुरुसञ्जनैः ॥१७५॥  
 क्षारं च लवणं दिव्यं मधुरं सूषकंदरे ।  
 वर्जयित्वा विशेषेण तिक्तं कटुकमेघ च ॥१७६॥  
 प्राशयेद्भोजयेन्नित्यं प्रासार्थेनैव जीवनम् ।  
 आपष्टिर्वर्षपयंतमेवं कालं प्रयत्नतः ॥१७७॥  
 ( विशेषानयनंकार्या पश्चात्कार्यानुगुण्यतः ) ।  
 प्राणवृत्तिं प्रकुर्वीत ययसश्चरमे ततः ॥१७८॥  
 ययारुच्यशनं कुर्याद् गुरुवृत्तौ रता भवेत् ।  
 सा ज्ञातिगुरुबन्धादिसचिन्ता निपुणा भवेत् ॥१७९॥  
 यदि गुवांसिसचिन्ता रहितातीव केवलम् ।  
 याजमान्यं समाश्रित्य स्वीयान्भृत्यवराञ्जडान् ॥१८०॥  
 पितृभ्रात्रादिदुष्टौषान् परिवारान्विधाय च ।  
 व्याहादिकारिणीभूत्वा मदीयस्याश्रित्य वै ॥१८१॥  
 द्रव्यस्य भूमिसुहृयादेरहमेवाधिकारिणी ।  
 इत्येवं प्रवदन्ती वै बालरंढ्राधिका सदा ॥१८२॥

दानादिव्यपदेशेन स्ववशास्थितमेदिनीम् ।  
 स्वजेनेर्प्राह्यंत्येषा कुलघ्नी परिकीर्तिता ॥१८३॥  
 स्वभर्तृकुलसंज्ञातविद्वज्जनविरोधिनी ।  
 तदीयवृत्तिभूभाग्य श्रीसंपद्धिनिवारिणी ।  
 स्वभर्तृत्वैकसंबन्धमात्रेणैव पुरस्कृता ॥१८४॥  
 कुलप्रतिष्ठानाशाय पापैपात्र समागता ।  
 तामेनाधार्मिकोराजा धर्मान्न्यक्वृत्य सत्वरः ॥१८५॥  
 प्रवासयेन्लिक्षयेद्वा तद्वाक्यान्वन्यथा चरेत् ।  
 तदीयपरिवाराणां यथा शिक्षां समाचरेत् ॥१८६॥  
 तामुद्दिश्य च ये मूर्खां जीवन्ति घरसंज्ञिकाः ।  
 पुरुषःपराधास्तुन्धाः श्वाविदो वापि गर्दभाः ॥१८७॥  
 अज्ञाताख्यज्ञातिरंडाकृताभिस्तां(स्तां) मनीषिणः ।  
 एकोद्दिष्टे प्रशंसन्ति नवधादेषु पदस्वपि ॥१८८॥  
 प्रज्ञाता रण्डयाचोन्नं (?) कृतं यत्तु विरोधतः ।  
 नम्र(ष)भाद्र प्रशंसन्ति जीवधादेषु सन्तनम् ॥१८९॥  
 श्मशानफलये चापि वेदिकाफलयेऽपि च ।  
 शूद्राशूद्राख्यकाभ्यान्तु यद्भक्तं परिकल्पितम् ॥१९०॥  
 तद्योग्यं पोटशाक्यानां धाटानां तद्गुणाय च ।  
 बगुण्डगण्डं द्वयोरेष्वंगुनिधितम् ॥१९१॥  
 अचरितशूरोत्तमंशास्त्रयोरपि तत्पुनः ।  
 लोभशाक्यभाटाय नष्टपुत्रा कृतं धरम् ॥१९२॥

॥५५॥ तु या नारी विधवेति न चोच्यते ।  
 तिपुत्रविहीना या विधवेत्युच्यते बुधैः ॥५६३॥  
 १: सूनोर्विनारोऽपि या नारी सोमपीथिनी ।  
 त्राम्निचित्तयात्पूर्वं वै तपस्विन्यपि केवलम् ॥५६४॥  
 एकुलप्रविष्टा चेत् तादृशस्य तु पुत्रिका ।  
 गच्छकात्रदातीव विद्वज्जनमता सती ॥५६५॥  
 दंपती समा नित्यं सर्ववंशा रमेव सा ।  
 गस्यात्सर्ववेदोक्तं नित्यकर्मसु केवलम् ॥५६६॥  
 धेकारस्तथा तस्मात्पुत्रस्यापि परिग्रहम् ।  
 असन्नं सपिण्डेषु विच्छिन्नौ संततेस्तथा ॥५६७॥  
 दूबहुज्ञातिशिष्यबन्धूपकरणाय वै ।  
 तु शक्यतेऽजीव तेषां प्रार्थनया परम् ॥५६८॥  
 अस्ताभिस्तद्भिन्नाभिः नारीभिः ब्रह्मचारिभिः ।  
 विवर्तिविवर्ति जगतीजगती ॥५६९॥

रंदाभिन्नाहरिभिन्नु इत्तं पाकं विगर्हितम् ।  
 गृहीत्यजेद्विरोधेन देवे पित्रो य कर्मणि ॥६०४॥  
 स्नुपा वा सोदरोवापि मातुल्यानी विगृह्यता ।  
 मातृणमा ज्योत्स्नासौ सोदरा वापश्च पुनः ॥६०५॥  
 पितृव्यपत्नीभगिनी नाहरयो यदि मर्ष्टे ।  
 देवपैतृककार्याय तामा पाकं न दुष्यति ॥६०६॥  
 निरातृणो रंदापाकः न प्राश्यग्मर्षदामयेत् ।  
 सर्वेषामपि यर्णानामाभ्रमायां विगर्हितः ॥६०७॥  
 पत्नीमहोदरास्यग्रुस्त्वृमातृपृथग्भयाः ।  
 प्रजावती गुरुपत्नी पुरोहितमती यदि ॥६०८॥  
 श्यालकस्यसती दौहित्रस्यभार्या तथैव च ।  
 मातुल्यानी पितृव्यस्य पत्नी तस्यामसहोदरी ॥६०९॥  
 मातुलस्यस्नुपा कन्या सपिण्डायाः समीपकाः ।  
 नाहरयो यदि तासां च पाकं रात्रिहृतं तु यत् ॥६१०॥  
 मुक्त्या तु संकटे विद्यात् मृत्युञ्जयमनुं शिवम् ।  
 अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पुनः श्रीमान्भवेद्यम् ॥६११॥  
 रंदा यदि स्नुपा तां वै स्वशुरोऽन्वहमेव वै ।  
 दानमानादिसत्कार्यैस्तन्मनः परितोपयन् ॥६१२॥  
 प्रपालयेत्तः यत्नेन स्वयं पत्नीप्रजायुतः ।  
 तत्पालनात्तत्प्रदानात्तन्मनस्तोषणादपि ॥६१३॥  
 जन्मजन्मसुदोषायुः प्रजावान् घनधान्यवान् ।  
 नित्यारोग्यो नित्यभव्यः नित्यश्रीमान्निराकुलः ॥६१४॥

भयत्येव न सदेहस्त तस्तत्तु तथाचरेत् ।  
 यः श्रीप्रजाघनपशुर्दीर्घायुर्मगवत्परः ॥६१५॥  
 स रण्डानां स्वकीयानां प्रपाल्यानां विशेषतः ।  
 तन्मनस्तोषणं कुर्यात्तथाचितवसुप्रदः ॥६१६॥  
 भवेदेवान्वहं भित्वा मुक्तोऽयं तावता श्रिया ।  
 संवृद्धः प्रभवेदेव नाग्रकार्याविचारणा ॥६१७॥  
 याः पाल्याःशास्त्रतो रंहाः विहितत्येन चोदिताः ।  
 जामयस्ताः प्रकथिताः तद्दुःस्वाद्ग्रहिणोऽनिशम् ।  
 न्याधिदुःस्वन्दरिद्रं च दीर्घान्यमतिवर्धते ॥६१८॥  
 तादृग्मातृस्वसृध्रात्पत्नीपाकं कृतंक्षया ।  
 प्राश्यंगत्यंतराभावात्तस्मिन्सत्यां न चाचरेत् ॥६१९॥  
 विश्वस्तया समासीनो धीतिहेतोर्महात्मभिः ।  
 श्मरानामिस्रभोक्तेयो गृहिणो वैदिके जगुः ॥६२०॥  
 विश्वस्तया समासीत जलंभयनलेपने ।  
 पात्रपादक्षालनाय सण्डलक्षालनाय वा ॥६२१॥  
 शाक्यस्त्रक्षालनाय भवेद्भागोमवान्मसे ।  
 तदानीत्तं जलं ज्ञातपालानां हायनान्तरे ॥६२२॥  
 यत्पुष्पायित्वा म्नानाय कल्पयेदुस्तदान्वयतु ।  
 पुदिरत्वा महामंदा तथायुञ्ज दिने दिने ॥६२३॥  
 भवेत्क्षीणं ततस्तास्मात्तत्कर्म विनिश्चयेत् ।  
 तरान्ती तेन पयसा शुभकर्मसु मोहनः ॥६२४॥

नीराजनं प्रकुर्वन्ति ये वा ते दुःखभागिनः ।

कर्ता कारयिता तौ ते सर्वे स्युर्नात्र संशयः ॥६२५॥

तेषां तु सततं कर्म नित्यस्नानात्परं सदा ।

नामस्मृतिर्नित्यकर्मवृद्धब्राह्मणसेवनम् ॥६२६॥

देवगृहेरंगवल्ली करणं व्रतकर्मणाम् ।

अनुष्ठानं सतीवाक्यश्रवणं तत्समागमः ॥६२७॥

सत्यांशकौत्रीहि यवभापमुद्गादिगोपनम् ॥६२८॥

( समीकरणमेतेषां पयोदश्चिद्यादिरक्षणम् )

समीकरणमेतेषां वस्त्रकंचुकयानिनाम् ।

चूतसारंगचारुण्डशालाटूनां च खंडनम् ॥६२९॥

खंडितानां पुनस्तेषां लवणादिमुखैः परैः ।

यस्तुभियोजनद्वारा तत्रक्षणमुखादिकम् ॥६३०॥

निम्बिलानामपक्वानां पीष्ठा बहननादिकम् ।

चूर्णानामपि कल्कानां करणं कर्मकारकम् ॥६३१॥

पुनस्तेषु मदा प्रोक्तं चोप्यस्वाशादिवस्तुषु ।

भक्ष्यभोज्यादिषु तथा सर्ववस्तुषु संततम् ॥६३२॥

प्रावीण्यं प्रापणं निन्यं प्राकट्यंधर्म उच्यते ।

अतिरंदा महारंदा शुद्ररंदास्त्रिधापुनः ॥६३३॥

षोडशा याम्नु तामाश्च स्वरूपं वर्ण्यतेऽपुना ।

अन्यगोत्रप्रदत्तस्य कलत्रं विधया यदि ॥६३४॥

मवेत् शीरावेऽप्यंते सातिरंदा प्रकीर्तिता ।

दीर्घं दानं माहजेन भर्ताग्निन्या मुनं ततः ॥६३५॥

विश्वस्ता प्राप्य भवति महारुडेति साखिलैः ।

महद्भिः कथिता पापा निरीक्ष्या भद्रदूषिणी ॥६३६॥

सगोत्रदत्ततनयकलत्रं नष्टभर्तृकम् ।

असुतं पतिसंशोगरहितं स्यात्तदाख्यकम् ॥६३७॥

तिसृणामपि चैतासामन्वहं मनुरप्रवीत् ।

भक्षणे कवलानां वा स्यात्तत्र्यं नेति सर्वदा ॥६३८॥

नित्याश्वतंत्रं नारीणां विश्वस्तानां विशेषतः ।

तत्रापिद्यालरंडानामेवं सत्यत्र किं पुनः ॥६३९॥

स्यावरे ऋयदानादिकृत्वेष्व्यासां तु दूरतः ।

अधिकारस्य(स्स)विज्ञेयः चोदितो निस्त्रिहागमैः ॥६४०॥

तस्मात्तु तत्कृतं राजा दानमादि व्रयं तु वा ।

सर्वं मिध्यापयित्वैव स्वस्थाने विनिवेशयेत् ॥६४१॥

रंडाकृतं भूमिदानं यत्तद्यज्ञोपवीतकम् ।

नीराजनं वेदमन्त्राशिपस्त्रिध्यन्ति मूतले ॥६४२॥

राजा प्रभुर्भूमिदाने तत्समस्सचिषादिकः ।

राजस्वीकृतभूभागो विषादिश्च भवेदपि ॥६४३॥

विद्युद्भागमसंप्राप्त धरणीं सर्वजातयः ।

दानं कर्तुं शक्नुवन्ति विषादे रहिते यदि ॥६४४॥

विषादशून्यदस्ता या धरणीमाहफस्य सा ।

सिद्धमत्यत्र पुनर्नोचेत् स्वीकृतापि न जीर्यते ॥६४५॥

दानादि . . . . . ।



नीरात्रनं प्रपूर्वलि मे वा ले दुःशमालिनः ।  
 कर्ता कारगिना मी ले गर्वे श्रुतांशु संशतः ॥१३॥  
 तेषां तु शननं कर्म निष्प्रानानदारं मया ।  
 नामाभूतिनिर्मल्यकर्मं तृष्णाद्वगमेवतम् ॥१४॥  
 देवगृहेरंगवदी करणं प्रतर्कमनम् ।  
 अनुष्ठानं गनीषाकम्भयनं कसमाग्नः ॥१५॥  
 मत्पाराश्रीमीदि यथमागमुद्गादिगोवनम् ॥१६॥  
 ( ममीकरणमेतेषां पयोदश्यादिरक्षणम् )  
 ममीकरणमेतेषां यस्त्रकंपुकयानिनम् ।  
 चूतसारंगचारण्डरान्नादूनां च मंडनम् ॥१७॥  
 मंडितानां पुनस्तेषां लवणादिनुर्नपरैः ।  
 यस्तुभियोजनद्वारा तत्रक्षणमुग्यादिकम् ॥१८॥  
 निसिलानामपकानां पेषा यदननादिकम् ।  
 चूर्णानामपि कल्हानां करणं कर्मकारकम् ॥१९॥  
 पुनस्तेषु सदा प्रोक्तं चोप्यस्वाद्यादिवस्तुषु ।  
 भक्ष्यभोज्यादिषु तथा सर्ववस्तुषु संततम् ॥२०॥  
 प्रावीप्यं प्रापणं नित्यं प्राकट्यं धर्मं कथ्यते ।  
 अतिरंढा महारंढा क्षुद्ररंढास्त्रिषापुनः ॥२१॥  
 चोदिता यास्तु तासांश्च स्वरूपं वष्यतेऽपुना ।  
 अन्यगोत्रप्रदत्तस्य कल्हत्रं विधवा यदि ॥२२॥  
 भवेत्तु शौरावेऽर्थ्यते सातिरंढा प्रकीर्तिता ।  
 दीर्घकालं तादृशेन भव्रांस्यित्वा सुनं ततः ॥२३॥

विश्वस्ता प्राप्य भयति महारथेति साखिलैः ।  
 महद्भिः कथिता पापा निरीक्ष्या भद्रदूषिणी ॥६३६॥  
 सगोत्रदत्ततनयकलत्रं नष्टभर्तृकम् ।  
 असुतं पतिसंयोगरहितं स्यात्तदाख्यकम् ॥६३७॥  
 तिसृणामपि चैतासामन्वहं मनुरमवीत् ।  
 भक्षणे कथलानां वा स्वातत्र्यं नेति सर्वदा ॥६३८॥  
 नित्यास्वतंत्रं नारीणां विश्वस्तानां विशेषतः ।  
 तत्रापिबालरंढानामेवं सत्यत्र किं पुनः ॥६३९॥  
 स्यावरे ऋयदानादिकृत्येष्व्यासां तु दूरतः ।  
 अधिकारस्य(स्स)विज्ञेयः चोदितो निखिलागमैः ॥६४०॥  
 तस्मात्तु सत्कृतं राजा दानमादि त्रयं तु वा ।  
 सर्वं मिथ्यापयित्वैव स्वस्थाने विनिवेशयेत् ॥६४१॥  
 रंढाकृतं भूमिदानं यत्तद्यज्ञोपवीतकम् ।  
 नीराजनं वेदमन्त्राशिपस्तिभ्यन्ति भूतले ॥६४२॥  
 राजा प्रभुर्भूमिदाने तत्समस्तविवादिकः ।  
 राजस्थीकृतभूभागो विप्रादिभ्यः भवेदपि ॥६४३॥  
 विशुद्धागमसंप्राप्तं धरणी सर्वजातयः ।  
 दानं कर्तुं शक्नुवन्ति विवादे रक्षिते यदि ॥६४४॥  
 विवादशून्यदत्ता या धरणीमाहफलय सा ।  
 सिद्धयत्यत्र पुनर्नोचेन् स्वीकृतापि न जीर्यते ॥६४५॥  
 दानादियोग्यताल्लभभूमिः पुंसो न ष त्रियः ।  
 सर्वशून्यस्य संत्रस्य तस्यैव सतनं भवेत् ॥६४६॥

भूमी तायाः प्रदानेऽधिकारः पुंश्च इत्यने ।  
 म श्री मित्रं स्वयं दानं कथं शक्नोति धर्मनः ॥१४४॥  
 पु मरुतेदयनिगादानेऽधिकारो नित्य इत्यने ।  
 मरुतेना मरुनिगात्र मुक्त्यनेन निरुक्तिः ॥१४५॥  
 मरुः पुत्रस्यपौत्राय ननु मित्रोर्मनेन च ।  
 भूयदानेऽधिकारः स्यात् यनिगायाभ संगतम् ॥१४६॥  
 इत्येवं धर्मतः प्रोक्तः निर्विधादेन चेन्न तु ।  
 पुरुषस्यापि गराने निर्विधादेऽधिकारिता ॥१४७॥  
 विधादेत्यधिकारित्वं न सिद्धमिति कदाचन ॥१४८॥  
 ( पित्रापुत्रेणयन्मुखीरामैः ब्रह्मचर्यात्परं परम् ) ।  
 ( ब्रह्मचर्यणधियानित्यं कृतान्यपिविधादेत्यधिका ) ।  
 पित्रापुत्रेणभद्रां वा नद्यापौत्रेण वा सदा ॥१४९॥  
 स्त्रियस्सनायाः कथिताः रंहाः स्युरचेतुरोदिताः ।  
 अनाथा हि कथं तामां भुवोदानेऽधिकारिता ॥१५०॥  
 याजनेनाध्यापनेन प्रतिप्रदमुखेन च ।  
 विशुद्धागमसंप्राप्तभूवृत्तौ च सदा द्विजः ॥१५१॥  
 निवसन्नित्यकर्माणि कुर्वन्धर्मेण देवताः ।  
 संप्रीणयन्मुखीरामैः ब्रह्मचर्यात्परं परम् ॥१५२॥  
 ब्रह्मार्पणधिया नित्यं कृतान्यपि विभाषयन् ।  
 पितृणां तनयद्वारा सृष्टं चतुसंगतः ॥१५३॥  
 अपाकुर्वन् शास्त्रमार्गात् कृतार्यः प्रमवेदपि ।  
 ॥ अश्रोत्रियो न प्रियेत नाहितामिरसोमपाः ॥१५४॥

अमंत्रदग्धो न भवेदमंत्रो न क्षर्णं भवेत् ।  
 अनाश्रमी क्षर्णं तिष्ठेत्पुत्रवाश्चेदनाश्रमी ॥६५८॥  
 न भवत्येव यदि सः श्रोत्रियोऽयं विचक्षणः ।  
 तथा तस्य सत्ततं ब्रह्मवादित्वमेव वै ॥६५९॥  
 भवेन्नित्याहिताग्नित्वं विधुस्त्वं च नैव हि ।  
 श्रोत्रियत्वात्पुत्रगतात्कृतकृत्यः पिता भवेत् ॥६६०॥  
 दशमार्योऽप्यपत्नीकस्त्वसौ तनयवर्जितः ।  
 तथाविधो दशमुतःस्वयमश्रोत्रियो यदि ॥६६१॥  
 भवेदज्ञसःपत्नीकः श्रोत्रियश्चेदसौ ततः ।  
 नष्टमार्योऽपि न भवेदपत्नीकः कदाचन ॥६६२॥  
 तत्र चेत् ब्रह्ममेधाया याप्ययं तु विशेषतः ।  
 सपत्नीको मग्ननिष्ठः सोमयाज्यपि चोदितः ॥६६३॥  
 पुत्रिणःश्रोत्रियस्यात्र नापत्नीकत्वमुच्यते ।  
 पत्नीवत्त्वं तु यज्ञस्य नेनेन्द्रस्यानुवाकतः ॥६६४॥  
 चोदितं धृतिवाक्येन साहसपत्नीत्वमस्य च ।  
 श्रोत्रियस्य सदास्तैव(१)विशेषेण पुनः किल ॥६६५॥  
 तद् ब्रह्ममेधाभ्यायी चेदुपमारहितः परः ।  
 (संशयोक्तंते कृतं श्रोत्रियो सो मनीषिभिः) ॥६६६॥  
 (सपत्नीक इतिप्रोक्तः पुत्रवान् चेद्विशेषतः) ।  
 न पुत्रेण समीपमः ज न पुत्रेण समःकृतः ।

गर्भे मपुत्रगुल्याः त्रिताः पुत्रपताशिलाः ।  
 भूर्भुवःश्यादयोऽलोकाः तत्र कृष्णा मनादयः ॥६६८॥  
 योगी व्रती पुत्रवान् श्यादतोऽन्यमनंद्रितः ।  
 तन्पुत्रोत्पत्तये यत्न मनोयाकाग्रहर्मभिः ॥६६९॥  
 (स्वकीयदेवताध्यानं पूजातन्प्रार्थनादिभिः) ।  
 अष्टयत्नरागक्षेत्रन्यहं कार्यं एव वै ॥६७०॥  
 तदुत्पत्त्या क्षणान्मर्त्यो मुच्यते पैगृष्ठाहणान् ।  
 यद्यजाते तु तनये सर्वयत्नसाद्ग्रतः ॥६७१॥  
 स्वभ्रातृजादिपुत्रेषु पुत्रमेकं परिमहेन ।  
 ज्येष्ठमन्त्यं यजंयित्वा मध्यमेष्वेककं मुनम ॥६७२॥  
 परिगृह्यविधानेन होमपूर्वादिना ततः ।  
 जातकर्मादि कुर्यात् तेनैवास्य सुतो भवेत् ॥६७३॥  
 न चेत्तुगौणपुत्रः स्यात् गौणःस्यात्तनयो यदि ।  
 तस्यैतत्कर्मकरणेकर्तृत्वं शास्त्रतो मतम् ॥६७४॥  
 प्रत्यब्दकरणे चापि न तु दर्शादिकर्मसु ।  
 ये भ्रातृसूनवो लोके कृतमौञ्ज्यादिका अपि ॥६७५॥  
 कृतदाराः संगृहीताः पुत्रत्वेन विपत्सुते ।  
 तत्प्रेतकृत्प्रमात्रस्य तत्प्रत्यब्दस्य शास्त्रतः ॥६७६॥  
 कर्तारः प्रभवेयुर्वै न चान्येषां तु कर्मणाम् ।  
 दर्शापातमुखादीनामतो भ्रातृसुतानपि ॥६७७॥  
 तदन्याद्विभ्रगोत्राद्वा यं कंचन गृणन्नरः ।  
 तन्मतः पूर्णं कृत्वा तत्पुत्रस्य च संविदम् ॥६७८॥

एवमेवं वृत्तिमोहक्षेत्रेष्वन्यसुनिश्चिनं ।  
 येषु तेषु च सर्वेषु मयादेयं मया कृता ॥६७६॥  
 अद्यैवेति दृढं नूनं दृढयित्वा ततः परम् ।  
 स्वीकुर्याद्विधिनोक्तेन त्यक्त्वान्यं ज्येष्ठमेव च ॥६८०॥  
 मध्यमेकेन होमेन देयत्राह्मणसंनिधौ ।  
 राशिं वन्धुषु चावेद्यं पितरौ तस्य केवलम् ॥६८१॥  
 भूपयित्वाग्नीषयित्वारत्नवस्त्रगृहादिभिः ।  
 तदास्त्रिंशद्धारयित्वा स्वीकुर्यात्तनयन्ततः ॥६८२॥  
 यद्यन्यगोत्रस्तनयः संमाहोष्यवशाद्भवेत् ।  
 कदाचिद्दैवयोगेन पश्चाज्जातस्तदौरसः ॥६८३॥  
 वयसायं कनिष्ठोऽपि पितृकर्मसु केवलम् ।  
 ज्येष्ठत्वं समवाप्नोति न कानिष्ठश्च कदाचन ॥६८४॥  
 सर्वथा दत्ततनयः च योज्येष्ठः कृतक्रियः ।  
 सोमपास्त्वग्निचिष्वापि जातपुत्रोऽपि केवलम् ॥६८५॥  
 सर्ववेदनिधिःशास्त्रनिपुणोऽध्यात्मवित्तमः ।  
 तदौरसेन पुत्रेणानुपनीतेन केवलम् ॥६८६॥  
 अनभ्यस्ताक्षरेणापि न ममःस्यादिति श्रुतिः ।  
 म एव पितृकार्येषु ज्येष्ठपुत्रमाप्नोत्यर्थतराम् (संशयम्) ॥६८७॥  
 मन्त्रोच्चारणसामर्थ्यात्तभावेऽप्यस्य वै सदा ।  
 तत्कर्तृकंपुरगृह्य स्वयं दत्तः कनिष्ठवत् ॥६८८॥  
 पुत्र्यैत सर्वैश्वर्यानि धर्मोऽयं तादृशस्मृतः ।  
 यानि प्रधानि,प्रधातानि,धर्माणि सद्यस्मृतानि दत्तकः ॥६८९॥

तद्वस्तेनैव विधिना स्वमंत्रोक्त्या प्रचालयेत् ।  
 मर्यादेयं समाख्याता तत्क्रमे शास्त्रजालकैः ॥६६४॥  
 परंत्वन्नविशेषोऽस्ति यदि दत्तोऽन्यगोत्रजः ।  
 स्वोक्तम्नु तदापश्चाद्दिभागे तुर्यभागभवेत् ॥६६५॥  
 सगोत्रश्चेदयं त्वन्नतनयः श्रीमतःसतः ।  
 तत्प्रदानासहिष्णुभ्यामतिप्रार्थनयावशात् ॥६६६॥  
 दत्तस्तस्वीकृतश्चेत् पुनश्चशपथादिभिः ।  
 पित्रादिकृतमर्यादः यथा वा स्यात्तथा भवेत् ॥६६७॥  
 तेनायं समभागेय न तुरीयांशभागभवेत् ।  
 पुनः कोऽपि विशेषोऽत्र स्पष्टमेव निरूप्यते ॥६६८॥  
 विभक्तं भ्रातरं दीनं दरिद्रं चन्धुमेव वा ।  
 अत्यंतकृपणं निम्बं पुत्री(त्रं?) दृष्ट्वा कृपापरः ॥६६९॥  
 तद्रक्षणाय तनयं स्वीयं दत्त्वा श्रियं पुनः ।  
 दत्ते समुदरेनश्रीमान् ततस्तस्य च दैवतः ॥६७०॥  
 संजातग्ननयस्सोऽयमौरसो दुर्बलो भवेत् ।  
 दत्तपुत्रादिविशेषः ज्येष्ठपत्नीगुतोऽप्ययम् ॥६७१॥  
 ज्येष्ठपत्नीगुतस्यैव पौरसत्वं प्रकीर्तितम्  
 विभागोऽपि तथा श्रेयः समत्वेनैव सर्वतः ॥६७२॥  
 धीरगम्य च दत्तस्य न्यूनत्याधिक्ययोस्तदा ।  
 यथागामग्नर्थैव श्यात् निर्णयो धर्मतो मतः ।  
 पुत्रप्रदृष्टमीमांसायमंशष्टीः प्राप्तये यदि ।  
 पुत्रत्वं प्रापित्वाभ्यां दुर्बलः प्रभवेत्पुनः ॥७३॥

अपुत्रः प्रार्थनापूर्वं दत्तोऽयं यदि तस्मिन्तः ।  
 श्रीमानेव तदा सोऽयं समभागी भवेद्भूधम् ॥७०१॥  
 भ्रातृपुत्रं शातिपुत्रः धन्धुपुत्रोऽथ वा धनी ।  
 निरपेक्षोऽय सौभाग्ये माहकप्रार्थनादिभिः ॥७०२॥  
 पुत्रत्वं समनुप्राप्तः निर्धनस्य विशेषतः ।  
 दत्तश्च कृपया तूष्णीमौरसादधिकोऽप्यति ॥७०३॥  
 पुनस्तत्कुलत्रो न्यूनकुलाय यदि केवलम् ।  
 दत्तः स्यात्तु तदासोऽयं विभागे समुपस्थिते ॥७०४॥  
 तुल्यो भवेदौरसेन न पित्रेषु तु सर्वदा ।  
 औरसो ज्येष्ठगमाप्नोति पितृकर्मणि दत्ततः ॥७०५॥  
 वयसा चर्यया विद्याज्ञानाभ्यामधिकोऽपि वा ।  
 दत्तः पितृकृत्येषु न्यूनएव भवेद्भूधम् ॥७०६॥  
 जातेन्द्रियाणां दौर्बल्ये तु(दु)हिता तनये सति ।  
 अवशादसु (१) सन्देहो पुत्रग्रहणमुच्यते ॥७०७॥  
 पुत्रयोस्तनयाभावे नष्टयोरपि वै तयोः ।  
 पुत्रस्य कुर्याद्ग्रहणमिति वेदानुशासनम् ॥७०८॥  
 पौत्रे नमरि दौहित्रे सति वा पुत्रसंपदः ।  
 सर्वशास्त्रनिपिद्धःश्वान् न तस्मात्तत्नमाचरेत् ॥७०९॥  
 आपन्निकारकसोऽयमापत्मापुत्ररून्यता ।  
 एक एव भवेन्नूनं दुहिता(दु)जनयो मतः ॥७१०॥  
 दौहित्रे सतिपुत्रस्य ग्रहणं शास्त्रदूषितम् ।  
 कथं तदिति वा प्रोक्ते स्पष्टतश्च तदुच्यते ॥७११॥



दौहिप्रोत्पत्तिमात्रेण ननुत्सृज्यमानाः ।

उत्पारिताः सद्य एव भोगुनांप्रमदाय ॥७१२॥

सामभ्यनुष्ठा भाषायां गुणसंप्रहर्तव्ये ।

तद्वच्चान् मनि दौहित्रं श्रियमालः स्वयं वनिः ॥७१३॥

दौहिप्रोत्पत्तिमात्रेण मानामद्यादिका मुनाः ।

दुहितृःस्यात्ममुद्रोक्ष्य हर्षगद्गद्या गिरा ॥७१४॥

प्रवदिष्यन्ति तां वाचं विश्रुलोच्छ्रितिमुन्दरे ।

अस्माकमुत्तभिप्राप्ते वान्धवा नितिन्याः शिष्याः ॥७१५॥

तर्पणे प्रक्षयशादिनित्यकर्मसु मन्तवम् ।

एकमेवाञ्जलिर्नोर्वं धारुतज्ञातयो ददुः ॥७१६॥

अद्यास्मज्जलदो जातः (तो) वयमेतेन भूषिताः ।

कृतार्था नितरां जाताः युष्मत्तुल्या अमूमहि ॥७१७॥

तस्मात्तदत्तमुदकमस्माकं परमामृतम् ।

दधिसोमघृतक्षीरमेदोमाधुकसिन्धवः ॥७१८॥

नारायणपदप्राप्तिकारकाश्चातिपावनाः ।

कुम्भीपाकमहाघोररौरवादिनिवारकाः ॥७१९॥

त्रयस्त्वञ्जलयः श्रीकाः शङ्खकुन्दवराङ्गिनः ।

अस्मत्सर्वोत्तमत्वस्य प्रापकाः(सु)तुल्य शून्यकाः ॥७२०॥

यदीयतेऽस्मानुद्दिश्य चानेन भुवि नोऽमृतम् ।

अल्पमपि तन्मैरुमहामन्दरसंनिभम् ॥७२१॥

अक्षय्यं तु ततोऽनेन पुत्रादिः कोऽपिनैव हि ।

दौहित्र एव नो लोके पुत्राणामुत्तमोत्तमः ॥७२२॥

तत्समस्त्य(त्वौ)रसस्तज्जः(स्) तज्जञ्चापि तथाविधः ।  
 इत्युक्त्वा नर्तनं चक्रुः मातामहादिकानगाः ॥७२३॥  
 दौहित्रजनने पूर्वं तस्माद्दौहित्रसंनिभः ।  
 पितृणां वृत्तिर्द(दो) कोऽपि नास्त्येव धरणीतले ॥७२४॥  
 मात्रादित्रयसाम्येन तर्पणे समुपस्थिते ।  
 तेषाञ्च्यञ्जलिदस्तोऽयमेको दौहित्र उच्यते ॥७२५॥  
 तदत्तमुदकं तासां परं च्यञ्जलिसंख्यया ।  
 नयकं तत्पृथक्त्वेन महापद्मादिसंभवम् ॥७२६॥  
 तस्माज्जगति यो मोहान् प्रसक्तौ तर्पणस्य चेन् ।  
 दुहितान्तनयो मूढः(स्) तासामेकादिकाञ्जलिम् ॥७२७॥  
 सामान्यनारी युद्धया वै कुर्याद्दौहित्रपात्रतः ।  
 तासां शैवधिहतां स्यान् तच्छ्रापस्यापि पात्रताम् ॥७२८॥  
 प्रयात्ययं सद्य एव तामात्तन्न तथाचरेन् ।  
 अत्र भूयः प्रवक्ष्यामि निष्कृष्टार्थमिदं रहः ॥७२९॥  
 सापन्नो जननी पत्न्योरन्यहं द्वयञ्जली स्मृते ।  
 मातामही मातृवर्गद्वयं च्यञ्जलिभाजनम् ॥७३०॥  
 तर्पणेष्वखिलेष्वेनं (व) सर्वशाम्भुनिधितम् ।  
 दौहित्र्यपुत्रवान्नेव भवेद्दोके द्विजातिषु ॥७३१॥  
 विशेषेण समाख्यातः (तो) भर्तृपुत्रादयोऽजरः ।  
 सपिण्डोऽपि तथैवत्यात्तत्कार्यं चंतिचेत्तदा ॥७३२॥  
 निरूप्यते च गुरुपटं सपिण्डे गडु केवलम् ।  
 पितामहस्यावपथाः पित्रादिद्वारतोऽति वै ॥७३३॥

मुसंबुद्धाः नास्य तत्र स पितुः स्वस्य वा सखु ।  
 न सन्त्येव विशेषेण तन्मुखात्तु सपिण्डता ॥७३४॥  
 सपिण्डानां प्रकथिता नान्येन किल वर्त्मना ।  
 भ्रातृपुत्रेषु तेष्वेवं भ्रातुध्वापि पितुस्तथा ॥७३५॥  
 सन्तिह्यवयवास्तेन भ्राता तत्पुत्र एव च ।  
 मार्गेण स्वोय इत्युक्ताः नतुस्वावयवैरहो ॥७३६॥  
 दौहित्रे दुहितृद्वारा स्वकीयावयवोद्भवे ।  
 संबन्धस्त्यधिकः स्वस्य तथा तेषु न संभवेत् ॥७३७॥  
 संबन्धः कोऽपि मुस्पष्टः ( स् ) तस्मादेव तथादितः ।  
 दौहित्रो भ्रातृपुत्रादिभ्योऽयं स्वावयवादिभिः ॥७३८॥  
 ( णामधिकोऽवयवादिभिः )  
 अधिकश्चेति सर्वेषु स्वकर्मसु धनादिषु ।  
 नैतस्य संप्रदः कार्यः जन्मनैवायमुच्यते ॥७३९॥  
 पुत्रत्वेन समश्चेति परश्चेति क्वचित्स्थले ।  
 अतः पुत्रत्वकरणं विरुद्धं न्यायराश्रयोः ॥७४०॥  
 दौहित्र जननाद्य परवि(?)चित्तैकमानसाः ।  
 विभक्ता ज्ञानयो दुष्टाः भवन्त्येषानिदुःस्मिनः ॥७४१॥  
 विभक्ताः पुत्रताज्ञानिपनक्षेत्रादियस्तुषु ।  
 तदुन्मुखाः सन्तर्न मे कदापीति दुराशयाः ॥७४२॥  
 दौहित्रजननादेव केपिद्य विपेक्षिनः ।  
 नेनः परमिदं नैव स्यादित्येव स्वप्नेनमि ॥७४३॥  
 निःश्रेय नृन्नी निवृन्ति केविम्भत्राद्युगुणिताः ।  
 शास्त्रानभिज्ञा निगरा पामरा परमदुष्टाः । ७४४॥

येन केनाप्युपायेन परं तद्महणोन्मुखाः ।  
 दुरालापात्प्रकुर्वन्तः सज्जनैरपि निन्दिताः ॥७४५॥  
 दूषयन्तश्च तान्भूयः ह्री( धिक् ) कृताश्चापि साधुभिः ।  
 न्यक्कृताः पण्डितैः सर्वैः सर्वत्रापि वृधैव हि ॥७४६॥  
 तद्दुर्यज्ञादिशतकं कुर्वन्तश्च तदा तदा ।  
 दुष्टक्रियाश्चकुर्वन्तो लयं यान्त्येव केवलम् ॥७४७॥  
 सर्वत्र धर्मोमध्यस्थः कदाचित्कलिदोषतः ।  
 न सिद्धयति कलौ भूयः सिद्धयत्यपि पुनः क्वचित् ॥७४८॥  
 प्रायेण धर्मतो वृद्धिः ततो भद्राणि विन्दति ।  
 व्यवहारे च जयति सन्तो व्याकुलयत्यपि ॥७४९॥  
 परस्वान्यपि (दि) गृह्णाति समूलं च विनश्यति ।  
 सदैव धर्मः परमः सेव्यो नाधर्म उच्यते ॥७५०॥  
 धर्ममार्गेण सर्वेनैः गन्तव्यो नान्यमार्गतः ।  
 दौहित्रभिन्नं यं कंचित् विना ज्येष्ठं तथैककम् ॥७५१॥  
 संगृहीयाच्च तनयं मध्यस्थं ज्ञातिमेव वा ।  
 भर्त्रभ्यनुशाभिन्नायाभ्यनुशा पुत्रसंभवे ॥७५२॥  
 संगच्छते शास्त्रभावेत्पुरस्तात्त युज्यते ।  
 ज्ञातिमत्याकृतं यत्तु पुत्रसंभवादिकम् ॥७५३॥  
 विश्वस्तया धरादानं मुखकृत्स्नं तु सिद्धयति ।  
 सर्वज्ञातिमतं कार्यं पुत्रसंभवादिकम् ॥७५४॥  
 पारादिष्टं च नो धेत्तन् न कार्यं यदि तत्कृतम् ।  
 वाट्सं धार्मिको राजा न्यायशास्त्रप्रदूषितम् ॥७५५॥

सद्यस्त्वन्यथयित्वैव शास्त्रीयेनैववर्त्मना ।  
 तत्कारयेज्ज्ञातिमुखसामीचीन्यं ततः पुनः ।  
 तद्यथा योग्यदण्डश्च तत्रमध्यम उच्यते ॥७६६॥  
 आद्यन्त्यायेव संत्याज्यौ बहुभानृषु तत्सुतो ।  
 मध्ये ज्येष्ठात् द्वितीयादि नियमो नेति चोचिरे ॥७६७॥  
 मोहादत्तो ज्येष्ठमूनुः स्वयंदत्तोऽथवा जडः ।  
 पतितः सद्य एवस्यादुभयभ्रष्ट ईरितः ॥७६८॥  
 उपनीतेः परं तस्य विप्रत्वं तु न सिद्धयति ।  
 यदि ज्येष्ठसुतो दत्तः पितुर्वा पालकस्य वा ॥७६९॥  
 तत्कर्मयोग्यो नैवस्याद्यत्कृतं तेन तत्परम् ।  
 सलिलं पुण्यलोकैकमहापापाणसंनिभम् ॥७७०॥  
 महारौषवर्त्मान्मथनयनं सत्क्रियौघहम् ।  
 न तत्समाचरेत्तरमात्पुत्रदानप्रहो द्वयम् ॥७७१॥  
 विधवाव णिविधुरदूरभार्याव(प)तिव्रताः ।  
 न दशुः प्रतिगृहीरन् अवि सूतकिनोऽपिवा ॥७७२॥  
 रजस्वला तत्पतिश्च कन्यकोऽनुपनीनकः ।  
 कौतुली दीक्षितोवाऽपि श्राद्धकर्ता प्रदूषितः ॥७७३॥  
 बहिष्कृतो दूरपक्षिभुक्तान्नो प्रामरूपगम् ।  
 प्रायश्चित्ताद्यन्मुग्ध पुनरभ्ये तथा विधाः ॥७७४॥  
 न दशुः प्रतिगृहीरन् तनयं संशयधमे ।  
 अहमेकमुनः पित्रोः दत्तोऽस्मीति वदन् पुनः ॥७७५॥  
 सभायां निर्मयं चोरः प्रमिदः कथिनो युषैः ।  
 पुत्रेण जातमात्रेण सातनसातनन्याः ॥७७६॥

नन्दन्ति च प्रगायन्ति नटन्ति प्रनटन्ति च ।  
 उत्तारकौऽयमस्माकं संजातस्तनयोऽधुना ॥७६७॥  
 वदन्त एव परममानन्दं दैवमातुषम् ।  
 आरभ्य कृत्स्नं ब्राह्मं तद्विधिना श्रुतिनिरूपितम् ॥७६८॥  
 सद्यः प्राप्ता भवन्त्येव ब्रह्मानन्दस्तु सः परः ।  
 श्रुत्युक्तवर्त्मना साध्यः न केनान्येन सर्वथा ॥७६९॥  
 यस्य कस्यापि संप्रोक्तः तद्भिन्नानखिलान्धरान् ।  
 आनन्दास्तस्य संभूत्या दौहित्रस्येक्षणादितः ॥७७०॥  
 प्राप्ता भवेयुः पितरः तत्कुलद्वयतारकः ।  
 तनयो दुर्लभो नृणां जातमात्रेण तेन वै ॥७७१॥  
 एकोत्तरकुलं चापि सद्यस्तुष्टं भविष्यति ।  
 तादृशं तनयं स्वैनमेकं जातं सुतं जडः ॥७७२॥  
 धनाशयान्व्यं कुरुते यः पितृन्नः स्मृतः स तु ।  
 कुतस्तथेति चेद्द्वयकं सम्यगेवेदमुच्यते ॥७७३॥  
 सुतप्रदानोत्तरक्षणमात्रेणैव तेऽखिलाः ।  
 नष्टानन्दा भग्नकामाः ताडिता यमकिंकरैः ॥७७४॥  
 नीयन्ते नरकेष्वेव ते य उत्तारिताः पुरा ।  
 ग्राहकस्यापि पितरः तादृशांस्ताम्पितृन् धरान् ॥७७५॥  
 दृष्ट्वाति दुःखिताः सर्वे सहमानाश्च करमलम् ।  
 असह्यमिति घोरं तदीयं वै दुःसहं खरम् ॥७७६॥  
 पुनः पुनरुदीक्ष्यैव किमासीदिति कैवलम् ।  
 अशक्नुवन्तस्तद्दुःखं स्वयं चापि तथाविधाः ॥७७७॥

भवेत्तुमेव निवर्तमानं संग्रह्य नोऽप्यगम्य ।  
 इत्युक्तं नैवं दूषयन्ति नाङ्गीतुर्वन्ति मन्त्रम् ॥७७३॥  
 प्रदूषयन्ति मं दृष्ट्वा पन्थायनरुतन्तराः ।  
 गह्रां यथा गतं मयं यमपानोपमं मयम् (?) ॥७७४॥  
 अङ्गीतुर्वन्ति गामार्थं पितरो प्राहकस्य च ।  
 तामादेरुमुक्तो दणो प्राहकेन प्रदापिनः ॥७७५॥  
 उभयोर्वंशयोश्चापि पितृणां नरकप्रदः ।  
 तामादेकं सुतं दत्तपुत्रव्येन कदाचन ॥७७६॥  
 न स्वीकुर्यादतस्तेन न किञ्चिन्म्याम्प्रयोजनम् ।  
 तथा कनिष्ठं तनयं स्त्रीदत्तं वैधवं शिशुम् ॥७७७॥  
 पुरुषेण प्रदत्तं वा कन्यार्थर्णियति (?) प्रदम् ।  
 ब्राह्मदत्तं सूतकिना प्रदत्तं कन्यया तथा ॥७७८॥  
 अनुवीतप्रदत्तं च सापत्नीमातृदत्तकम् ।  
 पितृव्यदत्तं तत्पत्न्या प्रदत्तं भगिनीप्रदम् ॥७७९॥  
 पितामहादिभिर्दत्तं ज्ञातिदत्तं सगोत्रिभिः ।  
 प्रदत्तं येन केनापि पुत्रत्वेन कथञ्चन ॥७८०॥  
 न स्वीकुर्याच्छ्रास्त्रदुष्टास्त एते तनया जहाः ।  
 प्रदातुर्माहकस्यापि महादुर्गतिदायकाः ॥७८१॥  
 मामकस्त्वनयो जातस्तावकस्त्वधुना मम ।  
 संमत्यैवायमभवदिति वाक्येन तत्क्षणात् ॥७८२॥  
 पुत्रघ्नः प्रभवेत्सद्यः वीरहेति निगद्यते ।  
 तत्स्वीकर्ता भ्रूणहा स्यात् तदतो महाहा परः ॥७८३॥

एवं त्रयाणामेकस्य तनयस्य परिग्रहे ।  
 प्रत्ययायो महातुक्तः तस्मात्तत्कर्म नाचरेत् ॥७८६॥  
 जडमूढान्धमत्ता ये मूकह्रीन्नाभिशास्तराः ।  
 पतिताः पामराश्चापि न स्वोकार्यो विशेषतः ॥७८७॥  
 ज्येष्ठपुत्राः पितॄणां स्युःबह्वभा जगतीतले ।  
 यथा तथा कनिष्ठाश्च मातृणामतिबह्वभाः ॥७८८॥  
 अतः कनिष्ठास्तनयाः निन्दितास्युस्तथैव हि ।  
 पुत्रग्रहणकार्येषु यदि दत्तो मृताः सुतः ॥७८९॥  
 पुनः पुत्रं न गृह्णीयादेकस्यैव सुतस्य वै ।  
 ग्रहणं शास्त्रविहितं न द्वितीयस्य सर्वथा ॥७९०॥  
 अपविद्धस्ततोप्राप्तो यदि भूयः सुते मनः ।  
 निर्दुष्टपुत्रा जगति त्रय एव प्रकीर्तिताः ॥७९१॥  
 औरसः पुत्रिकापुत्रः अपविद्धश्च सूरिभिः ।  
 अन्ये तु तनया भूयः भूतले स्युर्गुणुस्त्रिताः ॥७९२॥  
 असत्कुलप्रसूतानां क्षेत्रजातिसुताः स्मृताः ।  
 महाकुलप्रसूतानां त्रय एव पुरोदिताः ॥७९३॥  
 जगुप्सा सा प्रकथिता त्वस्मिन्पश्यति जीवति ।  
 पित्रादिषु स्वकीयेषु सत्सुजीवत्सुत्तरः ॥७९४॥  
 परस्मै पुत्रकार्याय धर्मपत्न्यर्पणं किमु ।  
 न्याय्यं युक्तं सच्चरित्रं सर्वैस्तत्प्रविचार्यताम् ॥७९५॥  
 पालुदानां विटानां वा सा वृत्तिरुगुस्त्रिता ।  
 याति घोरा वागवर्ण्या स्वभार्यान्वनिवेदनम् ॥७९६॥



विना जुगुप्सां हीं घोरां द्वियं भीतिं दुरासदाम् ।  
 परसंगात्सद्गर्भनारी (?) ग्रहणतां भुवि ॥८००॥  
 सम्पाद्य चापिगार्हस्थ्यं लोकानां पश्यतां पुरः ।  
 परवीर्यैकसंजातगर्भिणी स्वकलत्रतः ॥८०१॥  
 ते जायन्ते तादृशानां पाकाः पद्मनिभेक्षणाः ।  
 कार्त्तनपौनर्भवादितनया न जुगुप्सिताः ॥८०२॥  
 किंवा न जाने तद्युग्ं विवाहानन्तरं क्षणात् ।  
 मुहुर्तांशममात्राद्वा यामद्वयमत एव वा ॥८०३॥  
 (अन्हो) अहो दिनात्तद्द्वितीयाद्वितीयात्तस्य तत्परम् ।  
 पश्चान्तमासाहतो (२) मासात् तृतीयाद्वा चतुष्टयम् ॥८०४॥  
 पञ्चपेभ्योऽपि मासेभ्यो द्विम्वानां जननादहो ।  
 द्विपात्पशूनां सालञ्जालक्ष्यते न च किं पुनः ॥८०५॥  
 ते चापि मनुजैः साम्यं संप्राप्य च ततः परम् ।  
 यूयं ययं च मनुजाः समा ग्येति वादिनः ॥८०६॥  
 यागक्षीरघर्णनामादि मर्यादयश्चसंयुताः ।  
 निर्लज्जाः सर्वकार्यैकनिपुणास्त इमे पुनः ॥८०७॥  
 महात्मनः (स्मान्) मन्वृत्तीनां हेलयन्ति हमन्ति च ।  
 पुनर्निराक्षरिष्यन्ति व्ययहारेषु सन्ततम् ॥८०८॥  
 पराव्रजन्ति कृषन्ति नादृशैरनिलं जगत् ।  
 स्वल्पमार्भन्ति षट्पुना नाहराग्निजिह्वान्त्रनान् ॥८०९॥  
 व्ययहारेषु समतः संव्रजाः गज्जनीमाह ।  
 सुपुद्गल दुरात्मनो दुष्टान् धार्मिको नृपतिः स्वयम् ॥८१०॥

पराजयेत्तान्धर्मेण न्यायेनापि समागतान् ।  
 अत्राह्वानं ब्राह्मणेन व्यवहाराय चागतम् ॥८११॥  
 अपि न्यायगतं राजा व्यवहारे पराजयेत् ।  
 एवमश्रोत्रियं राजा श्रोत्रियेण सभासु चेत् ॥८१२॥  
 तुच्छानतुच्छैः समतः सद्भिस्सत्कुलसंभवैः ।  
 बार्ह विवदतो नित्यं भोषयित्वा पराजयेत् ॥८१३॥  
 दुर्बलेन स्वामिनेवं विवदन्तं सभासु चेत् ।  
 दुर्बलं बलिनं पोष्यं महान्धो दुर्जनाश्रयात् ॥८१४॥  
 सद्भिः सोऽयं विगर्हःस्यात् राज्ञे प्रोक्ता यथास्य तु ।  
 शान्तिगर्भवस्य महतः प्रभवेद्द्वै समष्टितः ॥८१५॥  
 अश्रोत्रियश्रोत्रिययोः विवादे समुपस्थिते ।  
 तदात्थश्रोत्रियन्यायसत्पथस्थेऽपि केवलम् ॥८१६॥  
 यथा वा श्रोत्रियजयः भवेत्सद्यः ( स् ) तथा घदेत् ।  
 नित्यं सर्वत्र पूज्योऽसौ श्रोत्रियस्तेन तं वराम् ॥८१७॥  
 नावमन्येत्पूजयित्वा प्रेषयेदेव सन्ततम् ।  
 स्वसारं भगिनीं पत्नीं मातरं वनयां तु वा ॥८१८॥  
 सायकीमभिगन्तास्मीत्यहं वादिनमुद्धतम् ।  
 विवादे श्रोत्रियं दृष्ट्वा श्रोत्रियं सद्य एव वै ॥८१९॥  
 कपोलयोस्तादृशित्वाद्धीकृत्य ( धिक्कृत्य ) च दिनत्रयान् ।  
 परं निरोधाद्दुर्घृत्ययथाराक्ति पणानपि ॥८२०॥  
 चतुर्विंशतिसंख्याकान् द्विगुणं वा चतुर्गुणम् ।  
 तस्यापि द्विगुणंभूयः शतं वा तद्द्वयं तु वा ॥८२१॥

तस्यशकरोरानुगुण्यान् समं संप्रेष्य धर्मतः ।  
 दण्डरूपेण कृत्वास्य पश्चात्तं मोचयेन्नृपः ॥८२३॥  
 यो मन्येताजितोऽमीति न्यायेनैव पराजितः ।  
 तमायान्तं पुनर्जित्वा दापयेद्द्विगुणं दमम् ॥८२३॥  
 सदस्यदूपकं नूष्णीं ग्रामदूपणतत्परम् ।  
 धनपेक्ष्यस्वापरार्थं स्वकार्यवृजिने तथा ॥८२४॥  
 नृपतिर्धार्मिकः मद्यः पणानष्टशतं हरेत् ।  
 सकाशात्तस्य विधिना न चेद्दोषमवाप्नुयात् ॥८२५॥  
 समुद्दिश्यस्वकार्यं यः नूष्णीकं वेद सर्वतः ।  
 अग्नोत्रियः स्वयं (तद्वन्) सत्कर्मत्वेन विशेषतः ॥८२६॥  
 विद्यमानो मन्यमानः स्वयमस्यैव केवलम् ।  
 सच्छ्रोत्रियाः समुद्दिश्य विवादे सति केवलम् ॥८२७॥  
 पूजाभोजनकालेषु स्वस्यानाह्वानकारणान् ।  
 तदुद्वननिरोद्धारं कृतशर्पं तथाविधम् ॥८२८॥  
 यत्नेनैवाहयित्वैनं सभामध्ये परीक्षया ।  
 न्यवष्ट्य विधिना सम्यक्क्षी(धिक्)कृत्यैव ततः पुनः ॥८२९॥  
 नैतादृशमितः कर्म परं स्यात् त्वया भवेन् ।  
 इति भीत्या समायुक्तं कृत्वैनं निश्चयेन वै ॥८३०॥  
 विशोत्तरं शतपणान् हरेत्तस्मान्न संशयः ।  
 यो मुक्तिच्छेदं विप्राणां म्यकामैकपुरस्कृतः ॥८३१॥  
 निरोधं कुर्वते मूढः तस्यदण्डशापेटिका ।  
 क(प)णाःशुद्धादरा पुनः ऊमवेषु पुनः किल ॥८३२॥

विशेषतः क्रतुषु च निरोधे मौढ्यतस्तराम् ।  
 स्वपुरस्कारतोऽतीव समष्ट्या तस्य निग्रहः ॥८३३॥  
 राज्ञो निवेद्य पश्चात्तु ताडयित्वा कपोलयोः ।  
 सर्वस्त्रहरणं कृत्वा तमेनं राष्ट्रतो नयेत् ॥८३४॥  
 ग्राममध्ये स्वशुद्ध-वर्धमपकीर्त्यैकशुद्धये ।  
 क्रियाविशेषान् कुर्वन्तः मूढान् पण्डितमानिनः ॥८३५॥  
 शनैः कालेन महता धराधीशो महामनाः ।  
 शास्त्रविदुभ्यो विनिश्चित्य सत्कार्याणि ततः परम् ॥८३६॥  
 एतदर्थं त्वया चैवमेतत्तत्समनुष्ठितम् ।  
 किलेतिवचनं प्रोक्त्यास्त्री( धिक् )कृत्य च विशेषतः ॥८३७॥  
 तस्य शस्त्रेणुगुणो दण्डो माहो विशेषतः ।  
 ततः पुनरिदं वाक्यमेवमेतादृशं लब्ध् ॥८३८॥  
 त्वया न कार्यं कर्मेति धोभयित्वा विशेषतः ।  
 विसर्जयन्निश्चयित्वा तथा तदुद्योधकानपि ॥८३९॥  
 समष्ट्या बहवो भूयः एकं निरपराधिनम् ।  
 दृष्टात्कारेण तूष्णीकं कार्यकाले समागते ॥८४०॥  
 बाधयेदुर्विषदमानाःसुनञ्ज्ञात्वा धर्मज्ञो नृपः ।  
 शिशुवेदेव विधिना शास्त्रा सत्कार्य(?)वर्त्म च ॥८४१॥  
 वृषक् वृषक् सम्यगेव शनैर्वा सत्परं तु तन् ।  
 एकं चेच्छ्रोत्रियमामे तदीयां पूजयतां पराम् ॥८४२॥  
 महत्वं व्यपदेश्यं च गुरुत्वमधिकं तथा ।  
 आचार्यत्वं पटुत्वं बीशा(र)द्य(म)अनश्वरम् ॥८४३॥

विद्याविषयं च संज्ञितं तद्विदित्तमपरादिभिः ।  
 भावज्ञानाद्यदमानन्दं तूष्णीकं मद्गुरोर्वच ॥८४७॥  
 आगेपविनाऽप्रयोऽनं वे दृग्गोः न तदोपगतम् ।  
 ममाहर्षेण धारिणो वे पदयो मी ज्ञामाऽग्निमाः ॥८४८॥  
 विद्याकृमांविभिहीनाः दृग्गोऽप्यंता मदा ।  
 धारिणो गुरानिः शोभान बहूना गानि दृग्ग (१) ॥८४९॥  
 श्रुत्या पचामि तन्वभागमेव शोत्रिणं परम् ।  
 कृत्स्नं च मन्वत् तन्वत् तमेवमेव प्रपूजयेत् ॥८५०॥  
 शतानामपि मूढानां पचनं नैव कारयेत् ।  
 तथा पुनश्चाहस्यानामयुगानां विज्ञेयतः ॥८५१॥  
 किमसि वचने तस्मिन् तूष्णीके मद्गुरोपमे ।  
 वचनं तच्छ्रोत्रियस्य वेदशास्त्रविनिरिगतम् ॥८५२॥  
 संभ्राज्य सर्वदा सर्वैः सर्वलोकोपकारकम् ।  
 ये धा विरोधिनस्तस्य ते सर्वे दण्डभागिनः ॥८५३॥  
 भवेयुरेव सततं मूढा वेदविरोधिनः ।  
 यत्करोति श्रोत्रियोऽसौ वचने नैव तत्परम् ॥८५४॥  
 न तत्कर्तुं मूढशतं किं शक्तं प्रभवेद्दहो ।  
 यो मुक्तिसमये मौलर्यात् ब्राह्मणानां समर्पितम् ॥८५५॥  
 दत्तं तथा प्रोक्षितं च मन्त्रेण परिपेचितम् ।  
 विघातयेद्दूपयेद्वा पांसुभिर्भस्मभिर्मृदा ॥८५६॥  
 उच्छिष्टेन पुरीषेण तथा तं सद्य एव वै ।  
 ब्राह्मयित्वा विशेषेण निगलेन च संवृतम् ॥८५७॥

मासत्वंयनरूपेण विप्रसंख्यानुरूपतः ।  
 कारयित्वा ततः पश्चान् एकविप्रस्य पट्शतम् ॥८२४॥  
 पणान् दण्डं गृहीत्वा च सर्वेषां तत्र वै तथा ।  
 भोक्तुं समुपविष्टानां पृथगेवं निरीक्ष्य वै ॥८२६॥  
 सर्वान् पणान् तान्स्त्रीकृत्य तं शृत्तिमुपहृत्य च ।  
 तद्रूपामिभ्योऽथ वा तस्य तत्प्रत्यर्थिन एव वा ॥८२७॥  
 देशादुच्चाटयित्वाथ दद्यादेवाविशङ्कतः ।  
 विप्रशृत्तिस्तु विप्रेभ्यः एव देया न तु स्वयम् ॥८२८॥  
 हरेद्राजा धर्मपरः हरन्सद्यः पतेदधः ।  
 एवं शूद्रध्वरेत्कोऽपि तस्य दण्डो यद्यस्ततः ॥८२९॥  
 दित्वा हस्तौ प्रथमतः निगले वसतिस्सदा ।  
 राक्षानिष्टप्रवक्तारं तस्यैवाक्रोशकारिणम् ॥८३०॥  
 तन्मन्त्रस्य च भेत्तारं सत्पत्नीकृतसङ्गमम् ।  
 दित्वा जिह्वां च शिशनं च सद्यो दूराद्विसर्जयेत् ॥८३१॥  
 न्यजनैर्दूषितः सद्भिः भोजनादिषु फर्ममु ।  
 मोक्षयित्वा सदा यन्नादधराद्याप्यचिन्तितम् ॥८३२॥  
 समागतञ्च समये विवादेनैव केषलम् ।  
 दुराराया भोक्तुकामः दूरीशुर्वन्परान्द्रिजान् ॥८३३॥  
 दापनीयस्त्वसौ सम्यक् चतुर्विंशतिकान् पणान् ।  
 न भागतो यदि धर्मं भोक्तुं यत्र च यत्र च ॥८३४॥

तत्र तत्र च गच्छामः(मो) न मुजिष्यामहे ततः ।  
 इत्यस्मिन् सङ्कटेऽर्थे तु विवादायागतो यदि ॥८६३॥  
 भुक्तिकाले दण्डनीयः नान्यकाले तदुक्तितः ।  
 भोजनेषु ब्राह्मणानां विषादे तु परस्परम् ॥८६६॥  
 संजाते सद्य एवास्य शान्ति कार्या न चेद्बृथा ।  
 हानिस्तुमहती घोरा जायते चोभयत्र तु ॥८६७॥  
 विषादे तादृशे शक्तः श्रोत्रियश्चेद्विशेषितः ।  
 बहुभिस्तु विशेषेणाविचारश्रोत्रियैर्युतः ॥८६८॥  
 यदि स्युः श्रोत्रियास्तन्तः बहवस्तत्र तैस्समम् ।  
 अश्रोत्रियस्त्वं यं चैकः विवदेन्न तु धर्मतः ॥८६९॥  
 परेषां तु सहायेन तद्वाक्यश्रवणादिना ।  
 न कर्म कुर्यात्किमपि साहसं वचनं तथा ॥८७०॥  
 न वदेद्वापि तूष्णीकं किं तु तानखिलान्द्विजान् ।  
 संश्रित्यैव प्रणत्या च प्रियोक्तया स्ववशाद्भवेत् ॥८७१॥  
 तानेतानखिलान्नो चेद्दानिरस्यैव जायते ।  
 बहुब्राह्मणविद्वेषः तद्दुःस्वकरणं वृथा ॥८७२॥  
 धेयसो न भवेदेव तस्मान्नतु तथा चरेत् ।  
 अधिकान् श्रोत्रियान् कुर्यात् न्यूनानश्रोत्रियान्सदा ॥८७३॥  
 कर्मणा मनसा वाचा प्रयत्नेन समाचरेत् ।  
 ब्राह्मणानर्चयेन्नित्यं ब्राह्मणानेव तोषयेत् ॥८७४॥  
 भोजयेद्ब्राह्मणानेव दशात्तेभ्योऽनिरां धनम् ।  
 सर्वदेवमयो विप्रः सर्ववेदमयो द्विजः ॥८७५॥

सर्वक्रतुस्वरूपश्च सर्वतीर्थसदाश्रयः ।  
 सर्वत्रतानि कृच्छ्राणि तपांसि ब्राह्मणः स्मृतः ॥८७६॥  
 सर्वे धर्मास्त एवस्याच्छ्राद्धानि नियमा अपि ।  
 ब्राह्मणेन विना किञ्चिद्भिप्रेतं न सिद्धयति ॥८७७॥  
 तस्मान्न ब्राह्मणसमं किं भूतमिह विद्यते ।  
 यस्यास्येन सदाश्नन्ति हृद्यानि त्रिदिवोकसः ॥८७८॥  
 कव्यानि चैव वितरः किं भूतमधिकं ततः ।  
 ब्राह्मणो जङ्गमं तीर्थं प्रवक्ता ब्राह्मणस्सुरः ॥८७९॥  
 अदाहकः पावकोऽयं चाक्षपो वायुरुच्यते ।  
 पद्मवन्धुरयं प्रोक्तः संत्यक्तारतमयोदयः ॥८८०॥  
 सुपात्रं सर्वदा नाना शुभानामास्पदः पदः ।  
 अभाषयाज्ञानरोगार्थीःमृत्युदारिद्र्यमारकः ॥८८१॥  
 अकर्तुमन्यथाकर्तुं कर्तुं सर्वं विचक्षणः ।  
 दुर्घर्षानपि सङ्घर्षानवशान् शुज्जते क्षणान् ॥८८२॥  
 नैतन्मादधिकं तुह्यं वस्त्यति जगतीतले ।  
 हिरण्यगर्भत्रितयदानमायेण तत्क्षणान् ॥८८३॥  
 विप्रत्वं परमाप्नोति कृपलो नात्र संशयः ।  
 तन् पौष्टरामहादानप्रविष्टैकरय वाडवे ॥८८४॥  
 करणादेव शेषाणां दानानां करणे पुनः ।  
 शूद्रादेवैदमन्त्रैस्ते सम्यकारयितुं यथा ॥८८५॥  
 विधानतस्तुप्रभवेन् तत्तु विप्रमुत्वेन चैन् ।  
 क्षत्रादि मुसतरपेत्तु न युक्तं प्रभवेद्दि तन् ॥८८६॥



गुण्यमासी गोमदस्यं कल्पवृक्षादिकं तु वा ।  
 शृङ्गेण धनमं दानममन्त्ररमभार्मिकम् ॥८८४॥  
 कृतं चेत्त तन्परं सर्वं गुणाद्विप्रस्य संःसृतम् ।  
 वेदोक्तं नैव मार्गेण श्रित्यादिमुनेन चैव ॥८८५॥  
 विप्रश्चतुः पट्टिमंगवैः प्रत्यग्भिः कृष्योऽपि सन् ।  
 द्वितीयादीनि दानानि मत्र प्राद्यगमंनिधौ ॥८८६॥  
 वेदोक्तं नैव मार्गेण गुण्यदेवाविचारयन् ।  
 महादानस्य तन्मा(भ्या)स्य कारणादेव केवलम् ॥८८७॥  
 एतस्यापि ततः मद्यः तच्छिष्टं दानकर्मणि ।  
 वेदमार्गेण शक्नोति कर्तुं तत्कर्म तादृशम् ॥८८८॥  
 न साक्षाद्देवमन्त्रोक्तीः तस्य संगच्छतेतराम् ।  
 प्राक्षणस्य मुनेर्नैव तदुक्तिस्तस्य तत्र वै ॥८८९॥  
 संगच्छते विशेषेण न तु स्वस्य विधीयते ।  
 त्रिवारं तेषु सर्वेषु कृतेषु तु ततः परम् ॥८९०॥  
 तदुक्तावधिकारोऽपि सम्यक् संगच्छतेऽस्य तु ।  
 यो वा दानानि सर्वाणि महान्ति चरमे वयः ॥८९१॥  
 करोति भक्त्या शूद्रोऽपि तल्लक्षणात्तेन कायतः ।  
 विष्णुलोकं प्रयात्येव महिम्ना तस्य केवलम् ॥८९२॥  
 हिरण्यगर्भदानस्य चतुर्वारकृतस्य तु ।  
 महिम्ना कृष्यलस्यापि मौञ्ज्यामधिकृतिर्भवेत् ॥८९३॥

ततोऽपि कृतया मौञ्ज्या शूद्रो ब्राह्मण्यमृच्छति ।  
 तुलाष्टादशधाज्ञेया तत्रादौ राजता स्मृता ॥८६७॥  
 चामीकरमयी परचान्त्रपुसीसकयोरपि ।  
 औदुम्बरमयी परचान्त्र कापांसपटयोरपि ॥८६८॥  
 गुटान्ज्वलयणंभीरद्दधिशकमयाः पराः ।  
 माध्वीकतिलतैलानां पैल्वाकी धान्यराशिभिः ॥८६९॥  
 चरमा सा प्रकथिता समधान्यैः पृथक् पृथक् ।  
 धाम्यैरपि तथारघ्यैः विकल्पेन मनीषिभिः ॥८७०॥  
 चरमा सा तुला ज्ञेया चतुर्दशविधैकका ।  
 ग्राहकस्य ग्राहणस्य सद्योरक्षस्त्वदायिनी ॥८७१॥  
 प्रायश्चित्तापनोदा मा न भवेदेव सर्वथा ।  
 सर्वाण्यपि च दानानि तुलादीनि तु षोडश ॥८७२॥  
 साहस्रान्येव सर्वाणि नात्र कार्या विचारणा ।  
 कर्तुंसद्यस्मर्वपापनाशद्वारैश्च केवलम् ॥८७३॥  
 मुक्तिदान्येव सर्वेषां धर्मांनामविशेषतः ।  
 एतानि चरमे काले यो वा मर्त्यो महामताः ॥८७४॥  
 मध्ये तेषां तुलादीनामप्येकं दानमुत्तमम् ।  
 करोति सद्यो मुक्तिं तां ब्रह्मसायुज्यलक्षणम् ॥८७५॥  
 अवशादेव मनुजो लभते नात्र संशयः ।  
 चरमे जन्मनि नरत्तानि दानानि मानवः ॥८७६॥  
 करोत्येव न धान्यग्निन् शतार्थं तन्मयोदितम् ।  
 दानं महत्तर्पकेषामप्येकं भक्तिमान्तरः ॥८७७॥

दशायां च रमायां तु तुयांश्चापि तदेव हि ।  
 कर्मं तु लभते दिव्यं मत्तमाजुषन्नात्म ॥६०८॥  
 हेऽण्यगर्भं गदान (नीं) गोमूत्रं प्रथमं मृतम् ।  
 गोमयोदरमंत्रं तत्र (द) द्वितीयं परिशीलितम् ॥६०९॥  
 क्षीरपूजितमन्यसु पूर्णायमिति तद्विदुः ।  
 क्षीरपूजितमन्यसु चतुर्थं पापभञ्जकम् ॥६१०॥  
 पृतेन पूजितं प्रादुः पञ्चपातघ्ननाशनम् ।  
 तैलं हिरण्यगर्भान्यं गतो भिन्नं प्रचक्षते ॥६११॥  
 मधुना पूजितं पुण्यमत्यन्नाज्ञानवारकम् ।  
 तथंक्षुरमसंपूर्णं महारौरवभीतिहम् ॥६१२॥  
 नारिकेलोदकैः पूर्णं तथाग्भःपूर्णमेककम् ।  
 हिरण्यगर्भं चरमं प्रादुर्दिव्या महर्षयः ॥६१३॥  
 एवं दशविधं प्रोक्तं दानं पापापनोदकम् ।  
 हिरण्यगर्भसंज्ञं तत्र ग्राहकस्यातिभीतिहम् ॥६१४॥  
 तद्गन्नाहाण्डकटाहार्यं दानं सर्वार्थदायकम् ।  
 चतुर्दशविधं प्रोक्तं भूर्भुवस्वादिभिः पदैः ॥६१५॥  
 अतुलादिपदंश्चापि संयुक्तं सर्वसिद्धिदम् ।  
 महादानं महाभूतिदायकं पापवृन्दहम् ॥६१६॥  
 एषां यदेककं वापि कृतं चेन्निसिलं कृतम् ।  
 तत्तत्कामनया चेत्तु चरेदेव तथा तथा ॥६१७॥  
 तूष्णीकं परमेशस्य तुष्टये चेत्कृतं तु तत् ।  
 कर्तुंस्तायुज्यदं सद्यः तथापि तु पुनः परम् ॥६१८॥

रहस्यमेकं वक्ष्यामि ग्राहकस्त्वस्य केवलम् ।  
 रक्षस्त्वं समवाप्नोति दाता सायुज्यमृच्छति ॥६१६॥  
 गोसहस्रमतिश्लाघ्यं गोसत्रशतसन्निभम् ।  
 नीलादिभेदतस्तत्तु सतरूपं प्रचक्षते ॥६२०॥  
 स्वर्णलाङ्गलसंज्ञं सदपरं दानमेककम् ।  
 मन्वादिभिर्विरचिनं दातुस्सर्वफलप्रदम् ॥६२१॥  
 नैतेन तुल्यमन्यत्तु दानं दानोत्तमोत्तमम् ।  
 कामधेन्याख्यकं पद्मादेकं सर्वगुणान्वितम् ॥६२२॥  
 हरिश्चन्द्रादिभिर्घोरैः राजभिः समनुष्ठितम् ।  
 सर्वयज्योपविनुत्तमपरं दानमेककम् ॥६२३॥  
 कल्पकृश्राख्यकं देवदेयाय परमात्मनः ।  
 अतिसंप्रीतिजनकं सतः कैवल्यदायकम् ॥६२४॥  
 एवं महाधरादानं गोमेधशतसंनिभम् ।  
 सर्वाण्येतानि दानानि कर्तुरेय त्रिपूर्वकम् ॥६२५॥  
 पूर्वोक्तफलदं श्रेयं नान्यदप्येति मुनिश्चितम् ।  
 एवं सर्वाणि दानानि दशपञ्च च कैवल्यम् ॥६२६॥  
 नवमं कन्वकादानदानुन्तदुमादपरय च ।  
 चन्द्रमण्डलपर्यन्तं यवराशिः कृता यदि ॥६२७॥  
 सूर्यमण्डलपर्यन्तं तिलराशिः(ः)कृता यदि ।  
 (अ) तद्ग्री शिषलोकपर्यन्तस्मर्परा राशिरत्तमा ॥६२८॥  
 सप्तर्षिलोकपर्यन्तं बालुका राशिरत्तमा ।  
 इत्यन्वयासां तु या संख्या तावदुर्पमादृश्यान् ॥६२९॥

दशानामपि पूर्वेण दशानामपि पूर्ववत् ।

पितुः स्वस्य तथा पञ्चानामपि पुत्रानि पुत्रवत् ॥६३०॥

एकोनशतानां च मुञ्चानां महतामपि ।

पितृणामपि सर्वेषां नरकोणागूर्वकम् ॥६३१॥

तच्छ्रायतमश्नन्त्रोकाथानिकारकमुच्यते ।

दातुं तु सद्यो विज्ञानद्वारेण पुनरेव वै ॥६३२॥

तद्मद्यमायुज्यनामा मुनिकारकमेव वै ।

तस्मान्नैतन् मम दानं धर्मो वै तत्परः पुनः ॥६३३॥

सदैवैतत्समं दानं लक्ष्मीनारायणद्वयम् ।

महासन्ततिसंगृहिकारकं कथितं महत् ॥६३४॥

यथैतदेतत् परमं निरशेषपितृत्वारकम् ।

कुर्याद्दानं प्रशंसन्ति तथा तत्तनयस्य च ॥६३५॥

दानं पितृणामत्यन्तकलिदुर्गार्तिकारकम् (?) ।

पूर्ववत् कालसंख्या च वेदितव्या विशेषतः ॥६३६॥

अस्मिन्नर्थे न सन्देहः एवमाह महर्षयः ।

यस्यै कन्यकादानं रसदानं च वर्णिनः ॥६३७॥

भिक्षादानं गृहस्थाय त्रयमेतद्विगर्हितम् ।

तथार्थिनं मस्करिणं वर्णिनं चान्नकामुकम् ॥६३८॥

भिक्षार्थिनं गृहस्थं च सद्यो राष्ट्रप्रवासयेत् ।

नृष्णीं भिक्षां गृणन् मामे वसन्तान्भक्षयन्वृथा ॥६३९॥

विनैव वेदाध्ययनं ब्रह्मचारी विशेषतः ।  
 दृष्टनीयः प्रयत्नेन ताडनीयस्तदा तदा ॥६४०॥  
 राष्ट्रदु ( द्वासयेत्तश्वा ) वेदाध्ययनतत्परम् ।  
 नित्यंभिक्षार्थिनोयज्ञात् शाकसूपरसादिभिः ॥६४१॥  
 भिक्षाप्रदानतत्परतः तत्समाप्ति समाचरेत् ।  
 तावन्मात्रेण ते वेदाः सर्वे शास्त्राणि चाङ्गकैः ॥६४२॥  
 तथा स्मृति पुराणानि (सेतिहासानि सर्वशः) ।  
 वर्णिभुक्तौ पसूपरसाद्यदधिगोरसाः ॥६४३॥  
 हाटकक्षितिगोरब्रह्मजवाहा भवन्ति वै ।  
 गृहस्थस्य प्रतिदिनं गुह्यो धर्मः स्वयं महान् ॥६४४॥  
 यतेर्वा वर्णिनोदत्ताः लवणव्यञ्जनादयः ।  
 भुक्तिकालेज्वहं नृणां ग्रहिणः कामयेनवः ॥६४५॥  
 कल्पवृक्षा भवेयुर्हि किं चैते रत्नसानवः ।  
 कन्याभूस्वर्णरत्नारवगजवाहनसंचयाः ॥६४६॥  
 यतिवर्णि प्रदत्तास्ते गृहिणो नरकप्रदाः ।  
 भवेयुर्नात्र सन्देहः तभ्यां(त्यां) दद्यादतो न तान् ॥६४७॥  
 गृहिणं त्वन्नभिक्षार्थं समागतमुदीक्ष्य ना ।  
 द्वितीयेऽहनि हृष्टस्य दूरमुद्रासयेद्भ्रुवम् ॥६४८॥  
 प्रथमेऽहनि वेदज्ञः किं कार्यं क्रियते त्वया ।  
 नेतः परं न कार्यं स्यादित्युक्त्वा तां प्रदापयेत् ॥६४९॥  
 गच्छेत्सु(दु)भाटयेत्सूणीं द्वितीयेऽहनि चण्डवै ।  
 याचन्तं तण्डुलान् ब्रह्मचारिणं यतिमेव वा ॥६५०॥

दद्यात् विप्रोऽपि मानिगुहं पुण्डरीकाक्षमुपमं ।  
 नाम्भूतं भरति भाग्यं यतिरस्यः कदाचन ॥६११॥  
 जातरूपं न दद्यात् सुगन्धद्रुमुपमत्रम् ।  
 गण्डुल्यान पात्रगण्डायै न दद्यात् कदाचन ॥६१२॥  
 आगतार्थं भिक्षुहायै करमात्राभिदाननु ।  
 तामां नित्यं धान्यमेष प्रदेयं करपूरितम् ॥६१३॥  
 यदि पश्चादाधिकमंपत्तरपरा पुनः ।  
 तदा तण्डुलयोग्यापि भवेदिति भृगोर्मतम् ॥६१४॥  
 श्रतश्चाद्दनिमित्तंन याचितो यदि वा स्वया ।  
 तत्पूर्तिमात्रदानेन गयाश्राद्धफलं भवेत् ॥६१५॥  
 विधवाभिरनाथाभिः यस्त्राय यदि याचितः ।  
 तन्मनः पूरणं सुर्वन्नरथमेघफलं भवेत् ॥६१६॥  
 पष्टिवर्षात्परं तासामनाथानां तु याचने ।  
 भिक्षायामधिकारोऽस्ति तत्पूर्वं नेति चाङ्गिराः ॥६१७॥  
 वर्णिने यतये कन्यादानं शास्त्रविगर्हितम् ।  
 विशेषेण घराताम्बूलद्वयं नरकप्रदम् ॥६१८॥  
 अपि यत्रात् श्राद्धदिने वर्णिने देवरूपिणे ।  
 देया स्यादक्षिणा तस्मै न ताम्बूलमिति श्रुतिः ॥६१९॥  
 अतिने कन्यकादानं रसदानं (तु) पुत्रिणे ।  
 यागार्थिनेऽन्नदानं च कोटियज्ञफलप्रदम् ॥६२०॥  
 वैश्वदेवावसाने तु ब्राह्मणो यत्र कश्चन(कश्चन) ।  
 क्षुधार्ता पात्रभूतस्य त्रियोऽन्तर्वत्न्य एव च ॥६२१॥

कन्यका विधुरा बालाः तीर्थादित्रतचारकाः ।  
 ण्डाश्च विधवास्सर्वे यणांस्तेऽपि चतुर्विधाः ॥६६२॥  
 न्नदानैकपात्राणि चण्डालान्तानि सूरिभिः ।  
 धितानि महाभागैः क्षुत्क्षामापन्नपात्रता ॥६६३॥  
 हादानानि चामूनि तुलादीन्यधुना पुनः ।  
 त्रं कृष्णाजिनादीनि प्रायश्चित्तादिकैरपि ॥६६४॥  
 निवर्त्यानि घोराणि ग्राहकरवैव सवंगा ।  
 मात् स्वोदरपूर्त्यर्थं गुरुद्रोहादिकं खरम् ॥६६५॥  
 देवसखिद्रोहं कुर्याद्वापदि निर्भयम् ।  
 तुलादिमहादानद्रव्यं सर्वात्मना स्पृशेत् ॥६६६॥  
 ब्राह्मणगोमांसं मातृमांसं सुरादिकम् ।  
 वेदापदि पुनः तत्र द्रव्यं न(सं)स्पृशेत् ॥६६७॥  
 त्रीं च भयिनीं भ्राष्ट्रपत्नीं सुतामपि ।  
 चित् कामतो गच्छेत् तुलाद्रव्यं तु न स्पृशेत् ॥६६८॥  
 न्मद्यपानं वा गोमांसं वापि भक्षयेत् ।  
 दा ब्रह्महत्यां च भ्रूणहत्यां तथा विधाम् ॥६६९॥  
 त्यां तु वा कुर्यात् तुलाद्रव्यं तु न स्पृशेत् ।  
 वा मातरं गच्छेत् तुलाद्रव्यं तु न स्पृशेत् ॥६७०॥  
 त्तरातैश्चापि तीर्थकोटिशतैरपि ।  
 तिकृच्छ्रचान्द्रार्थैः तद्रक्षस्त्वं न नश्यति ॥६७१॥  
 पां पुनः प्रायश्चित्तशास्त्रं पृथा भवेत् ।  
 सति तस्यापि प्रत्युत्तरमिहोच्यते ॥६७२॥



आदौ प्रतिवसन्तस्य वसन्ते सोमयाजिनः ।  
 संकल्पकाल आह्वयस्य दैवान्नप्रश्रिया पुनः ॥६५३॥  
 तद्विच्छित्तिर्दशायां चद्येन केनाप्युपायतः ।  
 कर्तव्यत्वेन चोक्तस्य सामर्थ्यात्करणे तथा ॥६५४॥  
 तस्य प्रतिवसन्तस्य तादृशं दानमेककम् ।  
 प्रतिगृह्य विधानेन तद्द्रव्यस्य तुरीयकम् ॥६५५॥  
 त्यागं कृत्वा चित्तमपि तेन द्रव्येण तत्परम् ।  
 अनुष्ठितस्तप्तन्तुः यदि तद्वत्सु चाखिलम् ॥६५६॥  
 विनियुक्तं तत्र सममात्र एवान्य तादृशः ।  
 तद्द्रव्यं तत्प्रदं न स्यादेव यागाय यत्कृतम् ॥६५७॥  
 तत्सर्वं तस्य दोषाय न भवेदेव सर्वथा ।  
 व्रतसंघत्सरं यावज्जीवं चैव विधानतः ॥६५८॥  
 संकल्पितस्य यज्ञस्य विषये ब्राह्मणस्य चेत् ।  
 सर्वप्रतिग्रहेणापि न दोष इति सा श्रुतिः ॥६५९॥  
 भ्रष्टाद्वा पतिताद्वापि पापण्डान्नास्तिकादपि ।  
 घण्डालागयनान्मन्त्रेच्छ्रात्प्रतिगृह्यापि सं क्रतुम् ॥६६०॥  
 यजेत विधियद्विप्रण्यमेव यपंगतथा ।  
 दौर्भाङ्ग्यविनशाय विच्छित्तौ वेदिवेद्योः ॥६६१॥  
 अतिपापादनिग्रह्यादतिनीचादतन्द्रितः ।  
 मद्याराद्रुमु संगृह्य येन केन प्रकारतः ॥६६२॥  
 अग्निदोमन्वनुष्ठेयः प्रथमोऽथ क्रतुर्भवेत् ।  
 मग्यानुष्ठानमात्रेण दौर्भाङ्ग्यं विनश्यति ॥६६३॥

अत्यग्निष्टोममुख्यान्तान् क्रमान् पदद्वितः परम् ।

सद्द्रव्येणैव विधिना न्यायलक्षणेन धर्मवित् ॥६८४॥

यज्ञेत्तव्यं पुरोक्तेन न मार्गेण कदाचन ।

दीर्घांशुष्ये परिहृते येन केन प्रकारतः ॥६८५॥

तदुत्तरक्रमणां श्वेदनुष्ठानस्य शून्यतः ।

अभाषात्प्रत्यवायस्य करणं मास्तु पूर्ववत् ॥६८६॥

कर्मणो यस्य वा लोके समनुष्ठानशून्यतः ।

प्रभवेत्यत्यवायोऽयं कर्मणस्तस्य कैवल्यम् ॥६८७॥

अहन्तावश्यकत्वेन यत्तज्यत्वं प्रकीर्तितम् ।

तद्भिन्नानां कर्मणश्चेत् करणेऽभ्युदयं परम् ॥६८८॥

पुनस्त्वकरणे तेषां प्रत्यवायो न विद्यते ।

पञ्चपातकभिन्नानां पातकानां द्विजन्मनाम् ॥६८९॥

गायत्री जप एवस्यान्निष्कृतिः शास्त्रसंमता ।

शतं सद्द्रव्यमयुतं नियुतं न्यवुदं तथा ॥६९०॥

तत्तत्कार्यानुगुण्येन व्याहृतीनां जपोऽथवा ।

सोमातिरेकादिषु च महादानादिषु कश्चित् ॥६९१॥

उपनीतिः पुनरपि क्रूरकर्मसु कैवल्यम् ।

परगर्भादिकं चापि कार्यमेवेति निष्कृतौ ॥६९२॥

प्रवदन्ति महात्मानः नदीक्षानादिकानि च ।

कृच्छ्रप्रतिनिधित्वेन केचिदाहुश्च पापिनाम् ॥६९३॥

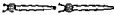
अनुपहाय मौडभ्यकारणाय च माहुरो ।  
 पुरुषगूढं च नो(न)मकं शिवमंछ्यकं तथा ॥६१७॥  
 रौद्रवैष्णवगायत्र्या शान्ता नोवनिषन् वा ।  
 त्रियम्बकमिदं विष्णुवाक्काभ्याश्चाः स्मृताः ॥६१८॥  
 सर्वेष्वपि च शृत्वा कपिलेनेदमोरितम् ।  
 धर्मशास्त्रं महामारं सर्वलोकोपकारकम् ।  
 पठन भगवाद्भिजो नित्यमरथमेधकः भेत् ॥ ६१९॥

॥ इति कपिलस्मृतिस्समाप्ता ॥

ॐ तत्सद्गमध्यापणमस्तु ॥

॥ श्री गणेशायनमः ॥

# \* वाधूलस्मृतिः \*



नित्यकर्मविधिवर्णनम्

वाधूलं मुनिमासीनमभिगम्य महर्षयः

प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ॥ १ ॥

भगवन् ब्राह्मणादीनामाचारं वद तत्त्वतः ।

तच्छ्रुत्वा मुनि शार्दूलस्तानृषीन् प्राह धर्मवित् ॥ २ ॥

ब्राह्मणमुहूर्तादारभ्य त्रिकाले विहितं तथा ।

नित्यनैमित्तिकं चैव प्रवक्ष्यामि यथासति ॥ ३ ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते संप्राप्ते त्यक्तनिद्रः प्रसन्नधीः ।

प्रक्षाल्य पादावाचम्य हरिसंकीर्तनं चरेत् ॥ ४ ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते निद्रां च कुरुते सर्वदा तु यः ।

अशुचि तं विजानीयादनर्हः सर्वकर्मसु ॥ ५ ॥

नक्षत्रज्योतिरारभ्य सूर्यस्योदयनं प्रति ।

प्रातः सन्ध्येति तां प्राहुः श्रुतयो मुनिसत्तमाः ॥ ६ ॥

प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रामुपासीत यथाविधि ।

सादित्यां पश्चिमां सन्ध्यामर्षस्तमित भास्कराम् ॥ ७ ॥

दिवा सन्ध्यासु कर्णस्थो ब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः ।

कुर्यान्मूत्रपुरीषे तु रात्रौ चेदक्षिणामुखः ॥ ८ ॥

अवगुण्ठितसर्वाङ्गः कृणैराब्दान मेदिनीम् ।  
 घ्राणास्ये वाससाब्दान मन्मूत्रं त्यजेद्बुधः ॥ ६ ॥  
 अप्राकृत्य शिरो यन्तु विष्णुं सृजति द्विजः ।  
 तच्छिदरः शतधा भूयादिति वेदाः शपन्ति नम ॥१०॥  
 उत्थाय वामहस्तेन गृहीत्वा चोर्ध्वमेहनम् ।  
 शौचदेशमथाभ्येत्य कुर्याच्छौचं मृद्भुभिः ॥११॥  
 अरन्निमात्रमुत्सृज्य कुर्याच्छौचमनुदधृते ।  
 पश्चात्तच्छोधयेत्तीर्थमन्यथा न शुचिर्मवेत् ॥१२॥  
 विद्वच्छौचं प्रथमं कुर्यान्मूत्रशौचं ततः परम् ।  
 पादशौचं ततः कुर्यान् करशौचं ततः परम् ॥१३॥  
 पश्चधा लिङ्गशौचं स्याद्गुदशौचं त्रिवेष्टितम् ।  
 पादयोर्लिङ्गवच्छौचं हस्तयोस्तु चतुर्गुणम् ॥१४॥  
 एतच्छौचं गृहस्थानां द्विगुणं ब्रह्मचारिणाम् ।  
 त्रिगुणं तु वनस्थानां यतीनां तु चतुर्गुणम् ॥१५॥  
 यदिवा विहितं शौचं तदर्धं निशि कीर्तितम् ।  
 तदर्धमातुरे प्रोक्तमातुरस्यार्धमध्वनि ॥१६॥  
 विष्णुमूत्रकरणात्पूर्वमादयान्मृत्तिकां तदा ।  
 अददानस्तु तां पश्चात्सवासा जलमाविशेत् ॥१७॥  
 आर्द्रामिलकमात्रास्तु प्रासा इन्दुव्रते स्मृताः ।  
 तथैवाहुतयः सर्वाः शौचार्ये याश्च मृत्तिकाः ॥१८॥  
 ॐ नमः ॥ त्रिविधं प्रोक्तं बाह्यमाभ्यन्तरं तथा ।

ज्ञः सदा कार्यः तन्मूलो हि द्विजः स्मृतः ।  
 अरविहीनस्य समस्ता निष्फला क्रियाः ॥२०॥  
 नुः शुचौ देशे उपविष्ट उदङ्मुखः ।  
 ब्राह्मणेन तीर्थेन द्विजो नित्यमुपसृशेत् ॥२१॥  
 कृत्तिहस्तेन मापमग्नजलं पिबेत् ।  
 अधिकं पीत्वा सुरापानसमं भवेत् ॥२२॥  
 लिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः ।  
 एकनिष्ठे तु शिष्टेनाचमनं भवेत् ॥२३॥  
 य शुचौ देशे प्राङ्मुखो ब्रह्मसूत्रधृत् (६) ।  
 कुशाकरो द्विजः शुचिरुपसृशेत् ॥२४॥  
 मत्सासु हृदयं ब्राह्मणः शुद्धतामियात् ।  
 कण्ठतालुस्पृक् वैश्यः शूद्रः तथा स्त्रियः ॥२५॥  
 षेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम् ।  
 ष्टं तत्पवित्रं तु भुषत्वोच्छिष्टं तु व्रजेत् ॥२६॥  
 तः पिबेत्तोयं कुशाहस्तः सदाऽऽचमेत् ।  
 कुशाहस्तसु न कदाचिदुपसृशेत् ॥२७॥  
 दीनि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा ।  
 दक्षिणे कर्णे सन्तीति मनुरमवीत् ॥२८॥  
 उदङ्मुखो वापि समाचम्य विशुध्यति ।  
 पुनराचम्य याम्या आनेन शुष्यति ॥२९॥  
 सा जले कुर्यात् तर्पणाचमनं जपम् ।  
 साः स्थले कुर्यात्तर्पणाचमनं जपम् ॥३०॥



मन्त्यश्वपाकानां स्पृष्ट्वा स्नानं समाचरेत् ।

रिशत्पदादूर्ध्वं छायादोषो न विद्यते ॥४२॥

यस्पर्शने चैव त्रयोदशनिमज्जनम् ।

स्य प्रथतः पश्चात्स्नानं विधिबदाचरेत् ॥४३॥

भिभूता या नारी रजसा च परिष्कृता ।

तस्या भवेच्छीचं शुष्यते केन कर्मणा ॥४४॥

ऋनि संप्राप्ते स्पृशेदन्या तु तां स्त्रियम् ।

चैलाषगाह्यापः स्नात्वा स्नात्वा पुनः स्पृशेत् ॥४५॥

द्वादशकृत्वो वा ह्याचामेष पुनः पुनः ।

च वाससां त्यागः ततः शुद्धा भवेत्तु सा ॥४६॥

ऋक्षया सती दानं पुण्याहेन विशुष्यति ।

वाभिष्कृते नार्यो संभाषेता मिथो यदि ॥४७॥

सं तयोराहुरशुद्धौ शुद्धिकारणम् ।

च सूतके चैव ह्यन्तरा चेद्भक्तुर्भवेत् ॥४८॥

त्वा भोजनं कुर्याद् भुक्त्वा चोपचसेदहः ।

वे वासुदेवस्य यः स्नाति स्पर्शशङ्कया ॥४९॥

धाः पितरस्तस्य पतन्ति नरके क्षणात् ।

यस्पर्शने वान्तौ अश्रुपाते क्षते भगे ॥५०॥

नैमित्तिकं क्षयं देवपिपितृवञ्जितम् ।

न्यम्भः समानित्युः सर्वाण्यम्भासि भूतले ॥५१॥

पाण्डपि सोमार्कप्रक्षेपे नात्र संशयः ।

त्रियः भोत्रियो वा अपात्रं पात्रमेव वा ॥५२॥



विप्रत्रुघो वा विप्रो वा ग्रहणे दानमर्हति ।  
 सर्वं भूमिसमं दानं सर्वो ब्रह्मसमो द्विजः ॥१३॥  
 सर्वं गङ्गासमं तोयं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।  
 प्रातराचमनं कृत्वा शौचं कृत्वा यथाविधि ॥१४॥  
 दन्तशौचं ततः कृत्वा प्रातः स्नानं ममाचरेत् ।  
 द्वौ हस्तौ युग्मतः कृत्वा पूर्येदुदकाञ्जलिम् ॥१५॥  
 गोशृङ्गमात्रमुद्घृत्य जलमध्ये जलं क्षिपेत् ।  
 येन तीर्थेन गृहीयात् तेन दद्याज्जलाञ्जलिम् ॥१६॥  
 अन्यतीर्थेन गृहीयात्तोयं रुधिरं भवेत् ।  
 पूर्वाशाभिमुखो देवानुत्तराभिमुखस्त्वृषोन् ॥१७॥  
 पितृस्तु दक्षिणास्यस्तु जलमध्ये तु तर्पयेत् ।  
 स्नानायमभिगच्छन्तं देवाः पितृगणैः सह ॥१८॥  
 वायुभूतास्तु गच्छन्ति तृपाताः सलिलार्थिनः ।  
 तस्मान्न पीडयेद्वस्त्रमकृत्वा पितृतर्पणम् ॥१९॥  
 निराशास्ते निवर्तन्ते वस्त्रनिष्पीडने कृते ।  
 तस्मान्न पीडयेद्वस्त्रं ये के च इति मन्त्रतः ॥२०॥  
 वस्त्रं चतुर्गुणीकृत्य निष्पीड्य च जलाद्बुद्धिः ।  
 वामप्रकोष्ठे निक्षिप्य द्विराचम्य शुचिर्भवेत् ॥२१॥  
 मनुष्यतर्पणे चैव स्नानयमनिपीडने ।  
 निवीनी तु भवेद्विप्रस्तथा मूत्रपुरीषयोः ॥२२॥  
 नदीषु देयस्यातेषु गिरिप्रमथनेषु च ।

शयनिपानेषु न स्नायाद्धै कदाचन ।  
 नकर्तुः स्नात्वा तु दुष्कृतांशेन लिप्यते ॥६४॥  
 आयोपात्तवित्तस्य पतितस्य च वार्धुषेः ।  
 ज्ञात्वा च पीत्वा च प्राज्ञापत्यं समाचरेत् ॥६५॥  
 यज्ञैः खातिताः कृपाः तटाका वाप्य एव च ।  
 ज्ञात्वा च पीत्वा च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥६६॥  
 शयनिपानेषु यदि स्नायात्कर्यंचन ।  
 वेण्डान् समुद्धृत्य तत्र स्नानं समाचरेत् ॥६७॥  
 श्वेदसमाकीर्णः शयनादुत्थितः पुमान् ।  
 च तं विजानीयादनर्हः सर्वकर्मसु ॥६८॥  
 भूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च ।  
 आचारविहीनस्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः ॥६९॥  
 पु(पस्यु)पसि यत्स्नानं सन्ध्यायामुदितेऽपि वा ।  
 पत्येन तत्तुल्यं महापातकनाराणम् ॥७०॥  
 वस्त्रेण यः कुर्याद्देहस्य परिमार्जनम् ।  
 लीढं भवेद्गार्त्रं पुनः स्नानेन शुष्यति ॥७१॥  
 काले भानुवारे यो नरः स्नानमाचरेत् ।  
 स्नानसहस्राणि गङ्गायमुनसङ्गमे ॥७२॥  
 र्शे वैधृतौ पुष्ये व्यतीपाते च संक्रमे ।  
 यां च नदीस्नानं कुलकोटि समुदरेत् ॥७३॥  
 यमपि कुर्याणो भुञ्जानोऽपि यत्स्ततः ।  
 चिन्तारकं दुःखं प्रातः स्नायी न पश्यति ॥७४॥

विना स्नानेन यो भुङ्क्ते स मन्त्राणां न मन्त्राणः ।  
 अस्नानागो मन्त्रं भुङ्क्ते स त्रयः पूषरोऽनितम् ॥२४॥  
 भद्रनागो वृषि भुङ्क्ते सदाशा विपनगुणे ।  
 मंहस्यमूलपठनं मार्जनं वापमर्गम् ॥२५॥  
 देवनिर्वाणं शैव स्नानं पञ्चाङ्गनिष्पन्ने ।  
 त्रिषकृद्भूमित्युक्त्वा जलं समथगाद्येन ॥२६॥  
 मुमिषा इत्युदाहृत्य स्यान्मानमभिवेषयेत् ।  
 दुमिषा इत्युदाहृत्य गृन्थाने जलमुभृजेत् ॥२७॥  
 योऽस्मान् द्वेष्टीत्युदाहृत्य तथा तत्र जलं क्षिपेत् ।  
 यं च वयं द्विष्य इति पुनस्तत्र जलं क्षिपेत् ॥२८॥  
 एवं त्रिर्मृत्तिकास्नाने जलमञ्जलिनोत्सृजेत् ।  
 नमोऽप्रयेति मन्त्रेण नमस्कृत्यान् जलं ततः ॥२९॥  
 यदपामित्यमेध्यांशं निरस्येदक्षिणे जलम् ।  
 अत्याशनादितिढाभ्यां त्रिरालोह्य तु पाणिना ॥३०॥  
 चतुर्थं तीर्थपीठं पाणिनोऽह्वय्य वारिषु ।  
 नन्दिनीत्यादिनामानि बद्धाञ्जलिपुटो भवेत् ॥३१॥  
 आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।  
 गृहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥३२॥  
 इमं मेगङ्ग इत्युक्त्वा पुण्यतीर्थानि च स्मरेत् ।  
 आपो अस्मानीतिऋचामुक्त्वा मञ्जनमाचरेत् ॥३३॥  
 आपोहिष्ठादिभिर्मन्त्रैरभिप्रोक्ष्य च वारिभिः ।  
 ततो नारायणं स्मृत्वा प्रजपेद्दधमर्पणम् ॥३४॥

पणसूक्तस्य ऋषिरेवाधर्मपणः ।  
 अनुष्टुप् तथा देवो भाववृत्तोऽधिदेवता ॥८६॥  
 मष्टधारं वा निमज्ज्यात्तज्जले जपेत् ।  
 तस्य मन्त्रेण पुनः प्रोक्षणमाचरेत् ॥८७॥  
 ज्वलति मन्त्रेण प्राशयेन्मन्त्रिनं जलम् ।  
 र्कार्यमन्त्रं तु पुनः मज्जन् जले जपेत् ॥८८॥  
 गोरिति मन्त्रेण मज्जेदप्सु पुनः पुनः ।  
 तौ वैष्णवी ह्येषा विष्णोः संस्मरणाय वै ॥८९॥  
 ह्याप्रतिग्राह्यं भुक्त्वा चाभक्ष्यभक्षणम् ।  
 गोरित्यपां मध्ये सकृज्जप्त्वा विशुध्यति ॥९०॥  
 च द्विराचम्य देवादींस्तर्पयेत्ततः ।  
 बहन्तीरिति च तृप्यतेतिस्थले क्षिपेत् ॥९१॥  
 वस्त्रेणहस्तेन यो द्विजोऽङ्गं प्रमार्जति ।  
 भवति तन्स्नानं पुनः स्नानेन शुष्यति ॥९२॥  
 मृदुस्त्रशेषेण नोत्तरीयेण वा शिरः ।  
 निर्धुनुयात्केशान्न न तिष्ठन् परिमार्जयेत् ॥९३॥  
 कृत्यार्द्रवस्त्रं तु ऊर्ध्वमुदात्ताः रयेद्द्विजः ।  
 वस्त्रमधस्ताच्चेत्पुनः स्नानेन शुष्यति ॥९४॥  
 सन्ध्यामुपासीत वस्त्रसंशोधपूर्विकाम् ।  
 य मध्यमां सन्ध्यां वस्त्रनिष्पीडनं परम् ॥९५॥  
 मूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च ।  
 त्सर्वप्रयत्नेन स्नानं कुर्यादतन्द्रितः ॥९६॥

प्रातरुत्थाय यो विप्रः प्रातःस्नायी सदा भवेत् ।  
 सर्वपापविनिर्मुक्तः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥६८॥  
 अन्तराच्छ्राय कौपीनं वाससी परिधाय च ।  
 उत्तरीयं समादद्यात् तद्विना नाचरेत्त्रिधाः ॥  
 यज्ञोपवीतवद्धार्यमुत्तरीयं सदा द्विजैः ।  
 वन्दने तर्पणे चैव कट्यामेव च धारयेत् ॥६९॥  
 मुखजानामूर्ध्वपुण्ड्रं तिलकं बाहुजन्मनाम् ।  
 पदाकारमूरुजानां त्रिपुण्ड्रं पादजन्मनाम् ॥१०८॥  
 धृतोर्ध्वपुण्ड्रः परमीशितारं  
 विष्णुं परं प्यायति महात्मा ।  
 स्वरेण मन्त्रेण सदा हृदिस्थितं  
 परात्परं यन्महतो महान्तम् ॥१०९॥  
 महोपनिषदि प्रोक्तमूर्ध्वपुण्ड्रं परं शुभम् ।  
 धृतोर्ध्वपुण्ड्रः कृतचक्रगरी  
 नारायणं सांख्ययोगाधिगम्यम् ।  
 ज्ञात्वा विमुच्येत नरः समस्तैः  
 मंगारपाशीरिद् ध्येति विष्णुम् ॥१०९॥  
 अधर्वशिरमि प्रोक्तमूर्ध्वपुण्ड्रविधिं द्विजा ।  
 प्रवक्ष्यामि हिनार्थं यो भयपापघ्नानाम् ॥१०३॥  
 द्यौः पादावृत्तिं रथ्यमात्मनःप्रद्विताय वै ।  
 मध्येदिन्दन्मूर्ध्वपुण्ड्रं यो धारयति सर्वदा ॥१०५॥

स परस्य प्रियोनित्यं पुण्यभाक् मुक्तिभागभवेत् ।  
 चतुरङ्गुलमूर्ध्वाग्रं द्वयङ्गुलं धित्तं मृदा ॥१०५॥  
 द्विजः पुण्ड्रमृजुं सौम्यं सान्तरालं तु धारयेत् ।  
 ऊर्ध्वगत्यां तु यस्येच्छा तस्योर्ध्वं पुण्ड्रमुच्यते ॥१०६॥  
 ऊर्ध्वगत्यां तु देवत्वं स प्राप्नोति न संशयः ।  
 पर्वताग्रे नदीतीरे विष्णुक्षेत्रे विशेषतः ॥१०७॥  
 सिन्धुतीरेऽथ वल्मीके तुलसीमूलमाश्रिते ।  
 मृद एतास्तु संप्राह्या वर्ज्याभ्यान्याश्च मृत्तिकाः ॥१०८॥  
 श्यामं शान्तिकरं प्रोक्तं रक्तं वश्यकरं भवेत् ।  
 शीकरं पीतमित्याहुर्मोक्षदं श्वेतमुच्यते ॥१०९॥  
 अद्भुष्टः पुष्टिदः प्रोक्तो मध्यमा पुष्करी भवेत् ।  
 अनामिकासदा नित्यं तर्जनी मुक्तिभुक्तिदा ॥११०॥  
 अभिविक्तं तु दक्ष्णं विष्णुविम्बे तु यो नरः ।  
 हारिद्रं धारयेन्नित्यं सोऽश्वमेधफलं लभेत् ॥१११॥  
 अनागतां तु ये पूर्वा अनतीतां तु पश्चिमाम् ।  
 सन्ध्यां नोपासते विप्राः कथं ते माह्वणाः स्मृताः ॥११२॥  
 यावन्तोऽस्यां पृथिव्यां तु विकर्मस्था द्विजातयः ।  
 तेषां हि पापनाशाय सन्ध्यां मृष्टा स्वयंभुवा ॥११३॥  
 गायत्री नाम पूर्वाह्ने सावित्री मध्यमे दिने ।  
 सरस्वती च सायह्ने सैव सन्ध्या त्रिधा स्मृता ॥११४॥  
 प्रतिपदादश्विनीपात्पातकादुपपातकान् ।  
 गायत्री प्रोच्यते यस्मान् गायन्तं प्रायते यतः ॥११५॥

मरिचुपांननात्परं सावित्री पश्चिदिनिता ।  
 जगत् समवित्री च सा वाचक्यान्वात्म्यनि ॥१११॥  
 भागोदित्येत्थं च कुर्यान्मार्जनं तु कृशोदितः ।  
 प्रतिप्रजपसंगुणं शिपेद्वापि वदे वदे ॥११२॥  
 विप्रोपौ शिपेद्भ्रमभां गम्य क्षयाय च ।  
 संवत्सरगृहं पारं मार्जनान्ते विनश्यति ॥११३॥  
 रजसमो मोहजानान जापन्वप्रमुनिजान् ।  
 याद्मनःकायजान दोषान्नरेतान नयभिर्देहेन ॥११४॥  
 नयप्रणययुक्तेन वापो दित्येत्थं च ।  
 संवत्सरगृहं पारं मार्जनान्ते विनश्यति ॥११५॥  
 श्रुगन्ते मार्जनं कुर्यान् पादान्ते या ममाहितः ।  
 कृचाम्यान्तेऽथवा कुर्याच्छिष्टानां मतमोदराम् ॥११६॥  
 पश्चादुभाभ्यां हस्ताभ्यां परिषिच्य यथाक्रमम् ।  
 सूर्यश्चेति जलं पीत्वा दधिक्रावेति मार्जयेन् ॥११७॥  
 पश्चादुभाभ्यां हस्ताभ्यां ह्यादायापः समाहितः ।  
 रवेरभिमुख्यस्तिष्ठन् तारव्याहृति पूर्वया ॥११८॥  
 गायत्र्या चाभिमन्त्र्याथ निक्षिपेद्द्विजसत्तमः ।  
 तिष्ठन् पादौ समोश्रुत्वा जलेनाञ्जलिपूरणम् ॥११९॥  
 गोशृङ्गमात्रमुत्सृज्य जलमध्ये जलं क्षिपेत् ।  
 सायं काले तु यो विप्रो जलेत्स्वयं विनिक्षिपेत् ॥१२०॥  
 स मूढो नरकं याति यावदाभूतसंश्लेषम् ।  
 यत्र सन्ध्यां प्रकुर्यात् तत्रैव जपमाचरेत् ॥१२१॥

अन्यत्र तु जपं कुर्वन् पुनः सन्ध्यां समाचरेत् ।  
 वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे ॥१२७॥  
 स्नातकत्रतलोपे च दिनमेकमभोजनम् ।  
 अर्घ्यप्रदानतः पूर्वमुदयास्तमये सति ॥१२८॥  
 गायत्र्यष्टशतं जप्यं प्रायश्चित्तं द्विजातिभिः ।  
 तत्र प्रातरतिक्रामेदुपवासोऽहरुच्यते ॥१२९॥  
 तथा सायमतिक्रामेद्रात्रिंशोपयसेद्द्विजः ।  
 यदद्यकच्चं शृत्रहनं प्रातरर्घ्यमनुस्मृतः ॥१३०॥  
 उच्छेदभीतिमभ्याह्वे प्रायश्चित्तार्घ्यं उच्यते ।  
 न तस्येति च सायाह्वे ततोऽस्त्रमुपसंहरेत् ॥१३१॥  
 सूतके मृतके वापि सन्ध्याकर्म न संत्यजेत् ।  
 मनसोश्चारयेन्मन्त्रान् प्राणायाममृते द्विजः ॥१३२॥  
 प्रणवेन तु संयुक्ता व्याहृतीः सप्त नित्यशः ।  
 साषित्री शिरसा सार्धं मनसा त्रिःपटेद्द्विजः ॥१३३॥  
 देवार्चने जपे होमे स्वाध्याये श्राद्धकर्मणि ।  
 ग्नाते दाने तथा ध्याने प्राणायामास्त्रयस्त्रयः ॥१३४॥  
 आदावन्ते च गायत्र्या प्राणायामास्त्रयस्त्रयः ।  
 सन्ध्यायामर्घ्यदाने च प्राणायामाः सकृत्सकृत् ॥१३५॥  
 अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां तु तथैव च कनिष्ठयोः ।  
 प्राणायामस्तु कर्तव्यः मध्यमां तर्जनीं विना ॥१३६॥  
 तर्जनीं मध्यमांश्चूड्या जपन् शूद्रसमो भवेत् ।  
 शूद्रोत्तानो करौ प्रातः सायंवाधोमुखौ करौ ॥१३७॥



मध्येत्कन्धमुजाभ्यां तु जप एवमुदाहृतः ।  
 अघोदस्तं तु पैशाचं मध्यहस्तं तु राक्षसम् ॥१३८॥  
 बद्धहस्तं तु गान्धर्वमूर्ध्वहस्तं तु दैवतम् ।  
 प्रदक्षिणे प्रणामे च पूजायां हवने जपे ॥१३९॥  
 न कृष्णवृत्तवस्त्रः स्यादर्शने गुरुदेवयोः ।  
 दर्भहीना च या सन्ध्या यच्च दानं विनोदकम् ॥१४०॥  
 असंख्यातं च यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।  
 जपस्य गणनां प्राहुः पद्माक्षैः भक्तिर्घनम् ॥१४१॥  
 जपेत्तु तुलसीकाष्ठैः फलमक्षयमश्नुते ।  
 अच्छिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति ॥१४२॥  
 द्विजपादा तु गायत्री ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।  
 गृहस्थो ब्रह्मचारी च शतमष्टोत्तरं जपेत् ॥१४३॥  
 वानप्रस्थो यतिश्चैव जपेद्दृष्टसहस्रकम् ।  
 प्रस्थधान्यं चतुःपटेराहुतेः परिकीर्तितम् ॥१४४॥  
 तिलानां तु तदर्धं स्यात्तदर्धं स्याद्वृत्तस्य (?) च ।  
 आत्मारूढाप्सु मज्जेद्वा वदेद्वा पतितादिभिः ॥१४५॥  
 अथवा योपिनं गच्छेदनृतौ काममोहितः ।  
 यदन्त्येषु निमित्तेषु केचिदग्निविनाशनम् ॥१४६॥  
 आपन्तम्यस्य तन्नेष्टमात्मारूढः सदा शुचिः ।  
 यस्य भार्या विदूरस्या पतिता या रजस्वला ॥१४७॥  
 अनिष्टा प्रतिबुद्धा वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया ।  
 अन्ये कुशमयीं पत्नीं कृत्या तु प्रतिरूपिकाम् ॥१४८॥

केचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत् ।  
 होमार्थं गोघृतं ब्राह्मं तदलाभे तु माहिषम् ॥१४६॥  
 आजं वा तदलाभे तु साक्षात्तैलं ग्रहिष्यते ।  
 यः शूद्रादधिगम्यार्थमग्निहोत्रं करोति चेत् ॥१५०॥  
 दाता सत्फलमाप्नोति कर्ता तु नरकं व्रजेत् ।  
 ऋत्विजस्ते हि शूद्राः स्युः ब्रह्मवादिषु गर्हिताः ॥१५१॥  
 मेरुमन्दरतुल्यानि वाजपेयशतानि च ।  
 कन्याकोटिप्रदानं च समं सामयिकाहुतेः ॥१५२॥  
 कृतदारो न वै तिष्ठेत् क्षणमप्यग्निना विना ।  
 तिष्ठेत् चेद्द्विजो ब्राह्मं त्यक्त्वा तु पतितो भवेत् ॥१५३॥  
 समिदात्मसमारूढो द्विकालमहुतस्तथा ।  
 धारणाग्निश्चतुर्वारं स बह्निर्लौकिको भवेत् ॥१५४॥  
 आरोपितान्नेः समिधस्तु नाशे  
 सीमादिर्लभे च पराग्निवेश ।  
 अयाश्च मन्त्रेण चतुर्गृहीत्वा  
 तेनैव मन्त्रेण सकृञ्जुहोति ॥१५५॥  
 ब्रह्मयज्ञे जपेत्सूक्तं पौरुषं चिन्तयन् हरिम् ।  
 स सर्वान् जपते वेदान् सांगोपांगविधानतः ॥१५६॥  
 वेदाक्षराणि यावन्ति नियुञ्ज्यादर्थकारणात् ।  
 तावतीं ब्रह्महत्यां वै वेदविकल्प्यवाप्नुवान् ॥१५७॥  
 प्रस्थापनं प्राध्ययनं प्रभपूर्वं प्रतिग्रहः ।  
 याजनाभ्यापने वादः पद्विधो वेदविक्रयः ॥१५८॥

आश्वारे च शीक्रे च मन्धादिषु गुणादिषु ।  
 नादरेषु लसोपश्रं मण्वाद्वात्परममनः ॥१२६॥  
 मंकात्पया पशयोन्ते द्वादश्या निरिगन्धयोः ।  
 गुल्मी ये विचिन्त्यन्ति ते कृन्त्यन्ति हरेः शिरः ॥१२६॥  
 तोर्षे पापं न गुर्वीत न गुत्यांश्च प्रतिमदम् ।  
 दुर्मरं पातकं तोर्षे दुर्मरश्च प्रतिमदः ॥१२६॥  
 ऋतामृताभ्यां जीवेन मृतेन प्रमृतेन वा ।  
 सत्यामृताभ्यामपि वा न श्यपृत्या कथंचन ॥१२६॥  
 यो रामः प्रतिगृह्यैव शोचित्तये प्रहृष्यति ।  
 न जानाति किलात्मानं विष्टाकूपे निपातितम् ॥१२६॥  
 तृणं वा यदि वा काष्ठं मूलं वा यदि वा फलम् ।  
 अनामृद्बैव गृहीयाद्दस्तद्धेदनमर्हति ॥१२६॥  
 वानस्पत्यं मूलफलं दारुगन्धयं तृणानि च ।  
 तृणं च गोभ्यो प्रासार्यमस्तेयं मनुरब्रवीत् ॥१२६॥  
 भ्रूणहत्यां प्रसिद्धिं ( वार्षुपि ) च तुलायां समतोलयन्  
 प्रतिष्ठद्भ्रूणहा कोट्यां वार्षुपिः समकम्पत ॥१२६॥  
 अयाचिताहृतं प्राह्यमपि दुष्कृतकर्मणः ।  
 अन्यत्र कुलदा (पा) (टा) पण्डपतितेभ्यः (सु) तथा द्विजः  
 महापातकिनश्चोरादम्बुष्टान्निपञ्चस्तथा ।  
 मृगयोः (टा) पिशुनाञ्चैव नादद्यादाहृतं द्विजः ॥१२६॥  
 कुलदा(पा) पण्डपतितवैरिभ्यः काकिणीमपि ।  
 उच्यतामपि गृहीयादापद्यपि कदाचन ॥१२६॥

परार्थं तिलहोतारं परार्थं मन्त्रत्रापिनम् ।  
 मातापित्रोरपोष्टारं दृष्ट्वा चक्षुर्निमीलयेत् ॥१६६॥  
 बुधबुटश्चानमाजोरान पोषयन्ति दिनत्रयम् ।  
 इह जन्मानि शूद्रत्वं मृतः श्वा चाभिजायते ॥१७०॥  
 परद्विसारताः क्रूराः परदारपरायणाः ।  
 परद्रव्यापहारी च चण्डाला यन्मु निर्दयः ॥१७१॥  
 नगरे पट्टेण वापि द्वादशाब्दं तु यो वसेत् ।  
 स जीवन्नेव शूद्रत्वमाप्नु गच्छति सान्वयः ॥१७२॥  
 राजाभयेण यो मर्यो द्वादशाब्दं वसेत्तदि ।  
 जीवमानो भवेच्छूद्रः नात्र कार्या विचारणा ॥१७३॥  
 अतृणात्ससमुत्कर्षो राजगामि च पैशुनम् ।  
 गुरोर्भालीकनिषन्धः समानि ब्रह्मद्वयया ॥१७४॥  
 यमिन् देशे यदा काले यन्मुहूर्ते च यदिने ।  
 दानिर्द्विर्दशो लाभः सप्तया न तदन्यथा ॥१७५॥  
 अशास्त्रा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं चदन्ति ये ।  
 सत्पापं शतधा भूत्वा तद्व्यग्रमधिगच्छन्ति ॥१७६॥  
 चत्वारो वा त्रयो वापि यद्ब्रह्मसुर्वेदपारगाः ।  
 न धर्म इति विज्ञेयो नेतरन्मु मह्यराः ॥१७७॥  
 ये पठन्ति द्विजा देदं पञ्चपञ्चरात्राद्य ये ।  
 श्रौतौष्यं तारयन्त्येते पञ्चैन्द्रियरहा अपि ॥१७८॥  
 यथा चाष्टमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।  
 ब्राह्मणधानर्थावानस्रवन्ते नामधारकाः ॥१७९॥

संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् ।  
 याजनाध्यापनादीनां न तु शय्यासनाशनात् ॥१८०॥  
 मर्वे ब्रह्म वदिष्यन्ति संप्राप्ते तु कलौ युगे ।  
 नानुतिष्ठन्ति वेदोक्तं पापण्डोपहृता जनाः ॥१८१॥  
 षष्ठ्यष्टमोहरिदिनं द्वादशी च चतुर्दशी ।  
 पर्वद्वयं च संक्रान्तिः श्राद्धाहो जन्मतारका ॥१८२॥  
 श्रवणव्रतकालश्च विशेषदिवसास्तथा ।  
 एते काला निषिद्धाःस्युः भद्रे मैथुन कर्मणि ॥१८३॥  
 षष्ठे संभाष्य पतति त्रेतायां दर्शनेन तु ।  
 द्वापरे त्वन्नमादाय कलौ पतति कर्मणा ॥१८४॥  
 चतुर्दश्यष्टमौ चैव ह्यमावास्या तु पूर्णिमा ।  
 मर्षाण्डेतानि विप्रेन्द्राः रविसंक्रान्तिरेव च ॥१८५॥  
 अर्थायी यानि कर्माणि करोति कृपणो जनः ।  
 तान्येव यदि धर्मायं कुर्वन् को दुःखभाग्भवेत् ॥१८६॥  
 सैत्यवृश्चितायूप(धूम) च(षा)ण्डालं वेदविक्रयम् ।  
 अतानाम्मुराते यन्मु सचैलो जलमाविशेत् ॥१८७॥  
 इक्षुतपः पलं मूत्रं ताम्बूत्रं पयभीक्ष्णम् ।  
 विहविश्वापि कर्तव्या श्रानदानादिका क्रिया ॥१८८॥  
 भूतिम्पती ममेवाशा यन्तामुद्दह्य वर्जये ।  
 आशाण्डेदी ममदोष्टी मद्रष्टोऽपि न वैष्णवः ॥१८९॥  
 विष्णुना तु पुरा गीतमेवं तन्म मयेरितम् ।  
 भूतिम्पती तु विप्रणां पशुषी द्वे विनिर्मिते ॥१९०॥

त्रैकया हीनो द्वाभ्यामन्धः प्रकीर्तितः ।

नमश्चाणां हुनाघ्रातमरोचकम् ॥१६१॥

तदेहानां धर्मशास्त्रमरोचकम् ।

ऋणाद्गीतः म(ग्मा)न्मानान्मरणादिव ॥१६२॥

य च स्त्रीभ्यः सं देषा ब्राह्मणं विदुः ।

न्तं जितक्रोधं जितात्मानं जितेन्द्रियम् ॥१६३॥

ब्राह्मणं मन्ये शेषाः शूद्राः प्रकीर्तिताः ।

य देहोऽयं नोपभीगाय कल्पते ॥१६४॥

शाय महते द्रेत्यान्तसुग्राय च ।

।दकं दद्याच्छुष्कधामा जलाद्बुद्धिः ॥१६५॥

यदि तदा निराशाः पितरो गताः ।

पटे पत्रं रोमस्थानेषु कुप्रचिन ॥१६६॥

कृमितुल्याःस्युस्तप्तोयं रुधिरं भवेत् ।

मूढे तु तिलात्रिक्षिप्य तर्पयेत् ।

।स्तुल्यास्त्युगतप्तोयं सागरोपमम् ॥१६७॥

रम्यत्र तिलैर्विमिश्रं

दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्यः ।

कृतं तेन समा सादर्यं

।दायमेतत्पितरो बहन्ति ॥१६८॥

सपिण्डे च प्रनिरांबन्तरे समा ।

तच्छ्राद्धं वामुदेवं विना कृतम् ॥१६९॥

जपन्तः मातृकर्म स्नाप्यायादिभ्येषु च ।  
 व्यर्थं भवति तत्सर्वगूर्णं पुण्ड्रं विना कृतम् ॥२०२॥  
 श्राद्धं कृत्वा परदिने न द्विजान् भोजयेद्यदि ।  
 तच्छ्राद्धमासुरं लोके प्रवदन्ति विपद्भिः ॥२०३॥  
 श्राद्धं कृत्वा परदिने ब्राह्मणान् भोजयेद्यदि ।  
 देवाश्च पितरन्तुष्टाः कर्तुः कुर्यान्ति संपदः ॥२०४॥  
 श्राद्धे पाकमुपक्रम्य नान्दीश्राद्धं विवाहके ।  
 प्रथमं परति संकल्पे सूतकं तु न दोषहृत् ॥२०५॥  
 श्राद्धे तु विकिरं दत्त्वा नाचामेन्मतिविध्रमान् ।  
 पितरस्तस्य पण्मासं चण्डालोच्छिष्टभोजनाः ॥२०६॥  
 सहोदराणां पुत्राणां पितुरेकदिने तथा ।  
 श्राद्धे निमन्त्रणं बज्र्यं क्षरकर्म तथैव च ॥२०७॥  
 विधुरं च यति चैव सगोत्रं ब्रह्मचारिणम् ।  
 देवार्थं वरयेद्द्विद्वान् न पित्रर्थे कदाचन ॥२०८॥  
 वासांसि वाससी वासो यो ददाति पितुर्दिने ।  
 तन्तु संख्यातवर्षेण देवलोके महीयते ॥२०९॥  
 अभिभ्रवणहीनं तु यः श्राद्धं कुरुते नरः ।  
 तदन्नं मांससदृशं तद्रसं सुरया समम् ॥२१०॥  
 चक्षुष्यायाः पतिं तावत्सूतिकायाः पतिं तथा ।  
 भाण्डस्पर्शनपर्यन्तं पैतृके ब्रजयेत्सृष्टोः ॥२११॥  
 विमला भ्रातरः सर्वे स्वस्वार्जितधनाः शनैः ।  
 दशांश्चिह्नं तथा पित्रोः श्राद्धं कुर्यात्सृष्टकं पृथक् ॥२१२॥

संन्यासी बहुभक्षश्च वैद्यो वैशानसस्तथा ।  
 गर्भवान्वेदहीनश्च दानं श्राद्धं च घर्जयेत् ॥२११॥  
 स्नाने दाने जपे होमे स्वाध्याये पितृकर्मणि ।  
 देवताराधने चैव त्याज्यदोषो न विद्यते ॥२१२॥  
 प्रत्यादिदके शनं जप्यं मासिके स्यात् द्विपट्टशतम् ।  
 सपिण्डे त्रिसहस्रं स्याच्छ्राद्धं त्रिरासहस्रकम् ॥२१३॥  
 मासिके पशुमेकं स्यादादिदके च तदर्धकम् ।  
 एकोद्दिष्टे घत्सरं स्यात् पाण्मासं तु सपिण्डने ॥२१४॥  
 महालये त्रिरात्रं स्यात् श्राद्धे त्याकालिष्ठं भवेत् ।  
 श्राद्धाभ्रं तिलहोमं च दूरयात्रां प्रतिपदम् ॥२१५॥  
 सिन्धुस्नानं गयाश्राद्धं वपनं शयधारणम् ।  
 पर्वतारोहणं चैव गर्भकर्ता तु व्रजयेत् ॥२१६॥  
 गर्भकर्ता तु यो विप्रो पण्नासाभ्यन्तरे यदि ।  
 श्राद्धाभ्रासीति शुर्वाणी क्षिप्रमेव विनश्यति ॥२१७॥  
 मध्यंदिने दृढाङ्गो यः स्नानं त्यक्त्वा र्थयेदृषिम् ।  
 वैश्वदेवं च यः श्रुयात् स गुल्मठ्ठाधिपीडितः ॥२१८॥  
 पितरन्तत्र मोदन्ते गीयन्ते(१) च पितामहाः ।  
 अपितामहाश्च नृत्यन्ते भोत्रिये गृहमागते ॥२१९॥  
 देशान्तरे दुरमानां प्रायश्चित्तद्वयं स्मृतम् ।  
 समुद्रगान्हीनानां शिष्टागारेषु भोजनम् ॥२२०॥  
 अनाचारस्य विप्रस्य पतितान्नं घतेत्यथा ।  
 शूद्रान्नं विप्रवान्नं च स्वर्गात्तमहर्षा भवेत् ॥२२१॥



यो मोहादथवाऽऽलम्यागृन्वा(भी)धियात्वाचनम् ।  
 शुद्धे म याति नरपुं श्यामयोनिषु जायते । रत्न  
 अनृतं मयागन्तं च दिव्यान्तर्षं च मैयुनम् ।  
 पुनाति कृपलम्यान्नं मायं सन्ध्या बहिर्गटे(बहिर्गट)  
 स्नानं मन्ध्या जपं होमं म्याध्यायं पितृतरंगम् ।  
 देवताराधनं धैय वैश्वदेवं यथाविधि ।  
 न कुर्याद्यदि मोहेन म चण्डालो न संशयः । रत्न

॥ इति वाधूत्यमृतिः समाप्ता ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

# \* विश्वामित्रस्मृतिः \*

## अथ प्रथमोऽध्याय

नित्यनैमित्तिककर्मणोऽर्णनम्

सदस्यदष्टपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभे ।

पराभयकराम्बुजं विमलसन्धपुष्पाश्वरम् ॥

प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं ।

स्मरेन्निरसिपावनं सद्विधानपूर्वं शुभम् ॥ १ ॥

आद्विक्रम

पशुः पञ्चपटीमानं शुद्धं सद्यसंज्ञितम् ।

पञ्चपञ्चपटी ज्ञेया उपकाल इतीष्यते ॥ २ ॥

शुशुषाणपटीमानमग्गोद्वयसंज्ञितम् ।

वपः पञ्चपटीमानं प्रातःकाल इति स्मृतः ॥ ३ ॥

एवं ज्ञात्वा प्रभाते तु नित्यकर्म समापरेत् ।

नित्यनैमित्तिके काम्ये कृते काले तु सत्यजम् ॥ ४ ॥

ब्राह्मे शुद्धं कथाय कृत्वा शीघ्रं समाहितः ।

स्नानं बुधोदुपकाले आत्म्यापमरजोदये ॥ ५ ॥

प्रातःकाल उप बुधोन्नित्यनैमित्तिकं विदुः ।

रश्मिसन्धे समालोचय करम्भानं समापरेत् ॥ ६ ॥

॥ मन्थ्यायां मुच्यन्कालातिक्रमे दोषः ॥  
 कालातीतं न कर्तव्यं कर्तव्यं कालमंगुलम् ।  
 सप्तात्मवंप्रयत्नेन काले कर्म समाचरेत् ॥ १७ ॥  
 उक्तकाले तु यत्कर्म प्रमादादकृतं यदि ॥ १८ ॥  
 त्रिसहस्रजपं कुर्यात्प्रायश्चित्तं विधायते ।  
 तथा प्रोक्तं प्राणायामद्वयत्रिष्टम् ॥ १९ ॥  
 अथवा जपमात्रेण कालातिक्रमे दोषमाह ।  
 त्रिसहस्रं सहस्रं वा त्रिरातं शतमेव वा ॥ २० ॥  
 अनुलोमविलोमाभ्यां जप्त्वाद्पाप क्षयो भवेत् ।  
 उक्तकाले व्यतीते तु उपाधिश्च प्रमाणकम् ॥ २१ ॥  
 अनुलोमविलोमाभ्यां सहस्रजपमाचरेत् ।  
 देहस्वस्थयता(स्त्यवता)येन स्वस्थचित्तयताऽपि च ॥ २२ ॥  
 कालोऽतिक्रम्यते नित्यं तस्य पापो न गण्यते ।  
 स सर्वमार्गविभ्रष्टस्तिर्यक्त्वं समवाप्नुयात् ॥ २३ ॥  
 तस्य दर्शनमात्रेण सचैलः स्नानमाचरेत् ।  
 असम्बद्धप्रलापेन दुःसङ्गेनापि निद्रया ॥ २४ ॥  
 अतिक्रामन्ति ये कालं ते नरा ब्रह्मघातिनः ।  
 नित्यकर्माखिलं यस्तु उक्तकाले समाचरेत् ॥ २५ ॥  
 जित्वा स सकलांलोकान् अन्ते विष्णुपुरं व्रजेत् ।  
 प्रत्यहं प्रातरुत्थाय स्नानं सन्ध्यां समाप्य(विधाय) च ॥ २६ ॥  
 यथाराक्ति जपेद्विद्वान् स मुक्तो नात्र संशयः ।  
 यामे चान्त्ये च सर्वयां नाहीनां पञ्चकं द्विजः ॥ २७ ॥

प्रातःकाल इति ज्ञात्वा नित्यकर्म समाचरेत् ।

कर्मकालो दिनान्ते तु पादंन्यूनपटीप्रथम् ॥१८॥

विष्वं दृष्ट्वा त्यजेद्व्यं जपेदातारकोदये ।

पण्यतेषु समाप्तेषु तत्तन्मन्त्रानुसारतः ॥१९॥

नित्यकर्माणि यः कुर्यात्कर्मसिद्धिं लभेन्नरः (त सः) ।

अनुक्तकाले कृतकर्म निष्फलं

अकालवृष्टिः पतिता यथा भुवि ॥

अ्यानि धीजानि विनिष्फलानि वा-

करोत्यकालः कृतकर्मनिष्फलः ॥२०॥

नियुक्तकर्माणि नियुक्तकाले

कृतानि सद्यमुत्पत्तिद्विदानि ।

यद्योषधीजानि यथा फलानि

काले द्वि वृष्टिर्गुं वि जीयनानि ॥२१॥

सन्ध्याश्रितयलक्षणम्

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा हुनतारका ।

अधमा सूर्यसहिता प्रातमसन्ध्या श्रिधा मता ॥२२॥

उत्तमा पूर्वमूर्धा च मध्यमा मध्यसूर्यका ।

अधमा परिषमादित्या मध्यमन्ध्या श्रिधा मता ॥२३॥

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा हुनध्याकरा ।

अधमा तारकोपेता सायंसन्ध्या श्रिधा मता ॥२४॥

गुणिसीप्पगुणिसीपि निर्व्वं कर्म न मन्त्रयेत् ।

क्यापि क्षातनिषमाद्व्यंदानं विरिष्यते ॥२५॥

मन्त्रपात्रे तूर्तगुणो द्विजन्मा . . .

त्रिषुशुटाचमनं प्रकुर्यात् ।

उद्गुणोवापि समाचरेन्न . . .

तदक्षिणापरिषमयोः कदापि ॥२६॥

सन्ध्यास्नानं परित्यज्य विद्याभ्यासं करोति यः ।

सद्यः विद्याविनाशः स्यादधर्मो भवति ध्रुवम् ॥२७॥

गुरुपदेशविधिना स्नानं मन्थ्या समाचरेत् ।

वेदादिसर्वविद्यार्थज्ञानसंपत्तिसाधनम् ॥२८॥

इत्येषाद्विजयर्णानां विद्याभ्यासविधिः क्रमान् ।

अन्यथा योऽभ्यसेद्विद्यां तस्य विद्या न सिध्यति ॥२९॥

यससन्ध्यां कालतः प्राप्ता अतिक्रमति दुर्मतिः ।

ध्रुणहत्यामवाप्नोति काकयोर्नो प्रजायते ॥३०॥

यथाशक्त्याचरेत्मन्थ्यां कालेऽद्याद्विष, फलमाप्नुवान् ।

काले तस्मात्प्रयत्नेन नित्यकर्म समाचरेत् ॥३१॥

आचारो द्विविधः प्रोक्तः सोपाधिरनुपाधिकः ।

सोपाधिर्गुणमात्रः स्यान्मुख्यः स्यादनुपाधिकः ॥३२॥

उपाधौ समनुप्राप्ते गौणाचारं समाचरेत् ।

अनुपाधौ च दुर्बुद्ध्या गौणाचारं करोति यः ॥३३॥

स दारिद्र्यमवाप्नोति महारोगः प्रजायते ।

अपवाद्दो महान् दोषो सम्भवेज्जन्मजन्मनि ॥३४॥

मुख्याधारं परित्यज्य गौणाधारं करोति यः ।

स तस्य कर्मणि धर्माश्च निर्जिताः स्युर्न संशयः ॥३५॥



प्रामादधिगदिग्भागे शतधन्वन्तरावधि ।  
 देयाश्च श्रुपयस्यैव गगनाधात्र योगिनः ॥४७॥  
 गण्डन्तु देयताः सर्वा अत्र शौचं करोम्यहम् ।  
 प्रथमं च शिरोवेष्टं नियोतं च द्वितीयकम् ॥४८॥  
 दिग्दर्शनं तृतीयं स्यात् धन्वन्तरानं चतुर्थकम् ।  
 मोनन्तु पञ्चकं शयं पुरीषं षष्ठमेव च ।  
 सप्तमं मृत्तिकाधानं उदकं चाष्टमं सूतम् ॥४९॥  
 मुष्टिमात्रवृणं दत्त्वा रात्रौ चंद्रशिणामुखः ।  
 दिवाचोदहमुखः कुर्याच्छौचं कर्म समाहितः ॥५०॥  
 पामदक्षिणकर्णस्य उपयोतं च धारयेत् ।  
 क्रमान्मूत्र पुरीषे च कुर्याच्छौचं द्विजोत्तमः ॥५१॥  
 यथाविध्युत्तमार्गेण कुर्यादुद्धृतवारिणा ।  
 कूपकुल्या तटाकादिजलैः शौचं करोति यः ॥५२॥  
 कल्पकोटिशतैर्वापि नरकात्र निवर्तते ।  
 एकालिङ्गे करे तिस्रः पञ्चाषाने तथैव च ॥५३॥  
 पादद्वये चतुः संख्या एतच्छौचं विधीयते ।  
 एतद्दमो गृहस्थस्य इतरेषां पृथक्पृथक् ॥५४॥  
 स्मार्तानां द्विगुणं कुर्यात् वनस्थस्त्रिगुणं तथा ।  
 चतुर्गुणं यतीनां च त्रेयाणां भेद ईरतिः ॥५५॥  
 दुर्गन्धत्यागपर्यन्तं कृत्वा शौचं समाहितः ॥५६॥  
 ॥ दन्तधावनम् ॥  
 शीरकाष्टेन कुर्यात् दन्तधावनममजः ।  
 रणपर्णैस्तदा कुर्याद्दमा (मि) एकादशीं विना ॥५७॥

तयोरपि च कुर्वीत जम्बूप्रक्षालनपणकैः ।  
 आयुर्वलं यशो धनं प्रजाःपशुवसूनि च ॥६८॥  
 मद्यं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ।  
 निष्ठीवनं च गण्डूपं धायव्याभिमुखो नरः ॥६९॥  
 ईशानाभिमुखो भूत्वा धायव्यान्ते समुत्सृजेत् ।  
 अङ्गारबालुकाभिश्च भस्मांगुलिनखैरपि ॥७०॥  
 इष्टकालोष्टपापापैर्न कुर्यादन्तधावनम् ।  
 खदिरश्च फरशुश्च कदम्बश्च बटस्तथा ॥७१॥  
 वेणुश्चतिन्तिढीप्लक्षा वाम्रनिम्बे तथैव च ।  
 अपामार्गश्च विल्वश्च अर्कश्चौदुम्बरस्तथा ॥७२॥  
 एते प्रशस्ताः कथिता दन्तधावनकर्मणि ।  
 यथाशक्त्यनुसारेण दन्तधावनमाचरेत् ॥७३॥  
 ततो नदीं समागम्य गङ्गाध्यानपुरस्सरम् ।

॥ आचमनम् ॥

स्वसूत्रोक्तविधानेन कुर्यादाचमनत्रयम् ।  
 वामहस्ते जलं नीत्वा त्रिद्व्यांहृत्याभिमन्त्रितम् ॥७४॥  
 आकृष्य दक्षिणे भागे रेचयेद्दाममार्गतः ।  
 स्वामभागमालोक्य धञ्जपापाणतस्त्यजेत् ॥७५॥  
 पुनः शुद्धाम्बुनाचम्य ततः स्नानं समाचरेत् ।  
 नाभिमात्रे जलेस्थित्वा त्रिवारं स्नानमाचरेत् ॥७६॥

॥ स्नानभेदाः ॥

प्राणायामत्रयं कुर्यात् दशप्रणवसंयुतम् ।  
 चण्डिखेन्मार्जनं यन्त्रं स्नानयन्त्रं समुत्सृजेत् ॥७७॥



मध्याह्ने मृत्तिकास्नानं कुर्यान्नित्यमतन्द्रितः ।  
 प्रातस्सायाह्नसमये न कुर्यान्मृत्तिकाक्रियाम् ॥८८॥

॥ वस्त्रधारणम् ॥

सूत्रेण प्रथितं सूच्या स्वप्नं चित्रं तथैव च ।  
 विचित्रपुत्तलीवस्त्रमन्यवस्त्रं न धारयेत् ॥८९॥

एतत्समस्तमित्युक्तं पट्टवस्त्रं न दोषभाक् ।  
 और्णवस्त्राणि सर्वाणि न दोषो धारयेद्बुधः ॥९०॥

प्रातर्मध्याह्नयोः स्नानं धानप्रस्थगृहस्थयोः ।  
 यतेस्त्रिषवणं स्नानमसकृत्तु ब्रह्मचारिणाम् ॥९१॥

प्रोक्ष्य घासोपसंयोज्य प्रणवादिषडक्षरैः ।  
 शुद्धघोतं परिमाह्यं पट्कण्डविधिधर्मकम् ॥९२॥

कण्डद्वयं यस्त्रमध्ये तच्छृङ्गेषु (च) चतुष्टयम् ।  
 एवं क्रमेण बध्नीयाह्मणं धृतिचोदितम् ॥९३॥

भोजनोत्तरनिर्माल्यं प्रक्षाल्यद्विजसप्तमः ।  
 मादंसन्ध्यां प्रकुर्यात् अन्यथा ब्रह्मपातकः ॥९४॥

प्रातर्मध्याह्नयोः स्नात्वा पूयकमन्ध्यां समाचरेत् ।  
 एष धर्मो गृहस्थस्य योगिनां प्रातरेव हि ॥९५॥

॥ प्राणायामः ॥

एतच्छान्ते प्रशाम्भं श्यायोगिनां वायुधारणम् ।

गङ्गादारे तत्र स्नात्वा म्पित्वा ब्रह्मदिनप्रथमम् ।

तच्छब्दं समकत्रोति द्विषो वायुनिरुपह. (तः) ॥९६॥

उत्रापि कुम्भकं कृत्वा प्राणापामं समाचरेत् ।

सूर्गोदयं समारभ्य पटिकाद्वादशोपरि ॥६७॥

मध्ययज्ञाङ्गकस्नानं अपराद्धे तु तर्पयेत् ।

सङ्कल्प्य मध्ययज्ञं च यथाशक्ति समाचरेत् ॥६८॥

माध्याह्निकं प्रकुर्यात् जपान्ते तर्पयेत्तथा ।

यन्त्रहीनं जलस्नानं चीजहीनं तु यन्त्रकम् ॥६९॥

विन्दुहीनं तु यद्भीजं कृत्वा स्नानं न संशयः ।

मन्त्रहीनो जले स्नात्वा सन्ध्यावन्दनमाचरेत् ॥१००॥

अशुचेस्तस्यमनसो मलिनं नैव गच्छति ।

मन्त्रयन्त्रविहीनो यः स्नानं सन्ध्यां करोति चेत् ॥१०१॥

विफलं मन्त्रतेजस्यात्सत्यं सत्यं न संशयः ।

पश्चात्स्नानं विना येन सार्धं सन्ध्या कृता यदि ॥१०२॥

तस्य पापं न गच्छेत् यथा सूर्योऽस्तामे तमः ।

परिधाय शुभं वस्त्रं तिलकं धारयेत्ततः ॥१०३॥

॥ पुण्ड्रधारणम् ॥

गुरुपदेशमार्गेण अन्यथा धर्मघातकः ।

मृद्धारिचन्दनं भस्म वामहस्ते निधापयेत् ॥१०४॥

त्रिकोणयन्त्रसंलेख्य मध्ये मायां स विन्दुकाम् ।

कोणार्धे प्रणवं लेख्यं दण्डेषु व्याहृतित्रयम् ॥१०५॥

अभिमन्त्र्य तु गायत्रं मन्त्रराजं दशावधि ।

ललाटे तिलकं कुर्याद्गुरुशूनापुरस्सरम् ॥१०७॥

मन्त्रयन्त्रविहीनं यत्तिलकं यदि धारयेत् ।-

तन्मुखं शक्यद्वाति ब्रह्मतेजो न विद्यते ॥१०८॥

तिलकं यत्र संयुक्तं मन्त्रसंयुक्तमेव च ।

ललाटे यत्र दृश्येत तत्तेजो ब्रह्मनामकम् ॥१०९॥

प्रणवं चोर्ध्वपुण्ड्रं च त्रिपदा च त्रिपुण्ड्रकम् ।

ललाटे यस्य दृश्यन्ते (वर्तन्ते) तेषाम्बि (स्त्री) ब्रह्मदो भवेत् ॥११०॥

ओमापोऽज्योतिमन्त्रेण शिखावन्धनमाचरेत् ।

स्वसूत्रोक्तविधानेन सन्ध्यावन्दनमाचरेत् ।

अन्यथा यस्तु कुरुते आसुरी तनुमाप्नुयात् ॥१११॥

मयाकृते मूत्रपुरीषशौच-

प्रक्षाल्यत्पुण्ड्रपणमेहने च ।

वस्त्रस्यसंक्षालनके च दुःशृतं

क्षमस्य गङ्गे मम सुप्रसन्ना ॥११२॥

त्रिकोणमध्ये द्वौकारं कोणाम्बे प्रणवं लिखेत् ।

दण्डेषु व्याहृतिश्चैव सहिस्तेदुदके तथा ॥११३॥

प्रणवेन वहिर्वेष्ट्य जलं पीत्वाऽथ मार्जयेत् ।

तथैव विन्यसेत्सन्ध्या अन्यथा शूद्रवद्भवेत् ॥११४॥

इति श्रीविश्वामित्रसंहितायां आन्धिकविधियोगोनाम  
प्रथमोऽध्यायः ।

# अथ द्वितीयोऽध्याय

## आचमनविधिवर्णनम्

- जलमध्ये वामकरे दक्षिणे कर्णयत्कृती ।  
आदौ गुरुं नमस्तुत्य पश्चादाचमनं चरेत् ॥ १ ॥  
प्रागाचानेदमृतस्यात् सोम्यायां सोमपाभवेत् ।  
पश्चान्मुखोरक्तपास्यात् सुरापां(पी)दक्षिणामुख ॥ २ ॥  
चतुर्विंशतिनामानि तत्तदंगानि संपृशेत् ।  
विन्यसेत्केशवादीनि पौराणाचमनं भवेत् ॥ ३ ॥  
तकारादियकारान्तैः चतुर्विंशति वर्णकैः ।  
संपृशेत्तत्तदंगानि स्मार्तमाचमनं चरेत् ॥ ४ ॥  
देव्यापाद्वैखिराचम्य अङ्गिर्गनैवभिः स्पृशेत् ।  
सप्तव्याहृतिगायत्री शिरस्तुर्वक्त्रादागमम् (१) ॥ ५ ॥  
त्रिधाचाचमनं प्रोक्तं पौराणं स्मार्तमागमं ।  
श्रौतं च मानसं चेति पंचधा प्रोच्यते पुनः ॥ ६ ॥  
संध्याप्रारम्भकालेषु कुर्यादाचमनत्रयं ।  
संहृताङ्गुलिहस्तेन ब्रह्मतीर्थे विवेजलं ॥ ७ ॥  
मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां शेषेणाचमनं भवेत् ।  
गोकर्णाकृतिहस्तेन मापमात्रं जलं विवेत् ॥ ८ ॥  
न्यूनातिरिक्तमात्रेण तज्जलं सुरयासमं ।  
आदौवान्ते च मंत्रैश्च क्रमादाचमनं चरेत् ॥ ९ ॥  
स्रुतिस्मृतिपुराणानि पर्यायेणविलोमतः ।  
अङ्गुलित्रयसंपुक्तं मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठकं ॥१०॥

गोकर्णारूढिभिर्जातुः सद्यश्चर्म प्रकृतिर्न ।  
 ह्यनमन्वाथ मन्त्रिभ्यं पीतमं न संयतेत् ॥११॥  
 कश्चिद्व्यासं कश्चिन्मानं सुवांद्दुर्माद्यं विदुः ।  
 वेत्तावादिप्रवेगायो माणवर्षं विवेकप्रमत् ॥१२॥  
 गोविन्दमप्रमोन्वाथ गौदुम्ने रिण्डुमेव च ।  
 मधुगूदनमादिन्यं मुधाशौ च त्रिविक्रमं ॥१३॥  
 अमृतो यामनं शैव श्रीधरं ह्यनयोमथा ।  
 हृषीकेशं पद्मनाभं उभयोः पादयोर्न्यमेत् ॥१४॥  
 दामोदरं ब्रह्मरन्ध्रे नामसंहरणस्य च ।  
 न्यसेद्वा नासिकामध्ये धाम्यान्ते वा विनिर्दिशेत् ॥१५॥  
 विन्यसेदक्षनामायां यामुदेवं तथैव च ।  
 प्रघृष्टं विन्यसेद्दामे अनिष्टं तु दक्षिणे ॥१६॥  
 पुरुषोत्तमं वामनेत्रे दक्षकर्णे(ह्य) अधोक्षजम् ।  
 नारसिंहं वामकर्णे नाभायच्युतमेव वा ॥१७॥  
 जनार्दनं हृदि न्यस्य ब्रह्मरन्ध्रेत्युपेन्द्रकं ।  
 विन्यसेत् हरिं कृष्णं भुजे दक्षे च वामके ॥१८॥  
 पौराणं स्मार्तमित्येतत् क्षत्रियाणां विधीयते ॥१९॥  
 परित्वागिर्वणोगिर इमा भवन्तु विश्वतो ।  
 वृद्धाधुमतुवृद्धयो तुष्टाभवन्तु जुष्टयः ॥२०॥  
 पुण्यस्त्रीणां तथा शैव्यं शूद्राणां नाममात्रकं ।

शुद्धाचमानां त्रिविधं प्रकारं

कुर्यात्त्रिसंख्यापि(सु) समस्तकर्मसु ।

आरम्भणं केशवनाम युक्तं

श्रुति स्मृतिभ्या द्विविधं तथोच्यते ॥२१॥

देवतीर्थेन संगृह्य ब्रह्मतीर्थे जलं विधेत् ।

मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां गोकर्णाकृति रुच्यते ॥२२॥

वर्तमादौ विधिपूर्वकर्मनित्य त्रिकालं प्रयत्नेश्च नित्यं ।

श्रुतिस्मृतिप्रोक्त पुराणमार्गं तामाद्विशुद्धाचमनं विशिष्टं ॥२३॥

नाम्नामादौ च वर्णानां पादादौ ॐ समुच्चरेत् ।

नमोऽजं विन्यसेन्मंत्रं कुर्याच्छुद्धो भवेत्त्रिधा ॥२४॥

चतुर्विंशति पादानि चतुर्विंशतिवर्णकं ।

चतुर्विंशति नामानि प्रणवादिनमोन्तकं ॥२५॥

वैश्यानां तु नमोन्तस्य अन्येषां वर्णमात्रकं ।

पुण्यस्थीणां नमोऽन्तस्यात् विशेषात्केशवादिषु ॥२६॥

शूद्राणां विधयानां च नाममात्रं जलक्रिया ।

सुवासिन्यां नमोन्तं च द्विराचम्य विशुद्धयति ॥२७॥

नमोऽंतं त्रिविधं ज्ञेयं प्रणवं त्रिविधं तथा ।

एवमेव त्रिराचम्य कर्मादौ तत्समाचरेत् ॥२८॥

अन्यथा हि कृतं यत्तु आचमनं तु निष्फलं ।

करामर्षचांगुलि पूर्ण मुद्रा सकेशवाद्यं स्तुवर्तनीया ।

निष्ठीवने (तथा) प्रसुप्ते च परिधानेऽश्रुपातने ।

पश्चश्रोत्रेषुचाचामेच्छ्रोत्रं वा दक्षिणं सृशेत् ॥२९॥

भोजनादौ च मुक्त्यन्ते गोकर्णाकृतिपाणिना ।

आपोऽशनं पिबेन्नित्यमन्यथा(१) चेन्नदर्गकम् ॥३०॥

नासापुटे (ह्य) अक्षकणं प्रजपद्ब्याहृतित्रयम् ।  
 विरष्टोच्छ्रोत्रमानं च इत्येवं श्रुतिचोदितम् ॥३१॥  
 ह्रस्वदीर्घप्लुतैर्युक्ता प्रणवं मनसा स्मरेत् ।  
 मानसाचमनं कुर्यान्मनोदेशविधिक्रमान् ॥३२॥  
 त्रिभिः पादैरपः पीत्वा आपोहिष्टाप्रतोन्यसेत् ।

॥ मार्जनम् ॥

ता न ऊर्जे च सौपुम्ने रदन्महेरणाय च ।  
 यो चः शिवतमस्सोमे तस्य भाजयतोऽप्रतः ॥३३॥  
 वशातीर्हस्तयोरचैव वक्षे तस्माअरंन्यसेत् ।  
 यस्यक्षयाय वामे वा ह्यापो जनयथा शिरः ॥३४॥  
 नासान्ते भूपदं न्यस्य भुवः पादं तु दक्षिणे ।  
 मुवः पादं वामभागे महः पादं तु दक्षिणे ॥३५॥  
 जनः पादं वामनेत्रे तपः पादं तु दक्षिणे ।  
 मर्त्यं पादं वामफरे नामो देव्यादिपादकम् ॥३६॥  
 न्यसेद्द्वितीयं हृदये मध्यरन्ध्रे तृतीयकम् ।  
 विन्वमेदक्षिणभुजे ग्यमापो ज्योतिरेव च ॥३७॥  
 तुर्यपादं न्यसेद्गामे भुजे श्रुत्युक्ततः क्रमान् ।  
 भ्रुवाचमनमेभिर्यो हरेः कुर्याद्द्विजोत्तमः ॥३८॥  
 स सर्वपापगुणः श्यात्शृष्टाभृष्टिर्न विगते ।  
 पादत्रयं तपपदं मनलोकात्मधैव च ॥३९॥  
 पुनः पादत्रयं शीघ्रं तुर्यं श्रौतमितीरितम् ।  
 तुर्यपादं शिरः पादं गायत्री त्रिपदा साह ॥४०॥

सप्तव्याहृतयश्चैव नवपादं त्रिपादकम् ।  
 चतुर्विंशतिपादानि न तत्स्थानेषु विन्यसेत् ॥४१॥  
 त्र्योऽथादौ नव सप्तधा त्रीणिद्वे च धृतीरितम् ।  
 गायत्री(मुष्टरन्)श्चध्यापोद्दिष्टा नवभिः स्पृशेत् ॥४२॥  
 सप्तव्याहृतिभिश्चैव गायत्रीत्रिपदैः स्पृशेत् ।  
 शिरः पदा तु व्यपदा चतुर्विंशतिभिः स्पृशेत् ॥४३॥  
 श्रुत्याचमनमेतद्वि त्रिधामित्रादिभिः स्मृतम् ।  
 नाम वर्णं च पादं च भृश्वः (स्व) रोमिति ॥४४॥  
 पञ्चाचमनं चैतानि प्रोक्तं स्वच्छन्दसां गणैः ।  
 तिसृभिश्च व्याहृतिभिः शिरश्क्षूँपि नासिके ॥४५॥  
 श्रोत्रद्वयं च हृदये संस्पृशेत्वाथ वारिणा ।

॥ आचमनम् ॥

त्रिराचामेदिति त्रेधा परिमृद्देति च त्रिधा ।  
 एकः सकृदुपस्पृशेदित्येवं धृतिचोदितम् ॥४६॥  
 ब्रह्मयज्ञे त्रिधाचामेच्छ्रुतिस्मृतिपुराणकैः ।  
 द्विर्ज्ञेया परिमृज्यात्र ताल्वोर्हस्तेन मार्जयेत् ॥४७॥  
 सकृज्जलं तु प्रणवेनांगुष्ठेनोपस्पृशेत् ।  
 अन्याः कुल्योपसंस्पृष्टाः निष्फलं कर्म तद्भवेत् ॥४८॥  
 चतुर्विंशति पादानि चतुर्विंशति वर्णकम् ।  
 चतुर्विंशतिनामानि त्रिधाचामेद्यथाविधि ॥४९॥  
 तथा द्विः परिमृज्येति चन्द्रसूर्यां स्वरी स्पृशेत् ।  
 उपस्पृशेत्सुपुत्रा च ब्रह्मयज्ञे सकृज्जनैः ॥५०॥



मद्रपत्रं त्रिरात्रामेच्छीनं स्मार्तं पुण्यम् ।  
 परिभृत्प त्रिरात्रालपोहंमेन परिमार्जने ॥१२॥  
 उपगृहेन्द्रधानाहं प्रणयेन मृच्छनेन ।  
 भोजने भवने दाने स्नाने दाने प्रतिग्रहे ॥१३॥  
 मन्थ्याप्रथे च निद्राया तथा यस्त्रय धारणे ।  
 पूर्वः ( म ) पञ्चभिरात्रामेन तथा रथ्योपमर्षणे ॥१४॥  
 आदौ शौचं तथाचामे तनः स्मार्तान्चमानम् ।  
 ततः पौराणमाचामे निर्व्यं श्राद्धे विधीयते ॥१५॥  
 पुराणं श्राद्धकालं च श्राद्धान्ते स्मार्तमुच्यते ।  
 पार्वणि श्रौतमाचामे न्यासः श्राद्धे विलोमतः ॥१६॥  
 पुरश्चर्यां च दीक्षाया मूलमन्त्रेण केवलम् ।  
 दुर्दानं दुष्प्रतिग्रहं दुरन्नं दुष्टभाषणम् ॥१७॥  
 दुरालापादिकथनं दुष्टस्त्रीभिश्च सङ्गमम् ।  
 चाण्डालजातिसंस्पर्शं मलिनीकरणादिकम् ॥१८॥  
 सद्यो हरति सर्वं च विधानाचान्तमात्रतः ।

इति विश्वामित्र स्मृती शुद्धाचमनयोगोनाम  
 द्वितीयोऽध्यायः ।

# अथ तृतीयोऽध्यायः

प्राणायामविधिवर्णनम्

॥ प्राणायामः ॥

देहाच्चैव सर्वेषां देहे ध्यानं समन्यसेत् ।

प्राणि द्विजवर्णानां प्राणायामं समं न्यसेत् ॥ १ ॥

प्राणायामत्रयं प्रातः सन्ध्याकाले समाचरेत् ।

प्राणायामसमायुक्तं प्राणायाम इति स्मृतम् ॥ २ ॥

तमं नवधा चैव षोडश मध्यममुच्यते ।

भिमन्त्रीयमित्याहुः प्राणायामस्य लक्षणम् ॥ ३ ॥

वन्ध्याहृतिभिश्चापि प्राणवादिरनुक्रमात् ।

तद्यथा शिरसा चैव प्राणायामो विधीयते ॥ ४ ॥

विन्दुप्राणविसर्गकथं गायत्रं विन्दुसहितम् ।

प्राणवाहृतिसंयुक्तं प्राणायामे स्पृशेत्तथा (त्रिशस्त्रिधा) ॥ ५ ॥

प्राणौ कुम्भकमाश्रित्य रेचपूरकवर्जितम् ।

गह्वर्यादिशिरोज्ज्वलं च प्राणायामं समाचरेत् ॥ ६ ॥

तस्ये नैमित्तिके काम्ये सर्वदा सर्वकर्मसु ।

प्राणौ कुम्भकमाश्रित्य रेचपूरे विसर्जयेत् ॥ ७ ॥

सन्ध्याकाले होमकाले ब्रह्मयज्ञे तथैव च ।

प्राणौ कुम्भकविज्ञेयं (माश्रित्य) प्राणायामं समाचरेत् ॥ ८ ॥

प्राणायामसमानविन्दुसहितं बन्धत्रये संयुतं ।

सन्ध्याहृतिविन्दुसंपुटपरं देहादिपादत्रयम् ॥ ९ ॥

ब्रह्मयज्ञे त्रिराचामेच्छ्रीतं स्मार्तं पुराणकम् ।  
 परिमृज्य त्रिधाताह्वोर्हस्तेन परिमार्जने ॥११॥  
 उपश्लोत्प्रधानाङ्गं प्रणवेन सकृज्जपेत् ।  
 भोजने भवने दाने स्नाने दाने प्रतिप्रहे ॥१२॥  
 सन्ध्यात्रये च निद्रायां तथा वल्लस्य धारणे ।  
 पूर्वः ( म् ) पश्चभिराचामेत् तथा रथ्योपसर्पणे ॥१३॥  
 आदौ श्रौतं तथाचामे ततः स्मार्ताचमानकम् ।  
 ततः पौराणमाचामे नित्यं श्राद्धे विधीयते ॥१४॥  
 पुराणं श्राद्धकाले च श्राद्धान्ते स्मार्तमुच्यते ।  
 पार्वणि श्रौतमाचामे न्यासः श्राद्धे विलोमतः ॥१५॥  
 पुरश्चर्यां च दीक्षायां मूलमन्त्रेण केवलम् ।  
 दुर्दानं दुष्प्रतिपाहं दुरन्नं दुष्टभाषणम् ॥१६॥  
 दुराज्यापादिकथनं दुष्टश्रीभिरच महामम् ।  
 पाण्डालघ्नानिमंस्पर्शं मलिनीकरणादिकम् ॥१७॥  
 मद्यो हरति मवं च विधानाचान्तमाश्रतः ।

इति विश्वामित्र स्मृतौ शुद्धायमनयोगोनाम  
 द्वितीयोऽध्यायः ।

# अथ तृतीयोऽध्यायः

प्राणायामविधियर्णनम्

॥ प्राणायामः ॥

हिनां चैव सर्वेषां देहे ध्यानं समन्यसेत् ।  
प्रापि द्विजवर्णानां प्राणायामं समं न्यसेत् ॥ १ ॥  
प्राणायामत्रयं प्रातः सन्ध्याकाले समाचरेत् ।  
प्राणायामसमायुक्तं प्राणायाम इति स्मृतम् ॥ २ ॥  
समं नवघा चैव षोढा मध्यममुच्यते ।  
भिमन्त्रीयमित्याहुः प्राणायामस्य लक्षणम् ॥ ३ ॥  
सन्ध्याहृतिभिश्चापि प्रणवादिरनुक्रमान् ।  
न्यस्या शिरसा चैव प्राणायामो विधीयते ॥ ४ ॥  
सुन्दुप्राणविसर्गैक्यं गायत्रं त्रिन्दुसंहितम् ।  
सन्ध्याहृतिसंयुक्तं प्राणायामे स्पृशेत्तथा (त्रिशक्तिघा) ॥ ५ ॥  
सदौ कुम्भकमाश्रित्य रेचपूरकवर्जितम् ।  
सन्ध्याहृत्यादिशिरोऽन्तं च प्राणायामं समाचरेत् ॥ ६ ॥  
सन्ध्याहृत्ये नैमित्तिके काम्ये सर्वदा सर्वकर्मसु ।  
सदौ कुम्भकमाश्रित्य रेचपूरे विसर्जयेत् ॥ ७ ॥  
सन्ध्याकाले होमकाले मद्भयज्ञं सर्वैव च ।  
सदौ कुम्भकविसर्गं (माश्रित्य) प्राणायामं समाचरेत् ॥ ८ ॥  
प्राणायामसमानविन्दुसदिनं बन्धश्रये संयुतं ।  
सन्ध्याहृतिविन्दु संपुटपरं देवादिपादप्रयम् ॥ ९ ॥

गायत्री शिरसा त्रिनाडिसहितामूढाद्वयद्धे परं ।  
 शुद्धं केवल(ने चल) कुम्भकं प्रतिदिनं ध्यायामि वत्सं  
 परम् ( पदम् ) ॥१७॥

दश प्रणवगायत्र्या इडा पिङ्गलवर्जितम् ।  
 कुम्भं सुपुत्रया कुर्यान्मन्त्रस्मरणपूर्वकम् ॥१८॥

अधमे द्वादशी मात्रा मध्यमे द्विगुणा मता ।  
 उत्तमे त्रिगुणा प्रोक्ता प्राणायामविधिः स्मृतः ॥१९॥

आयासो रेचकः पूरो ह्यनायासस्तु कुम्भकः ।  
 अनभ्यासे विषं शास्त्रं अभ्यासे त्वमृतं भवेत् ॥२०॥

उत्तमं त्रिगुणं प्रोक्तं मध्यमं द्विगुणं तथा ।  
 अधमं न वदेत्यार्यैः (१) प्राणायाम इतीरितः ॥२१॥

प्रणवादि नमोज्ज्वलं च मात्रा चेत्यभिधीयते ।  
 पञ्चद्वादशमंगुली मात्रा मात्राविदो विदुः ॥२२॥

अंगुष्ठानामिकाभ्यां तु प्राणायामं यतिश्चरेत् ।  
 नामिकं यन्नं चैव वानरथस्य तथैव हि ॥२३॥

वकार इति पञ्चैते यणाः पञ्च च नोदिता ।  
 लं श्चिद्य्यात्मने गन्धान् हमाकारान्मने सुमम् ॥२४॥

यं वाय्वात्मने धूर्त्वं दीपं गगन्यात्मने नमः ।  
 निवेदेष नैवेषं यकारममृतात्मने ॥२५॥

पञ्चमूलास्त्रिमहामेता वृत्रा मानमित्री यजेत् ।  
 सिद्धमनगमं नास्ति न कुम्भकैवल्यत्परम् ॥२६॥

नन्द दृष्टि समानास्ति प्राणवायुनिरोधने ।  
 अन्तश्चक्षुर्वह्निस्तेजो अधस्थाप्य सुखासनम् ।  
 कृत्वा(शा)साम्यं शरीरस्य प्राणायामं समाचरेत् ॥२०॥  
 सर्वेषामेव जन्तूनां कर्तव्यं सुखमासनम् ।  
 तत्रापि मानसः श्रेष्ठ स्तत्रापि द्विज उच्यते ॥२१॥  
 सन्ध्या प्राचैव ध्येया च वनस्थस्य तथैव हि ।  
 सम्यक्पञ्चांगुलीभिश्च बद्ध्वा नासापुटं गृही ।  
 शनैश्शनैश्च निश्शब्दं प्राणायामं समाचरेत् ॥२२॥  
 पञ्चांगुलीभिर्नासां च बद्ध्वा वायुं निरुध्य च ।  
 आकृष्यधारयेदग्निं प्राणायामं समभ्यसेत् ॥२३॥  
 प्राणायामं तथा ज्ञात्वा स्नापयेद्दिग्भयं शिवम् ।  
 तदादौ मानसं कुर्यात्सम्यक्केवलबुम्भकम् ॥२४॥  
 पञ्चभूतात्मिकां चैव पूजां मानसिकीं स्मरेत् ।  
 पूजां मानससंबुक्तः प्राणायामफलं लभेत् ॥२५॥  
 पञ्चपूजां विना यस्तु प्राणायामं करोति चेत् ।  
 तस्य निष्फलितं कर्म विश्वामित्रेण भाषितम् ॥२६॥  
 लकारश्चभकारश्च(हकारश्च)यकारो रेफ एव च ।  
 वकार(चकार) इति पञ्चैते वर्णाः पञ्चार्चनोदिताः ॥२७॥  
 लं पृथिव्यात्मने गन्धान् हमाकाशात्मने सुमम् ।  
 यं वाप्यात्मने धूपं दीपमान्वात्मने चरम् ॥२८॥  
 निवेद्येषु नैवेद्यं वकारममृतात्मने ।  
 पञ्चभूतात्मिकास्मेतां पूजां मानसिकीं यजेत् ॥२९॥



प्राणायामं विना दम्नु गन्ध्यापन्दनमाधरेत् ।  
 सर्वधर्मपरित्यागो न महापातको भवेत् ॥४७॥  
 निगमागममन्त्राणां प्राणायामस्तु साधकम् ।  
 नियासागममन्त्रेषु मूलमन्त्रं च केवलम् ॥४८॥  
 मनसा गगनापूर्वं प्राणायामविदो विदुः ।  
 स्थूलसूक्ष्मादियज्ञं च युक्तायुष्मादियज्ञकम् ॥४९॥  
 प्राणापानादिसंयुक्तं प्राणायामं समाभ्यसेत् ।  
 प्रज्ञाविद्या महाविद्या सप्तकोट्यमृता भुवि ॥५०॥  
 तत्रपेन्मूलमनुभिः प्राणायामो विधीयते ।  
 मूलादिव्याहृतिस्मरत्(प्रजल्पं सर्व)प्रजल्पास्सर्वधर्मना ॥५१॥  
 तथा विलोममार्गेण प्राणायामं समाचरेत् ।  
 व्याहृतिस्सप्तगायत्री शिरसा शिखयायुताम् ॥५२॥  
 अनुलोमविलोमाभ्यां प्राणायामं जपेद्द्विजः ।  
 ओं सुष भुंय भूँ द्यमं तं सृ सो र तो ज्यो पो सा  
 ओं त्यादचोप्र नः यो यो धि । हि म धी स्व  
 ष दे गौ भ ये णी रे वं तु वि सत् त (१) । त्यं स  
 ओं पः त ओं नः ज ओं हः म ओं हं म ओं  
 वः मु ओं वः मूः ओं भूः ओंम ।  
 मन्त्रराजं महातत्त्वमनुलोमविलोमतः ।  
 प्राणायामं प्रकुर्वीत महापातकनाशनम् ॥५३॥  
 महापातकनाशाय महारोगहराय (क्षयाय) च  
 दुःखदारिद्र्यनाशाय प्राणायामकले विदुः ॥५४॥



दशप्रणवगायत्रीमनुलोमविलोमतः ।

त्सरन् शतद्वयं सम्यक्प्राणायामं समाचरेत् ॥१४॥

अविहितकृतदोषं राजसेवाविदोषं

करकृतमपिदोषं क्रूरकर्मादिदोषम् ।

हृदिकृतपरदोषं पापसंसर्गदोषं

हरति सकलदोषं मन्त्रराजं(जो)विलोमम्(नः) ॥१५॥

ब्रह्महत्यादिपापानि अगम्यागमनादिकम् ।

अभोज्यभोजनादीनि अग्राह्यग्रहणादिकम् ॥१६॥

तत्सर्वं नाशमाप्नोति पूर्वोक्तैर्वायुरोधनैः ।

किमत्र बहुनोक्तेन मन्त्रराजोऽमितप्रदः ॥१७॥

दशप्रणवगायत्र्या विनियोगरतो(हतो)द्विजः ।

प्राणायाममकुर्वाणो अथकीर्णो भवेत्तु सः ॥१८॥

सर्वाण्यसंभावितानि विपरीतान्यनेकराः ।

नियमेन कृतैः काले प्राणायामैर्यथोहति ॥१९॥

मन्त्रराजं चतुष्षष्टिं द्वात्रिंशत्तदर्धकम् ।

तदर्धमथमं शैवं प्राणायामं समाचरेत् ॥२०॥

मन्त्रराजं परार्धं च प्राणायामं करोति यः ।

सम्यक् निष्कलितं मन्त्रं पुनस्संस्कारमर्हति ॥२१॥

पष्टिवनात्मकं मन्त्रं परार्धं यो निरोधयेत् ।

इह जन्मनि शूद्रस्य जन्मन्यग्रे वियोनिजः ॥२२॥

अनुष्ठविधिनामन्त्रं प्राणायामं करोति यः ।

सद्योपुन्यविनाराय जन्मनीह इद्विता ॥२३॥

तत्तन्मूलं विनामन्त्रं प्राणायामं चरेद्यदि ।

सङ्कल्पा निष्फलं यान्ति विघ्नं कुर्वन्ति देवताः ॥६८॥

उपक्रमोपसंहारकारिपादो द्विधाकृतः ।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं त्रिविधं निष्फलं भवेत् ॥६९॥

प्राणायामं समरेदन्यं जपमन्यद्वृथा क्रिया ।

यः करोति समूडात्मा द्विविधे निष्फलो मनुः ॥६०॥

पादायं पादमात्रं च द्विपादं च त्रिपादकम् ।

चतुः पादं (पदं) पञ्चपादं (पदं) षट्पादं (पदं) सप्तपादकम् ॥६१॥

अष्टपादं (अष्टा पदं) नवपदमशीतिं च शतं तथा ।

तत्तन्मूलं समाहित्य प्राणायामो विधीयते ॥६२॥

निगमादिषु सर्वेषु आगमादौ तथैव च ।

तत्तन्मूलं प्रतिग्राह्यं प्राणायामं प्रकल्पयेत् ॥६३॥

एकाक्षरं द्व्यक्षरं च त्र्यक्षरं चाधिकं च वा ।

सर्वथा मूलमन्त्रेण प्राणायामं समाचरेत् ॥६४॥

चार्याकशीयगाणेश ( सौर ) वैष्णवशाक्तिकाः ।

तेषां जपे तन्मूलैश्च प्राणायामान् समाचरेत् ॥६५॥

श्रौतहोमे दशावृत्तिः सायं प्रातस्तथैव च ।

पक्षहोमे पञ्चदश पशुबन्धे च विंशतिः ॥६६॥

प्रायश्चित्ते चतुर्विंशद्विजश्चैकविंशतिः ।

यत्र कुत्र प्रमादश्च प्राणायामास्त्रयोदशः ॥६७॥

औपासनद्वये चैव प्राणायामाश्चतुर्दश ।

सायं प्रातश्च मध्याह्ने प्राणायामास्तु षोडश ॥६८॥

वैश्वदेवं प्रृचीं दशास्यां दशापरान् ।  
 यत्र यत्रैव मङ्गलः तत्र तत्र द्रव्यान्वितम् ॥६१॥  
 प्राणायामं प्रृचीं दशास्यां दशापरान् ।  
 गर्भाधानं समारभ्य आधानान्नं विधीयते ॥६२॥  
 विक्रीणीते परार्थं यो जपं र्थं दैवतार्चनम् ।  
 परार्थं प्रतिघातं च कुर्याद्दुष्टाङ्गं विदुः ॥६३॥  
 प्रमादेनाप्रयत्नेन कदानिभृक्षिते यदि ।  
 अनुलोमविलोमाभ्यां मन्त्रराजं शतावधि ॥६४॥  
 दशप्रणवगायत्री द्विपट्कं प्राणरोधनम् ।  
 वर्णमालां जपेन्मंत्रं शान्तिपाठं समाचरेन् ॥६५॥

अनृतवचनदोषं दुष्टसंसर्गदोषं

अविहितकृतदोषं दुर्दुरान्नादिदोषम् ।

अहमिति दुरहं चासद्द्विजानामयूयं(थं)

हरति सकलदोषं मन्त्रराजो विलोमः ॥६६॥

स्नानं सन्ध्या मुक्तकाले द्विजो यः

कुर्यान्नित्यं सर्वदोषं निहन्यात् ।

त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेव प्रभावः

तेनावश्यं प्राप्यते सद्विवेकः ॥६७॥

शतं त्रिलोकं त्रिशतं त्रिलोकं

पादं त्रिलोकं त्रिपदं त्रिलोकम् । .

सारं त्रिलोकं त्रिशतं तुरीयं

सव्यापमव्यावदनाय रोधम् ॥७६॥

इति विश्वामित्रस्मृतौ प्राणायामविधानं (विधियोगे) नाम  
तृतीयोऽध्यायः ।

## अथ चतुर्थोऽध्यायः

### मार्जनम्

पादं पादं क्षिपेन्मूत्रां प्रीतिप्रणवसंयुताम् ।

निक्षिपेदष्टपादं तु अधो यस्य क्षयाय च ॥ १ ॥

अष्टश्वरं नवपदं पादादौ ब्रह्महा भवेत् ।

पादान्तं मार्जनं कुर्यादश्वमेधफलं लभेत् ॥ २ ॥

यस्य क्षयाय पादं तु आपद्गुन्धन्तु यत्पदम् ।

भूमौ पदो त्रिनिक्षिप्य इतरं मूर्ध्निवाचरेत् ॥ ३ ॥

पादादौ प्रणवं चोक्त्या पादान्ते मार्जनं भवेत् ।

शृगादौ प्रणवं चोक्त्या शृगान्तं(न्ते) मार्जनं भवेत् ॥४॥

आपोहीति द्विनवकं दधिमात्रे द्विमार्जनम् ।

अह्गुष्टेनोदकं स्पृष्ट्वा पादमात्रेण मार्जयेत् ॥ ५ ॥

अर्धमन्त्रं पूर्णमन्त्रं मार्जनं द्विविधं विदुः ।

रजस्सत्त्वतमोजातान् मनोवाङ्मायजस्तिथा ॥ ६ ॥

जाप्रच्छात्पुत्रप्राप्तौ नर्तनाभ्यभिर्देहेन ।  
 दधि द्विमार्जनं मन्त्रं द्विगुणादिपुत्रयम् ॥७॥  
 कामकोभादिपद्मार्गं यशस्वयं विनाशनम् ।  
 पादमन्त्रं वास्यमन्त्रं पूर्णमन्त्रं विरंजनः ॥८॥  
 सर्वेणामेव वर्णानां त्रिकिंशं मार्जनं यजेत् ।  
 चतुर्विंशतिं गायत्री वर्णमंश्यानुमारतः ॥९॥  
 श्रुश्राग्गोक्तेन मार्गेण मार्जनानि समाचरेत् ।  
 शृग्यजुमामराभ्यानामेवं मार्जनलक्षणम् ॥१०॥  
 आश्वलायनशास्त्रानां मार्जनकर्म उच्यते ।  
 आपो द्विघ्रादिनवकं शान्तोदेवी द्विमार्जनम् ॥११॥  
 अधुमे त्रीणि चोक्तानि श्रुतं चेत्येवमेव हि ।  
 स्वचस्य च नवर्चस्य अष्टिङ्गं द्विविधं भवेत् ॥१२॥  
 पादादौ प्रणवं चोक्त्वा पादान्ते मार्जयेद्द्विजः ।  
 श्रुतं च मन्त्रस्यादौ च मार्जनानि समाचरेत् ॥१३॥  
 शन्नो देवी समारभ्य गायत्री शिरसः क्रमात् ।  
 शृगादौ प्रणवश्चोक्त्वा मार्जनम्परिकल्पयेत् ॥१४॥  
 अधुमे च समारभ्य भुवैन्तं मार्जनत्रयम् ।  
 तत्रापि प्रणवं चोक्त्वा मार्जनानि समाचरेत् ॥१५॥  
 सुरान्तं मार्जयेद्भूमौ चतुर्विंशतिमार्जनम् ।  
 पादशोऽष्टादशोक्तानि त्रिपदाभ्यां द्विमार्जने ॥१६॥  
 पद्द्विधे कर्मशास्त्रोणि ऋक्त्रयेणैव मार्जनम् ।  
 यस्य क्षयाय च पदोऽधोऽर्धं भुवि निक्षिपेत् ॥१७॥

एकविंशति मूर्ध्नित्यात् त्रि(पादो)भुवि मार्जयेत् ।

अद्गुप्राञ्जलमादाय मन्त्रान्ते मार्जनं यजेत् ॥१८॥

पादौ भूमौ त्रिवारं स्यान्मूर्ध्नि स्यादेकविंशतिः ।

अष्टाक्षरं नवपदं पादादौ ब्रह्महा भवेत् ॥१९॥

पादान्ते मार्जनं कुर्यादश्वमेधफलं लभेत् ।

रजस्सत्त्वं तमोजातं मनोवाकायजं तथा ॥२०॥

जाप्रत्स्वप्नसुपुष्ययं नवैतान्नयभिर्दहेत् ।

नवप्रणव युक्तेन आपोहीतित्यूचेन च ॥२१॥

संवत्सरकृतं पापं पुनर्मार्जनतो दहेत् ।

शन्नोद्देयी समारभ्य षड्भिश्चाथोसुषोऽन्तकैः ॥२२॥

अरिषड्वर्गपापानि नाशयेन्मार्जनानि च ।

अप्सुमे च समारभ्य ज्योक्चसूर्यान्तमार्जनम् ॥२३॥

इदमापस्समारभ्य ऋषभं मेह्यन्तमार्जनम् ।

पयस्वान्न आरभ्य(मुवे) हुवेऽन्तं मार्जनं तथा ॥२४॥

ऋतं च सत्यमारभ्य अन्तरिक्षमथो सुषः ।

पर्यन्तं मार्जयेद्भूमौ गृह्योक्तविधिना द्विजः ॥२५॥

इत्येवं मार्जनं कृत्वा सन्ध्यावन्दनमाचरेत् ।

मन्त्रलिङ्गं विना प्रोक्तं(पूर्व)मार्जनं यः करोति हि ॥२६॥

तस्य पापमगण्यं स्यान्मार्जनं निष्फलं भवेत् ।

मन्त्रलिङ्गं यथाशास्त्रं मार्जनं परिकल्पयेत् ॥२७॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः स्पृष्ट्वा (स्पृष्टा) स्पृष्टिर्न विद्यते ।  
इति विश्वामित्रस्मृतौ मार्जनयोगीनाम  
चतुर्थोऽध्यायः ।

### अथ पञ्चमोऽध्यायः

साध्यदानगायत्रीमाहात्म्यवर्णनम्  
॥ अर्घ्यदानम् ॥

मन्थ्यावन्दनवेलायां दद्यादर्घ्यत्रयं द्विजः ।  
सायंप्रातः समानंस्यान्मध्याह्ने तु पृथक्दद्यात् ॥१॥  
एकं मध्याह्नकाले च सायंप्रातस्त्रयस्त्रयः ।  
एवं ज्ञात्वा स्यजेदस्य सुप्रनक्षत्रपूर्वकम् ॥२॥  
एकं शश्यावनाराय चिरं पाहननाशने ।  
अमुराणां यथायैकं दद्यादर्घ्यत्रयं क्रमान् ॥३॥  
अमुराणां यथादुग्धं प्रायश्चित्तार्घ्यैकं परम् ।  
पृथीवदग्निनां कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥४॥  
मन्थ्यावन्दनोश्यायां प्रायश्चित्तार्घ्यमीहितम् ।  
दद्यात्पंचवल्गवायत्रया मूढो हार्यं तु यो द्विजः ॥५॥  
स वै दुर्भागो नाम सर्वकर्मवह्निभृत् ।  
इत्यर्थं यो न जानाति स विप्रगृह एव हि ॥६॥

तस्य कर्मादिकं ज्ञानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।  
 बीजमन्त्रं तु गायत्र्याः प्राण इयमिधीयते ॥७॥  
 देहस्तु पिण्ड इत्युक्तो संज्ञाकवच एव हि ।  
 सर्वाङ्गानि पदो मन्त्रः सर्वमन्त्रेष्वयं विधिः ॥८॥  
 अस्त्रं वृष्टिरिति प्रोक्तं गायत्रीन्यात्रिरुच्यते ।  
 एतत्पप्मन्त्रकं ज्ञात्वा दद्याद्दध्यं विधानतः ॥९॥  
 प्रणवो बीजमन्त्रः स्याद् गायत्र्यास्सर्वदा मतः ।  
 पिण्डमन्त्रं तुरीयं स्याद्गायत्रीसंज्ञितं परम् ॥१०॥  
 नारायणं मूलमन्त्रं संज्ञामन्त्रं भवेत्सदा ।  
 ओमापो ज्योतिरित्येतत्पदमन्त्रमितीरितम् ॥११॥  
 ओं तत्सवितुरित्येपा गायत्रीहृन्महामुने ।  
 एतदेव हि गायत्री विप्राणां मुक्तिदायिनी ॥१२॥  
 ब्रह्मास्त्रं बीजमित्याहुः शर्म स्याद्ब्रह्मदण्डकम् ।  
 कीलकं ब्रह्मशीर्षं स्यात्प्यादिन्यासपूर्वकम् ॥१३॥  
 भान्तं वह्निसमायुक्तं ज्योमानलसमन्वितम् ।  
 मेपद्वयं दन्तयुक्तं हालाहलमतः परम् ॥१४॥  
 सनाद्यं वायुपूर्वं स्यात्तयुग्ममथापरम् ।  
 सरसामक्षपर्याचहान्तं भूर्भु (वस्त मतः परम् ॥१५॥  
 अम्बरं वायुसंयुक्तं अरिं मर्दय मर्दय ।  
 प्रज्वलेति द्विरुभार्य परमेत्त्परं ततः ॥१६॥  
 तत्त्रिपादं प्रयोक्तव्यं गायत्रीमध्यमन्त्रतः ।  
 पदत्रयं मयोक्तव्यमेतद्ब्रह्मस्मृतीरितम् ॥१७॥



असुराणां षडार्थाय अर्घ्यकाले द्विजन्मनाम् ।  
 प्रोक्तं ब्रह्मास्त्रमेतद्धै सन्ध्यावन्दनकर्मसु ॥१॥  
 कर्माथं काममोक्षादि ब्रह्मास्त्रंैव लभ्यते ।  
 ब्रह्मदण्डं तथा वक्ष्ये सर्वशास्त्रास्त्रनाशनम् ॥१॥  
 गायत्री सम्यगुच्चार्य परोरजसि संयुतम् ।  
 एतद्धै ब्रह्मदण्डं स्यात्सर्वशास्त्रास्त्रभक्षणम् ॥२॥  
 सर्वबाहननाशार्थं वक्ष्यन्त्रं ब्रह्मशीर्षकम् ।  
 गायत्री पूर्णमुच्चार्य मूलमन्त्रं ततो वदेत् ॥२॥  
 ब्रह्मशीर्षकमेतद्धि सर्वबाहननाशनम् ।  
 आधारादि समुद्घृत्य सुपुत्रामार्गनिर्गमे ॥२॥  
 सम्यगाचम्य तां देवं ब्रह्मब्रह्माण्डभेदिनीम् ।  
 ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥२॥  
 परमात्मेति गायत्रीमनुलोमक्रमान्यसेत् ।  
 अधोरास्त्राय शाङ्गाय नाराचाय सुदर्शन ॥२॥  
 प्रतिलोमक्रमान्यसेत् ।

॥ प्रायश्चित्तार्घ्यम् ॥

एकं मध्याह्नकाले च प्रायश्चित्तार्घ्यमुच्यते ।  
 अर्घ्यद्वयं तु मध्याह्ने तद्यमेतन्महामुने. ॥२॥  
 अर्घ्यत्रयप्रयोगार्थं प्रायश्चित्तं चतुष्टयम् ।  
 सायंप्रातर्द्विजातीनामेवमेव विधिः क्रमात् ॥२॥  
 ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं च ब्रह्मशीर्षं तथैव च ।  
 अर्घ्यत्रयप्रयोगार्थमेवमेतदुदाहृतम् ॥२॥

शीपंपेति मनुप्रथमम् ।

येन मनुष्यार्थं विवेदयन्तिना जलम् ।

मेन च गायत्री बीजयुक्ता मनुष्यकाम ॥२८॥

मा शिरसा युक्तं चतुर्धात्यं विनिश्चिपेत् ।

दण्डशिरायुक्तं हंसमन्त्रं सगुहरेत् ॥२९॥

साहनरक्षोघ्नं एकाग्रलिजलं क्षिपेत् ।

श्रेतद्विनीयार्घ्यममुराणां वधाय च ॥३०॥

गुणं चरेत्पृथ्व्याः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

मेति मनुं विप्रो ब्रह्मदत्तं समाचरेत् ॥३१॥

दण्डास्त्र(सं)युक्तं निश्चिपेद्रविमंमुग्धे ।

त्र्यं घटन पूर्वमन्त्रदण्डंशिरस्तथा ॥३२॥

त्र्यं सम्यगुषार्यं अर्घ्यमेकं विनिश्चिपेत् ।

त्र्यं समुषार्यं शिरोऽन्तं श्रेयसंयुतम् ॥३३॥

कं तु मध्याह्ने सत्यमुक्तं महामुने ।

दृगुष्टसंयोगो राक्षसी मुद्रिका भवेत् ॥३४॥

मुद्रिकादत्तं ततोयं रुधिरं भवेत् ।

यदि मूढात्मा शीरवं नरकं व्रजेत् ॥३५॥

पुच्छायया तोयं देवतामुद्रिका भवेत् ।

करणेन लोकस्य ) सर्वपापक्षयो भवेत् ।

शाय यो दशादस्यं सम्यक्मुधीरितम् ॥३६॥

श्रमयो स्वाहा आपश्शुन्धन्तु मैनसः ।

मन्त्रेण यो भागे मार्जयित्वाचमेत् ॥३७॥

वायव्यास्त्रेण नववारं प्राणायामं कुर्यात् ।  
 उत्तमं नववारं स्यान्मध्यमं ऋतुसंख्यकम् ॥३३  
 अधमं त्रयमित्याहुः प्राणायामस्य लक्षणम् ।  
 प्राणायामबलोपेतमुपसंहारमाचरेत् ॥३६॥  
 ततस्सर्वप्रयत्नेन प्राणायामं समाचरेत् ।  
 अस्य श्रीवायव्यास्त्रमन्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री  
 छन्दः महाभूतवायुर्देशता । यं बीजं, स्वाहा शक्तिः  
 जगत्सृष्टिरिति कीलकम् । ब्रह्मास्त्रप्रयोगार्थं वाय-  
 व्यास्त्रप्रयोगे विनियोगः । यामहुष्ठाभ्यां नमः  
 यी तर्जनीभ्यां स्वाहा । यू मध्यमाभ्यां षण्ण्ड ।  
 ये अनामिकाभ्यां हुम् । यः ( यों ) ओं कनिष्ठि-  
 काभ्यां षौण्ड । यः करतलकरपृष्ठाभ्यां षट् ।  
 एवं हृदयादिन्यासः । लोकत्रयेण दिग्बन्धः ॥

## ध्यानम्

सञ्चकारं कृष्णमृगाधिरूढं

षाण्णुधी ध्यापनदे दधानम् ।

मुमेशतुभिर्जगदाधिकारणं

सैनन्यत्स्यं प्रणमामि वायुम् ॥३४॥

आवायश्चया वायव्योर्वा वायया वा हन हन हुं  
 षट् स्वाहा इति त्रिवारं जपेत् । पुनर्मन्त्रंवादि नव  
 वा प्राणानायम्य दध्णोपशारेदध्यर्च्य श्रीगूर्धनारा-  
 यनदीन्यस्य अर्च्यप्रदत्तं करित्ये इति महुरज्य अर्च्यं-

प्रदानमन्त्रस्य सवितृ भगवानृषिः अनुष्टुपद्वन्दः,  
 श्रीसूर्यनारायणो देवता ब्रह्मास्त्रं बीजं, ब्रह्मदण्डं  
 शक्तिः । ब्रह्मशीपे कीलकं, श्रीसूर्यनारायणश्रीत्यर्थं  
 अर्घ्यप्रदाने विनियोगः । तत्सवितुः ब्रह्मात्मनेऽ-  
 हगुप्याभ्यां नमः । वरेण्यं विष्ण्वात्मने तर्जनी-  
 भ्यां स्वाहा भर्गोदेवस्य रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट् ।  
 धीमहि ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम् । धियो  
 योनस्सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । प्रचो-  
 दयात् परमात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । लोक-  
 त्रयेणेति दिग्बन्धः । ध्यानम्—

सर्वतोरणमध्यस्थं मण्डलान्तर्ध्वं वस्थितम् ।

ब्रह्मायुतसहस्रस्य सत्सन्तानकारणम् ॥४१॥

चिन्तयेत्परमात्मानमिव(बो)ऊर्ध्वं न च निक्षिपेत् ।

उत्तिष्ठ देधि गन्तव्यं पुनरागमनाय च ॥४२॥

अञ्जलिना जलमादाय गायत्री मालादारभ्य नासा-

पुटे वा उत्तीर्याञ्जलौ निक्षिप्यार्घ्यप्रयोगं कुर्यात् ।

धाम्नो धाम्नो राजन्नितो—ब हरोऽसि पाप्मानं मे

विद्धि आश्वलायनं यदद्य कश्च वृत्रहन्सुदगा अभि-

सूर्यं सर्वन्तदिन्द्र ते वशेऽति प्रातः । आपस्ताम्बस्य

हिरण्यगर्भेस्त—म इति प्रातः । गर्भोऽसि पाप्मानं

मे विद्धि । आश्वलायनस्य प्रातः देवीमदिति जोह-

यामि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य राये वित्रवाहणा

सर्वताते शं गोकटाय तनयाय शंयोः । आपन्न-  
 म्भस्य गः प्राणतो - मेति मध्याद्धे । उल्ले तदम-  
 धुत् । मधं गृपमं न मूर्धापनं अस्त्रारमेपि सूर्य ।  
 आपस्तम्यम्य ग आन्मदामेति । सायाद्धे । पुन-  
 नंयवारं प्राणानायम्य पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य अमुख-  
 धप्रायश्चित्तार्थं चतुर्थान्यप्रदानं करिष्ये इति सद्रुल्य  
 वाम्भयकामराजशक्तिशीजमहितं विलोमगायत्री-  
 सहितं शिरःशिखासहितं सतुरीयं चतुर्थान्यं दद्यात् ।  
 पुनर्नयवारं प्राणानायम्य पञ्चोपचारमभ्यर्च्य । अस्य  
 श्री अस्त्रोपसंहारमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीद्वन्दः  
 विलोमगायत्री देवता ब्रह्म बीजं ह्रीं शक्तिः हूं  
 कीलकम् अस्त्रोपसंहरणार्थं विनियोगः । अधो-  
 रास्त्राय शाङ्गाय नाराचाय सुदर्शनाय ह्रीं धियो  
 यो नः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । अधोरादि चतुष्टय  
 परियुक्तं तर्जनीभ्यां शिरसे स्वाहा । अधोरादि-  
 चतुष्टयसहितं हूं मध्यमाभ्यां वषट् । अधोरादि-  
 चतुष्टयसहितं ह्रौं भर्गो देवस्य ओं अनामिकाभ्यां  
 हुंम् । अधोरादिचतुष्टय सहितं ह्रौं वरेण्यं ह्रीं कनि-  
 ष्ठिकाभ्यां वौषट् । अधोरादिचतुष्टयसहितं तत्स-  
 वितुरो करतलकरपृष्ठाभ्यां हुं फट् । एवं हृदया-  
 दिन्यासः । ओं भूर्भुवःसुवरोमिति दिग्बन्धः ।

सोऽद्मर्कमहं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः ।  
 आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसो महिम् (ऽमृतम्) ४३॥  
 आगत्य देवि तिष्ठ त्वं प्रविश्य हृदयमम ।  
 अद्भुतं मुद्रया नासा पुटं हृदयेनाभिस्पृशेत् ।  
 विलोमगायत्री त्रिवारं जपेत् । असावादित्यो  
 मग्न पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य पुनर्वायव्यास्त्रं न्यसेत् ।  
 इति त्रिकाले समानमन्त्रं अधोरात्राय शार्दूय  
 नाराचाय सुदर्शनम् ।  
 मायापद्दीर्घगायत्री प्रतिलोम न्यसेत् क्रमात् ।  
 लकारं च हकारं च यकारं रेफसंज्ञकं ॥४४॥  
 वकारमिति विख्यातं पञ्चभूतात्मकं यजेत् ।  
 इति पञ्चमोऽध्यायः ।

## अथ षष्ठोऽध्यायः

### द्विविधजपलक्षणम्

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्मन्यासध्यानपुरस्सरम् ।  
 यथाशक्ति जपं कुर्यात्सन्ध्याङ्गो जपईरितः ॥ १ ॥  
 नदीतीरे सरित्कोष्ठे पर्वताग्रे विशेषतः ।  
 शिवविष्णुसमं देवा गायत्रीजपमाचरेत् ॥ २ ॥  
 नैमित्तिकं च काम्यं च द्विविधं जपलक्षणम् ।

## विष्णुमित्रश्रुतिः

॥ श्रुतिः ॥

भृशुद्धवापारश्रुति च विलिखेद्गुरुमार्गनः ।

शुद्धो भूमौ लिखेत्तन्त्रं प्रणवादिपडक्षरैः ॥ ३ ॥

आधागाद्यं च संशोक्तं प्रार्यवेत्पृथिवीमिमाम् ।

अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता दिवि संस्थिताः ॥ ४ ॥

ये भूता विप्रहर्तारणे नश्यन्तु शिवात्मया ।

पृथिवि(धिय)त्वया भूता लोका देवि त्वं विष्णुनाचृता

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

प्रणवाद्यैश्च पद्म्यर्णैर्दशवाराभिमन्त्रितम् ॥ ६ ॥

शुद्धभूमौ जलं प्रोक्ष्य विलिखेत्तन्त्रमुत्तमम् ।

त्रिकोणाम्ने वह्निबीजं मध्ये मायां सविन्दुषुम् ॥ ७ ॥

युतं तन्त्रं जपस्थाने लिखेत्कृत्वात् ।

चतुरश्रं हस्तमानं सुदृढं मृदु निर्मलम् ।

तस्योपरि समासीनो गायत्रीजपमाचरेत् ॥ ८ ॥

कृत्वा मूलेन भृशुद्धिं भूतशुद्धिं समाचरेत् ।

शोपदाहृष्टवं कुर्यात् प्रणवादिपडक्षरैः ॥ ९ ॥

पार्थिवं शतमेकं च वफारं द्विशतं तथा ।

त्रिशतं वह्निबीजं च वायुबीजं चतुश्शतम् ॥ १० ॥

आकारां पञ्चशतकं भूतशुद्धिरिति क्रमात् ।

प्रणवादि नमोऽन्तं च वृद्धिरेकोत्तरं शतम् ॥ ११ ॥

प्राणायामं च पञ्चाणैः कुर्याद्भूमूतशोधनम् ।

मूलाधारं समारभ्य गायत्री तुर्यया सह ॥ १२ ॥

ऊर्ध्वनास्यां(सी)समायोज्य गायत्री तत्र विन्यसेत् ।  
 अश्रमन्त्रेण कुर्यात् रक्षादिकन्धनं दिशाम् ॥१३॥  
 उपपातकरो(गा)णां महापातकनाशनम् ।  
 कामक्रोधादिषट्कर्म पापं कुक्षौ विचिन्तयेत् ॥१४॥  
 खड्गचर्मधरं कृष्णं पिङ्गलश्मश्रुलोचनम् ।  
 उकारान्तःस्थितद्वीपं ज्वालाकार हुताशनम् ॥१५॥  
 प्रतिष्ठाप्य ततः कामं शक्तिना वायुना (सह) ।  
 शक्तिबीजात्मकं ज्वाला त्रितयेन विनिर्दहेत् ॥१६॥  
 कर्पूरमिव सुज्वालाशेषं कुर्यात्समाहितः ।  
 ओं यं नमः शोषणं कुर्यात् । ओं इं नमः इत्यग्नि-  
 बीजेन दहनं कृत्वा । ओं वं नमः इत्यमृतबीजेन  
 प्लावनं कृत्वा लं नमः इति षण्णवत्यङ्गुलप्रमाणेनाव-  
 यवादिकं त्यक्त्वा । ओं हं नमः इत्याकाशबीजेन  
 सर्वसंज्ञाभासप्रतिष्ठापनं कुर्यात् ।  
 पादादिजानुपर्यन्तं पृथ्वीमण्डलसंज्ञि(ञ्ज)क(त)म् ।  
 जान्यादिकटिपर्यन्तं जलमण्डलसंज्ञि(ञ्ज)क(त)म् ॥१७॥  
 कशा(क्ष)दिकटिपर्यन्तं वह्निमण्डल संज्ञि(ञ्ज) (त) कम् ।  
 हृदादिकर्णपर्यन्तं वायुमण्डलसंज्ञि(ञ्ज)(त)कम् ॥१८॥  
 कर्णादिब्रह्मरन्ध्रान्तं नभोमण्डलसंज्ञि(ञ्ज) (त) कम् ।  
 पाञ्चभौतिकमित्येतच्छोधनं समुदाहृतम् ॥१९॥  
 गुदादिद्वयङ्गुलादूर्ध्वं(मे)ह्वा(द्वा)दिद्वयङ्गुलादतः ।  
 सुषुम्नामूलमन्त्रेण वा (?) दि चतुरस्ररैः ॥२०॥



विलसितकनकप्रभं पद्मं ध्यात्वा तत्र त्रिमुहतायां  
कुन्दकुण्डलिनीं गुणुप्रापतंभदपत्रभेदक्रमेण प्रदत्तं  
नीत्या तत्र कुम्भद्वयकर्णिकामध्यस्थितमंगूर्ण-  
गायत्री ओङ्कारमरूपपरमान्मनि शिखे लीनां कुर्यात् ।

पाशमायाद्गुरीर्षाञ्जप्रणवादिनमोज्ज्वलैः ।

प्राणायामं प्रकुर्यात् एवमष्टोत्तरं शतम् ॥२१॥

पञ्चपूजां प्रकुर्यात् स्यात्मनो हंसरूपिणः ।

सोऽहं भावेन युञ्जीयादाकाशाद्रविमंडले ॥२२॥

आकृष्य धारयेद्देवीं (प्राणस्थापन) प्राणस्थापनमाचरेत् ।

हृदिस्थजीवं चैतन्यं हंस इत्यक्षरद्वयम् ॥२३॥

सोऽहं भावेन संपूज्य पञ्चपूजातुसारतः ।

उक्तसंख्याप्रकारेण प्राणायामं समाचरेत् ॥२४॥

प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

ऋषयः कथितास्तस्य छन्दांसि निगमत्रयम् ॥२५॥

देवता प्राणशक्तिः श्याद्वीजं शक्तिश्च कीलकम् ।

पाशादित्रितयं प्राणस्थापने विनियुज्यते ॥२६॥

वीजराजं पाशबीजं चैतन्यं चाङ्कुशं तथा ।

हंसद्वयं ततः पश्चात्पञ्चाशद्दर्शनमन्त्रतः ॥२७॥

नादैस्संपुटितैः क्रमात् ।

वर्गैश्च यादिक्षान्तवर्गैः (स) नत्याभ्यां संपुटीकृतैः ।

पञ्चविंशतितत्त्वैश्च कराङ्गन्यासमाचरेत् ॥२८॥

प्रणवं प्राणशक्तिं च पाशमायाङ्कशानि च ।  
 तृतीयस्वरसंयुक्तं यादिद्धान्तं समुच्चरन् ॥२६॥  
 मम प्राणा इरात्यादि षड्विजायान्तमुचरेत् ।  
 पाशादिव्रित्तयं प्राणशक्तिं तारं समुच्चरन् ॥२७॥  
 इमं मन्त्रं सृष्ट्वा प्राणस्थापनमाचरेत् ।

॥ अङ्गन्यासः ॥

करेण हृदयं स्पृष्ट्वा गुरोराज्ञानुसारतः ।  
 जपेन्मन्त्रमिदं सम्यग्दशवारं यथाविधि ॥३१॥  
 स्वस्य शास्त्रोदितं प्राणसूक्तं चारत्रयं जपेत् ।  
 प्राणसूक्तं त्रिरावृत्त्या आद्यन्तं प्रणवं युतम् ॥३२॥  
 प्राणायामं प्रकुर्वीत पिण्डब्रह्माण्डसंयमे ।

मूलादित्रयान्तरन्ध्रान्तं प्रवालपद्मरागमयदण्डानुकारि-  
 णीम् अक्षण्डमुज्ज्वलन्तीं सविस्मयां अखिलदुरित-  
 तिमिरनिरस्तपटीयसीं ज्योतिर्मयीं त्रिपदां सतुरीय-  
 मन्त्रराजानुवर्तितेजः पुञ्जपञ्जरीकृतज्योतिर्मयस्व-  
 रूपिणीं वाचच्छ्वासस्पृशाशरीरदशासनं कुर्यात् ।  
 हकारं प्रणवो ह्येयः सकारं प्रकृतिस्तथा ॥३३॥  
 प्राणायामं प्रकुर्वीत मातृकावर्णकैः क्रमात् ।  
 करशुद्धिञ्च कर्तव्या पद्दोर्पस्वरसंयुतैः ॥३४॥  
 शृण्व्यादिपट्कं विन्यस्य कराङ्गन्यासमाचरेत् ।  
 शूर्पं मूर्ध्नि न्यसेत्पूर्वं मुखे ध्वन्द उदीरितम् ॥३५॥

देवता हृदि विन्यस्य नाभौ बीजमिति स्मृतम् ।  
 आधारे विन्यसेच्छक्तिः कीलकं पादयोर्न्यसेत् ॥३६॥  
 ऋषिर्ब्रह्मा समाख्यातो गायत्री ' ह्यन्द उच्यते ।  
 देवो वह्निर्मातृका स्याद्ब्रह्मो बीजानि च स्वरा ॥३७॥  
 शक्तयश्च समाख्याता नमः कीलकमुच्यते ।  
 द्वाभ्यां द्वाभ्यां हकारादिवर्णाभ्यां संपुटीकृतैः ॥३८॥  
 कादिवर्णैस्तत्त्वयुक्तैः कराङ्गन्यासमाचरेत् ।  
 त्रिलोकैर्दन्धनं ध्यानं योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥३९॥  
 पञ्चादशाक्षरविनिर्मितदेहयष्टि  
 कालेक्षणां दत्तहिमांशुकलाभिरामाम् ।  
 मुद्राक्षसूत्रमणिपुस्तकयोनि(ग)हस्तां  
 वर्णेश्वरीं नमत कुण्डहिमांशुगौरीम् ॥४०॥  
 फेरान्ते मुखमण्डले नयनयोः श्रोत्रद्वये नासयोः ।  
 दन्तौष्ठद्वयदन्तपङ्क्तियुगले गूढर्यासने तु स्वरात् ॥४१॥  
 दोः पद्मन्धितदमपाद्युगले पृष्ठे च नाभ्यन्तरे ।  
 यागर्गानपि सप्तधातुषु तथा प्राणेषु जातानि तु ॥४२॥  
 तनोऽन्तर्मातृकान्यामं कुर्याद्विध्युत्तर्गार्गतः ।  
 तान्त्रयेण कुर्यान् प्राणायामं समाहितः ॥४३॥  
 ऋषिरद्वन्द्वो देवता च बीजं शक्तिश्च कीलकम् ।  
 मन्त्रा च लिपिर्गायत्री तनोऽन्तर्मातृका मता ॥४४॥  
 वाग्वर्षं शक्तिर्वीजं च श्रीबीजं च त्रयं तथा ।  
 तान्त्रयमिति कथानं शक्त्या न्यामं समाचरेत् ॥४५॥

करन्यासं हृदिन्यासं कुर्यात्तारत्रयेण च ।  
अनुलोमविलोमाभ्यां त्रिलोकैर्बन्धनं दिशाम् ॥४६॥

॥ मुद्राः ॥

कृत्वा ध्यात्वा महायोनिमुद्रां सन्दर्शयेत्ततः ।  
पञ्चाशन्नित्तदेहजाश्वर भवैर्नानाविधैः कर्मभिः ॥४७॥  
वह्न्यैः पद्माक्ष(दा)नजनकैरङ्गैश्च संभाविताः ।  
साभिप्रायचिदर्धकर्मफलदानन्तैरसञ्जैरिदं ॥४८॥  
विश्यन्याप्यचिदात्मनाहमहमित्युज्जम्भसे मात्रके ।  
एवमुक्तविधानेन विन्यसेन्मातृकाद्वयम् ॥४९॥  
आवाहनादिभेदैश्च दश मुद्राः प्रदर्शयेत् ।  
आवाहनासने यो जुहुयाद्भविष्यं धृतसंयुतम् ॥५०॥  
अथवा तण्डुलेनापि नित्यकर्म समाचरेत् ।  
अनाज्ञातत्रयं कृत्वा गायत्रीदशकं जपेत् ॥५१॥  
प्रणवाद्यन्तमध्यस्थं होमान्ते च विधीयते ।  
चतुर्विंशतिवर्णानि जपेत् पारायणे मनुः( ५ ) ॥५२॥  
जपे पारायणे चैव युक्तं च विरलं क्रमान् ।  
चतुरश्वरसंयुक्तं कराङ्गन्यासमाचरेत् ॥५३॥  
सुर्यपादं विनान्यासमाद्यन्तं प्रणवैस्सह ।  
ध्याहृतित्रयमुच्चार्यगायत्रीचतुरश्वरम् ॥५४॥  
पुनर्याहृतिमुच्चार्य कराङ्गन्यासमाचरेत् ।  
। पादं पादं द्विभागं च प्रतिप्रणवसंयुटम् ॥५५॥

कगाङ्गनामसंयोगे षट्पदा त्रिपदा भवेत् ।  
 अष्टगुप्तादिचतुर्वर्गमनुलोमधमेण च ॥१६॥  
 हृदयादिचतुर्वर्गं क्रमेणैव विलोमता ।  
 चतुर्वर्गं विना यानु विपर्यासं न्यसेददि ॥१७॥  
 न विपत्तिं समाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ।  
 अस्त्राय फट्टिति न्यासमापादतलमस्तकम् ॥१८॥  
 पण्णवत्यात्मके देहे प्रकाशायं प्रचोदयान् ।  
 लोकत्रयेण दिग्बन्धं ततो मन्त्राः(न्)प्रदर्शयेत् ॥१९॥  
 हंससिंहासनं वह्निर्दिश्वयोनिस्तथैव च ।  
 खेचरी कुण्डलीकुण्डं सप्तव्याहृतिमुद्रिका ॥२०॥  
 सुमुखं संपुटं चैव विततं वित्तनं तथा ।  
 द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपञ्चमुखं तथा ॥२१॥  
 षण्मुखाधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा ।  
 शकटं यमपाशं च प्रथितं(चोन्मु)सम्मुखोन्मुखम् ॥२२॥  
 प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यकूर्मवराहकौ ।  
 सिंहाक्रान्तां महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥२३॥  
 एते मुद्राश्चतुर्विंशो गायत्री सुप्रतिष्ठिता ।  
 इति मुद्रां न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥२४॥  
 ध्यानं मुक्ताविद्रुम हेमनीलधवलच्छायैर्मुखैः—भजे ।  
 तारं तुर्यपादं चोक्त्वा बीजशक्तिं च कीलकम् ॥२५॥  
 त्रीणि त्रीणि त्रिधाप्रोक्तं क्रमादृष्यादिकं न्यसेत् ।  
 पूर्णगायत्रिसा देव्याः प्रसादे विनियुज्यते ॥२६॥

वीजशक्त्यादिकीलानां अनुलोमविलोमतः ।  
 आदौ प्रणवसंयुक्तं कराङ्गन्यासमाचरेत् ॥६७॥  
 प्रणवान्तस्त्रिलोकैश्च कुर्याद्दिग्बन्धनं ततः ।  
 ध्यानं - यद्देवास्सुरपूजितारुणनिभं हेमार्कतारागणैः  
 पुत्रागाग्भुजनागपुष्पवकुलैः (वासा) दिभिः पूजितम् ।  
 नित्यं घातुसमस्तदीप्तिकरणं कालाग्निहोपमं,  
 तत्संहारकरं नमामि सततं पातालपट्टं मुखम् ।  
 शिखायोनिर्महायोगी सुरक्षाप्युपमस्तनि (के) ।  
 लिङ्गमुद्रामहामुद्राञ्जलिरित्यष्टमुद्रिका ॥६८॥  
 प्रातर्मध्याह्नकाले तु तुर्यपादं दशांशकम् ।  
 सायंकाले चतुष्पादसहितं जपमाचरेत् ॥६९॥  
 सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शङ्खोऽथपङ्कजम् ।  
 लिङ्गं निर्वाणमुद्राऽष्टौ जपान्ते परिकल्पयेत् ॥७०॥

चक्रे - अत्र मन्थपातः क्रमान् ।

शुक्लासोक्तेन विधिना योगे तु विलोमतः ।  
 विना प्रयोगज्ञाप्ये तु अनुलोम न विद्यते ॥७१॥

इति विष्णुसहस्रनामस्तोत्रे

नामपञ्चोऽध्यायः

१

## अथ सप्तमोऽध्यायः

उपस्थानविधिवर्णनम्

॥ उपस्थानम् ॥

अथातरसंप्रवक्ष्यामि उपस्थानविधिं क्रमान् ।  
ऋक्शास्त्रोक्तेन विधिना जातवेदस इत्युचम् ॥ १ ॥  
प्रातःकाले च सायाह्ने जपेच्चेत्युक्तमार्गतः ।  
मध्याह्ने च पृथक्सन्ध्या योदित्यं जातवेदसम् ॥ २ ॥  
सहस्रपरमां देवीं मध्याह्ने च जले द्विजः ।  
सूर्यावलोकनं कुर्वन् दुर्गोपस्थानमाचरेत् ॥ ३ ॥  
सायाह्ने सूर्यमालोक्य दद्यादर्घ्यंचतुष्टयम् ।  
ऋक्षप्रकाशपर्यन्तं जपेदेवं चतुष्पदाम् ॥ ४ ॥  
जातवेदस इत्येषां प्रातस्सायमृचं जपेत् ।  
जलान्ते विधिवत्कुर्यात् उपस्थानं समाहितः ॥ ५ ॥  
हंसमन्त्रं समुच्चार्य गायत्री त्रिपदां वदन् ।  
अर्घ्यमेकं तु मध्याह्ने ऋग्यजुस्तामवेदिनाम् ॥ ६ ॥  
प्रायश्चित्तं द्वितीयार्घ्यं असुराणां वधाय च ।  
अर्घ्यद्वयं तु मध्याह्ने सर्वेषामेवमेव हि ॥ ७ ॥  
अर्घ्यप्रदानात्परतो गायत्री पूर्ववज्जपेत् ।  
आवर्तनं गते सूर्ये उपस्थानं समाचरेत् ॥ ८ ॥  
उदित्यमिति मन्त्रेण ऋक्शास्त्रोक्तविधिक्रमात् ।  
मर्ष्यदिने रविध्याने प्रातस्सायाह्नेवद्भवेत् ॥ ९ ॥

कृत्वा माध्याह्निकीं सन्ध्यां त्रयोदशघटीपरम् ।  
 आवर्तनान्तं प्रजपेदुपस्थानं ततः परम् ॥१०॥  
 नित्यं जाप्यं विना यस्तु उपस्थानं करोति चेत् ।  
 सौरमन्त्रैश्च सकलैः गायत्रीजपपूर्वकम् ॥११॥  
 प्रत्यगासूर्यमालोक्य उपस्थानं समाचरेत् ।  
 उदयेऽस्तमये जप्त्वा दुर्गोपस्थानमाचरेत् ॥१२॥  
 मध्यन्दिने जपान्ते च सूर्योपस्थानमाचरेत् ।  
 आश्वलायनगृह्योक्तमृग्यजुस्सामशास्त्रिणाम् ॥१३॥  
 जपोपस्थानयोरन्ते सौरं पश्चात्वनं यजेत् ।

प्रभान्तमुद्यत्प्रतिभास्यमानो

विम्बं समालोक्य कृतोदितो वदेत् ।

मन्त्रस्य चार्पादिऋचं च याजुषैः

शास्त्रान्तरोक्तास्तु(समु) उपासनीयाः ॥१४॥

त्रिपदाजपसाद्गुण्यं तुर्याजाप्यं दशाशकम् ।

तुर्यपादं विना जाप्यं कुरुते निष्फलं भवेत् ॥१५॥

मित्रस्य चर्षणीमन्त्रं याजुषोपासनकम् ।

प्रातर्जपान्ते गायत्र्याः सूर्योपस्थानमाचरेत् ॥१६॥

आसत्येनेति मन्त्रेण पङ्क्तोक्तविधानतः ।

मध्यन्दिने रवि ष्यायेजपान्ते विधिबलकम् ॥१७॥

सायं भानोरस्तमयाद्द्विघटी कर्मसंयमे ।

ऋगप्रकारापर्यन्तं जपन् देवी मनोहराम् ॥१८॥



सुप्तं गृहं समान्दोषय दिगुपस्थानमाचरेत् ।  
 सूक्तं यागमगमले च इमंमादि पठेन्मनुम् ॥६॥  
 प्रियासूक्तं समुपायं देवीं ध्यायेत्तुष्टम् ।  
 पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य गायत्रीं सुर्यया सह ॥७॥  
 इति विश्वामित्रस्मृतौ उपाधानं नाम  
 सप्तमोऽध्यायः ।

## अथ अष्टमोऽध्यायः

देवयज्ञादिविधानवर्णनम्

॥ वैश्वदेवम् ॥

देवयज्ञादिकं वक्ष्ये गृहोक्तविधिना ततः ।  
 कोद्रवान्मासुरान्मापान् मसूरांश्चकुलुत्थजान् ॥ १ ॥  
 लवणं च कटुद्रव्यं वैश्वदेवे विवर्जयेत् ।  
 नीवारान्वंशजं धान्यं गोधूमान् तण्डुलास्तदा ॥ २ ॥  
 कन्दमूलफलादीनि दधिक्षीरघृतादिकम् ।  
 प्रत्यहं वैश्वदेवायं कुर्यान्नित्यमतन्द्रितः ॥ ३ ॥  
 गृहस्थो वैश्वदेवस्य कर्म प्रारभते यदा ।  
 गृहे सिद्धान्नमादाय दधिक्षीरघृतान्वितम् ॥ ४ ॥  
 जपासने स्वकार्यायं सर्वेभ्यः पचने द्विजः ।  
 यो हि यत्तद्गुणेदमौ गायत्रीमंत्रपूर्वकम् ॥ ५ ॥

दिवा सूर्याय रात्रौ चेदमये च हुवेद्विः ।  
 प्रजापतय इत्येकामुभयोराहुति हुनेत्(?) ॥ ६ ॥  
 प्रणवव्याहृतिभिश्च हुत्वामन्त्रैः स्वशास्त्रिभिः ।  
 भूतेभ्यश्चघलिदद्यात् ॥ ७ ॥  
 आयुष्कामो दिवारात्रौ शूपाकारं बलि हरेत्  
 मृत्युरोगविनाशार्थं नराकारं बलि हरेत् ॥ ८ ॥  
 काम्ये कर्मणि वायवे च बलि बल्मीकवद्वरेत् ।  
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रान्पौत्रान्पशून् च यः ॥ ९ ॥  
 काङ्क्षते स च मोक्षार्थं चक्राकारं बलि हरेत् ।  
 धर्मार्थकाममोक्षार्थं व्यजने च बलि हरेत् ॥ १० ॥  
 पञ्चदैतेषु विप्राणां मुख्यमेतच्चतुर्थकम् ।  
 प्रथमं चोपवीतं स्याद्द्वितीयं च निर्वीतिकम् ॥ ११ ॥  
 तृतीयं पितृमेधार्थं वैश्वदेवे विधीयते ।  
 तण्डुलोदकसंयुक्तं पाकं कुर्याद्विशेषतः ॥ १२ ॥  
 तप्तोदकस्य मध्ये तु तण्डुलं नैव पाचयेत् ।  
 तप्तोदकस्य मध्ये तु तण्डुलं पाचयेद्यदि ॥ १३ ॥  
 तण्डुलं गरलं क्षेयं तुल्यं गोमांसभक्षणम् ।  
 अन्नं पर्युषितं भोज्यं स्नेहाक्तं चिरसंस्थितम् ॥ १४ ॥  
 अस्नेहा अपि गोधूमा यवा गोरसमिश्रिताः ।  
 पाकमध्ये घृतं दत्त्वा पाकादुत्तार्य यन्नतः ॥ १५ ॥  
 तस्योपरि घृतं क्षिप्त्वा भागान् कुर्याद्विशेषतः ।  
 यज्ञार्थं देवपूजार्थं विप्रार्थं बलिकर्मणि ॥ १६ ॥

पृथक्पाकं न कुर्यात् वैश्वदेवे विद्वेजः ।  
 हविष्यान्नं कुरीः कार्यं पञ्चमाणाद्भिर्जातम् ॥११॥  
 अभिषार्य च तान् भागान् पूर्वं परवाद्गुणेन च ।  
 प्राणायामान्प्रकुर्यात् पञ्चभूजापुग्मरम् ॥१२॥  
 देशकालौ च संकीर्त्य ततः कर्म समाचरेत् ।  
 पद्भिराग्नीः प्रनिमन्त्रं हस्तेन जुहुयात्ततः ॥१३॥  
 मनःस्था(ग्नि)स्थिरा कृत्वा न्ययं ज्ञानाग्निनापचेत् ।  
 स्वयमनिरतो यस्तु स्वयंपाकी स उच्यते ॥१४॥  
 अमन्त्रं वा समन्त्रं वा वैश्वदेवं न सन्त्यजेत् ।  
 वैश्वदेवस्य करणादन्नदोषैर्न लिप्यते ॥१५॥  
 प्रातर्मध्याह्नकाले च होमं कुर्याद्यथाविधि ।  
 सायंकाले तथा कुर्याद्द्विष्यं तण्डुलं द्विधा ॥१६॥  
 विधाय प्रत्यहं पाकं हुत्वा देवार्पणं हविः ।  
 हुत्वा दत्त्वा च यो भुङ्क्ते स्वयंपाकी स उच्यते ॥१७॥  
 पञ्चसूनापनुत्त्यर्थं प्रायश्चित्ते हुनेद्द्विषिः ।  
 पवित्रमन्यं (न्नं) तज्जातं नास्ति चेद्पवित्रता ॥१८॥  
 एकपार्श्वेद्विधा होमौ न कुर्याद्द्वैश्वदेविकम् ।  
 कदाचित्कुरुते यस्तु उपोष्य व्रतमाचरेत् ॥१९॥  
 परेऽहनि समुत्थाय स्नानं कृत्वा यथाविधि ।  
 पाकं कुर्याद्विधानेन होमं कुर्यात्पडक्षरैः ॥२०॥  
 भूभुर्वस्तुचरित्येतैः हुनेत्प्रणवपूर्वकम् ।  
 अष्टोत्तरशतं चैव स्वसूत्रोक्तविधानतः ॥२१॥

वैश्वदेवं ततः कुर्यात्क्रमेणैव यथाविधि ।  
 बलिदानं ततः कुर्यात्प्रायश्चित्तं विधीयते ॥२८॥  
 सूक्तद्वयसंप्राप्तौ नित्यहोमं परित्यजेत् ।  
 पारायणं प्रकुर्वीत वाचकोषशुर्वर्जितम् ॥२९॥  
 एकादशोऽह्नि संप्राप्ते पृथक्पाकं प्रकल्पयेत् ।  
 वैश्वदेवं प्रकुर्वीत बलिकर्म यथाविधि ॥३०॥  
 प्रेतश्राद्धे पृथक्पाकं वैश्वदेवं समाचरेत् ।  
 क्षये दर्शं च पक्षे च एकपाको विधीयते ॥३१॥  
 प्रेतश्राद्धे विना येन पृथक्पाकः कृतो यदि ।  
 राक्षसाः प्रतिगृह्णन्ति पाककर्ता पतत्यधः ॥३२॥  
 वैश्वदेवप्र(करणस्य) कालस्यात्र विनिर्णयम् ।  
 सूर्योदयं समारभ्य घटिका.स्युश्चतुर्दश ॥३३॥  
 घटिका पञ्चदश च षोडश स्युः ततः परम् ।  
 तत्तरसप्तदश प्रोक्ताः ततश्चाष्टादश स्मृताः ॥३४॥  
 सद्गमान्ते ब्रह्मयज्ञं कुर्यात्तनानपुरास्मरम् ।  
 मध्यसन्ध्यां तर्पणं च वैश्वदेवमिति प्रमान् ॥३५॥  
 मध्यकाले तु मध्याह्ने दक्षिणायनतो रर्षी ।  
 वैश्वदेवं प्रकुर्वीत मध्यकालात् पूर्वतः ॥३६॥  
 मध्याह्नान्ते वैश्वदेवं घटिकानवकात्परम् ।  
 उत्तरायणने सूर्ये वैश्वदेवं समाचरेत् ॥३७॥  
 पतुर्दशपटीभ्यस्तु मार्गण्डस्योदयावधि ।  
 परहस्तर्पणं कृत्वा वैश्वदेवं समाचरेत् ॥३८॥

शृगुप्रगाल्यविधिना दक्षिणोत्तरमार्गयोः ।  
 मृषोदयं ममारभ्य षट्शिकाद्दशष्टहात्परम् ॥४३॥  
 तपणान्नोत्थय विधिना वैश्वदेवं ममानेन ।  
 योगिना वैश्वदेवाय कालनिर्णय उच्यते ॥४४॥  
 याममध्ये न होदध्यं यामयुग्मं न लघुयेन ।  
 योगिना वैश्वदेवाय काल एव उदाहृतः ॥४५॥  
 अन्यथा यस्तु कुर्वते योगी भ्रष्टोऽभिजायते ।  
 योगिना वैश्वदेवस्य मुख्यो विधिरुदहृतः ॥४६॥  
 बलिक्रियां समुत्सृज्य कुर्यान्नित्यं पडाहुतिम् ।  
 नान्तर्दलिक्रियां कुर्याद्वाह्य एको बलि स्मृतः ॥४७॥  
 पद्भिराद्यैर्हुनेदन्नं इति कौपातफिस्मृतः ।  
 तस्माद्घुनेद्विधानेन वैश्वदेवं श्रुतीरितम् ॥४८॥  
 वैश्वदेवस्याकरणादोषं भिक्षुर्व्यपोहति ।  
 भिक्षोर्नदानं दोषं तु वैश्वदेवं व्यपोहति ॥४९॥  
 अकृत्वा वैश्वदेवं तु भिक्षो भिक्षार्थमागते ।  
 उद्धृत्य वैश्वदेवार्थं भिक्षां दत्त्वा विसर्जयेत् ॥५०॥  
 काष्ठभारगतेनापि घृतकुम्भशतेन च ।  
 अतिथिर्यस्य भद्राशात्तस्य होमो निर्दकः ॥५१॥  
 दूरादतिथयो यस्य गृहं प्राप्य सुतोपिताः ।  
 सदगृहस्थ इति प्रोक्तरशोपाः स्तुर्गृहरक्षकाः ॥५२॥  
 वैश्वदेवं विना पाको यस्तु सप्रत्यनामकः ।  
 तं पाकं ब्राह्मणो भुङ्क्ते स सद्यः पतितो भवेत् ॥५३॥

वैश्वदेवाकृतादोपाच्छक्तो भिक्षुर्व्यपीहितुम् ।  
 पादुकायोगपट्टं च पवित्रं चित्रकन्वलम् ॥५०॥  
 स्वाहां स्वधां वैश्वदेवे तर्जन्यां रजतं तथा ।  
 वज्रयैज्जीवपितृकः कुर्यान्नित्यं पडाहुतीः ॥५१॥  
 यदि पित्रा समाज्ञप्तो वैश्वदेवं समाचरेत् ।  
 असंस्कृतान्ननैवेद्यं स्थावरेषु गृहेषु च ॥५२॥  
 स्वाहाकारं विना यस्तु कुरुते ब्रह्मराक्षसः ।  
 चराचरादिदेवानां हविष्यान्नं निवेदयेत् ॥५३॥  
 पञ्चसूनापनुत्त्यर्थं वैश्वदेवं विधाय च ।  
 पञ्चसूनापनुत्त्यर्थं प्रायश्चित्तं हुनेद्धविः ॥५४॥  
 तत्परं देवताभ्यस्तु नैवेद्यं परिकल्पयेत् ।  
 वैश्वदेवार्पणं येन द्विजदेवार्पणं हविः ॥५५॥  
 कुर्वन्ति ते महापापास्तद्धविः किमिसङ्कुलम् ।  
 रण्डावन्ध्याकृतः पाको वधिरामूकयोस्तथा ॥५६॥  
 निष्फलायाश्च गुर्विण्या न भोक्तव्यं कदाचन ।  
 रण्डापञ्चविधं ज्ञात्वा प्रयत्नेन परित्यजेत् ॥५७॥  
 श्मशाने चितिसंयुक्ते प्रज्वाल्याभीष्टकाष्ठवत् ।  
 कन्या बंधव्यमापन्ना वीरेत्याचक्षते सुभैः ॥५८॥  
 रोहिणी विधवा भर्ता सा रण्डेत्यभिधीयते ।  
 दुर्भगा दशवर्षा या सा कन्या समुदीरिता ॥५९॥  
 रजसः परतरसा तु यातुकी विधवा भवेत् ।  
 असन्ततिश्च या नारी सा रण्डेत्यभिधीयते ॥६०॥

नानाभावाः प्रयत्नेन रण्डापाकं परित्यजेत् ।  
 वीररण्डा कुण्डरण्डा घालपुत्राह्यपुत्रिणी ॥६१॥  
 तासां पाको न भोक्तव्यो भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ।  
 अस्नाता विधवा चण्डी पक्काशी माससूतकी ॥६२॥  
 पञ्चपकान्त्यजेद्विप्रः तत्प्रेष्यं च परित्यजेत् ।  
 पाकं कृत्वा प्रयत्नेन ह्यभुक्त्वा भोजने विपम् ॥६३॥  
 रण्डापाकं महापापं वैश्वदेवे परित्यजेत् ।  
 नाहुतं पाकमश्रीयादनेवेद्यं स मन्यते ॥६४॥  
 रण्डापाकं विषं क्रूरं अहुत्वान्नं तथा विपम् ।  
 द्विविधं यन्त्रसंयुक्तं तदन्नं कालकूटकम्  
 नाना भावैः प्रयत्नेन रण्डापाकं परित्यजेत् ।  
 प्रमादात्प्राप्यते चान्नं प्राणायामाश्चतुर्दश ॥६५॥  
 कुर्यात्कुम्भकमार्गेण न्यासध्यानपुरस्सरम् ।  
 मन्त्रराजद्विविभागं प्रथमं वैश्वदेविकम् ॥६६॥  
 कृत्वा श्राद्धं प्रकुर्वीत नित्यनेमित्तिकं चरेत् ।  
 श्राद्धाग्नौ करणात्पूर्वं वैश्वदेवं विधाय च ॥६७॥  
 ततोऽग्नौ करणं कुर्यादन्यथा श्राद्धघातकः ।  
 वैश्वदेवं पिना यस्तु श्राद्धकर्म समाचरेत् ॥६८॥  
 कृत्वा श्राद्धं भवेत्तत्र रौरवं नरकं प्रजेत् ।  
 नित्यनेमित्तिके श्राद्धे पवन्याः चान्नं प्रयत्नतः ॥६९॥  
 ततोऽग्नौ प्रकुर्वीत श्राद्धणान् भोजयेत्ततः ।  
 यदग्नौ करणं कुर्याद्वैश्वदेवपुण्यम् ॥७०॥

ब्रह्मापणं हविस्तत्स्यात्पितृणां दत्तमक्षयम् ।  
 देवेभ्यश्च पितृभ्यश्च ऋषिभ्यश्च तथा हविः ॥७२॥  
 आदौ बह्निमुखे दत्तं तृप्त्यै भवति नान्यथा ।  
 यस्त्वामौ न हृतं चान्नं दैवे पित्र्ये प्रयच्छति ॥७३॥  
 गोत्रपान्नं भवत्येव वृथा श्राद्धं न संशयः ।  
 नित्यश्राद्धे गयाश्राद्धे तीर्थश्राद्धे तथैव च ॥७४॥  
 वैश्वदेवं हुनेदादौ ततः श्राद्धं समाचरेत् ।  
 स्वाहाकारेण हुत्वादौ स्वधाकारेण वै ततः ॥७५॥  
 एवं होमत्रयं कृत्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ।  
 वैश्वदेवविषये :—

हविष्यमन्नं घृतसङ्कुलं च

बह्वी समांशं जुहुयात्त्रियामम् ।

द्वयोत्तरं त्रिजति(?) युग्मसंज्ञं

ओंङ्कारमादौ प्रतिमन्त्रयुक्तम् ॥७६॥

रसयुक्तं हविष्यं स्याद्घृतयुक्तं तथो(शौ)दनम् ।

प्राहणो वैश्वदेवार्थं कुर्यान्नित्यमतन्द्रितः ॥७७॥

अन्यस्य चेद्रसं त्यक्त्वा वैश्वदेवं करोति यः ।

देवेभ्यश्शापमाप्नोति दरिद्रो भवति भ्रुषम् ॥७८॥

सुपकं रससंयुक्तं राजान्नं घृतसंयुतम् ।

सहविष्यमिति ज्ञातं सुभ्रीतास्त्रिदशादशः ॥७९॥

पर्वद्वये समायोगे ।

श्राद्धान्ते वैश्वदेवार्थं पाकं कृत्वामयन्नतः ॥८०॥



हुत्वा दत्त्वा च भुक्त्वा च द्विजश्यान्द्रायणं चरेत् ।  
 देवानां च ऋषीणां च पितॄणां च विशेषतः ॥८१॥  
 पर्यायेण प्रदातव्यं श्राद्धकाले हविर्द्विजैः ।  
 देवर्षिपितृतुष्ट्यर्थमेकपाको विधीयते ॥८२॥  
 पृथक्पाको न कर्तव्यः कृतश्चेत्पतितो भवेत् ।  
 अहृत्यान्नं तु नैवेद्यं यः कुर्यात्किमिसङ्कलम् ॥८३॥  
 होमं कृत्वा प्रयत्नेन वैश्वदेवं प्रकल्पयेत् ।  
 इति विश्वामित्रस्मृतौ वैश्वदेव प्रकरणं नाम  
 सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ।



- ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
- ॥३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥३३॥ महेन्द्रोपनिषत्सु ॥ ॥३३॥  
॥३३॥ ॥३३॥ ॥३३॥ ॥३३॥

॥३४॥ ॥३४॥ ॥३४॥ ॥३४॥

॥३५॥ ॥३५॥ ॥३५॥ ॥३५॥

॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥

॥३७॥ ॥३७॥ ॥३७॥ ॥३७॥

॥३८॥ ॥३८॥ ॥३८॥ ॥३८॥

॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥

॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥

॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥

॥ अथोपनिषत्सु ॥

॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥

॥३१॥ :युक्ताय ॥३१॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३२॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३२॥  
 : सः ॥  
 ॥३३॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३३॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३४॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३४॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३५॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३५॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३६॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३६॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३७॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३७॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३८॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३८॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥३९॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥३९॥  
 : श्रुतिसंज्ञायाः ।  
 ॥४०॥ श्रुतिसंज्ञायाः ॥४०॥



॥७॥ मन्त्रं कुरु ॥७॥

। मन्त्रं कुरु ॥७॥

॥८॥ मन्त्रं कुरु ॥८॥

। मन्त्रं कुरु ॥८॥

॥९॥ मन्त्रं कुरु ॥९॥

। मन्त्रं कुरु ॥९॥

॥१०॥ मन्त्रं कुरु ॥१०॥

। मन्त्रं कुरु ॥१०॥

॥११॥ मन्त्रं कुरु ॥११॥

। मन्त्रं कुरु ॥११॥

॥१२॥ मन्त्रं कुरु ॥१२॥

। मन्त्रं कुरु ॥१२॥

॥१३॥ मन्त्रं कुरु ॥१३॥

। मन्त्रं कुरु ॥१३॥

॥१४॥ मन्त्रं कुरु ॥१४॥

। मन्त्रं कुरु ॥१४॥

॥१५॥ मन्त्रं कुरु ॥१५॥

। मन्त्रं कुरु ॥१५॥

॥१६॥ मन्त्रं कुरु ॥१६॥

। मन्त्रं कुरु ॥१६॥

॥१७॥ मन्त्रं कुरु ॥१७॥

। मन्त्रं कुरु ॥१७॥







॥१०१॥ अ वृष्टिं वृष्टिपुत्रोऽपि व ॥१०१॥

सुं धमं धमपुत्रः ॥ सकारोऽपि वृष्टिः ।

॥१०२॥ ॥१०२॥ सः ॥ सः ॥ सः ॥ सः ॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०३॥ ॥१०३॥ ॥१०३॥ ॥१०३॥ ॥१०३॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०४॥ ॥१०४॥ ॥१०४॥ ॥१०४॥ ॥१०४॥

॥ वृष्टिपुत्रः ॥ वृष्टिपुत्रः ॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०५॥ ॥१०५॥ ॥१०५॥ ॥१०५॥ ॥१०५॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०६॥ ॥१०६॥ ॥१०६॥ ॥१०६॥ ॥१०६॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०७॥ ॥१०७॥ ॥१०७॥ ॥१०७॥ ॥१०७॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०८॥ ॥१०८॥ ॥१०८॥ ॥१०८॥ ॥१०८॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१०९॥ ॥१०९॥ ॥१०९॥ ॥१०९॥ ॥१०९॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥११०॥ ॥११०॥ ॥११०॥ ॥११०॥ ॥११०॥

वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रोऽपि वृष्टिपुत्रः ।

॥१११॥ ॥१११॥ ॥१११॥ ॥१११॥ ॥१११॥









॥७१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७१ ॥  
 ॥७२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७२ ॥  
 ॥७३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७३ ॥  
 ॥७४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७४ ॥  
 ॥७५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७५ ॥  
 ॥७६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७६ ॥  
 ॥७७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७७ ॥  
 ॥७८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७८ ॥  
 ॥७९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७९ ॥  
 ॥८०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८० ॥  
 ॥८१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८१ ॥  
 ॥८२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८२ ॥  
 ॥८३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८३ ॥  
 ॥८४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८४ ॥  
 ॥८५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८५ ॥  
 ॥८६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८६ ॥  
 ॥८७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८७ ॥  
 ॥८८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८८ ॥  
 ॥८९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८९ ॥  
 ॥९०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९० ॥

॥१३३॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३३ ॥  
 ॥१३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३४ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३४ ॥  
 ॥१३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३५ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३५ ॥  
 ॥१३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३६ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३६ ॥  
 ॥१३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३७ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३७ ॥  
 ॥१३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३८ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३८ ॥  
 ॥१३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३९ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३९ ॥  
 ॥१४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४० ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४० ॥



॥७८॥ सवितृषु शशिपतिर्निर्दिष्टा ॥७८॥

वन्माता पतिता परवाणस्य कस्य विवाहिता ।

॥७९॥ सौम्यं स्याद्विषयं तन्निमित्तं ॥७९॥

प्रकारान्तरतः प्रकः सौं कर्तव्यं यं सुखम् ।

॥८०॥ कानि नैति विज्ञातः पुनश्चायं तथा परः ॥८०॥

शक्यं कर्तव्यं यथाः सा प्रसवे यं सुखम् ।

॥८१॥ विवाहितानि विदुषा हि कथा वृं यथा कस्यचित् ॥८१॥

गम्युर्वेद्यं तन्निमित्तं यथा स्यात् ॥८२॥

॥८३॥ या विवाहोपर्यन्तं चारुतः किञ्च ॥८३॥

वन्मातापत्यं हि विवाहं यं कथ्यते ।

॥८४॥ विदुषां सुखं कथयः पाण्डवः सः ॥८४॥

विवाहात् सौख्यं यथा स्यात् ॥८५॥

॥८६॥ प्रसवे यं सुखं सौम्यं सुखं सुखं यथा ॥८६॥

यथा कथितं यथा स्यात् ॥८७॥

॥८८॥ सविमान्वाप्यदिना सुखं सौम्यं सुखं ॥८८॥

सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥८९॥

॥९०॥ सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥९०॥

॥९१॥ सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥९१॥

॥९२॥ सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥९२॥

॥ सौम्यं सुखं ॥

॥९३॥ सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥९३॥

॥९४॥ सौम्यं सुखं यथा स्यात् ॥९४॥



॥१८८॥ सुखादेनहीजायः महात्मायुक्तस्यतः ॥१८८॥  
 न पृथुः निखिलः ज्ञानः सैवकारुण्येणतः ।  
 ॥१८९॥ भादृक्का सृष्टिर्वा यः सौमित्रं वृत्तिरिवः ॥१८९॥  
 प्रियया यत्समुत्थितः भादृगोपसमुत्थितः ।  
 ॥१९०॥ हेतुपक्षकनिजः प्रोक्तं कथनस्यैवः ॥१९०॥  
 अयोरप्यसौ प्रियया निजदत्ता न यतः ।  
 ॥१९१॥ अयुक्तं पश्येत् प्रियानोत्पत्तिरस्यैवः ॥१९१॥  
 तस्मिन्नेव न वाच्येत्प्रयोजनकारकः ।  
 ॥१९२॥ अविद्यया स चण्डालादपि कोऽप्यज्ञेय एव सः ॥१९२॥  
 स कारुण्यः पुत्रोऽपि स्यान्न स मुदमेव ।  
 ॥१९३॥ मामुत्पन्नोऽहं हृदिः प्रियया भक्तमदः ॥१९३॥  
 सृष्टेः सत्प्रमाण्यः पुत्रः द्यास्तुक्तनिष्ठैवः ।  
 ॥१९४॥ सत्प्रवृत्तयि दत्तात्मा स्योपपत्तः सत्तः ॥१९४॥  
 सत्प्रवृत्तयः कथितः पुत्रः कथितस्यैविकः ।  
 ॥१९५॥ प्रियामहेन वयन्त्या तथा मामामहेन च ॥१९५॥  
 निवृत्तेन ज्येष्ठेन प्रियेक्षेण सद्यैव च ।  
 ॥१९६॥ प्रियैवः कथितप्रवृत्तं प्रियया वादृशैरपि ॥१९६॥  
 वदन्नेविकनरवापि अविनोनापि करणतः ।  
 ॥१९७॥ वानपश्यत्सद्यैव विपनीतैः कथं चन ॥१९७॥  
 प्रियया वापि करः दत्तात्पश्येत्प्रियं वा ।  
 ॥१९८॥ अकथयत्सद्यैव विपनीतयैव वा तथा ॥१९८॥  
 दत्तप्रवृत्तं वाच्यं यत्तदा अविद्ययाः ।  
 ॥१९९॥ प्रियया वा दत्तप्रवृत्तं वाच्यं विपनीतयैव वा ॥१९९॥



॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥३॥ ... ॥३॥

॥१॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१॥  
 ॥२॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥२॥  
 ॥३॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥३॥  
 ॥४॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥४॥  
 ॥५॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥५॥  
 ॥६॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥६॥  
 ॥७॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥७॥  
 ॥८॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥८॥  
 ॥९॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥९॥  
 ॥१०॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१०॥  
 ॥११॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥११॥  
 ॥१२॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१२॥  
 ॥१३॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१३॥  
 ॥१४॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१४॥  
 ॥१५॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१५॥  
 ॥१६॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१६॥  
 ॥१७॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१७॥  
 ॥१८॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१८॥  
 ॥१९॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥१९॥  
 ॥२०॥ अथ न्यायकथासामुदायविशेषकम् ॥२०॥







॥३२३॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२४॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२५॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२६॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२७॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२८॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३२९॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३०॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३१॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३२॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३३॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३४॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३५॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३६॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३७॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३८॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३३९॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३४०॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३४१॥ ॥... ॥  
 । ... ॥  
 ॥३४२॥ ॥... ॥  
 । ... ॥

॥१६॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥१७॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
 ॥१८॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥१९॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२०॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२१॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२२॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२३॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२४॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२५॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२६॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२७॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२८॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥२९॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥  
 ॥३०॥ अथ अष्टोत्तशोऽध्यायः ॥

॥३३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥

॥३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३४ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३४ ॥

॥३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

॥३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३६ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३६ ॥

॥३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३७ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३७ ॥

॥३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८ ॥

॥३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥

॥४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४० ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४० ॥

॥४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४१ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४१ ॥

॥४२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४२ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४२ ॥

॥४३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४३ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४३ ॥

॥१०॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥११॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१२॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१३॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१४॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१५॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१६॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१७॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१८॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥१९॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥  
 ॥२०॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायः समाप्तः ॥



॥३३॥ मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ( ॐ ) ॥

॥३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अदिमात्रं च तदन्वयः अत्रि र्गोत्तं कर्त्तुं हि ॥३०३॥

लौकिकानां आदिमात्रं तद्विषयं तद्विषयं तदा ।

कृते कायप्रदेशप्रत्यक्षप्रतिबन्धनं तदाः ॥३०४॥

तद्विषयः तदा तदा वा तदा तदा तदा तदा ।

कृते वा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३०५॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३०६॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३०७॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३०८॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३०९॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

॥ तदा तदा तदा ॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३१०॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३११॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ॥३१२॥

तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा तदा ।

॥३१॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥३२॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३३॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३४॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३५॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३६॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३७॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३८॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥३९॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४०॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४१॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४२॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४३॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४४॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४५॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४६॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४७॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४८॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥४९॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥  
 ॥५०॥ अथ अष्टोत्तशतिकाः ॥





॥३३॥ प्रविष्टो वा द्रोणी वा द्रोणिकस्य विप्रोत्थ ॥३३॥  
 ॥३४॥ निष्करोत् यथा मोक्षसिद्धयर्थे हि कृतम् ।  
 ॥३५॥ यथासा कान्तिर्वाप्यस्यैवात्मानोऽपि ॥३५॥  
 ॥३६॥ तद्वत्मानं विद्या द्रोणस्य वचसा ज्ञानोत्तमा ।  
 ॥३७॥ तमेव वीर्यं वीरिणं विभक्तव्यो विभक्तियः ॥३७॥  
 ॥३८॥ धर्मोऽयं कुरुस्यस्य । ॥३८॥  
 ॥३९॥ विद्विषोऽपि सती द्रोणी वीरिणोऽयमकरोत् ॥३९॥  
 ॥४०॥ वातगोत्रेषु विद्वेष एव स विद्विषो मयाः ।  
 ॥४१॥ कथयकायाः मद्रसायाः वनयो वृद्धिः एतः ॥४१॥  
 ॥४२॥ एतान् विप्रान् कुरुक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे ॥४२॥  
 ॥४३॥ गोत्रेषु च सहेमासु विद्याद्वेषिषु कुरुषु ॥४३॥  
 ॥४४॥ अथ गोत्रेषु द्वेषं तद्वदस्य ततः परम् ।  
 ॥४५॥ गुणयो वीरिणोऽयन्तः स नो गुणो भविष्यति ॥४५॥  
 ॥४६॥ अत्रुजोऽहं मदीयानि गुणं कल्पं भवानि ।  
 ॥४७॥ मद्रस्यन्तरेणवन्तः वीरिणः कौन्तिपुत्रवत् ॥४७॥  
 ॥४८॥ एतं विप्रोऽपि विद्वेषः कान्तिमान् च कुरुषु ।  
 ॥४९॥ असां यो जायते एतः स मे गुणो भविष्यति ॥४९॥  
 ॥५०॥ अत्रुजोऽहं मदीयानि गुणं कल्पमहं कुरुषु ।  
 ॥५१॥ अथ एतं वीरं योऽप्युपगच्छति ॥५१॥  
 ॥५२॥ कथयामि तस्यैव भावान्तरं वै ।  
 ॥५३॥ विद्विषोऽपि विद्वेषः तमेव मदीयानि च ॥५३॥  
 ॥५४॥ तन्मात्रमिदं वीर्यं वीरिणोऽयततः ॥५४॥



कृष्णाय नमः ।

॥१॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥२॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥३॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥४॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥५॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥६॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥७॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥८॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

॥९॥ श्रीगणेशाय नमः ।  
। श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीगणेशाय नमः



। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१०) ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥











॥ १८२१ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२२ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२३ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२४ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२५ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२६ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२७ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२८ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८२९ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३० ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३१ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३२ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३३ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३४ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३५ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३६ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३७ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३८ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८३९ ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥  
 ॥ १८४० ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥





॥१०७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



1127811 Ե ԵՆԵՆԻՆԵՐԻՆ ԵՐԱՆԻ ԵՂԻՏԵՆԵՐԵՐ

1 : ԵՆ ԿՅ Ե ԵՆԵՆԻՆԵ ԵՂԻՏԵՆԵՐԵՐ Ե ԵՂ

1127811 ԵՆԵՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ : ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԵՐ

1127811 ԵՂԻՆ : ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1 : ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ Ե

1127811 ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1 ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1127811 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆ Ե

1 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1127811 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆ

1 ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1127811 ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1 ԵՂԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆ

1127811 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1127811 ԵՂԻՆ (ԵՂԻ) ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1 ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1127811 ԵՂԻՆ ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

1 ԵՂԻՆԵՐԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ԵՂԻՆ

|| ԵՂԻՆԵՐԻՆ ԵՂԻՆ ||

ԵՂԻՆԵՐԻՆ

1802











॥३३॥ ... ..  
। ... ..

॥३४॥ ... ..  
। ... ..

॥३५॥ ... ..  
। ... ..

॥३६॥ ... ..  
। ... ..

॥३७॥ ... ..  
। ... ..

॥३८॥ ... ..  
। ... ..

॥३९॥ ... ..  
। ... ..

॥४०॥ ... ..  
। ... ..

॥४१॥ ... ..  
। ... ..

॥४२॥ ... ..  
। ... ..

॥४३॥ ... ..  
। ... ..

॥७६॥ : कर्मसु कर्मफलं कुरु कर्मणः ॥७६॥  
 । वि न तस्य सुखं कर्मणः ॥७७॥  
 ॥७७॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥७७॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥७८॥  
 ॥७८॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥७८॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥७९॥  
 ॥७९॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥७९॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८०॥  
 ॥८०॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८०॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८१॥  
 ॥८१॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८१॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८२॥  
 ॥८२॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८२॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८३॥  
 ॥८३॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८३॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८४॥  
 ॥८४॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८४॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८५॥  
 ॥८५॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८५॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८६॥  
 ॥८६॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८६॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८७॥  
 ॥८७॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८७॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८८॥  
 ॥८८॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८८॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८९॥  
 ॥८९॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥८९॥  
 । कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥९०॥  
 ॥९०॥ कर्मणो विना न कुरुते फलम् ॥९०॥











॥३१॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३२॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३३॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३४॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३५॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३६॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३७॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३८॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३९॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥४०॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



॥३१॥ ॥३०॥ ॥२९॥ ॥२८॥ ॥२७॥ ॥२६॥ ॥२५॥ ॥२४॥ ॥२३॥ ॥२२॥ ॥२१॥ ॥२०॥ ॥१९॥ ॥१८॥ ॥१७॥ ॥१६॥ ॥१५॥ ॥१४॥ ॥१३॥ ॥१२॥ ॥११॥ ॥१०॥ ॥९॥ ॥८॥ ॥७॥ ॥६॥ ॥५॥ ॥४॥ ॥३॥ ॥२॥ ॥१॥

॥२०॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥  
 ॥२१॥ अस्मिन् विश्वे सर्वे भूतानि ॥  
 ॥२२॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२३॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२४॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२५॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२६॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२७॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२८॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥२९॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३०॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३१॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३२॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३३॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३४॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३५॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३६॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३७॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३८॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥३९॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥  
 ॥४०॥ सर्वे भूतानि सर्वेषु भूतेषु ॥











॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
 ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
 ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
 ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
 ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
 ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
 ॥ १७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
 ॥ १९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
 ॥ २० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

॥१००॥ मन्त्रो जगत्सर्वस्य सारोऽयं ॥  
 । मन्त्रो जगत्सर्वस्य सारोऽयं ॥  
 ॥१०१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥११०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीललितसुतिः समाप्तः ।

दिवस सुवृत्तिकात् सायं सुवृत्तिकात् ॥७२॥

द्वैतं कथितं सायं ललितं महात्मना ।

अथोक्तं कथं ननु कथां विचारय ॥७३॥

लोकं यदा सिद्धं यदा सदा सदा सदा सदा ।

अथोक्तं कथं ननु कथां विचारय ॥७४॥

अथोक्तं कथं ननु कथां विचारय ॥७५॥

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

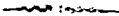
॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।



\* ॐ नमो भगवते वासुदेवाय \*

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥  
 ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥  
 ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥  
 ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥  
 ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥  
 ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥  
 ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥  
 ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥  
 ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥  
 ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥









॥ १ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायस्य अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायस्य अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायस्य अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायस्य अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥

॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्यायस्य अष्टमोऽध्यायः ॥ १ ॥

॥११॥ अ एतन्मया ...

॥१२॥ अथैतन्मया ...

॥१३॥ अथैतन्मया ...

॥१४॥ अथैतन्मया ...

॥१५॥ अथैतन्मया ...

॥१६॥ अथैतन्मया ...

॥१७॥ अथैतन्मया ...

॥१८॥ अथैतन्मया ...

॥१९॥ अथैतन्मया ...

॥२०॥ अथैतन्मया ...

॥२१॥ अथैतन्मया ...

॥२२॥ अथैतन्मया ...

॥ ३ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

### ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।



॥ ७ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ २ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ४ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ५ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ६ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ७ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ८ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ९ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १० ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ११ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १२ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १३ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १४ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १५ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥





113011 Բարձր : Բարձր Բարձր Բարձր : Բ  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113012 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113013 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113014 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113015 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113016 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113017 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113018 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113019 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 113020 Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր  
 | Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր Բարձր

॥३३॥ उपादेयान् कथा संश्लेष कर्यान् ।  
सिद्धयुक्तं चिन्तयेत् स्थितिविषयं ।

॥३४॥ पञ्चमस्कन्धेऽभिधानं नामानुसन्धेः ।  
कथानं हि तत्र संश्लेषं कर्यान्वययोगिभिर ।

॥३५॥ सुविधानं संश्लेषविधानं सुमनोरमं ।  
पञ्चमस्कन्धेऽभिधानं नामानुसन्धेः ।

॥३६॥ नामानुसन्धेः विधानं नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥३७॥ विधानं कथयन्तं कथयन्तं कथयन्तं ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥३८॥ कथा वत् विधानं नामानुसन्धेः ।  
कथयन्तं कथयन्तं कथयन्तं सुमनोरमं ।

॥३९॥ पञ्चमस्कन्धेऽभिधानं नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥४०॥ नामानुसन्धेः विधानं नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥४१॥ संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥४२॥ इति नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।

॥४३॥ संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।  
संश्लेषं च विधानं नामानुसन्धेः ।









॥६०॥ ए विवह इत्यत्र विवह इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६१॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६२॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥ अत्र इति ॥

॥६३॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६४॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६५॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६६॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६७॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६८॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥६९॥ अत्र इति इति इति इति इति

। अत्र इति इति इति इति इति

॥७०॥ अत्र इति इति इति इति इति













- ॥ ७ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।  
 ॥ ८ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।  
 ॥ ९ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।  
 ॥ १० ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।  
 ॥ ११ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।  
 ॥ १२ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।  
 सुखं तत्रैव न भवेत्सुखी ।

अथ दशमोऽध्यायः



# \* अथ दशमोऽध्यायः \*

॥ १ ॥ सुप्रसन्नचित्तोऽपि न भवेत्सुखी ।



॥ ७ ॥ अथ चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ ८ ॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ ९ ॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ १० ॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ ११ ॥ अथ एकादशोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ १२ ॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ १३ ॥ अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ १४ ॥ अथ चतुर्दशोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥  
 ॥ १५ ॥ अथ पञ्चदशोऽध्यायः ॥  
 मन्त्रोक्तः ॥ १ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः



**\* अष्टमोऽध्यायः \***

॥ १ ॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥









॥३९॥ : ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥  
 । ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥  
 ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥  
 । ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥  
 ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥  
 । ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥ ॥४१॥  
 ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥  
 । ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥ ॥४२॥  
 ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥  
 । ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥ ॥४३॥  
 ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥  
 । ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥ ॥४४॥  
 ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥  
 । ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥ ॥४५॥  
 ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥  
 । ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥ ॥४६॥  
 ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥  
 । ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥ ॥४७॥  
 ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥  
 । ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥ ॥४८॥  
 ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥  
 । ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥ ॥४९॥





- ॥२६॥ :कथयामिहै लभस्यस्यैकस्य . हरेरु  
 । इति पञ्चमोऽध्यायः ॥२६॥
- ॥२७॥ हस्तिसंज्ञिकं च स्यात् । इति  
 । इति पञ्चमोऽध्यायः ॥२७॥
- ॥२८॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥२८॥
- ॥२९॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥२९॥
- ॥३०॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३०॥
- ॥३१॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३१॥
- ॥३२॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३२॥
- ॥३३॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३३॥
- ॥३४॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३४॥
- ॥३५॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३५॥
- ॥३६॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३६॥
- ॥३७॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३७॥
- ॥३८॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३८॥
- ॥३९॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥३९॥
- ॥४०॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥४०॥

1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100

- 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100

॥३॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥४॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥५॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥६॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥७॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥८॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥९॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१०॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥११॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१२॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१३॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१४॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१५॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१६॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१७॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१८॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥१९॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥  
 ॥२०॥ अथ विष्णुसहस्रनाम ॥









1170211 ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԿՅՈՒՆԵՆԵՅԵ ԵՔԻՆԵՆԻ ԽԵՆԵՅԵ  
 1170221 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170231 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170241 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170251 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170261 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170271 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170281 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170291 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 1170301 ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ  
 | ԽԵՅԵՆԵՅԵՅԵ ԵՄԻ ԵՄԻ ԵՄԻ

॥१०॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥११॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥

॥१६॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥

॥ १७ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥

॥ १८ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥

॥ १९ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
 । नमो भगवते वासुदेवाय ।

। नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१०॥  
 ॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥११॥  
 ॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१२॥  
 ॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१३॥  
 ॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१४॥  
 ॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१५॥  
 ॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१६॥  
 ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१७॥  
 ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१८॥  
 ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१९॥  
 ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२०॥  
 ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२१॥  
 ॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२२॥  
 ॥२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२३॥  
 ॥२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२४॥  
 ॥२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२५॥  
 ॥२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२६॥  
 ॥२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२७॥  
 ॥२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२८॥  
 ॥२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२९॥  
 ॥३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३०॥





॥११॥ ... ..  
... ..  
... ..

॥१२॥ ... ..  
... ..

॥१३॥ ... ..  
... ..

॥१४॥ ... ..  
... ..

॥१५॥ ... ..  
... ..

॥१६॥ ... ..  
... ..

॥१७॥ ... ..  
... ..

॥१८॥ ... ..  
... ..

॥१९॥ ... ..  
... ..

॥२०॥ ... ..  
... ..

॥२१॥ ... ..  
... ..

... ..



॥३॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥५॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥६॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥८॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥९॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥





॥ ६ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते ॥

॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥















॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
 ॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
 ॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
 ॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
 ॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
 ॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
 ॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
 ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
 ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
 ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
 ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥  
 ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥  
 ॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥  
 ॥२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥  
 ॥२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २४ ॥  
 ॥२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥  
 ॥२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २६ ॥  
 ॥२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॥  
 ॥२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २८ ॥  
 ॥२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २९ ॥  
 ॥३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३० ॥











॥१११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १११ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ १११ ॥

॥११२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११२ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११२ ॥

॥११३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११३ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११३ ॥

॥११४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११४ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११४ ॥

॥११५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११५ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११५ ॥

॥११६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११६ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११६ ॥

॥११७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११७ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११७ ॥

॥११८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११८ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११८ ॥

॥११९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११९ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११९ ॥

॥१२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२० ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ १२० ॥

॥१२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२१ ॥

। श्रीकृष्णाय नमः ॥ १२१ ॥





॥३॥ : ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥

॥३॥ ॥३॥





॥०१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०१॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०१॥

॥०२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०२॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०२॥

॥०३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०३॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०३॥

॥०४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०४॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०४॥

॥०५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०५॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०५॥

॥०६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०६॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०६॥

॥०७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०७॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०७॥

॥०८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०८॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०८॥

॥०९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०९॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥०९॥

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१०॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१०॥

॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥११॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥११॥

11811 ԲՆԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԿԵՆ ԲԻՆԻՍԻԸ  
 | Ի ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԵՆ ԲՆԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11821 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11831 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11841 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11851 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11861 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11871 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11881 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 11891 ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ  
 | ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ ԲԵՐԱՅԻՆԱԿԱՆ





॥४३॥ एतन्निर्वाणं शान्तं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४४॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४५॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४६॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४७॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४८॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥४९॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 ॥५०॥ शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं  
 । शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं शिवं



























॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॥३१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॥४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॥५१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॥६१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॥७१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॥८१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॥९१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥

















॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

॥१०१॥ ॥१०२॥ ॥१०३॥ ॥१०४॥ ॥१०५॥ ॥१०६॥ ॥१०७॥ ॥१०८॥ ॥१०९॥ ॥११०॥



ममभङ्गसिद्धयै वा वासुदेवस्य ।

साधारणस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥५॥

सर्वं वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥६॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥७॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥८॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥९॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥१०॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥११॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥१२॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य (सर्वस्य)

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ॥१३॥

वासुदेवस्य वासुदेवस्य वासुदेवस्य ।

वासुदेवस्य वासुदेवस्य

५७८

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१०॥  
 अथवा ॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥११॥  
 अथवा ॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१२॥  
 अथवा ॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१३॥  
 अथवा ॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१४॥  
 अथवा ॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१५॥  
 अथवा ॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१६॥  
 अथवा ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१७॥  
 अथवा ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१८॥  
 अथवा ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥१९॥  
 अथवा ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२०॥  
 अथवा ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२१॥  
 अथवा ॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२२॥  
 अथवा ॥२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२३॥  
 अथवा ॥२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२४॥  
 अथवा ॥२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२५॥  
 अथवा ॥२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२६॥  
 अथवा ॥२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२७॥  
 अथवा ॥२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२८॥  
 अथवा ॥२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥२९॥  
 अथवा ॥३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३०॥













॥४४॥ अथ चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥  
अथ चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥

॥४५॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
॥४६॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥४७॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥४८॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥४९॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥५०॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥५१॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥५२॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥  
अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥





॥१०॥ ...  
 ॥११॥ ...  
 ॥१२॥ ...  
 ॥१३॥ ...  
 ॥१४॥ ...  
 ॥१५॥ ...  
 ॥१६॥ ...  
 ॥१७॥ ...  
 ॥१८॥ ...  
 ॥१९॥ ...  
 ॥२०॥ ...



1. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







॥३१॥ :धनुः शश्वत्सुधुः ॥३१॥  
 । ३ । ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३२॥ ॥३२॥ ॥३२॥ ॥३२॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३३॥ ॥३३॥ ॥३३॥ ॥३३॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३४॥ ॥३४॥ ॥३४॥ ॥३४॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३५॥ ॥३५॥ ॥३५॥ ॥३५॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३७॥ ॥३७॥ ॥३७॥ ॥३७॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३८॥ ॥३८॥ ॥३८॥ ॥३८॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥ ॥३९॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥  
 ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥ ॥४०॥  
 । ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥















॥१२८॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥









1. ԵՆԻ ԳՆԱԿԱՆԱԿՆԻ

(ԱՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ) ԱՆ ԻՆՏԵՆՍԻՎՆԵՐ

ԵՅՆՆ ԵՄ ԻՆՏԵՆՍԻՎՆԵՐՆԵՐ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԲՆԱԿԱՆԱԿՆԻ

(ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԲՆԱԿԱՆԱԿՆԻ)

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆԻ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ ԵՅՆՆ ԵՅՅՈՒՆՈՒՆ

॥१३१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (२) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (३) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (४) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (५) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (६) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (७) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (८) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (९) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१०) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (११) ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥



































॥१३३॥ अथ काण्डे पौरोहित्ये विधीयते ॥१३३॥  
 बृहस्पतिर्वाजकण्डानि पौरोहित्ये संख्यात् ॥  
 ॥१३४॥ सौम्यान्यपि च विद्यानि समानेषानि संविधिः ॥१३४॥  
 याजापत्याख्य कण्डानि यानि नव द्वे वया ।  
 ॥१३५॥ कर्तव्यं स्यादुपकर्म वया चौरसर्जनं पुनः ॥१३५॥  
 याजापत्येन मुखेन वदंतिवादिना मुखेन ।  
 ॥१३६॥ उपविभन्तं विभक्त्याः समुद्धृत्यः स्रुवाः ॥१३६॥  
 अथनीलेष्वस्यपि पुनः करणमर्हति ।  
 ॥१३७॥ यथातीव्रं क्वं कर्म विभन्ते काले यथावतः ॥१३७॥  
 कर्म कर्मन्तरेणैव कर्तव्यं स्यादुपकर्मतः ।  
 ॥१३८॥ वदन्तीमेव कायानि न द्वे विभन्ते नैवसा ॥१३८॥  
 वासिष्ठा निखिलान्यत्र मंत्रिया सह विधानतः ।  
 ॥१३९॥ कर्तव्यत्वेन सवतं जातकारिणि यानि द्वे ॥१३९॥  
 तस्य कालेऽप्यतीते द्वे मंत्रिया सह विधीयते ।  
 ॥१४०॥ यत् पूर्वोत्थे चोद्धेन नान्तरा नव द्वे स्रुव ॥१४०॥  
 मासि षडे नव कर्म कालेऽप्यतीते द्वे तस्य च ।  
 ॥१४१॥ स्रुव विहितं शाखाय उपविभक्त्याः ॥१४१॥  
 विदंतीते शक्यां द्वे मन्त्रादीनाम् ॥  
 ॥१४२॥ तस्यरुमिष्यपि विन्ते क्वं द्वे शक्यते विन्ते ॥१४२॥  
 क्वं नव क्वं मन्त्राव नान्तरकं षडे ।  
 ॥१४३॥ अथान्येकादशविन्ते नान्तरकण्डेषु ॥१४३॥  
 विद्यं क्वं मन्त्रेष्वस्यवर्तित्वे शाखायि ।













1120311 Երևան և Արարիկ  
 | Երկ Երևան ևս Բ  
 1120321 Երև Երևանի  
 | Երևանի Երևան ևս Բ  
 1120331 Երևանի Երևանի Երևանի Երևանի  
 | Երևանի Երևանի Երևանի Երևանի  
 1120341 և Երևան Երևան Երևան ևս Բ  
 | Երևանի Երևան ևս Բ  
 1120351 Երևան ևս Երևան Երևան ևս Բ  
 | Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 1120361 Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 | Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 1120371 Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 | Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 1120381 Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 | Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 1120391 Երևան ևս Երևան ևս Բ  
 | Երևան ևս Երևան ևս Բ













॥३३॥ मन्त्रोऽयं सर्वकार्येषु ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

( सर्वकार्येषु सर्वेषु च )

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

॥३३॥ सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥

। सर्वकार्येषु सर्वेषु च ॥











112000 ԱՅՆՈՒ ԱՆՆԱԿԻ ՈՒՅՔ ԿՐԱՆԱԿՈՅԺ  
 | ԷՊՈՒՆԻ ԲՐԱԿԻ Ի Ն ԵՆ ԿՐԱՆԱԿԵ  
 113000 112000 ԶԻՅԱԿԻ ԲԱՆԻՄԻՔ ԿՐԱՆԱԿՈՅԺ  
 | ԵՆՈՒ Ի ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ | ԱՆՈՒ  
 114000 113000 ԵՆՈՒ ԻՆ ԻՆ ԻՆ ԻՆ ԻՆ ԻՆ ԻՆ  
 | ԻՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ | ԱՆՈՒ ԻՆ  
 115000 114000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ  
 116000 115000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ  
 117000 116000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ  
 118000 117000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ  
 119000 118000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ  
 120000 119000 ԵՆՈՒ ԵՆՆԱԿԱՆԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅ  
 | ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ ԵՐԱՅԻՅԻՔԻ







11790) Եւ և Բոյնիւնեանն քիտու  
 | Լիւնոյնիւնն զս Լու յ քառս  
 11791) Լուսնի շաշնի Լուսնի Բիւնի  
 | Լուսնիւնն Լուսնի Բոյնիւնն  
 11792) Բ Լուսնի Բիւնն Լուսնի Բոյնիւնն  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11793) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11794) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11795) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11796) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11797) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11798) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11799) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 11800) Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի  
 | Լուսնի Լուսնի Լուսնի Լուսնի









|| 7 || ԲԻՆԱՄԻՆՆ և ԼԻՈՒՅԻՆԵՐՅԱ

| Ա ԲԻՆԱՄԻՆՆԻ ԵՅԱԼՆԵՆՊԵՄԱ

|| 8 || ԱՆՅԵՆ ԵՒԱՆԻՆ ԺԵՆԱԿԱՆ ԵՒՈՐՆ ԵՄ

| ԱՆՅԵՆ և ԵՄՍԷՄ ԵՒՈՐ Ծ ԵՄՍԵՆԻ

|| 9 || ԱՅՆ ԱՆՅԵՅՆ ԵՄ ԵՒՈՐՆՈՐ ԵՄԻՆ

| ԵՆ ԱՆՅԵՆԻ ԵՄՍԷՄ ԵՅԱՆՇՈ

|| 10 || ԲԻՆԱՄԻՆՆՆ ԵՒ ԵՄՆ ԵՒՈՐ ԵՄՆ

| ԱՆՅՈՐ ԵՒՈՐՆ ԵՄՍԷՄ Լ ԵՄՍԵՆ

|| 11 || ԱՆՅԵՆԵՅՆԱՅՆԱՆ ԵՅՆՅԵՅՆԱՆ

| ԱՆՅԵՆ ԵՄՍԷՄ ԱՆՅ ԵՅՆԱՆ ԵՄՍԵՆ

|| 12 || ԱՆՅՈՐՆ ԵՒՈՐ և ԱՆՅՅՆ ԵՒՈՐ

| ԵՅՆՅՈՐՆԱՆԱՅՆԱՆ և ԵՄՍԷՄ

|| 13 || Ա ԵՄՍԷՄ, ԱՆՅ ԵՅՆԱՆ և ԵՅՆԱՆ

| Ա ԵՅՆՅՈՐՆ, և ԱՅՅԵՅՆԱՆ

|| 14 || ԱՆՅՈՐՆ ԵՅՆՆ ԵՒՈՐ և ԵՅՆԱՆ

| ԱՆՅՅՈՐՆ ԵՅՆԱՆ և ԵՅՆԱՆ ԱՅՅԵՅՆԱՆ

ԵՅՆ ԱՆՅՅՈՐՆ ԵՅՆՅՈՐՆԱՆ



**\* : ԱՅՅԵՅՆԱՆ \* \***

և ԵՅՆԱՆ և



110211 ԻՅԻՅ ԿՈՅԻՆ ԳԻՆԻՍ ԿՆՆՈՒՆԵՆՈՅԻՆ  
 | ԷՅԻ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ  
 110311 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110411 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110511 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110611 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110711 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110811 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 110911 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 111011 ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ  
 | ԿՈՅԻՆ Է ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ ԿՈՅԻՆ



1167 11 ԿԵՐԵԼ ԵՒՆ ՈՒՆ ԼԻԿԵՆԵՆԵՆԵՅԻ  
 | ԻՆԿԵՆՆՆԵ ԼՈՒՅԻ ԵՎ ԶԻՆԵ ԿՈՒՆ  
 1168 11 Ե ԵՐԵՎԱՆԻ ԼՈՒԿԱՆԻ ԼԻՄԻ  
 | ԿՈՒՆ ԸՆԵՅ ԿՈՒՆՅ ԼՈՒԿԱՆԻՆԵ ԼԻՄԻ  
 1169 11 ԵՐԵՎԱՆԻՆԵՆ ԵՎ ԿՈՒՆԻՆԵ  
 | ԿՈՒՆ ԸՆԵՅ ԿՈՒՆՅ ԵՎ ԸՆԵ ԸՆԵ  
 1170 11 ԶԻՆԵ ԿՈՒՆ ԼԻՄԻ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆՅ ԸՆԵՆ  
 | ԿՈՒՆԵՆ ԼԻՄԻՆԻՆԵՆԻ ԿՈՒՆԵՆԵՆ  
 1171 11 ԿՈՒՆ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆՅ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆ  
 | ԿՈՒՆԵՆ ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 1172 11 ԿՈՒՆԵՆ Ե ԿՈՒՆԵՆ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆՅ Ե ԿՈՒՆ  
 | ԿՈՒՆՅ Ե ԿՈՒՆԵՆԻՆ ԿՈՒՆ ԿՈՒՆԵՆԵՆԵՆ  
 1173 11 ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 | ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 1174 11 ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 | ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 1175 11 ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 | ԿՈՒՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԻՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆԵՆ























॥१४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१५०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥









॥१॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥५॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥६॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥८॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥९॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







॥१७॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥१८॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥१९॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२०॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२१॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२२॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२३॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२४॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२५॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२६॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२७॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२८॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥२९॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३०॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३१॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३२॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३३॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३४॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३५॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३६॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३७॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३८॥ अथैतन्मन्त्रः ॥

॥३९॥ अथैतन्मन्त्रः ॥





॥२०॥ इति श्रुत्वा कथं ततः शिवाय च श्रुत्वा

। तदा शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२१॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२२॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२३॥ इति श्रुत्वा कथं ततः शिवाय च श्रुत्वा

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२४॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२५॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२६॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२७॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

शिवोऽपि शिवोऽपि

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२८॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

॥२९॥ शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

। शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय

शिवोऽपि शिवोऽपि

॥३०॥



॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥

॥३३॥ लक्ष्मण कर्मणः । ॥३३॥  
। ॥३३॥







॥१३१॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३१॥  
 ॥१३२॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३२॥  
 ॥१३३॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३३॥  
 ॥१३४॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३४॥  
 ॥१३५॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३५॥  
 ॥१३६॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३६॥  
 ॥१३७॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३७॥  
 ॥१३८॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३८॥  
 ॥१३९॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१३९॥  
 ॥१४०॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४०॥  
 ॥१४१॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४१॥  
 ॥१४२॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४२॥  
 ॥१४३॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४३॥  
 ॥१४४॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४४॥  
 ॥१४५॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४५॥  
 ॥१४६॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४६॥  
 ॥१४७॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४७॥  
 ॥१४८॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४८॥  
 ॥१४९॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१४९॥  
 ॥१५०॥ अथानुसन्ध्यायः ॥१५०॥





॥३४॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३४ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३४ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३४ ॥

॥३५॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३५ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३५ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३५ ॥

॥३६॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३६ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३६ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३६ ॥

॥३७॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३७ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३७ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३७ ॥

॥३८॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३८ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३८ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३८ ॥

॥३९॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३९ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३९ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ३९ ॥

॥४०॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४० ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४० ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४० ॥

॥४१॥ एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४१ ॥  
। एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४१ ॥  
एतत् कर्मैः शक्यं भवति ॥ ४१ ॥







॥१८१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः ।

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

। श्रीगणेशाय नमः ।

॥१८९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। श्रीगणेशाय नमः ।

ॐ नमः ।

















॥३१॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३१॥

सिद्धिर्वासात् ॥३१॥

॥३२॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३२॥

सिद्धिर्वासात् ॥३२॥

॥३३॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३३॥

सिद्धिर्वासात् ॥३३॥

॥३४॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३४॥

सिद्धिर्वासात् ॥३४॥

॥३५॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३५॥

सिद्धिर्वासात् ॥३५॥

श्रुतानाम्

॥३६॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३६॥

सिद्धिर्वासात् ॥३६॥

॥३७॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३७॥

शास्त्राधिकारानाम्

॥३८॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३८॥

सिद्धिर्वासात् ॥३८॥

॥३९॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥३९॥

सिद्धिर्वासात् ॥३९॥

॥४०॥ मन्त्रकर्मणि न मन्त्रोपनिषत् ॥४०॥

सिद्धिर्वासात् ॥४०॥

अथ













॥३१॥ नान्यत्र च लोकानि तत्रैव विद्यन्ते ॥३१॥

अथान्यत्रैव नान्यत्र

नान्यत्रैव नान्यत्रैव विद्यन्ते ॥३१॥

॥३२॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३२॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३२॥

॥३३॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३३॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३३॥

अथान्यत्रैव नान्यत्रैव

॥३४॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३४॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३४॥

॥३५॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३५॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३५॥

॥३६॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३६॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३६॥

॥३७॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३७॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३७॥

॥३८॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३८॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३८॥

॥३९॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३९॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥३९॥

॥४०॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥४०॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥४०॥

॥४१॥ न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥४१॥

न हि जगत् सर्वत्रैव विद्यते ॥४१॥























॥३३३॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३४॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३५॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३६॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३७॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३८॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३३९॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥३४०॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥

॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥  
॥ अथ विष्णोः शक्तिः ॥





॥३३१॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३१॥

॥३३२॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३२॥

॥३३३॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३३॥

॥३३४॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३४॥

॥३३५॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३५॥

॥३३६॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३६॥

॥३३७॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३७॥

॥३३८॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३८॥

॥३३९॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३३९॥

॥३४०॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४०॥

॥३४१॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४१॥

कामवृत्तयः

॥३४२॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४२॥

॥३४३॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४३॥

॥३४४॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४४॥

॥३४५॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४५॥

॥३४६॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४६॥

विद्यया च तद्विचारः

॥३४७॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४७॥

॥३४८॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४८॥

॥३४९॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३४९॥

॥३५०॥ अथ कर्मणः फलं च तद्विचारः ॥३५०॥

कामवृत्तयोरप्यपि





॥३४॥ विद्यायां योगिनो वासो धर्मपुत्रो न सोऽन्यथे ॥३४॥

सर्वे धर्मपुत्रे सर्वे पुत्रः कामादिवादिना ॥

॥३५॥ न सास्य धर्मपुत्रो स्याद्विद्यया योगिनो वासो ॥३५॥

न पराशक्तो कर्तव्यो वा सुकृतो वा योगोपमा ॥

विद्योपपत्तौ

॥३६॥ सुवस्य धर्मपुत्रो स्याद्विद्यया सुकृतो वासो ॥३६॥

वासेन पूवं वासा वा सुयोगो वा विवादिना ॥

॥३७॥ शौचो धर्मपुत्रो वा धर्मपुत्रो वा सुकृतो वा ॥३७॥

पुत्रो विद्यया; वा धर्मपुत्रो

निविद्यया सुकृतोऽसौ वासो वासो ॥

॥३८॥ कृत्यं सुकृतो न सुकृतः स्यात्सुव पूवं ॥३८॥

पुत्रिः कर्म कृतं तेन पूवं वासो वासो ॥

॥३९॥ कर्म सुकृतो न पूवं स्यात्सुव वासो ॥३९॥

वासो सुकृतो वासो वासो वासो वासो ॥

॥४०॥ न वासो वासो वासो वासो वासो वासो ॥४०॥

पुत्रो वासो वासो वासो वासो वासो ॥

॥४१॥ कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म ॥४१॥

वासो वासो वासो वासो वासो वासो ॥

॥४२॥ कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म ॥४२॥

वासो वासो वासो वासो वासो वासो ॥

॥४३॥ कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म ॥४३॥

वासो वासो वासो वासो वासो वासो ॥



वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १४६॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १४७॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १४८॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १४९॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५०॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १५१॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५२॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५३॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १५४॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५५॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १५६॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५७॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १५८॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १५९॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १६०॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १६१॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १६२॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १६३॥

सर्वत्रैव सुखं यथा तत्र कथितं ॥ १६४॥

वदन्तु कर्तुं नान्यथाऽपि ॥ १६५॥













॥१०५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

### ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



॥१२६॥ हे मया वसुधैव कुटुम्बकम् ॥  
 ॥१२७॥ ॥१२८॥ ॥१२९॥ ॥१३०॥ ॥१३१॥ ॥१३२॥ ॥१३३॥ ॥१३४॥ ॥१३५॥ ॥१३६॥ ॥१३७॥ ॥१३८॥ ॥१३९॥ ॥१४०॥ ॥१४१॥ ॥१४२॥ ॥१४३॥ ॥१४४॥ ॥१४५॥ ॥१४६॥ ॥१४७॥ ॥१४८॥ ॥१४९॥ ॥१५०॥ ॥१५१॥ ॥१५२॥ ॥१५३॥ ॥१५४॥ ॥१५५॥ ॥१५६॥ ॥१५७॥ ॥१५८॥ ॥१५९॥ ॥१६०॥ ॥१६१॥ ॥१६२॥ ॥१६३॥ ॥१६४॥ ॥१६५॥ ॥१६६॥ ॥१६७॥ ॥१६८॥ ॥१६९॥ ॥१७०॥ ॥१७१॥ ॥१७२॥ ॥१७३॥ ॥१७४॥ ॥१७५॥ ॥१७६॥ ॥१७७॥ ॥१७८॥ ॥१७९॥ ॥१८०॥ ॥१८१॥ ॥१८२॥ ॥१८३॥ ॥१८४॥ ॥१८५॥ ॥१८६॥ ॥१८७॥ ॥१८८॥ ॥१८९॥ ॥१९०॥ ॥१९१॥ ॥१९२॥ ॥१९३॥ ॥१९४॥ ॥१९५॥ ॥१९६॥ ॥१९७॥ ॥१९८॥ ॥१९९॥ ॥२००॥

॥१३३॥ ...  
 ॥१३४॥ ...  
 ॥१३५॥ ...  
 ॥१३६॥ ...  
 ॥१३७॥ ...  
 ॥१३८॥ ...  
 ॥१३९॥ ...  
 ॥१४०॥ ...  
 ॥१४१॥ ...  
 ॥१४२॥ ...  
 ॥१४३॥ ...  
 ॥१४४॥ ...  
 ॥१४५॥ ...  
 ॥१४६॥ ...  
 ॥१४७॥ ...  
 ॥१४८॥ ...  
 ॥१४९॥ ...  
 ॥१५०॥ ...

पुनःपुनः

॥१५१॥ ...  
 ॥१५२॥ ...  
 ॥१५३॥ ...  
 ॥१५४॥ ...

पुनःपुनःपुनःपुनः









॥१८१॥ : ॥१८१॥ ॥१८१॥ ॥१८१॥ ॥१८१॥  
 । ॥१८१॥ ॥१८१॥ ॥१८१॥ ॥१८१॥  
 ॥१८२॥ ॥१८२॥ ॥१८२॥ ॥१८२॥ ॥१८२॥  
 । ॥१८२॥ ॥१८२॥ ॥१८२॥ ॥१८२॥  
 ॥१८३॥ ॥१८३॥ ॥१८३॥ ॥१८३॥ ॥१८३॥  
 । ॥१८३॥ ॥१८३॥ ॥१८३॥ ॥१८३॥  
 ॥१८४॥ ॥१८४॥ ॥१८४॥ ॥१८४॥ ॥१८४॥  
 । ॥१८४॥ ॥१८४॥ ॥१८४॥ ॥१८४॥  
 ॥१८५॥ ॥१८५॥ ॥१८५॥ ॥१८५॥ ॥१८५॥  
 । ॥१८५॥ ॥१८५॥ ॥१८५॥ ॥१८५॥  
 ॥१८६॥ ॥१८६॥ ॥१८६॥ ॥१८६॥ ॥१८६॥  
 । ॥१८६॥ ॥१८६॥ ॥१८६॥ ॥१८६॥  
 ॥१८७॥ ॥१८७॥ ॥१८७॥ ॥१८७॥ ॥१८७॥  
 । ॥१८७॥ ॥१८७॥ ॥१८७॥ ॥१८७॥

कारिण्यलक्षणम्

॥१८८॥ ॥१८८॥ ॥१८८॥ ॥१८८॥ ॥१८८॥  
 । ॥१८८॥ ॥१८८॥ ॥१८८॥ ॥१८८॥  
 ॥१८९॥ ॥१८९॥ ॥१८९॥ ॥१८९॥ ॥१८९॥  
 । ॥१८९॥ ॥१८९॥ ॥१८९॥ ॥१८९॥  
 ॥१९०॥ ॥१९०॥ ॥१९०॥ ॥१९०॥ ॥१९०॥  
 । ॥१९०॥ ॥१९०॥ ॥१९०॥ ॥१९०॥  
 ॥१९१॥ ॥१९१॥ ॥१९१॥ ॥१९१॥ ॥१९१॥  
 । ॥१९१॥ ॥१९१॥ ॥१९१॥ ॥१९१॥  
 ॥१९२॥ ॥१९२॥ ॥१९२॥ ॥१९२॥ ॥१९२॥  
 । ॥१९२॥ ॥१९२॥ ॥१९२॥ ॥१९२॥

विषय

॥१९३॥ ॥१९३॥ ॥१९३॥ ॥१९३॥ ॥१९३॥









॥१॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥४॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥५॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥६॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥७॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥८॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥९॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१०॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

। अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

श्रीकृष्ण उवाच ॥





॥१०॥ कर्मणो भवतु मे मङ्गलम् ॥

। कर्मणो भवतु मे मङ्गलम् ॥

॥११॥ अथ श्रीगणेशोक्तम् ॥

। अथ श्रीगणेशोक्तम् ॥

॥१२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१३॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशोक्तम्

॥१४॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१५॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१६॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१७॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१८॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥१९॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

। श्रीगणेशाय नमः ॥

॥३१॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३१ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३१ ॥  
 ॥३२॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३२ ॥  
 एतन्मया

। एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३३ ॥  
 ॥३४॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३४ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३५ ॥  
 ॥३६॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३६ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३७ ॥  
 ॥३८॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३८ ॥  
 एतन्मया

। एतन्मया कृतं कर्म ॥ ३९ ॥  
 ॥४०॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४० ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४१ ॥  
 ॥४२॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४२ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४३ ॥  
 एतन्मया

॥४४॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४४ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४५ ॥  
 ॥४६॥ एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४६ ॥  
 । एतन्मया कृतं कर्म ॥ ४७ ॥

एतन्मया

॥१०३॥ विष्णुस्यै नमः ॥ १०३ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१०४॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०४ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१०५॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०५ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

विष्णुस्यै नमः ॥

॥१०६॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०६ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१०७॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०७ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१०८॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०८ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१०९॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १०९ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥११०॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ ११० ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

॥१११॥ नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥ १११ ॥

। नमोऽस्तु ते देवगणेशाय ॥

विष्णुस्यै नमः ॥

॥३८६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३८७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३८८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३८९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३९४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ... ।

1138 || ... ||

...

। ... ।

1139 || ... ||

। ... ।

1140 || ... ||

। ... ।

1141 || ... ||

। ... ।

1142 || ... ||

। ... ।

...

1143 || ... ||

। ... ।

1144 || ... ||

। ... ।

1145 || ... ||

। ... ।

1146 || ... ||

। ... ।













118801 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել է իմաստը քարտեզի

118802 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

Կարգաւորել

118803 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

118804 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

Կարգաւորել

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

118805 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

118806 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

118807 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

118808 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

Կարգաւորել

118809 | Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

| Կարգաւորել իմաստը քարտեզի

Կարգաւորել















11170 Երգչապատ Լիսե՛ն հնչան յն  
Բնի՛ն քո

1 Լեռնոյն Ե լի՛ն բոս լն հո լոս  
11171 Ե Բյո՛ւն բլե՛հոս բնո՛ւս Ե Բոս  
Լեռնոյ՛ն հոն՛ն հի՛ստոյնչանն

11172 Ես զնի՛ւն լոն՛ն շի՛ստոյնչոյ՛ն  
Լեռնի՛նչոյ՛ն բոն՛ն Երնոյ՛ն զեռնո

11173 Ես զնի՛ւն լոն՛ն շի՛ստոյնչոյ՛ն  
Լեռնի՛նչոյ՛ն Ե Լեռնի՛նչոյ՛ն

11174 Երնո՛ւս Ե Բյո՛ւն Բյո՛ւն Երնո՛ւս  
Լեռնի՛նչոյ՛ն Բյո՛ւն Բյո՛ւն Բյո՛ւն Բյո՛ւն

11175 Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս  
Լեռնի՛նչոյ՛ն Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս

11176 Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս  
Լեռնի՛նչոյ՛ն Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս

11177 Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս  
Լեռնի՛նչոյ՛ն Երնո՛ւս Երնո՛ւս Երնո՛ւս



























































॥१०६॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥१०७॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥१०८॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥१०९॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११०॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥१११॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११२॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११३॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११४॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११५॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११६॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११७॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११८॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥११९॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।  
 ॥१२०॥ अथ कश्चिदपि न भवति ।













॥ अथ श्रीमद्भगवत्पुस्तके श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

श्रीकृष्णस्य वचनम् ॥

॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ अहो भवति भवति ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ अहो भवति भवति ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ अहो भवति भवति ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ अहो भवति भवति ॥ अहो भवति भवति ॥

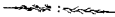
॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ अहो भवति भवति ॥ अहो भवति भवति ॥

॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ २ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ४ ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥  
 ॥ ५ ॥ श्रीशिवाय नमः ॥  
 ॥ ६ ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥  
 ॥ ७ ॥ श्रीविष्णुनाथाय नमः ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥  
 ॥ ९ ॥ श्रीहरिश्चन्द्राय नमः ॥  
 ॥ १० ॥ श्रीरामाय नमः ॥  
 ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॥ १२ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ १३ ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥  
 ॥ १४ ॥ श्रीशिवाय नमः ॥  
 ॥ १५ ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥  
 ॥ १६ ॥ श्रीविष्णुनाथाय नमः ॥  
 ॥ १७ ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥  
 ॥ १८ ॥ श्रीहरिश्चन्द्राय नमः ॥  
 ॥ १९ ॥ श्रीरामाय नमः ॥  
 ॥ २० ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीकृष्णाय नमः



(१)\* श्रीकृष्णाय नमः \*

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



॥ २ ॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
 ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
 ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
 ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
 ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
 ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
 ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
 ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
 ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
 ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
 ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
 ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
 ॥ १७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
 ॥ १९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
 ॥ २० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੧॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੨॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੩॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੪॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੫॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੬॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੭॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੮॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

॥੯॥ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ  
ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ







। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ



अन्तिः पूर्वं कथं स एतन्वः परादिभूयः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥

अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः  
समाप्तः ॥ ८ ॥

अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः

अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥  
अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥

अन्तिः सप्तमोऽयं अध्यायः

। : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ ७ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ ६ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ ५ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ ४ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ ३ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ २ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

॥ १ ॥ शक्यं क्वचिद् भवति न हि ।  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते  
श्रीशङ्करभट्टविरचिते

श्रीशङ्करभट्टविरचिते







॥१॥ ...  
 ॥२॥ ...  
 ॥३॥ ...  
 ॥४॥ ...  
 ॥५॥ ...  
 ॥६॥ ...  
 ॥७॥ ...  
 ॥८॥ ...  
 ॥९॥ ...  
 ॥१०॥ ...  
 ॥११॥ ...  
 ॥१२॥ ...  
 ॥१३॥ ...  
 ॥१४॥ ...  
 ॥१५॥ ...  
 ॥१६॥ ...  
 ॥१७॥ ...  
 ॥१८॥ ...  
 ॥१९॥ ...  
 ॥२०॥ ...

11 2 11 ԲԱՐՅՅՆ ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻ ԵՏ  
1 ԵՆՆԻ ԵՍ ԵՆՆԻ ԲԱՆՆ ԵՍ ԼԻՆԻՆԻ  
11 3 11 ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԲԱՆՆ ԲԱՇԽԻՆԻ  
1 ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԼԻՆԻՆԻ

ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ

:ԼԻՆԻՆԻ:

1 :ԼԻՆԻՆԻ:

ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻՆԻ

11 2 11 ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ

11 :ԼԻՆԻՆԻ:

1 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻՆԻ

11 2 11 ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ

1 :ԼԻՆԻՆԻ:

ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ

11 3 11 ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ

1 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻՆԻ

11 2 11 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ

1 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻՆԻ

11 2 11 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ ԵՆՆԻ

1 :ԵՐԿՐԻ ԲԱՇԽԻՆԻ ԼԻՆԻՆԻ





इत्याहिरससिः ।

इत्यवराहिरस

। इत्यवराहिरसः ।

इत्याहिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥१६॥ पुनर्त्तु मां शान्तिपदं पतिवः ॥१६॥

अथारससिरससिः

। अथारससिरससिः ।

अथारससिरससिः

॥१७॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥१८॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥१९॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥२०॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥२१॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

॥२२॥ अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

। अथारससिरससिः कर्त्तव्यं इत्यवराहिरससिः ।

अथारससिः



॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥२॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
 ॥३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥४॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥११॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१२॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१४॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥१९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥२०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥



॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥

मन्त्रोक्तः प्रथमः  
 मन्त्रोक्तः प्रथमः

मन्त्रोक्तः प्रथमः

॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 ॥ ६ ॥ मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥  
 । मन्त्रोक्तः प्रथमः ॥ १ ॥













॥३॥ अथैतन्मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। नमो भगवते वासुदेवाय ॥









॥ ... ॥

॥३॥ ... ॥

... ॥

॥४॥ ... ॥

... ॥

॥५॥ ... ॥

... ॥

॥६॥ ... ॥

... ॥

॥७॥ ... ॥

... ॥

॥८॥ ... ॥

... ॥

॥९॥ ... ॥

... ॥

॥१०॥ ... ॥

... ॥















॥१॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१॥  
 ॥२॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥२॥  
 ॥३॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥३॥  
 ॥४॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥४॥  
 ॥५॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥५॥  
 ॥६॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥६॥  
 ॥७॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥७॥  
 ॥८॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥८॥  
 ॥९॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥९॥  
 ॥१०॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१०॥  
 ॥११॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥११॥  
 ॥१२॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१२॥  
 ॥१३॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१३॥  
 ॥१४॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१४॥  
 ॥१५॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१५॥  
 ॥१६॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१६॥  
 ॥१७॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१७॥  
 ॥१८॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१८॥  
 ॥१९॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥१९॥  
 ॥२०॥ अथैतद्विदुः सारं प्रोक्तुम् ॥२०॥

॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 ॥३॥ एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥  
 । एतन्मया ॥ ३॥ एतन्मया ॥ ३॥













॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

11771 ԳՆԷ ԳՆԷ ԻՐԱՆԻՆ ԲՅԱԿՆՈՒՄԻՆԻՆ  
Ի ՔԱՆՆՆԵՐՆԵՐ ԲՅԱԿՅԱՐԻՆԻՆ

11772 ԲՅԱՆ ԲՅԱՆ ԲՅԱԿՅԱՐՈՒՄԵ ԻՆՉ  
ԱՐԿՅԱՆ ԱՐԿՅԱ ԻՅԱԷՆՈՅ ԲՅԱԿՅԱՆ  
ԲՅԱԿՆՈՒՄԻՆ ԻՄՈՑ ԲՅԱԿՆՆԵՐՆԵՐ - ԼՆԻՆ  
- ԲՅԱՆԻ ԲՅԱԿՅԱԷՆՈՅ ԲՅԱԿՅԱԿՆՈՒՄԻՆԻՆ

11773 ԱՐԿՅԱ ԲՅԱՆ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄԻՆԻՆ  
Ի ՔԱՆՆՆԵՐ ԻՆՉՆԵՐԻՆ ԲՅԱԿՅԱՆ

11774 ԲՅԱՆ ԲՅԱՆ ԻՄՈՑՈՒՄԻՆ  
- ԳՆԷ ԳՆԷ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄԻՆ  
ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

Ի ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

11775 ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ  
Ի ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

11776 ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ  
Ի ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

11777 ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ  
Ի ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

11778 ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ.....

Ի ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ ԻՄՈՑՈՒՄ

सिद्धोक्तमहाकाव्यमिदं ॥ १५ ॥

पाराशर्यसिद्धिस्तुल्यं कश्चिदपि न जानीते ॥ १६ ॥

पुत्रसिद्धिस्तुल्यं कश्चिदपि न जानीते ॥ १७ ॥

सिद्धिस्तुल्यं कश्चिदपि न जानीते ॥ १८ ॥

अथानुसूच्यते ॥ १९ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २० ॥

॥ २१ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २२ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २३ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २४ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २५ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २६ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २७ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २८ ॥

अथानुसूच्यते ॥ २९ ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३० ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३३ ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३४ ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३५ ॥

अथानुसूच्यते ॥ ३६ ॥

॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
 ॥ २ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ३ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ४ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ५ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ६ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ७ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ८ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ ९ ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥  
 ॥ १० ॥ अथ कृष्ण उवाच ॥  
 । अहो भवति भवति ॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

॥०१॥ अथैव अथैव ॥०१॥

। अथैव अथैव ॥०१॥

101. Եւ զսուրբ Բարսիս Կաթողիկոս  
 102. Եւ զսուրբ Գրիգոր Կաթողիկոս  
 103. Եւ զսուրբ Դիմիտր Կաթողիկոս  
 104. Եւ զսուրբ Էջիմ Կաթողիկոս  
 105. Եւ զսուրբ Բարսիս Կաթողիկոս  
 106. Եւ զսուրբ Գրիգոր Կաթողիկոս  
 107. Եւ զսուրբ Դիմիտր Կաթողիկոս  
 108. Եւ զսուրբ Էջիմ Կաթողիկոս  
 109. Եւ զսուրբ Բարսիս Կաթողիկոս  
 110. Եւ զսուրբ Գրիգոր Կաթողիկոս  
 111. Եւ զսուրբ Դիմիտր Կաթողիկոս  
 112. Եւ զսուրբ Էջիմ Կաթողիկոս  
 113. Եւ զսուրբ Բարսիս Կաթողիկոս  
 114. Եւ զսուրբ Գրիգոր Կաթողիկոս  
 115. Եւ զսուրբ Դիմիտր Կաթողիկոս  
 116. Եւ զսուրբ Էջիմ Կաթողիկոս  
 117. Եւ զսուրբ Բարսիս Կաթողիկոս  
 118. Եւ զսուրբ Գրիգոր Կաթողիկոս  
 119. Եւ զսուրբ Դիմիտր Կաթողիկոս  
 120. Եւ զսուրբ Էջիմ Կաթողիկոս

॥२८॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥

। १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥

। २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥

॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥

। ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥

। ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥

॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥

। ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥

॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

। १०१॥ १०२॥ १०३॥ १०४॥ १०५॥ १०६॥ १०७॥ १०८॥ १०९॥ ११०॥

॥१११॥ ॥११२॥ ॥११३॥ ॥११४॥ ॥११५॥ ॥११६॥ ॥११७॥ ॥११८॥ ॥११९॥ ॥१२०॥

। १२१॥ १२२॥ १२३॥ १२४॥ १२५॥ १२६॥ १२७॥ १२८॥ १२९॥ १३०॥

॥१३१॥ ॥१३२॥ ॥१३३॥ ॥१३४॥ ॥१३५॥ ॥१३६॥ ॥१३७॥ ॥१३८॥ ॥१३९॥ ॥१४०॥

। १४१॥ १४२॥ १४३॥ १४४॥ १४५॥ १४६॥ १४७॥ १४८॥ १४९॥ १५०॥

॥१५१॥ ॥१५२॥ ॥१५३॥ ॥१५४॥ ॥१५५॥ ॥१५६॥ ॥१५७॥ ॥१५८॥ ॥१५९॥ ॥१६०॥

। १६१॥ १६२॥ १६३॥ १६४॥ १६५॥ १६६॥ १६७॥ १६८॥ १६९॥ १७०॥

॥१७१॥ ॥१७२॥ ॥१७३॥ ॥१७४॥ ॥१७५॥ ॥१७६॥ ॥१७७॥ ॥१७८॥ ॥१७९॥ ॥१८०॥

। १८१॥ १८२॥ १८३॥ १८४॥ १८५॥ १८६॥ १८७॥ १८८॥ १८९॥ १९०॥

॥१९१॥ ॥१९२॥ ॥१९३॥ ॥१९४॥ ॥१९५॥ ॥१९६॥ ॥१९७॥ ॥१९८॥ ॥१९९॥ ॥२००॥

। २०१॥ २०२॥ २०३॥ २०४॥ २०५॥ २०६॥ २०७॥ २०८॥ २०९॥ २१०॥























॥३६॥ गणेशाय नमः ॥ ॥३६॥

॥३७॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥३७॥

॥३८॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥३८॥

॥३९॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥३९॥

॥४०॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४०॥

॥४१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४१॥

॥४२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४२॥

॥४३॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४३॥

॥४४॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४४॥

॥४५॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४५॥

॥४६॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४६॥

॥४७॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४७॥

॥४८॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४८॥

॥४९॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥४९॥

॥५०॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५०॥

॥५१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५१॥

॥५२॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५२॥

॥५३॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५३॥

॥५४॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५४॥

॥५५॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५५॥

॥५६॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥५६॥

















॥१०१॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०१ ॥

॥१०२॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०२ ॥

॥१०३॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०३ ॥

॥१०४॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०४ ॥

॥१०५॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०५ ॥

॥१०६॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०६ ॥

॥१०७॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०७ ॥

॥१०८॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०८ ॥

॥१०९॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १०९ ॥

॥११०॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११० ॥

॥१११॥ ॐ शिवाय नमः ॥ १११ ॥

॥११२॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११२ ॥

॥११३॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११३ ॥

॥११४॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११४ ॥

॥११५॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११५ ॥

॥११६॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११६ ॥

॥११७॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११७ ॥

॥११८॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ११८ ॥

॥३३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॥३४॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ १ ॥  
 ॥३५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥३६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥३७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥३८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥३९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४१॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४२॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४४॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥४९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥  
 ॥५०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥ १ ॥

॥१०१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१०९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥११०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

प्रतिपत्तौ नमः ॥१५॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥१६॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥१७॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥१८॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥१९॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२०॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२१॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२२॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२३॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२४॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२५॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२६॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२७॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२८॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥२९॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३०॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३१॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३२॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३३॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३४॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३५॥

प्रतिपत्तौ नमः ॥३६॥

॥१०१॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०२॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०३॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०४॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०५॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०६॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०७॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०८॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१०९॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥११०॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥१११॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
। श्रीकृष्णाय नमः ॥

|| ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ ||

|| ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ ||

|| ୧ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୨ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୩ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୪ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୫ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୬ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୭ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୮ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୯ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୧୦ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୧୧ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୧୨ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୧୩ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| ୧୪ || ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାୟ ନମଃ କେବଳେ କେବଳେ କେବଳେ

|| 7 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆԻ ԵՎԱՆՑ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԵՎԱՆՑ ԲԱՆՈՒՄԻ

|| 8 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

|| 9 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ : ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

|| 10 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

|| 11 || : ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

: ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ



· || : ԲԱՆՈՒՄԻ

ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ||

|| 12 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ... ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

|| 13 || ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

| ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ ԲԱՆՈՒՄԻ

· : ԲԱՆՈՒՄԻ



॥१०॥ : ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३ ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते**

॥ २ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** : **सर्वभूत** कुरु  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ १ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ४ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** : **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ५ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ६ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ७ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ८ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** : **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

॥ ९ ॥ **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**  
। **सर्वभूतहितं कुरुते** **सर्वभूतहितं**

**सर्वभूतहितं कुरुते**

**सर्वभूतहितं कुरुते**



॥०॥ ... ॥०॥

। ... ॥०॥

॥३॥ ... ॥३॥

। ... ॥३॥

॥८॥ ... ॥८॥

। ... ॥८॥

॥९॥ ... ॥९॥

( ... )

। ...

॥३॥ ... ॥३॥

। ...

॥४॥ ... ॥४॥

। ...

॥५॥ ... ॥५॥

। ...

॥६॥ ... ॥६॥

। ...

॥७॥ ... ॥७॥

। ...

॥८॥ ... ॥८॥

। ...











11 2 11 ԿԱՅՈՒՆՅ ԾՈՒՄԷ ԵՐԻՃԻԼՆԵՅՈՒՆԸ  
 | ԵՄԵՆԵՆ ԸՄԵՆԵՆԵՆ ԲԱՆԻԿԷ  
 11 3 11 ԲՄԵՅԵՄԵՆԵՆ ԲՄԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 | ԵՆ ԲՄԵՆԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆԵՆԵՆ  
 11 4 11 ԵՄԵՆԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵ ԲՄԵՆԵՆ ԲՄԵՆ  
 | ԲՄԵՆԵՆԵՆ ԲՄԵ ԲՄԵՆԵՆ ԲՄԵՆԵՆ  
 11 5 11 ԲՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆ ԲՄԵ ԵՄԵՆԵՆԵՆ  
 | ԲՄԵՆ Ե ԲՄԵՆԵՆ Ե ԲՄԵՆԵՆ ԲՄԵՆ  
 11 6 11 ԵՄԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆԵՆ  
 | ԵՄԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆԵՆ  
 11 7 11 ԵՄԵՆ Ե ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆ  
 | ԵՄ ԵՄԵՆ ԵՄԵՆԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ  
 11 8 11 ԵՄԵՆԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ Ե ԵՄԵՆԵՆ  
 | ԵՄԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆ  
 11 9 11 ԵՄԵՆԵՆԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ  
 | ԵՄ ԵՄԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ ԵՄԵՆԵՆ

॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥२९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ॥३०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।



॥३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३४॥  
 ॥३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३५॥  
 ॥३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३६॥  
 ॥३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३७॥  
 ॥३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३८॥  
 ॥३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३९॥  
 ॥४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४०॥  
 ॥४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४१॥  
 ॥४२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४२॥  
 ॥४३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४३॥  
 ॥४४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४४॥  
 ॥४५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४५॥  
 ॥४६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४६॥  
 ॥४७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४७॥  
 ॥४८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४८॥  
 ॥४९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४९॥  
 ॥५०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥५०॥

॥१०॥ ... ॥११॥ ... ॥१२॥ ... ॥१३॥ ... ॥१४॥ ... ॥१५॥ ... ॥१६॥ ... ॥१७॥ ... ॥१८॥ ... ॥१९॥ ... ॥२०॥ ... ॥२१॥ ... ॥२२॥ ... ॥२३॥ ... ॥२४॥ ... ॥२५॥ ... ॥२६॥ ... ॥२७॥ ... ॥२८॥ ... ॥२९॥ ... ॥३०॥ ... ॥३१॥ ... ॥३२॥ ... ॥३३॥ ... ॥३४॥ ... ॥३५॥ ... ॥३६॥ ... ॥३७॥ ... ॥३८॥ ... ॥३९॥ ... ॥४०॥ ... ॥४१॥ ... ॥४२॥ ... ॥४३॥ ... ॥४४॥ ... ॥४५॥ ... ॥४६॥ ... ॥४७॥ ... ॥४८॥ ... ॥४९॥ ... ॥५०॥ ... ॥५१॥ ... ॥५२॥ ... ॥५३॥ ... ॥५४॥ ... ॥५५॥ ... ॥५६॥ ... ॥५७॥ ... ॥५८॥ ... ॥५९॥ ... ॥६०॥ ... ॥६१॥ ... ॥६२॥ ... ॥६३॥ ... ॥६४॥ ... ॥६५॥ ... ॥६६॥ ... ॥६७॥ ... ॥६८॥ ... ॥६९॥ ... ॥७०॥ ... ॥७१॥ ... ॥७२॥ ... ॥७३॥ ... ॥७४॥ ... ॥७५॥ ... ॥७६॥ ... ॥७७॥ ... ॥७८॥ ... ॥७९॥ ... ॥८०॥ ... ॥८१॥ ... ॥८२॥ ... ॥८३॥ ... ॥८४॥ ... ॥८५॥ ... ॥८६॥ ... ॥८७॥ ... ॥८८॥ ... ॥८९॥ ... ॥९०॥ ... ॥९१॥ ... ॥९२॥ ... ॥९३॥ ... ॥९४॥ ... ॥९५॥ ... ॥९६॥ ... ॥९७॥ ... ॥९८॥ ... ॥९९॥ ... ॥१००॥ ...

लोकाकार्थकत्वं लोकात्मनीं विवक्षतः ।  
 ॥८॥ अद्वैतस्य तथा सूरुः अविभक्त्यो विवक्तः ॥८॥  
 ए नैवैतद्वैतः सत्त्वोक्तव्यमस्य ।  
 ॥९॥ नान्यथा नान्यथा नान्यथा नान्यथा ॥९॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१०॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१०॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥११॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥११॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१२॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१२॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१३॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१३॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१४॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१४॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१५॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१५॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१६॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१६॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१७॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१७॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१८॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१८॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥१९॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥१९॥  
 एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ।  
 ॥२०॥ एतद्वैतं चतुर्विधं तद्वैतं चतुर्विधं ॥२०॥

1170 || երբ արժեքայից և՛ քո լաճան  
       · բերուած ևս պիտեկարծ  
 1171 || արծարձեանք բարտեւանաճ  
       | Յարմառ իմանն անթարձեճ  
 1172 || Ե արժեք բարեբաւանանն  
       | անթարձեանք պիտեկարծ : ք  
 1173 || արքա արձեք քաջարան  
       | և զ յարմառ : անթարձեք ք  
 1174 || անթարձեանք արձարձեանք  
       | բարձարք անթ և արձեք  
 1175 || ևն թաճեք յարմառ  
       | անթարձեանք անթարձեանք  
 1176 || զարմառ արձեք յոն քաջարան  
       | անթարձեանք անթարձեանք  
 1177 || անթարձեանք ևն թաճեք : ք  
       | անթարձեանք անթարձեանք  
 1178 || թի : թի և յարձ ևն թաճեք : ք  
       | անթարձեանք անթարձեանք  
 1179 || անթարձեանք անթարձեանք : ք  
       | և թի : անթարձեանք անթարձեանք  
 1180 || անթարձեանք անթարձեանք  
       | և անթարձեանք յոն անթարձեանք

॥१०॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टमोऽध्यायः ॥  
 ॥११॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१४॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१५॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१६॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१७॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१८॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥१९॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२०॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२१॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२४॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२५॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२६॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२७॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२८॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥२९॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 ॥३०॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥



॥१००॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१००॥

॥१०१॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०१॥

॥१०२॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०२॥

॥१०३॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०३॥

॥१०४॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०४॥

॥१०५॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०५॥

॥१०६॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०६॥

॥१०७॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०७॥

॥१०८॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०८॥

॥१०९॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥१०९॥

॥११०॥ एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥११०॥

एतन्मन्त्रोऽस्मिन् संस्कारोऽस्ति ॥

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



11311 11312 11313 11314 11315 11316 11317 11318 11319 11320  
 11321 11322 11323 11324 11325 11326 11327 11328 11329 11330  
 11331 11332 11333 11334 11335 11336 11337 11338 11339 11340  
 11341 11342 11343 11344 11345 11346 11347 11348 11349 11350  
 11351 11352 11353 11354 11355 11356 11357 11358 11359 11360  
 11361 11362 11363 11364 11365 11366 11367 11368 11369 11370  
 11371 11372 11373 11374 11375 11376 11377 11378 11379 11380  
 11381 11382 11383 11384 11385 11386 11387 11388 11389 11390  
 11391 11392 11393 11394 11395 11396 11397 11398 11399 11400  
 11401 11402 11403 11404 11405 11406 11407 11408 11409 11410  
 11411 11412 11413 11414 11415 11416 11417 11418 11419 11420  
 11421 11422 11423 11424 11425 11426 11427 11428 11429 11430  
 11431 11432 11433 11434 11435 11436 11437 11438 11439 11440  
 11441 11442 11443 11444 11445 11446 11447 11448 11449 11450  
 11451 11452 11453 11454 11455 11456 11457 11458 11459 11460  
 11461 11462 11463 11464 11465 11466 11467 11468 11469 11470  
 11471 11472 11473 11474 11475 11476 11477 11478 11479 11480  
 11481 11482 11483 11484 11485 11486 11487 11488 11489 11490  
 11491 11492 11493 11494 11495 11496 11497 11498 11499 11500



॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥२॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

॥३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥४॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥११॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१२॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१४॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१५॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१६॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१७॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१८॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१९॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥२०॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥२१॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥२२॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥२३॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ २ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ८ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ९ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ११ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १२ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १८ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥







महापावकपूर्वाणि न ह्येति न समिपि ॥११॥

एतान् कथां वतः सत्यानाहोसि महापतन ।

॥१०॥ यो एतान्नाथपूर्वेषु सवाग्निं ज्ञेयतः ॥१०॥

एवं विज्ञेयमाः सत्यदेनिपुसुतैव संध्या ।

॥९॥ मानसोक्तानि सिद्धानि श्रुतानि ज्ञेयानि च ॥९॥

एतान्यर्थानि ज्ञेयानि श्रीकान्तिदेवनाथिनाः ।

॥८॥ सिवाय विविधैर्ज्ञेयैर्विभिन्नैश्चैवतः ॥८॥

महेश्वरयोगासक्त यथादेशस्तथा कारयेत् ।

॥७॥ कर्तव्येण वा ज्ञेयं देवाधिपतमाचरेत् ॥७॥

चतुर्न चाक्षरं पूर्वपूर्वेषु निवेद्यम् ।

॥६॥ पञ्चमाचमनं चाद्यं चतुर्न यज्ञोपवीतकम् ॥६॥

पञ्चासनेऽथवा सौम्यं चतुर्न चतुर्वेदस्य ।

॥५॥ मध्यह्निर्याचैर्मानसैश्चामिन्धै ॥५॥

द्वेषे सिद्धेभ्यो देवैः सिद्धा एतान् विज्ञेयमाः ।

॥४॥ एतं श्रुत्वा सङ्कल्प्य विद्याकाशेऽर्जुन ॥४॥

सत्त्व्यायस्य गौरीया जगद्व्याहृत्यते ।

॥३॥ एतद्विज्ञेयं संप्रथमं प्रायश्चित्तं प्रकीर्तितम् ॥३॥

महा मुनिं श्रुत्वा कथं विष्णुत्तमां हृदि स्थितम् ।

॥२॥ चतुर्न्यासं विमलं मानसं परिकीर्तयाम् ॥२॥

विद्याविद्युत्प्रदः परमा(र्)ण्यः सत्त्वैर्ज्ञेयं विवेचिन् ।

॥१॥ एतद्व्याख्यानं श्रुत्वा श्रीमान्शुक्राचार्यः च ॥१॥

पुत्रावरुणस्यार्थोक्तिं हरेः ब्रह्मसहितम् ।





॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ २ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
 ॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ४ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ६ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ७ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ८ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ९ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १० ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ११ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १२ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १३ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १४ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १५ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १६ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १७ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १८ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ १९ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २० ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २१ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २२ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २३ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २४ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २५ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २६ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २७ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २८ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ २९ ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥  
 ॥ ३० ॥ अथ श्रीकृष्णस्य उवाच ॥

॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१) ॥  
 ॥२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-२) ॥  
 ॥३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-३) ॥  
 ॥४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-४) ॥  
 ॥५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-५) ॥  
 ॥६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-६) ॥  
 ॥७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-७) ॥  
 ॥८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-८) ॥  
 ॥९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-९) ॥  
 ॥१०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१०) ॥  
 ॥११॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-११) ॥  
 ॥१२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१२) ॥  
 ॥१३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१३) ॥  
 ॥१४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१४) ॥  
 ॥१५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१५) ॥  
 ॥१६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१६) ॥  
 ॥१७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१७) ॥  
 ॥१८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१८) ॥  
 ॥१९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-१९) ॥  
 ॥२०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१-२०) ॥













॥१२॥ अथ (१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०) (११) (१२) (१३) (१४) (१५) (१६) (१७) (१८) (१९) (२०) (२१) (२२) (२३) (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)













॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३०॥ ॥...  
 । ...  
 ॥३३॥ ॥... (i) ...  
 । ...







॥६६॥ ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥  
 ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥  
 ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥  
 ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥  
 ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥  
 ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥  
 ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥  
 ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥  
 ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥  
 ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

|| 3 || 12 ԲՅԱԿԻՄՈՒՄ ԵՐԿՆԵՐԵՐԵՒԹՅԱՆ ԵՆԻՆ

| ԲՅՄԻՆԵՐՈՒՄԵՆ ԶՄԻՆՅԱՆ ԻՆԵՐԵՆ

|| 4 || ԵՐԿՆՅ ՁԱ ԲՆԵՐՅ ԲԱՐՄԵՆՅԱ ԿԱ

| : ԲԵՐԵՆԵՐԵՐԵՅ ԲԶՄԻՆՅԱՆ ԽՅՅԵ

|| 5 || ԻՆՅՈՒՆԻՆՅՈՒՄԻ ԵՆԻՆ ԳԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ

| : ԿԱՆԵՐԵՐԵՐ ԲԱՐՄԵՆ ԽԵՐԵՅ ԲՆԵՐԵՆ

|| 6 || : ԲՅՄԻՆ ԲՄԵՆԻՄԵՆ ԶՅ ԲՆԵՐԵՆՅԱՆ

| ԵՐԿՆՅԻՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵ Ե ԲԱՆՅԱՆ ԲԱՆԵՆ

|| 7 || : ԲՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ ԵՐԿՆՅԻՆԵՐԵՐԵ

| : ԲՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ Ե ԵՆՅՈՒՆԻՆԵՐԵՐԵ

|| 8 || ԸՄԵ ԽՈՒՆ ԵՆԻՆԵՆ ԵՐԵ ԻՄԵՆ : ԵՐԵՆ ԽՈՒՆ

| : ԵՐԵՅ ԲԵՆԵՆ ԽՈՒՆ ԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵ ԿԱ

ԵՐԿՆՅԻՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ

: ԵՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵ ԿԱ

|| : ԵՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵ

ԵՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ ԵՆԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵ ԵՐԵ ||

|| 9 || : ԵՆԵՐԵՆ ԵՆԵՐԵՐԵՅ (ԵՆԵՆ) : ԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ

| ԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ ԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵ

| : ԵՐԵՆԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵՐԵ ԵՆԵՆ ԵՐԵՐԵ









॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। इत्येवमप्युवाच सुप्रसन्नः ॥

॥ २ ॥ इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

॥ ३ ॥ इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

॥ ४ ॥ इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

॥ ५ ॥ इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

इत्युवाच भगवन् ॥

### इत्युवाच भगवन् ॥

॥ इत्युवाच भगवन् ॥

इत्युवाच भगवन् ॥

इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥

इत्युवाच भगवन् ॥

। इत्युवाच भगवन् ॥





॥३१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३१॥  
 ॥३२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३२॥  
 ॥३३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३३॥  
 ॥३४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३४॥  
 ॥३५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३५॥  
 ॥३६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३६॥  
 ॥३७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३७॥  
 ॥३८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३८॥  
 ॥३९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥३९॥  
 ॥४०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४०॥  
 ॥४१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४१॥  
 ॥४२॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४२॥  
 ॥४३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४३॥  
 ॥४४॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४४॥  
 ॥४५॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४५॥  
 ॥४६॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४६॥  
 ॥४७॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४७॥  
 ॥४८॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४८॥  
 ॥४९॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥४९॥  
 ॥५०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥५०॥

॥ २ ॥ मातृभक्त्याः स्यात्सिद्धिर्जनानाम् ॥ २ ॥

श्रुत्वास्तु यः शोभाः सिद्धयन्ति तैः सिद्धयः ।

॥ ३ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ४ ॥

सप्तमोऽध्यायः

श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम्

॥ ५ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १६ ॥

॥ १७ ॥ इति श्रीमद्भक्तिसिद्धिस्तोत्रम् ॥ १७ ॥

















॥८१॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥१॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥१॥

॥८२॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥२॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥२॥

॥८३॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥३॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥३॥

॥८४॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥४॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥४॥

॥८५॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥५॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥५॥

॥८६॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥६॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥६॥

॥८७॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥७॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥७॥

॥८८॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥८॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥८॥

॥८९॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥९॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥९॥

॥९०॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥१०॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥१०॥

॥९१॥ अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥११॥

। अथैतन्मन्त्रं पठन्तु ॥११॥

113311 Արեւելոցն զի : զԵջիւտն հոյն  
| Ե արեւելոցն լայն լուսն հոյն  
113311 Երկրաբանութեան աստիճանն  
| Ե Երկրն ինչ . և Ե Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն զի Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
113311 Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն  
| Երկրն Երկրն Երկրն Երկրն

• ॥०१॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टाध्याय्योऽष्टमोऽर्धोऽध्यायः ॥१॥

• ॥०२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०४॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०५॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०६॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०७॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०८॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥०९॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१०॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥११॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१४॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१५॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१६॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१७॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१८॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥१९॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥२०॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥२१॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥२२॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥२३॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥



112111 արցյալս լիարձէ քո զնոր բախե  
I յը քոյ քյուսուսանքարիւնէ : Ինչ  
102211 Կարևո լեզուէ քոն յարմար  
I Կարևարջիտն Ե ըրկարն քոն  
113111 Կարևարջիտնս ըստնոն արջի  
I Կար(արևն)լեզու Ե ըստնոնս  
114111 Կարջիտն ըստն Երջիտն ըստ  
I արևարջիտնոյ : քոն արևարջ  
115111 : քոն արևարջն արևարջն քոն  
I Կարևարջն քոն արևարջն  
116111 Ե արևարջիտնս արևարջիտն  
I արևարջիտնս արև արևարջն  
117111 : արևարջիտն արևարջիտն քոն  
I արևարջն արևարջն արևարջն  
118111 Կարև արջն քոն արևարջն քոն  
I արևարջիտնս արև արևարջն  
119111 Կարև արջն քոն արևարջն  
I արևարջիտնս արևարջն  
120111 Կարևարջիտն արև արջն արջ  
I արևարջն : արև արևարջն  
121111 Կարևարջիտն արևարջն արև  
I արև արև արև արևարջիտն

स पपयमा महेवरे विरं विवित कुती ।

॥३०॥ योः पवित्रमहात्मा (द्वैत) विपयैव ॥३०॥

न वयसि (विविचयती) महेवरेः सुविरे नरकाभिः ।

॥३१॥ कृत्तमवहनि वा योः पवित्रं धारयति ॥३१॥

यत्किं नरके वरे पयत्र न सधयः ।

॥३२॥ देव्यात्पवित्रं वृषः कर्माविधानवर्तिवः ॥३२॥

सिवाग्निकं इवा वनरकं समाचरे ।

॥३३॥ देववाणीकायं मधेवदेवपुत्रः सखि ॥३३॥

विनात्संगेण कर्माणि समाचरे ।

॥३४॥ वसुधावतं पवित्रं यो विवितवति न विवः ॥३४॥

विनागृहीतयः मयि नारदवपुत्रे (देववपुत्रे) ।

॥३५॥ विपयस्य गृहीतस्य (साधुसकल) विपय ॥३५॥

विपयस्य पतिदुःखः सव कस्यदुःखः ।

॥३६॥ यथा भावितव्यं सः सकलं साधुसिद्धिः ॥३६॥

यजमानं करं धर्मः यथा दंष्ट्रा यमस्य वै ।

॥३७॥ यथासिद्धं विपयः विपयसिद्धिः ॥३७॥

यथासिद्धं विपयसिद्धिं यथासिद्धं कर्तव्यं ।

यथासिद्धं कर्तव्यं ।

॥३८॥ यथासिद्धं विपयसिद्धिं यथासिद्धं कर्तव्यं ॥३८॥

यथासिद्धं विपयसिद्धिं यथासिद्धं कर्तव्यं ।





॥१०॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥११॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१२॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१३॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१४॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१५॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१६॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१७॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१८॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥१९॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२०॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२१॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२२॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२३॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२४॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२५॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२६॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२७॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२८॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥२९॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥  
 ॥३०॥ इति चतुर्थः अध्यायः ॥





---

॥ विष्णवे ॥

ॐ विष्णवे नमः ॐ

॥ नमः ॥

नमः विष्णवे नमः ॥

॥ ३४ ॥ नमः विष्णवे नमः ॥

। नमः विष्णवे नमः ॥

॥ नमः ॥



... ..

। ... ..  
... ..  
... ..

। ( ... ) ... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

( ... )

- ॥ ... ..
- । ... ..
- ॥ ... ..
- । ... ..
- ॥ ... ..
- । ... ..

। ... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

- ॥ ... ..
- । ... ..



